प्रकाशक
गंगहरा-प्रकाशन
(प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता)
शर्मा-सदन, पृथ्वीपुर
पटना – ३

मुद्रक
यतीन प्रेस,
लगरटोली,
पटना-४

१९६६
प्रथम संस्करण—११००
मूल्य ग्यारह रुपये

समर्पण

राष्ट्रभाषा हिन्दी

की मान्यता के लिये

सतत प्रयत्नशील

डा० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'

(अध्यक्ष, बिहार राज्य विधान सभा)

के

कर-कमलों में

लेखक द्वारा

सादर

समर्पित

प्राचीन भारतीय आर्य राज वंश
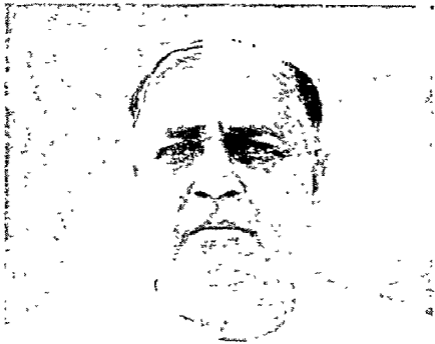
डा० लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु'
अध्यक्ष
बिहार राज्य विधान सभा, पटना

१९५३ में निकला। इसके पहले भाग में १७७ पृष्ठ हैं। आवश्यकतानुसार बौद्ध और जैन अनुश्रुतियों का भी सहारा लिया गया है। उदाहरणार्थ बौद्ध जातकों से पूरी सहायता ली गयी है।

१९२७ में डाक्टर सीतानाथ प्रधान ने Chronology of Ancient India नामक ग्रंथ निकाला। इसे भी कलकत्ता विश्वविद्यालय ने ही प्रकाशित किया। इसमें २७१ पृष्ठ हैं। इसमें ऋग्वेदकालीन राजा दिवोदास के समय से चंद्रगुप्त मौर्य तक का इतिहास दिया गया है, बीच-बीच में आवश्यकतानुसार युग के राजनैतिक इतिहास की झाँकियाँ भी हैं। ग्रंथ अत्यन्त उपादेय है। इसमें गौतम बुद्ध की तिथि पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है और उनकी मृत्यु-तिथि ४८७ ई० पू० मानी गयी है। तदनुसार चंद्रगुप्त मौर्य की राज्यारोहण-तिथि ३२५ ई० पू० मानी गयी है[१]। अन्य गुत्थियों के सुलझाने की चेष्टा भी की गयी है[२]।

अब तक भारतीय विद्वान् अपने को पश्चिम द्वारा 'वैज्ञानिक इतिहासकार' (scientific and sober historian) कहे जाने के लोभ में पड़कर प्राचीन अनुश्रुतियों की साधारणतः उपेक्षा करते आ रहे थे और पाठ्य-पुस्तकों में इन्हें स्थान नहीं देते थे। श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और डाक्टर ए० डी० पुसलकर ने इस व्यूह को तोड़ा। श्री मुंशी की अध्यक्षता में भारतीय विद्या भवन (बंबई) ने दस जिल्दों में The History and Culture of the Indian People नामक पुस्तकमाला का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसकी पहली जिल्द १९५१ में निकली। इसका नाम The Vedic Age है। इसके संपादक हैं डाक्टर रमेशचंद्र मजुमदार और डाक्टर ए० डी० पुसलकर। डाक्टर पुसलकर ने निर्भीकतापूर्वक प्राचीन अनुश्रुतियों के आधार पर दो अध्यायों में (पृष्ठ २६७-३२६ पर) प्राचीनतम काल (जलप्रलय और मनु वैवस्वत) से बार्हद्रथ वंश के अन्त तक (यानी बिंबिसार के राज्याभिषेक के पहले तक) का इतिहास प्रस्तुत किया। डाक्टर रमेशचंद्र मजुमदार पहले प्राचीन भारतीय अनुश्रुतियों की खिल्ली उड़ाते थे। मगर अब उन्हें भी इन अनुश्रुतियों में कुछ इतिहास-जैसा पदार्थ दीख पड़ने लगा है।

---

१ मुझे ये ही तिथियाँ मान्य हैं।

२ प्रो० रंगाचार्य का History of Pre-Musalman India, Vol II Vedic India, Part I (The Aryan Expansion over India) (मद्रास, १९३७) भी परमोपयोगी ग्रंथ है और इस दिशा में स्तुत्य प्रयास है।

१९५६ मे जयपुर के महाराजा कालेज के संस्कृत के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डाक्टर पुरुषोत्तम लाल भार्गव ने लखनऊ से India in the Vedic Age (A History of Aryan Expansion in India) नामक ग्रंथ निकाला। इसमे १७७ पृष्ठ हैं। अपने विषय की यह बिलकुल हाल की रचना है और सबसे मौलिक भी है। डाक्टर भार्गव ने मनु वैवस्वत से महाभारत युद्ध तक १०० पीढ़ियाँ मानी हैं और इस सपूर्ण काल को चार भागो मे बाँटा है—सप्तसिंधु-युग (पीढ़ियाँ १-२७), विजय-युग (पीढ़ियाँ २८-४९) विस्तार-युग (पीढ़ियाँ ५०-७२) और अधिवास-युग (पीढ़ियाँ ७३-१००)। उन्होंने दिखलाया है कि आर्य धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ने गये, पहली या दूसरी पीढ़ी में ही पजाब से विहार तक नही छा गये।

पंडित मुमन शर्मा की प्रस्तुत कृति 'प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश' इसी दिशा मे नवीनतम प्रयत्न है। बंगला मे डाक्टर गिरीन्द्र शेखर बोस 'पुराणप्रवेश' नामक ग्रन्थ द्वारा यह प्रयत्न कर चुके हैं (कलकत्ता, १९५०-५१)। हिंदी में यह अभाव बेतरह खटकता था। शर्माजी ने यह अभाव दूर कर दिया है। यह पुस्तक उनके कई वर्षों के अनवरत अध्ययन और अनुसंधान का फल है। इसके तेरह खंड हैं। पहले खंड मे विषय-प्रवेश है। अगले तीन खडो मे सत्ययुग या कृतयुग का विवरण है, जिनमे प्रजापतियो का परिचय दिया गया है। इनमे सबसे पहले आते हैं प्रथम मनु एवं प्रथम प्रजापति स्वायंभुव मनु, जिनको शर्माजी ने ऐतिहासिक व्यक्ति माना है। वाद के चार खंडो मे त्रेतायुग का विवरण है। इनमे मुख्य सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश और उनके शाखा-राज्यो का वर्णन है। उक्त त्रेतायुग का प्रारंभ शर्माजी मनु वैवस्वत से करते हैं। नवें खण्ड मे द्वापरयुग का विवरण है। दसवें खण्ड मे कलियुग के राजाओ का विवरण है। इनका काल-निर्णय अशोक तक आया है। इस खण्ड मे प्रद्योत वश का विश्लेषण बहुत मौलिक ढग से किया गया है (पृष्ठ २७२–२८७)। ग्यारहवें खण्ड मे महाभारत सग्रामकाल का निर्णय किया गया है। शर्माजी के मतानुसार महाभारतसग्राम का काल ११५० ई० पू० है। डाक्टर प्रधान की भी यही मान्यता है। बारहवें खड मे आर्य नृपतियो का कई दृष्टियो से वर्गीकरण किया गया है, यथा राजान्त शब्दो के अनुसार, वैभव और शक्ति के अनुसार (उपाधियाँ सहित), ऐतरेय ब्राह्मण मे उल्लिखित प्रसिद्ध राजा, सूत्रग्रंथो में उल्लिखित प्रसिद्ध राजा, पुराणो मे उल्लिखित प्रसिद्ध राजा (विशेषत चक्रवर्ती सम्राट्)। ये सूचियाँ साधारणतया प्रचलित पुस्तको मे उपलब्ध नही होती, अत अतीव उपयोगी हैं। तेरहवे खड मे वेद, रामायण एवं महाभारत पर विचार किया गया है तथा युधिष्ठिर से पृथ्वीराज तक आर्य राजाओ की सूची स्वामी दयानद सरस्वती कृत सत्यार्थप्रकाश के

अनुसार दे दी गयी है। यहाँ एक खास बात यह है कि शर्माजी ने ऋग्वेद के ऋषियों अर्थात् मन्त्रद्रष्टाओं ('ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः') की अकारादिक्रम से सूची दे दी है (पृ० २९८-३०६)। सहायक साहित्यसूची के बाद प्राचीन भारतीय आर्य राजाओं का वंशवृक्ष (स्वायंभुव मनु से अशोक तक) दे दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक शर्माजी की परिश्रमशीलता एवं गवेषणा-शक्ति का जीता-जागता प्रमाण है। इस से लोगों के मन में प्राचीन इतिहास के प्रति रुचि जगेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। कई बातों में पाठकों का लेखक से मतभेद होगा, मगर विद्वत्ता के क्षेत्र में यह स्वाभाविक है। देखना यह है कि विषय का निरूपण कैसा हुआ है, सामग्री किस अंश तक जुटायी गयी है और निष्कर्ष तर्कसंगत हैं या नहीं। इस दृष्टि से देखने पर पुस्तक की उपादेयता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

मैं शर्माजी की प्रस्तुत रचना का अभिनन्दन करता हूँ तथा चाहता हूँ कि इसका एवं इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों का व्यापक प्रचार हो।

योगेन्द्र मिश्र
(एम०ए०, पी-एच०डी०, साहित्यरत्न)
अध्यक्ष,
इतिहास-विभाग,
पटना विश्वविद्यालय

३०-१२-१९६५

भूमिका

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक श्री सुमन शर्मा मे प्रतिभा है, सूझ है और मौलिकता है। इस ग्रन्थ मे इन्होने सप्रमाण जिन विचारो को देश-विदेश के विद्वानो के सामने रखा है, उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से नही देखा जा सकता और न उनकी अवहेलना ही की जा सकती है। संयोगवश लेखक को चार साल एकान्तवास का समय मिला। प्रतिभा-सम्पन्न और प्रखर बुद्धि होने के कारण उनके मन मे यह विचार उठा कि आर्यो के आदि निवास तथा काल के सम्बन्ध मे पार्जिटर आदि पाश्चात्य विद्वानो तथा अनेक भारतीय विद्वानो ने जो धारणाएँ प्रतिपादित की हैं क्या ये ही सत्य है अथवा उनके विचार भ्रामक है।

इन विचारो ने इनके मन को इस तरह आन्दोलित किया कि ये इस विषय के अध्ययन मे लग गये। विविध पुराणों, वेदो, महाभारत, ईरान तथा पर्शिया आदि देशों के इतिहास तथा अन्य ग्रन्थो के अध्ययन तथा मनन से शर्मा जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि 'आर्य' इस देश मे कही बाहर से नही आये। ये भारत के ही आदि निवासी है और यही से इन्होने ईराक, ईरान, पर्शिया तथा मध्य एशिया मे अपने राज्य का विस्तार किया। इन्होने जो बातें लिखी हैं वे मनगढन्त या कपोल-कल्पित नहीं है। बल्कि विविध ग्रन्थो मे ठोस प्रमाणों को उद्धृत कर इन्होंने अपने मत का पूर्णतया प्रतिपादन किया है।

एक विशेष बात इस ग्रन्थ के बारे मे यह भी लिख देना आवश्यक है कि शर्मा जी ही प्रथम व्यक्ति है जिन्होने आर्यवंशो का स्वायम्भुव मनु से प्रसेनजित तक १२४ पीढियो का इतिहास प्रमाण के साथ निश्चित कर दिया है। इस काल-क्रमिक इतिहास मे ऋग्वेद की प्रत्येक ऋचा का निर्माण-काल निश्चित हो जाता है।

इस दृष्टि से यह ग्रन्थ हमे नयी दिशा की ओर ले जाता है और आर्यो के सबन्ध मे फैली भ्रान्त धारणाओ का पूर्णतः खण्डन करता है।

जिस परिश्रम और लगन से शर्मा जी ने विविध ग्रन्थो का अध्ययन कर इस सामग्री को सग्रहीत किया है, वह प्रशंसा के योग्य है। इस विषय पर इस तरह का सागोपाग ठोस प्रमाणयुक्त ग्रन्थ प्रकाशित नही हुआ है। इस ग्रन्थ को हिन्दी मे

लिखकर शर्मा जी ने राष्ट्रभाषा के प्रति अपना आदर व्यक्त किया है और उन करोडो भारतीयों को अपनी प्राचीन गाथा का हाल जानने का अवसर दिया है जो हिन्दी के अतिरिक्त दूसरी भाषा नही जानते हैं और किवदन्तियो तथा दन्त कथाओं के आधार पर ही इस देश, इसके निवासी आदि के बारे में कुछ सही और कुछ गलत धारणायें बना लेते है।

इस उत्कृष्ट तथा प्रामाणिक रचना के लिये लेखक बधाई के पात्र हैं।

छविनाथ पाण्डेय
अध्यक्ष
बिहार राज्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
पटना।

मातृनौमी
सं० २०२२ वि०

सम्मति

प० सुमन शर्मा प्रणीत "प्राचीन भारतीय आर्यराजवंश" के प्राय पाँच अध्यायो को देखने का अवसर मिला। इसमे वैदिक तथा पौराणिक वाङ्मय के आधार पर प्राचीन भारतीय राजवशो के स्थापन का विद्वत्तापूर्ण प्रयत्न है। लेखक ने वैदिक देवताओ को ऐतिहासिक व्यक्ति मानने का क्रान्तिकारी प्रस्ताव उपस्थित किया है। स्वतन्त्र कल्पना-शक्ति का प्रचुर उपयोग इस कृति मे है। राष्ट्रभाषा हिन्दी मे इस प्रकार के ग्रन्थो की ओर समीक्षको का ध्यान अवश्य आकृष्ट होना चाहिए।

विश्वनाथ प्रसाद वर्मा
अध्यक्ष राजनीति, पटना विश्वविद्यालय
तथा
डायरेक्टर, लोक-प्रशासन सस्थान,
पटना

दो शब्द

श्री सुमन शर्मा ने अपने चार वर्षों के कारावास-जीवन मे "प्राचीन भारतीय **आर्य राजवंश**"—एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण, शोधपूर्ण ग्रथ का निर्माण किया, जिसमे पुराणो एवं वेदो के आधार पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म सूत्रो को पकड कर आपने उस समयका इतिहास प्रस्तुत किया है, जिसे 'अधकार युग' अर्थात् 'डार्क एज' कहा जाता है । जहाँ तक मुझे पता है, इस दिशा मे श्री शर्मा जी का यह अनुसधान सर्वथा नूतन एव मौलिक है और इस ग्रथ-निर्माण मे आपने जिस परिश्रम, अध्यवसाय, लगन, धैर्य, सूक्ष्म दृष्टि एव सूझ-बूझ का परिचय दिया है, वह निश्चय ही स्तुत्य है । इतिहास के इस प्राचीनतम युग को प्रकाश मे लाकर शर्माजी ने भारतीय संस्कृति की जो अनुपम, अभूतपूर्व सेवा की है उसका मूल्याङ्कन करना सहज नही है । प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति के आकलन मे यह ग्रथ महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा यह नि सकोच स्वीकार करना चाहिए और इस विषय के सुधी विद्वान् इस ग्रथ मे दिये गये तथ्यो एव प्रमाणो पर शान्त, स्वस्थ, अनाविल चित्त से विचार करेंगे, ऐसी आशा की जानी चाहिए । इस ग्रथ से ज्ञान-क्षितिज का विस्तार हुआ ।

श्री शर्माजी के इस श्रमसाध्य, समयसाध्य एव साधनसाध्य अनुसधान-कार्य को देश-विदेश के विशिष्ट विद्वानो का आदर प्राप्त होगा और उनके लिए इस दिशा मे प्रवृत्त होने की प्रेरणा भी मिलेगी । इस ग्रथरत्न से हिन्दी का इतिहास-साहित्य गौरवान्वित हुआ, ऐसा मैं मानता हूँ ।

शारदीय नवरात्र, २०२२वि०

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
निर्देशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, पटना

महाराज ऋषभदेव

(पाँचवें प्रजापति—३६१० ई०पू०)

(जैनधर्मावलम्बियों द्वारा पूजित चित्र)

इन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र 'भरत' थे, जिनके नाम पर इस देश का नाम भरतखण्ड—भारतवर्ष पड़ा ।

(श्रीमद्भागवत ५।४।९, विष्णु पु० २।१।३२)

लेखकीय वक्तव्य

स्वायम्भुव मनु से सम्राट् अशोक तक के क्रमबद्ध शासकवृक्ष को उसी समय उपस्थित हो जाना चाहिये था जिस समय पाश्चात्यो ने भारतीय आर्यों के मूल पूर्वजो को विदेशी लिखना आरम्भ किया। ऐसा मेरा विचार है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अधिकारी विद्वानो ने असाध्य रोग समझ कर इस दिशा मे दृष्टि डालने की चेष्टा ही नही की। सम्भव है, पराधीनता भी इसका कारण रहा हो। किन्तु स्वाधीनता-प्राप्ति के अट्ठारह वर्ष बाद भी उन लोगो की विचारधारा मे परिवर्त्तन का नही आना एक चिन्ताजनक समस्या नही तो और क्या है?

मैं अपने इस तुच्छ प्रयास के विषय मे वक्तव्य क्या लिखूं? मैं तो इस विषय का अधिकारी विद्वान ही नही हूँ। फिर भी, एक भारतीय आर्य-वंशधर होने के नाते अपने आर्यपूर्वजो के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने का अधिकारी मानता हूँ। इसीलिये अनेक पुस्तको की कतरनो के आधार पर श्रद्धाजलि का यह प्रयास पुष्प प्रस्तुत करता हूँ।

आज से ६ वर्ष पूर्व इस शोधकार्य का श्रीगणेश मैंने किया। एक वर्ष तक कुछ कार्य करने के पश्चात् बाँकीपुर बन्दीपुरी मे प्रवेश करना पड़ा। वहाँ से हजारीबाग, पुन भागलपुर चला गया। भागलपुर का बन्दीपुस्तकालय प्रशसनीय है। फिर भी जब पुस्तकों का अभाव वहाँ खटकने लगा, तब कारा-विभाग के सहायक महानिरीक्षक श्री रमेशप्रसाद सिंह के पास बाँकीपुर मे ही रहने की स्वीकृति माँगी। उनकी स्वीकृति मिल जाने पर बाँकीपुर-पटना मे चला आया और निरन्तर इस कार्य को करता गया। कुछ कार्य शेष रह गया, तो मुक्ति के बाद मुक्त क्षेत्र मे आज तक किया।

काराधिकारियो तथा सहायको ने सहायक ग्रन्थो के परिदान मे पूर्ण सहायता प्रदान की है, जिसके लिये उन लोगो का आभारी हूँ। कारा महानिरीक्षक श्री रमेश प्रसाद सिंह ने पटना मे रहने की स्वीकृति देकर सहायता पहुंचाई, इसलिये उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

उच्चवर्गीय बन्दी होते हुए भी यदि कारा-अधीक्षक श्री रजा मल्लिक और कारापाल श्री रामदेव ओझा की इस शोध-कार्य मे सहायता नही मिलती, तो यह कार्य अधूरा ही रह जाता। अतएव उन लोगों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

उच्च वर्गीय बन्दी श्री ईश्वर चन्द्र प्रसाद सिन्हा, बी०ए० एव श्री बी०के० वर्मा पामिस्ट ने अग्रेजी ग्रन्थो तथा समाचारपत्रो की कतरनो मे हाथ बटाया है, इसलिये उन दोनो बन्धुओ का सहर्ष आभार स्वीकार करता हूँ।

पाण्डुलिपि के अनुसार यदि यह पुस्तक प्रकाशित होती तो लगभग एक हजार पृष्ठो की हो जाती। किन्तु प्रकाशन मे आर्थिक कठिनाई के कारण छपने के समय प्रेस मे ही बैठकर प्रतिदिन काट-छाँट करना पडा। इसका परिणाम यह हुआकि बहुत से उद्धरणो तथा पाद टिप्पणियो को भी छोड देना पडा, जिसके लिये हार्दिक कष्ट हुआ।

छपने मे यत्र-तत्र वृद्ध-चक्षु होने के कारण प्रूफ-संशोधन की भूलें रह गई हैं। इसके लिये समीक्षको तथा पाठको से क्षमा-प्रार्थी हूँ।

इस पुस्तक मे प्रसगवश एक ही घटना का वर्णन न्यूनाधिक रूप मे यत्र-तत्र किया गया है। ऐसा इसलिये करना पडा ताकि इस विषय के नवीन पाठको को समझने मे कठिनाई न हो एव पूर्व पठित पृष्ठ पुनः न खोजने पड़ें। यदि उदार समीक्षक इसे पुनरुक्ति दोष न मानकर 'पुनरुक्तवदाभ्यासालंकार' के अन्तर्गतस्वीकार करेंगे, तो अपनी कथन-शैली सार्थक समझूंगा।

इस पुस्तक मे कही-कही एक शब्द के कई रूपो का प्रयोग हुआ है, यथा स्वायंभुव, स्वायंभव, स्वायंभू इत्यादि। ये सभी रूप शुद्ध हैं। इन्हें अशुद्ध रूप न समझा जाये। पाठको को विभिन्न रूपो से परिचित कराने के लिये ही ऐसा किया गया है। इसी प्रसग मे दूसरी बात यह है कि एक ही व्यक्ति के कई नाम मिलेंगे। इसका मतलब यह है कि भिन्न-भिन्न पुराणो में भिन्न-भिन्न नाम हैं.।

पटना में शोध-कार्यो के लिये सर्व साधारण को संस्कृत ग्रन्थो का पाना एक कठिन समस्या है। एक-दो शोध-सस्थान हैं, परन्तु वहाँ पर कार्य सम्पादन करना सबके लिये सरल काम नही है। बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद के अधिकारी तथा कर्मचारी सभी प्रशंसा के पात्र हैं। परन्तु दुःख के साथ लिखना पडता है कि वहाँ पर सस्कृत-ग्रन्थो का अभाव है।

इस विकट परिस्थिति का सामना करने के लिये बन्दीगृह मे जाने के पहले ही मैंने प्रबन्ध कर लिया था। श्री राम पदार्थ सिंह, एम० ए०, बी० एल, श्री सत्य नारायण प्रसाद श्रीवास्तव, बी०ए०तथा हमारे ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिवंश नारायण शर्मा, ये तीनो भिन्न-भिन्न लाइब्रेरियो के सदस्य बन गये थे। उन्ही लोगों के द्वारा पुस्तको का सदा आदान-प्रदान होता गया। अतः इन लोगो के लिये शुभाशीर्वचन है।

मुक्त होने पर कतिपय सदिग्ध स्थलो का अर्थ लगाने मे आचार्य मगल देव जी ब्रह्मचारी (कुलपति, सांस्कृतिक विद्यापीठ, पटना तथा उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय साधु समाज) से बडी सहायता पायी। एतदर्थ मैं उनके सम्मुख सतत नतमस्तक हूँ।

पाण्डुलिपि तैयार होने पर विचार-विमर्श हेतु मैं पटना विश्वविद्यालय के कई अधिकारी विद्वानो से मिला। उनमे डा० योगेन्द्र मिश्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

एक दिन उन्होने विचार-विमर्श के समय मुझसे यह प्रश्न किया कि—"रिपुजय, प्रद्योत, बिम्बिसार, मगध और अवन्ति के विषय मे आपने अपना क्या विचार व्यक्त किया है ?" यह सुनकर मैं हँसने लगा। डा० मिश्र ने कहा—"क्या मेरा प्रश्न उचित नही है ?" मैंने कहा—"इसलिये हँस रहा हूँ कि आपने मेरी धारणा ही बदल दी है। मैं तो समझता था कि इतिहास के अधिकारी विद्वान पुराणो के पास ही नही जाते। परन्तु मालूम होता है कि आप पुराणो मे दिलचस्पी रखते हैं। आपका प्रश्न तो बहुत आवश्यक और उलझनपूर्ण है। परन्तु मेरा विषय तो स्वायम्भुव मनु से बुद्धकाल तक ही निश्चत है। इसलिये इस स्थल पर अभी तक कुछ विचार ही नही किया है।"

इतना सुनने पर श्रद्धेय मिश्र जी ने कहा—"आप अपना विचार आगे बढाइये। रिपुजय, प्रद्योत, बिम्बिसार, मगध और अवन्ति पर कम-से-कम एक पृष्ठ मे भी अपना विचार अवश्य प्रकट कीजिये"।

मैंने कहा—"आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। इस विषय पर तो डा० प्रधान तथा पार्जिटर आदि सभी गवेषक मौन ही रह गये हैं। डा० हेमचन्द्र रायचौधरी ने भी कुछ नही लिखा। खैर, प्रयास करूँगा।" इतना कहकर वहाँ से चला आया और पुनः पुराणो के पन्ने उलटने लगा। उसका परिणाम यह हुआ कि प्रद्योत, रिपुजय, अवन्ति, बिम्बिसार और मगध के स्पष्टीकरण मे कई पृष्ठ लिखने पडे।

उसके बाद पुन. विचार-विमर्श के लिये श्रद्धेय मिश्र जी की सेवा मे उपस्थित हुआ। उसी समय इस पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के लिये उनसे अनुरोध किया। उन्होने सम्पूर्ण छपी पुस्तक मागी। मैंने आज्ञा का पालन किया। लगभग एक सप्ताह मे उन्होने अत्यन्त कृपापूर्वक प्राक्कथन लिखकर दे दिया। इसके लिये सदा उनका कृतज्ञ बना रहूँगा।

नवीन प्रेस के कम्पोजिटर श्री विभूति सिंह ने जिस दक्षता के साथ इस ग्रन्थ के वंशवृक्षो का चार्ट कम्पोज किया, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। उनको मुद्रण-कला-प्रवीण कहना चाहिये। श्री रामलोचन जी, एम० ए० ने प्रूफ-संशोधन मे समय-समय पर विशेष सहायता दी है अत, उनको हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ।

जिन शुभचिन्तको एव मित्रो ने प्रकाशनार्थ सहायता दी है, उनके लिये कृतज्ञता-ज्ञापन करता हूँ।

शर्मा-सदन, पृथ्वीपुर
पटना – ३
दि० ३०–१२–१९६५

सुमन्त शर्मा

संकेताक्षर

अ० = अध्याय

अ० पु० = अग्नि पुराण

अ० वे० = अथर्व वेद

ई० पू० = ईसामसीह के पहले

एच० पी० = हिस्ट्री आफ पर्शिया

ऐ० ब्रा० = ऐत्रेय ब्राह्मण

ऋ० = ऋग्वेद

ऋ० वे० = ऋग्वेद

कथा स० सा० = कथा सरित सागर

जै० ब्रा० = जैमिनीय ब्राह्मण

तै० ब्रा० = तैत्तिरीय ब्राह्मण

द्वि० = द्वितीय

प० पु० = पद्मपुराण

पार्जिटर = एन्शियन्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन

प्र० = प्रथम

प्रधान = क्रोनोलाजी आफ एन्शियन्ट इण्डिया

ब्रह्म = ब्रह्मपुराण

भाग० = भागवत पुराण

महा भा० = महाभारत

मै० ब्रा० = मैत्रेय ब्राह्मण

वायु = वायु पुराण

वि० पु० = विष्णु पुराण

हरि० = हरिवंश पुराण

विषय-सूची

खण्ड पहला

विषय-प्रवेश

विषय		पृष्ठ

खण्ड दूसरा

सतयुग-कृतयुग

वर्तमान मानव सृष्टि का प्रजापति–वंशारम्भ ४०२२ ई० पू०

प्रजापति-परिचय

(पूर्वार्द्ध)

खण्ड तीसरा

प्रजापति परिचय (उत्तरार्द्ध)

(ईरान-पर्शिया मे भारतीय आर्यों का प्रवेश)

(३०४२ ई० पू०)

खण्ड चौथा

सतयुग का अन्तिम चरण

(महा जलप्रलय के बाद)

वर्तमान मानव सृष्टि की वृद्धि और विकास

(अदिति, कश्यप, देव, इन्द्र, असुर, रुद्र आदि)

देव-असुर-काल

२७६२ ई० पू० से २६६२ ई० पू० तक

विषय — पृष्ठ

खण्ड पाँचवाँ

त्रेतायुग-भोगकाल १०९२ वर्ष

२६६२ ई० पू० से १५७० ई० पू० तक

(सातवें मनुवैवस्वत से दाशरथी राम तक)

खण्ड आठवाँ

त्रेतायुग—भोगकाल १०९२ वर्ष

चन्द्रवंश—शाखा राज्य

(मनुर्वैवस्वत, चन्द्र से सार्वभौम तक)

खण्ड छठवाँ

त्रेताकाल । सूर्यराजवंश-शाखा

खण्ड सातवाँ

त्रेतायुग-भोगकाल १०९२ वर्ष

[मुख्य चन्द्र राजवंश = इलावंश = पुरुवंश २६६२ ई० पू० से १५७० ई० पू० तक

(चन्द्र-बुध से सार्वभौम ३९ तक)

खण्ड आठवाँ

त्रेतायुग—भोगकाल १०६२ वर्ष

चन्द्रवंश—शाखा राज्य

(मनुवैवस्वत, चन्द्र से सार्वभौम तक)

खण्ड नवाँ

द्वापरयुग—भोगकाल ४२० वर्ष

(१५७० ई० पू० से ११५० ई०पू० महाभारत संग्राम तक)

खण्ड दसवाँ

कलियुग

(महाभारत संग्राम के बाद)

खण्ड ग्यारहवाँ

खण्ड बारहवाँ

खण्ड तेरहवाँ

परिशिष्ट

खण्ड पहला

१—भारतवर्ष

प्रथम मनु[१] स्वायम्भुव ने ४०२२ ई० पू० विश्व-साम्राज्य की नींव डाली। वे ही प्रथम प्रजापति[२] हुए। उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रियव्रत दूसरे प्रजापति[३] बने। उस समय तक सागरों तथा स्थानों के नामकरण नहीं हुए थे। इसलिये उन्होंने सर्वप्रथम सात सागरों तथा सात द्वीपों के नामकरण किये।[४] उनमें एक द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा, जिसके अधीश्वर उनके ज्येष्ठ पुत्र आग्नीध्र तीसरे प्रजापति[५] के नाम से विख्यात हुये। ज्येष्ठ पुत्र ही मूलराजगद्दी के उत्तराधिकारी हुआ करते थे।[६]

मूलवंश-वृक्ष
(४०२२ ई० पू० से)

१. प्रजापति मनु स्वायम्भुव
|
२. ,, प्रियव्रत
|
३. ,, आग्नीध्र
|
४. ,, नाभि
|
५. ,, ऋषभदेव
|
६. ,, भरत-मनुर्भरत-जड़भरत

इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' विख्यात हुआ।
(भागवत, विष्णु तथा मत्स्यपुराण)

महाराज आग्नीध्र के नौ पुत्र राज्याधिकारी होने के इच्छुक हुये।[७] इसलिए उन्होंने जम्बूद्वीप के नौखण्ड किये तथा नवों पुत्रों को एक-एक खण्ड का अधिपति बना दिया।[८] तदोपरान्त उन्हीं के नाम पर भूखण्डों का नाम भी रख दिया। जम्बूद्वीप के बीच का भूखण्ड 'नाभि' नामक पुत्र को मिला जो 'नाभि वर्ष' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस नाभिवर्ष का नाम पहले हिमवर्ष, हिमवान् तथा हिमवर्त आदि था।

---

१. भागवत, विष्णु तथा हरिवंशपुराण। मनु=मनुष्यों के नेता (ऋग्वेद १०।६२।११) २. प्रजापति=प्रजा का पालनकर्ता अर्थात् राजा। ३. भागवत ५।१।६। ४. भाग० ५।१।४० ५. भाग० ५।१।३३। ६. राजवंशों की प्रणाली देखने से मालूम होता है। ७. भाग० स्कन्ध ५। ८. भाग० स्कन्ध ५।

"हिमा ह्वयं तुवै वर्षं नाभेरासीन्महात्मनः" (विष्णु पु० २।१।२७)

'नाभिवर्ष' के अधीश्वर चौथे प्रजापति महाराज नाभि बड़े ही महात्मा हुये। इनके एक ही पुत्र ऋषभदेव थे जो पाँचवें प्रजापति तथा जैनधर्म के आदि प्रवर्त्तक हुये।

पिता ऋषभदेव ने वन जाते समय अपना राज्य अपने ज्येष्ठ पुत्र भरतजी को दिया अतः तबसे यह देश (हिमवर्ष-नाभिवर्ष) इस लोक मे भारतवर्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ। यथा—

"ततश्च भारतंवर्ष मे तल्लोकेषु गीयते।
भरताय यतः पित्रा दत्तं प्रतिष्ठाता वनम्॥" (विष्णु पु० २।१।३२)

श्रीमद्भागवत पुराण का कथन भी इसी बात का समर्थन करता है—

इस वर्ष को जिसका नाम पहले अजनाभ वर्ष था, उसी का नाम प्रजापति 'भरत' के नाम पर भारतवर्ष या भरत-खण्ड पड़ा[1] है। भरत जी भाइयों मे सब से बड़े और श्रेष्ठ गुण वाले थे, इसलिये उन्ही के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ। यथा—

"येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीत्।
येनेदं वर्षं भारतमिति व्यपदिशन्ति।" (भाग० ५।४।९)

पुनः

"प्रियव्रतो नाम सुतो मनोः स्वायंभुवस्यह।
तस्यांग्नीध्रस्ततो नाभिऋषभस्तत्सुतस्ततः।
अवतीर्णं पुत्रशतं तस्यासीद् ब्रह्म पारगम्।
तेषां वै भरतो ज्येष्ठो नारायण परायणः।
विख्यातं वर्षं मे तद्यन्नाम्ना भारतमुत्तमम्। (श्रीमदभागवत)

विष्णु पुराण मे लिखा है कि—समुद्र के उत्तर मे हिमालय के दक्षिण तय के देश का नाम भारतवर्ष है। यहाँ के लोग भरत की सन्तान हैं। इस देश का विस्तार नौ हजार योजन अर्थात् ३६००० कोस है। परन्तु आजकल भारतभूमि का विस्तार १३ लाख ८८ हजार ९ सौ ७२ वर्ग मील माना जाता है।[2] यथा—

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भरतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥
नवयोजन साहस्रो विस्तारोऽस्य महामुन।"

---

१. श्रीमद्भागवत ५।७।२-३। २. पाकिस्तान को घटा देना होगा।

मत्स्य पुराण (अ० ११४, पृष्ठ ८८) में लिखा है—

"भरणात्प्रजनाच्चैव मनुर्भरत उच्यते।
निरुक्त वचनैश्चैव वर्षं तद्भारतं स्मृतं ॥"

अर्थात् प्रजाओं की उत्पत्ति और भरण-पोषण करने से मनुभरत कहलाता है और उसी के नाम की व्याख्या के अनुसार इस देश को "भारत" कहते है।

शब्द कल्पद्रुम (काण्ड तृतीय पृष्ठ ५०१) मे निम्न प्रकार लिखा है :—

"हिमाह्वं दक्षिणं वर्षं भरतायददौपिता।
तसमाच्च भारतं वर्षं तस्य नाम्ना महात्मनः ॥

इन पौराणिक प्रमाणों मे यह स्पष्ट प्रमाणित है कि—इस देश का नाम 'भारत-वर्ष' छठें प्रजापति भरत के नाम पर विख्यात हुआ है।

विशेष—

आर्य-राजवंशवृक्ष मे 'भरत' नाम के दो राजे हुये है। प्रथम 'भरत' स्वायंभुव मनु की छठीं पीढ़ी मे छठें प्रजापति हुए, जिनके नाम पर इस देश का नाम भरत-खण्ड या 'भारत वर्ष' पड़ा। इनका राज्याभिषेक ३८८२ ई० पू० हुआ। उस समय सत्ययुग का आरंभिक काल था।

दूसरे 'भरत' नामक राजा त्रेता युग मे हुये। यह स्वायंभुव मनु से ६९ वीं पीढ़ी मे थे। इनका राज्याभिषेक २०७४ ई० पू० हुआ। इसलिये दोनों भरतों के बीच मे (३८८२-२०७४=) १८०८ वर्ष का अन्तर पड़ा। यही बात इस प्रकार भी कही जा सकती है कि प्रथम भरत के लगभग दो हजार (२०००) वर्ष बाद दूसरे भरत का राज्याभिषेक हुआ। प्रथम भरत मनुर्भरत के नाम से पुराणों मे प्रसिद्ध हैं। दूसरे भरत राजा दुष्यन्त और उनकी पत्नी शकुन्तला के पुत्र के नाम से विख्यात है। यह भी महान चक्रवर्ती हुये। इसलिये केवल मत्स्य पुराण मे इनको भी 'भारत' कहा गया है। पाठकों को यहां पर यह स्मरण रखना चाहिये कि इस दौष्यन्ती भरत से लगभग दो हजार वर्ष पहले ही इस देश का नाम भारतवर्ष मनुर्भरत के नाम पर पड़ चुका था। कुछ लेखक भ्रमवश इस देश का नामकरण दौष्यन्ती भरत के नाम पर हुआ, ऐसा लिखा करते है जो नहीं लिखना चाहिये।

सतयुग और त्रेता के राजवंशों की कड़ी मे मनुर्भरत एक ऐसी कड़ी है जो दोनों को मिलाती है। यदि प्रथम भरत के नाम पर इस देश का नामकरण नहीं मानते हैं तो स्वायंभुव मनु से दश तक ४५ पीढ़ियां तथा मरीचि-कश्यप और सूर्य-

विष्णु की दो पीढ़िया भी भारत मे अलग हो जाती है। वैसी परिस्थिति मे आर्यो का आदि देश ईरान ही मानना पडेगा, जो सत्य नही है। मुझे आश्चर्य होता है कि डा० राधा कुमुद मुखर्जी जैसे वयोवृद्ध, प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित ने दौष्यन्ती भरत के नाम पर इस देश का नामकरण हुआ ऐसा लिखा है—'फडामेंटल युनिटी आफ इण्डिया मे।' श्री पार्जीटर ने मनुर्भरत वश की ४५ पीढिया तथा देवो को भी भारत से अलग कर दिया है। सूर्य-पुत्र मनुवैवस्वत से ही भारत म आर्यो का राज्य माना है। उन्होने मनुवैवस्वत से राजा सगर तक सतयुग काल कहा है। और राजा सगर से राम तक त्रेता युग।[१] ऐसा लिखना बिल्कुल ही भ्रामक और तथ्यहीन है। ऐसा लिख कर प्राचीन भारतीय आर्य इतिहास को खण्डित करना है।

विद्यालय की पाठ्य पुस्तको मे राजा दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र भरत के ही नाम पर इस देश का नामकरण 'भारत हुआ' ऐसा लिखा जाता है, जो भारतीय इतिहास के प्रति घोर अन्याय है।

जब नाभि, ऋषभदेव और भरत को भारतीय सम्राट नही मानेंगे तब आर्यो का मूल स्थान मध्य एशिया मे मानना ही पडेगा। परन्तु ससार मे ऐसा कोई प्रमाण नही है, जिसके आधार पर उन लोगो को भारतीय सम्राट नही माना जाये। दौष्यन्ती भरत ने अनेक अश्वमेध यज्ञ किये यह ब्राह्मण ग्रन्थो द्वारा प्रमाणित है, परन्तु किसी ग्रन्थ मे यह नहीं लिखा है कि दौष्यन्ती भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पडा। शकुन्तला नाटक मे तो बहुत सी बातें काल्पनिक है।

मनुर्भरत के ही वंशवृक्ष की ३६वी पीढी म चाक्षुष मनु हुये है। उनके पुत्रो ने ईरान-पर्शिया, मिस्र तथा अफ्रीका आदि देशो को जरूर जय किया था। उसके बाद महा जलप्रलयकाल मे उन लोगो की जनसख्या वहां घट गई। परन्तु ४५वीं पीढी मे दक्ष प्रजापति हुए। उनकी कई पुत्रियों के विवाह मरीचि पुत्र कश्यप के साथ हुये। जिनसे दैत्य, दानव, असुर आदि और वरुण, विष्णु सूर्य आदि देवो का जन्म हुआ। उसी काल म इन्द्र भी हुए। इनलोगो ने मध्य एशिया मे अपना राज्य विस्तार खूब ही किया। ६४५ ईस्वी पूर्व तक ईरान मे असुर राजा वाणीपाल का राज्य था। यह सब होते हुए भी इनलोगो की प्रधान राजधानी भारतवर्ष मे ही रही। जैसे अग्रेज जाति ने दो सौ वर्षो तक भारत मे राज्य किया, परन्तु उनकी प्रधान राजगद्दी इगलैण्ड मे ही रही। वे भारत के सम्राट

१. देखिये-Ancient Indian Historical Tradition by F E. Pargiter.

कहलाते हुए भी इगलिशमैन ही कहलाये। वैसे ही देव-आर्य मध्य एशिया तथा भारत मे राज्य करते हुए भी भारतीय ही कहलाये। [इसीलिये इजिकिल, जेनेमिस तथा अन्यान्य ईरान-पर्शिया के इतिहासकारो ने आर्यों को विदेशी कहा है। आर्यो के विषय मे साइक्स (Sykes) का कथन इस प्रकार है—

"......none of whom is a native of the country"[१]]

२—आर्य्यावर्त्त

आर्यों के मूल निवास स्थान तथा राज्य को आर्यावर्त्त देश कहते है। आर्यावर्त्त का निर्माण देव-आर्य-विद्वान-श्रेष्ठजनों ने ही किया था। उसकी सीमायें इस प्रकार थी—

उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम मे समुद्र तथा सरस्वती नदी (काश्मीर मे), पश्चिम मे अटक नदी, पूर्व मे दृषद्वती, जो नेपाल के पूर्वभाग पहाड़ से निकल कर बगाल-आसाम के पूर्व और बर्मा के पश्चिम की ओर होकर दक्षिण के समुद्र मे मिली है, जिसको ब्रह्मपुत्रा कहते है। हिमालय की मध्य रेखा से दक्षिण और पहाड़ो के भीतर रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने स्थान हैं उन सबको आर्यावर्त्त कहते हैं।

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधाः॥ (मनुस्मृति अ० २ श्लोक २२)

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते॥ (मनुस्मृति अ० २ श्लोक १७)

---

१. (History of Persia Vol. 1, 73, 74)

३—भारतीय आर्य

'आर्य' और 'दस्यु' दोनो शब्दो का निर्माण भारतीय आर्यों के पूर्व पुरुषो न वर्त्तमान मानव राज्य के आरम्भिक काल मे ही किया था। उस समय तक किसी तरह का सामाजिक सगठन नही था। राजनीति की उत्पत्ति भी नही हुई थी। विश्व मे स्थानो के नामकरण भी नही थे। उस समय तक कोई नेता या नगर-जनपद भी नही था। छोटी-छोटी टोलियो म मानव रहत थे। उसी काल मे एक पुरुष काश्मीर-जम्मू मे स्वय अपने प्रभाव से मनु[1] बन गये। इसीलिये उनकी सज्ञा स्वायभव मनु की हुई। प्रजाओ की उत्पत्ति होन के बाद स्वायभुव मनु की उत्पत्ति हुई।"[2] स्वायभुव मनु ही सर्वप्रथम विश्व-प्रजापति (सम्राट्) बने। मनु के सगे सम्बन्धी तथा परिवार-परिजन के लोग विद्वान्, श्रेष्ठ, शिक्षित तथा सभ्य थे। दूसरे लोग अशिक्षित और असभ्य थे। दोनो तरह के लोगो के लिये विद्वानो ने दो शब्द निर्माण किये। श्रेष्ठ, विद्वान, सभ्य और शिक्षित जनो के लिय आर्य और अशिक्षित तथा असभ्यजनो के लिये दस्यु-अनार्य-अनाडी—इसके समर्थन मे ऋग्वेद का यह मन्त्र है—

"विजानी ह्यार्यान्येच दस्य वो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान।"[3]

आज भारत मे जैसे काग्रेस सगठन है और उसके जो सदस्य सगठन-विरोधी कार्य करते है, उन पर अनुशासन की कार्रवाई होती है वैसे ही उन लोगो का भी कालान्तर मे शनै शनै जब शक्तिशाली आर्य-सगठन बन गया तब उस सगठन मे भी जो कोई सगठन विरोधी कार्य करता था, उसको भारत छोडकर बाहर चले जाने की आज्ञा होती थी। वे लोग दक्षिणारण्य तथा आन्ध्रालय (आस्ट्रेलिया) मे चले जाते थे। धीरे-धीरे उन बहिष्कृत लोगो का भी एक प्रबल आर्य विरोधी सगठन हो गया। उन्ही विरोधियो के वशज आज 'रामायण' को जलाते हैं। इसके पुराणो तथा प्रमाण वैदिक-साहित्य म अनेक हैं। हरिश्चन्द्र के द्वारा शुन शेप के बलिदान के समय विश्वामित्र ने अजिगर्त ऋषि के ५० परिजनो को देश से निकाल दिया था। वे लोग भी वही चले गये थे। कुछ कालोपरान्त पुन भारत मे आ गये।

स्वायभव मनु का काल आज से लगभग छै हजार वर्ष पहल अर्थात् ४०२२ ई० पू० है। उनकी पत्नी का नाम शतरूपा था।[4] उनके दो पुत्र हुय—प्रियव्रत और उतानपाद। प्रियव्रत दूसरे प्रजापति हुये। इन्होने सम्पूर्ण विश्व को सात

---

१ मनुष्यों के नेता (ऋग्वेद १०।६२।११)। २ हरिवंशपुराण अध्याय २ श्लोक १।
३ (ऋग्वेद १।५१।८)। ४. हरिवश पुराण।

द्वीपो मे नामकरण के साथ विभक्त किया (भागवत)। एक-एक द्वीप का अधिपति अपने एक-एक पुत्र को बनाकर वहा-वहा भेज दिया। एक पुत्र आग्नीन्ध्र को जम्बूद्वीप देकर अपने पास रख लिया।

हम लोगो का देश जिस द्वीप के अन्तर्गत पडा, उसका नाम जम्बूद्वीप था। जम्बूद्वीप के अधीश्वर प्रजापति आग्नीन्ध्र हुये (वि० पु० २।१।१५)। महाराज आग्नीन्ध्र के नौ पुत्र वयस्क होने पर राज्याधिकार के लिये इच्छुक हुये। इसलिये उन्होने जम्बूद्वीप के नौखण्ड किये और सभी पुत्रो को एक-एक खण्ड का अधीश्वर बना दिया। हम लोगो का देश जिसको मिला, उसका नाम 'नाभि' था। नाभि अपने सभी भाइयो मे मध्य का था, इसलिये उसको जम्बूद्वीप का मध्य भाग मिला। नाभि के राज्य का नाम 'नाभिखण्ड-वर्ष' पडा। पिता आग्नीन्ध्र ने हिमालय से दक्षिण की ओर का हिमवर्ष, जिसे अब भारतवर्ष कहते है, नाभि को दिया (वि० पु० २।१। १८)। चौथे प्रजापति नाभि को एक ही पुत्र हुआ, जिसका नाम ऋषभदेव पडा। ऋषभदेव के वयस्क होने पर राज्याभिषेक हुआ। तत्पश्चात् नाभि महाराज तपस्वी बन गये। ऋषभदेव जैनधर्म के आदि प्रवर्त्तक हुये। इनके कई पुत्र हुये, जिनमे सबसे बडे का नाम भरत था। पीछे उन्ही को जडभरत तथा मनुर्भरत भी कहा गया। पुराणो मे सत्ययुग के राजवशो का वर्णन मनुर्भरत वश के ही नाम से है। युवराज भरत के वयस्क होने पर ऋषभदेव ने उनके राज्याभिषेक के समय यह घोषित किया कि "आज से हमारे देश नाभिवर्ष का नाम भारतवर्ष-भरतखण्ड रहेगा।" सभी भाइयो मे श्रेष्ठ गुणवाले भी यही थे—

"येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीत्।
येनेदं वर्षं भारतमिति व्यपदिशन्ति।" (भागवत[1] ५।४।९)

उसी दिन से इस देश का नाम भरतखण्ड—भारतवर्ष हो गया जो आजतक है। भरत का राज्य काल ३८८२ ई० पू० से आरम्भ होता है। जम्बूद्वीप की राजधानी वर्त्तमान जम्मू[2]-काश्मीर मे थी। वही भरत की राजधानी रही। क्योंकि इनके अन्यान्य भाई तो हिमालय के उस पार इलावर्त्त तथा सुमेरु आदि खण्डो मे चले गये थे। ऋग्वेद से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि सरस्वती नदी से सिन्धु नदी तक आर्यो का राज्य आरम्भ मे ही था। सरस्वती नदी काश्मीर मे ही सर्वविदित

---

१. अन्यान्य प्रमाण के लिये इसी पुस्तक के आरम्भ में 'भारतवर्ष' शीर्षक देखिये।
२. 'जम्बू' शब्द का विकृत रूप 'जम्मू' है।

है। यही पर इनके पूर्वजों की जन्मभूमि भी थी। पाश्चात्य विद्वानों का कहना है कि आर्यों का विशुद्ध रक्त अब केवल काश्मीर में ही है। यह कथन भी मेरे कथन की पुष्टि करता है। नाभिखण्ड का नाम पहले 'हिमवान-हिमवर्ष' था। इस नाम से यह प्रमाणित होता है कि वहाँ पर उस समय बर्फों का हो देश रहा होगा। इसलिये आर्यों की जैसी आकृति-प्रकृति का वर्णन किया जाता है, वैसी वहीं रही होगी। आज से ६००० वर्ष पहले हिमवर्ष के आर्यों की वैसी आकृति-प्रवृत्ति नहीं थी, ऐसा कहने का कोई आधार तर्कयुक्त नहीं हो सकता।

भरत के बाद उनके पुत्र सुमति सातवें प्रजापति हुये। सुमति के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र इन्द्रद्युम्न आठवें प्रजापति हुय। भरत की तरह इन्होंने भी अपना राज्य-विस्तार किया। यह एक बड़े प्रभावशाली प्रजापति हुये। इन्द्रद्युम्न के ज्येष्ठ पुत्र परमेष्ठी नवें प्रजापति हुये।

स्वायंभुव मनु की तीन पुत्रियां थी, जिनमे एक का विवाह कर्दम प्रजापति के साथ हुआ था। साम्ख्य शास्त्र के निर्माता 'कपिल' इसी कर्दम प्रजापति के पुत्र थे। कपिल ने 'साख्य' में निरीश्वरवाद का प्रतिपादन किया। ऐसा प्रतिपादन करने का कारण यह मालूम होता है कि उस आदिकाल में प्रजापतियों का कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा था, परन्तु वे लोग ज्येष्ठ पुत्र के वयस्क होते ही स्वयं भगवान की भक्ति के लिये तपस्वी होकर वन में चले जाते थे।

नवें प्रजापति परमेष्ठी को कपिल का 'साख्य' पसन्द नहीं हुआ। इसलिये उन्होंने एक सूक्त (स्तोत्र) बनाकर ऋग्वेद की रचना का श्रीगणेश कर दिया। वह सूक्त ऋग्वेद के दशम् मण्डल का १२९वां है। उस सूक्त में निराकार ब्रह्म (ईश्वर) का प्रतिपादन किया गया है। सम्पूर्ण ऋग्वेद में वही एक सूक्त निराकार ईश्वर की कल्पना करता है। विवस्वान-आदित्य का एक सूक्त दशवें मण्डल का १३वां है, जिसके तीसरे मन्त्र में उन्होंने ईश्वर के 'ॐ' नाम की स्तुति की है।

प्रजापति परमेष्ठी का राज्यकाल ३७९८ ई०पू० आरंभ हुआ था और विवस्वान-सूर्य का २७१२ ई० पू०।

इसी तरह से प्रियव्रत शाखा में ३५ प्रजापति हुये। ज्येष्ठ पुत्र ही एक के बाद दूसरे उत्तराधिकारी होते गये। ३५ प्रजापतियों का भोगकाल ४०२२ ई० पू० से ३०४२ ई० पू० तक रहा। इस प्रकार प्रियव्रत-शाखा का राज्यकाल भारतवर्ष में (४०२२-३०४२ =) ९८० वर्षों तक रहा। इस शाखा में पाँच मनु हुये। प्रथम मनु स्वायंभुव थे। उनके अनन्तर क्रमश: स्वारोचिष, उत्तम, तामस और रैवत हुए। छठे

मनु चाक्षुष थे, (वि० पु० ३।१।६)। ये छै मनु पूर्व काल में हो चुके है। इस समय मनु सूर्यपुत्र वैवस्वत है, जिनका यह सातवा मन्वन्तर वर्त्तमान है[१]।

दूसरे स्वारोचिष मन्वन्तर मे पारावत 'विपश्चित्' देवराज 'इन्द्र' थे[२]।

तीसरे मन्वन्तर मे उत्तम नामक मनु और 'सुशान्ति' नामक देवाधिपति 'इन्द्र' थे[३]।

चौथे तामस मन्वन्तर मे सौ अश्वमेध यज्ञवाला राजा 'शिवि' 'इन्द्र' थे[४]।

पाचवें मन्वन्तर मे रैवत नामक मनु और 'विभु' नामक 'इन्द्र' हुये[५]।

छठें मन्वन्तर मे चाक्षुष नामक मनु और 'मनोज' नामक 'इन्द्र' थे[६]।

प्रियव्रत शाखा का भोग काल ९८० वर्ष है—जिसम पाच मनु और ३५ प्रजापति हुये। केवल प्रथम मनु ही स्वय प्रजापति भी बने। इससे यह प्रकट होता है कि प्रजापतियो के ऊपर कूटनीतिक सावधानी रखने के लिये मनु (नेता) तथा इन्द्र रहा करते थे। इस प्रकार देश मे—मनु, इन्द्र तथा प्रजापति तीन की प्रधानता रहती थी।

पुत्राभाव मे ३५वी पीढी मे प्रियव्रत शाखा समाप्त हो गई। तब उत्तानपाद शाखा से 'चाक्षुष' आये और इसी शाखा ने ३६वें प्रजापति तथा छठें मनु के नाम से विख्यात हुये। उनका राज्यकाल ३०४२ ई० पू० आरभ हुआ।

शाकद्वीप (ईरान)-विजय

चाक्षुष मनु के पाच पुत्र और एक पौत्र छै बडे ही शूर-वीर विजेता हुये। *अत्यराति जानन्तपति, अभिमन्यु मन्यु-मेमनन, उरु, पुरु, तपोरत आदि पाँच पुत्र* और उर-पुत्र अगिरा यही छै ईरान क आदि भारतीय आर्य विजेता तथा निर्माता हैं। ३०४२ ई० पू० इन लोगो न शाक द्वीप—ईरान-पर्शिया पर अभियान किया। वहा जाते ही इन लोगो की विजय का डका बज गया। जहा गये, वहा के लोग *इनके भय से ही भागते गये। इन लोगो के राज्य स्थापित होने मे वहाँ देर नहीं लगी। वहा जो लोग पहले गये थे, वे भी इन्ही के पूर्वज थे। तीसरे प्रजापति* आग्नीन्ध्र ने ही अपने पुत्रो को वहा भी भेजा था। चौथे प्रजापति महाराज नाभि के ही आठ भाई उधर गये थे। नाभि का वश वृक्ष भारत मे और इनके भाइयो का वश वृक्ष इलावर्त, सुमेर, शाकद्वीप आदि स्थानो मे बढा। सभव है भारत

१ (विष्णु पु० ३।१।७)। २. (वि०पु०३।१।१०)। ३. (वि०पु० ३।१।१३)। ४. (वि०पु० ३।१।१७)। ५ (वि० पु० ३।१।२०)। ६ (वि० पु० ३।१।२६)।

ने दस्यु-अनार्य भी हुए हों। जिस समय महाराज नाभि के बन्धु-बान्धव ईरान की तरफ गये थे, उस समय दस्यु-अनार्य भी उधर गये। वे ही लोग वहां पर इथोपियन कहलाये। उन लोगों का रंग काला कहा गया है, जो आजतक वर्तमान है। इसी आधार पर मिस्टर टाड ने अपने टाडराजस्थान में इथोपियनों को भारतीय कहा है ("·····the Ethiopians were Indians)। अंग्रेजी भाषा के ओडेसी काव्य में ट्राय युद्ध का वर्णन है। उसमें आर्यों और अनार्यों के ही युद्ध का बखान है। इथोपियन भारतीय दस्यु-अनार्य थे और जोराष्ट्रियन भारतीय आर्य थे। सुषा के महाराज मनु तो आर्य थे ही जो ट्राययुद्ध में विजयी हुए थे।

महाराज अत्यराति जानन्तपति को भारतीय ग्रन्थ में 'आसमुद्रक्षितीश' कहा गया है।[१]

स्वायम्भुव मनु से महाभारत सग्रामकाल के बीच में १६ चक्रवर्ती सार्वभौम राजे हुये है, जिनमें जानन्तपति का स्थान सर्वोपरि है। अत्यराति के वशज अर्राट कहाते है। उन्ही के नाम पर आरमीनिया प्रान्त है। ईरान में आज तक अत्यराति के स्मारक रूप में अर्राट पर्वत है। अत्यराति की राजधानी सुमेरु के निकट वैकुण्ठधाम में थी। सत्य लोक (सत्यगिद्दी) भी वहा से निकट ही था। वर्तमान भारत को छूता हुआ पर्शिया का जो पूर्वी प्रान्त है, वही सत्य लोक (सत्यगिद्दी) के नाम से विख्यात था।[२]

अभिमन्यु—मन्यु भी बड़े ही शूर-वीर थे। इन्होंने भी ईरान में ही वेरसा नदी के तट पर १४००० फुट की ऊँचाई पर अपनी राजधानी बनाई थी, जिसका नाम मन्युपुरी "सुषा" था। सुषा का वर्णन पुराण में भी है, यथा——

"सुषा नाम पुरी रम्या वरुणस्यापि धीमतः" (मत्स्यपुराण अ० १२३, श्लोक ७०)। हिस्ट्री आफ पर्शिया, (जिल्द १, पृ० ५९) में सुषा के विषय में इस प्रकार लिखा है—"Susa or Sush or the city of Memnon, the ancient capital of Elam[३] and the oldest known site in the world."

---

१. ऐतरेय ब्राह्मण ८।४।१। २. Saddagydia, the Eastern Province of Persia (हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, १७५)। ३. इलावर्त्त—भारत के महाराजनाभि के भाई का नाम इलावर्त था, उन्हीं को उनके पिता आग्नीन्ध्र ने दिया था। उसी समय उन्हीं के नाम पर उस भूखण्डका नाम इलावर्त पड़ा, जो हिमालय के उस पार था। उसी का नाम एलम हो गया।

अभिमन्यु ने अर्यनम (Arranem) मे अपने नाम पर अभिमन(Aphumon) दुर्ग का निर्माण किया था। जैसे भारत मे महाभारत-युद्ध हुआ था, वैसे ही वहा भी ट्राय (Troy) युद्ध हुआ था। उस युद्ध मे अभिमन-दुर्ग से अपनी सेना लेकर मन्यु महाराज गये थे। वहा के विरोधी इथोपिय भी प्राचीन भारतीय दस्यु थे। उसी युद्ध का वर्णन करते हुये ओडेसी (Odyssey) काव्य मे होमर ने मन्यु-मेमनन की बहादुरी का वर्णन इस प्रकार किया है—

"To Troy no here came of nobler line,
Or if of nobler, Memnon[1] it was thine"

मन्यु महाराज के ही भाई 'उर' थे, जो ईरान मे ही उर देश तथा उर राजवश के सस्थापक थे। 'उर' का वर्णन ऋग्वेद मे भी है।[2] ये अपने पिता चाक्षुप मनु के ३७वे उत्तराधिकारी थे।

महाराज उर का राज्य एलाम-बैबीलोनिया मे था, जिसे आजकल ईराक कहते है। उरलोक को ही भूतत्ववेत्ता आजकल इराक प्रमाणित करते है।

महाराज 'उर' के भाई-'तपोरत' का राज्य ईरान के तेपुरिया प्रान्त मे था। इनके भाई 'पुरु' ने भी अपना अलग राज्य स्थापित किया था। महाराज पुरु के ही नाम पर पुरशिया बना जो पीछे पर्शिया हो गया। महाराज उर के उत्तराधिकारी उनके पुत्र 'अग' हुए। उनके एक दूसरे पुत्र का नाम अगिरा था, जिन्होने कुश द्वीप (अफ्रीका)[3] को जय किया था। अगोरा पिक्यूना के निर्माता वही थे—जो अफ्रीका के पश्चिम-दक्षिण कोने पर है।

इतना कहने का मतलब यह है कि चाक्षुप मनु के पुत्रो द्वारा ३०४२ ई० पू० से भारतीय आर्यो का साम्राज्य वर्त्तमान ईरान-पर्शिया, मिश्र, पेलेस्टाईन, आन्ध्रालय (आस्ट्रेलिया), अफ्रीका आदि देशों तक विस्तृत हो गया। उस समय से ६४५ ई० पू० तक असुर सम्राट वाणीपाल का राज्य वहाँ रहा। उससे पहले ही आर्यो का पैर वहाँ स उखड चुका था।

---

१ मन्यु को ही ग्रीक में मेमनन कहा गया है।

२ ये अभ्रमास उरवोवहिष्ठास्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम्। ऋ० ६।२१।१२
चित्र सेना इपुवला अमृध्रा सतोवीरा उरवो व्रात साहा॥ ऋ० ६।७५।६

३ कुशद्वीप या अफ्रीका टाड राजस्थान।

[४०२२ ई० पू० से भारत (हिमवर्ष) मे आर्य-राज्य अरभ हुआ। प्रथम प्रजापति स्वायभुव मनु हुये। ४५ पीढियो तक उनका राजवश चला। ४५ वी पीढी मे दक्ष प्रजापति हुये। पुत्राभाव मे उनका वशवृक्ष समाप्त हो गया। तब उनकी पुत्रियो का विवाह मरीचि प्रजापति के पुत्र कश्यप के साथ हुआ। कश्यप प्रजापति की भिन्न भिन्न पुत्रियो से भिन्न-भिन्न राजवश चले। मरीचि-कश्यप की पत्नी दिति स दैत्य, दनु से दानव और अदिति से आदित्य वश चले। दैत्य-दानव मिलकर पीछे अपने को असुर कहने लगे। जैसे देवो की आर्य सस्कृति थी, वैसे ही असुरो ने अपनी अलग सस्कृति बनाई, जिसका नाम रक्ष सस्कृति पडा—इसलिये वे लोग अपने को राक्षस भी कहने लगे।

आदित्यवश वाले बारह भाई थे। इनमे सबसे बडे का नाम वरुण और सबमे छोटे का विवस्वान था। ये भिन्न-भिन्न नामो मे प्रसिद्ध है—जैसे विवस्वान, आदित्य, सूर्य, मित्र, विष्णु आदि। उसी समय ७ वें इन्द्र का भी जन्म हुआ। सूर्य के दो पुत्र हुये। मनुवैवस्वत और यम। यम के ही वश मे रूद्र हुये। रूद्र के ११ कुल चले जिनमे एक रुद्र का नाम शकर-महादेव-शिव आदि है। यम ईरान मे ही रहे। उन्ही के वश मे पारसी है। इसीलिये उनलोगो का अधिकतर नाम 'ज' अक्षर से आरभ होता है। जैसे जमशेद जी टाटा। यम से ही 'जम' हुआ।]

यम और शिव आर्य सगठन से अलग ही रहे। उधर [ईरान मे तो आर्य साम्राज्य विकसित हो रहा था परन्तु इधर भारत मे शिथिलता आ रही थी। इसलिये सूर्य-पुत्र मनु वैवस्वत को भारत का ४८वाँ शासक बनाया गया। नियमानुसार ज्येष्ठ आदित्य वरुण के पुत्र को ही भारत का उत्तराधिकारी होना चाहिये था, परन्तु वैवस्वत 'मनु' थे, इसलिये वही योग्य समझे गये।

'इला' नाम की मनु की एक पुत्री थी, जिसका विवाह चन्द्रमा के पुत्र बुध के साथ हुआ था। बुध का पुत्र पुरुरवा हुआ। मनु-पुत्री इला का राज्य इलावर्त-एलम (ईरान) मे भी था, इसलिये उसका पुत्र पुरुरवा इलावर्त्त और भारत दोनो जगहो का सम्राट हुआ। इसीलिये उसको एलपुरूरवा भी कहा जाता है।] इनमे पहले तक भारत मे आर्यों का राज्य सप्तसिन्धव प्रदेश मे ही विशेष रूप से फूल-फल रहा था, परन्तु मनुवैवस्वत ने मध्य भारत को अविकसित समझकर यही अपनी राजधानी बनाना उचित समझा और अपने दामाद को भी अपने आस-पास ही प्रतिष्ठान मे रखा। [सूर्य-

पुत्र मनु वैवस्वत ने अपने पिता सूर्य के नाम पर कोशल-अयोध्या में सूर्य राजवंश की स्थापना की। उनके दामाद बुध ने उन्हीं की राय से अपने पिता चन्द्र (चन्द्रमा) के नाम पर प्रतिष्ठान-झूसी-प्रयाग में 'चन्द्रवंश' राज्य की नींव दी। पीछे उन्हीं के वंशधर हस्तिनापुर में भी गये। उन्हीं लोगों ने ११५० ई०पू० में महाभारत संग्राम भी किया। उस संग्राम में ईरान से भी आर्य राजे आये थे। ये बातें प्रमाणित हैं—भारतीय पुराण तथा ईरान के प्राचीन इतिहास से भी। यहाँ पर वास्तविक बात यह है कि १००० वर्षों तक भारत में काश्मीर से सिन्धु नदी तक राज्य करने के पश्चात् भारतीय आर्यों की इच्छा राज्य विस्तार करने की हुई। इसलिये वे शाक-द्वीप (ईरान) की तरफ गये। वहाँ पर अपना सिक्का जमाकर वहाँ के सर्वे-सर्वा बन गये। उसी समय से अर्थात् ३०४० ई० पू० से वे लोग ईरान का निर्माण करने लगे। कुछ दिनों के बाद वहाँ जलप्रलय भी हुआ। तथापि वहाँ से कभी हटे नहीं। वहाँ से भी बेदखल नहीं हुए। इसीलिये उनका लगातार इतिहास और वंशवृक्ष वहाँ लिखा गया जो पुरानों में आजतक सुरक्षित है। ईरान के इतिहास-कारों ने सदा इन लोगों को विदेशी कहा है। इतना ही नहीं बल्कि अहितदेव तथा शैतान भी कहा है। इन्द्र को ईरान के प्राचीन इतिहास में इन्द्रवोगस कहा गया है। आर्यों के विषय में ईरानी इतिहासकार ने लिखा है "none of the whom is a native of the country" (H P. Vol 1, 73,74) आर्य जहाँ गये वहाँ का निर्माण किया। उस देश को सँवारा, बनाया, बढ़ाया और समुन्नत किया। बड़े-बड़े नगरों का निर्माण किया। वहाँ स्वयं बैठकर वहाँ के राज्य का सुचारु रूप से संचालन किया।

भारत में भी दो सौ वर्षों तक अंग्रेजों का उपनिवेश था, परन्तु, उनके राज्य-परिवार विलायत में ही रहे। भारतीय आर्यों ने ऐसा नहीं किया। जहाँ गये, वहाँ परिवार के साथ। लेकिन भारत से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हुआ। भारतीय आर्य तो सदा राज्य विस्तार में रहे। दैत्य-दानव असुर और देव-आर्य आदि सौतेले भाई थे जो अपने में ही देवासुर संग्राम के नाम से तीन सौ वर्षों तक वहीं युद्ध करते रहे। परन्तु सदा वहाँ का विकास कार्य होता ही गया।

जिस समय ३०४० ई० पू० भारतीय आर्य ईरान में गये थे, उसके कुछ काल के बाद विश्वविख्यात जल-प्रलय भी हुआ था जिसमें ईरान की सृष्टि प्राय नष्ट हो गई थी। विशेषकर मन्यु महाराज की सुषापुरी मृत्यु लोक बन गई थी। मत्स्यराज की सहायता से उन्हीं की नौकाओं के द्वारा मन्यु महाराज ने सपरिवार

इसका अर्थ लोग यह कहते है कि श्रीकृष्ण मर गए। परन्तु इसका अर्थ मरना नही है। स्वर्ग-सर्ग देवो के स्थान का नाम था वही ईरानियो का बहिस्त-(अजरबेजान) कहलाता था। वह स्वर्ग देवो की नगरी सुरपुर थी। महाभारत सग्राम के बाद कृष्ण उसी स्थान पर चले गये थे। वहाँ जाने पर उन्होने अनेक छोटे-छोटे द्वीपो को जय किया। महाभारत सग्राम के बाद उन्ही के पास अर्जुन भी जा रहे थे, जो रास्ते मे हिमालय मे गल गये। इन्द्र के नन्दनवन को आजकल पारदिया प्रान्त कहते है (पर्शिया का इतिहास)। खाण्डव वन या नन्दन वन 'कबीर' के नाम से ईरान मे लवण सागर और क्षीरसागर के मध्य प्रदेश मे है (हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, २०)। पुराणो मे वर्णित 'उत्तर कुरु' को आज कुर्दिस्तान कहा जाता है। अपवर्त्त[१], नर्क[२], यमलोक[३], वैकुण्ठ[४], सत्यलोक (विष्णु पुराण) कल्पतरु (मत्स्यपुराण), सुरपुर (टाडराजस्थान), इन्द्रलोक (टाडराजस्थान), अत्रि आश्रम (भविष्य पुराण तथा हिस्ट्री आफ पर्शिया, (जिल्द १, ३१९, ३२१, ३६६)। बैबिलोनिया के सम्राट् पुरुरवा के पुत्र 'आयु' थे।[५] ईरानी जाति अयाति (Iatii) के वश मे है, जो दैत्य गुरु शुक्र तथा दैत्यपति वृषपर्वा के दामाद थे। (विष्णु भागवत तथा मत्स्यपुराण)। सावित्री के पिता अश्वपति भी भद्र के राजा थे। ईरान का मेडिया (Media) प्रदेश ही मद्रदेश था (कनिंघम का इतिहास २ री जिल्द)।

धृतराष्ट्र का विवाह गाधार जिसको 'काधार' कहते है, वहाँ की राजपुत्री से हुआ। माद्री पाण्डु की स्त्री 'ईरान' के मद्रपति की कन्या थी। अर्जुन का विवाह पाताल[६] मे वहाँ के राजा की लडकी 'उलोपी' के साथ हुआ था। श्रीकृष्ण तथा अर्जुन 'अश्वतरी'[७] पर बैठकर 'उद्दालक' ऋषि को लाने के लिये पाताल लोक मे गए थे। युधिष्ठिर के यज्ञ मे वही से उद्दालक ऋषि को लाया गया था।

महाभारत शान्ति पर्व मोक्षधर्म मे व्यास-शुक-सवाद है—जिसमे लिखा है—

मेरोर्हरेश्च द्वे वर्षे वर्षं हैमवतं तत.।
क्रमेणैव व्यतिक्रम्य भारतं वर्षमासदत्॥

---

१. हिस्ट्री आफ पर्शिया-जिल्द १, पृ० ३१६। २. हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १ पृ० १०२.
३. ,, ,, ,, ,, ,, १०३। ४. ,, ,, ,, ,, ,, १०३ (वि० पु०)
५. ,, ,, ,, २ ,, ५५। ६. अमेरीका को पहले पाताल लोक कहा जाता था परन्तु आजकल कुछ लोग अबीसिनिया को ही पाताल लोक कहते है। ७. अग्नियान-नौका।

प्राण बचा कर जहाँ पुनः आश्रय ग्रहण किया, उस स्थान का नाम आर्यवीर्यान (Adharbayjan) पडा। वहाँ उन्होंने पुनः अपना राज्य स्थापित किया। परन्तु महाराज 'उर' का राजवश चलता रहा। मन्युपुरी-सुषा का रूप मृत्युसागर जैसा हो गया। उस जलप्रलय का समय लगभग २९८६ ई० पू० होता है। उर राजवश की ४५वीं पीढी मे दक्ष प्रजापति की पुत्रियो से दैत्य-दानव असुर और वरुण-विष्णु आदि देवो का जन्म हुआ। उसी समय देवराट इन्द्र का भी जन्म हुआ। इस प्रकार (२९८६ – २७९०=) १९६ वर्ष जलप्रलय के बाद देवो और असुरो का जन्म हुआ। उसके विषय मे टाडराजस्थान मे इस प्रकार लिखा है—"Chinese and Assyrian monarchies are generally stated to have been established about 150 years after the great event of the flood. Egyptions under 'Misrain' 2188B.C., Assyrian in 2059·B. C., and Chinese in 2207B.C." असुरो का राज्य असीरिया मे था।

भारतीय पुराणो से भी यह विदित होता है कि देव आर्यो का राज्य समुद्र तट पर भी था। विष्णु भगवान को तो क्षीरसायी कहा ही गया है। हिस्ट्री आफ पर्शिया, बुक आफ जेनेसिस तथा अन्यान्य ग्रन्थो से भी यह प्रमाणित होता है कि—मरीचि-कश्यप, वरुण-ब्रह्मा, सूर्य-विवस्वान, मनुवैवस्वत, यम, रुद्र, इन्द्र, नारद, बृहस्पति, भृगु, शुक्र, अत्रि, वशिष्ठ आदि तथा दैत्य-दानव असुरो के प्रसिद्ध स्थान भी वही थे। पुराणो मे वर्णित श्रीनार भूमि, जिसको 'शिनार' कहा जाता है।[१] क्षीरसागर को ही आजकल[२] पर्शियन-गल्फ कहा जाता है। अत्रिय भूमि= अत्रिपत्तन (Atropateen) उत्तरभद्र—ईरान का मेडिया (Media) प्रदेश है, जो काश्यप सागर तट पर अत्रि स्थान के निकट है। मद्रपति शल्य वही के राजा थे, जिन्हें पाश्चात्य सुलेमान कहते है। इनकी राजधानी पासरगद्दी थी। (पासरगद्दी प्रकरण, पर्शिया का इतिहास)। कृष्ण का साम्राज्य भी ईरान मे था, इसीलिये भारतीय पुराणो मे उनका विशेष वर्णन नही है। महाभारत सग्राम के बाद कृष्ण वही चले गये थे। कहा है कि श्रीकृष्ण युद्ध के बाद स्वर्ग चले गए।

---

१. "The land of shinar or Sumer is on the head of the Persian Gulf."(Book of Genesis)

२. Atropatane or Azerbayjan and the Atric river on the bank of the Caspian sea (H. P. Vol 1, 319, 321)

इसका अर्थ लोग यह कहते हैं कि श्री कृष्ण मर गए। परन्तु इसका अर्थ मरना नही है। स्वर्ग-सर्ग देवो के स्थान का नाम था वही ईरानियो का वहिस्त-(अजरबेजान) कहलाता था। वह स्वर्ग देवो की नगरी सुरपुर थी। महाभारत सग्राम के बाद कृष्ण उसी स्थान पर चले गये थे। वहाँ जाने पर उन्होने अनेक छोटे-छोट द्वीपो को जय किया। महाभारत सग्राम के बाद उन्ही के पास अर्जुन भी जा रहे थे, जो रास्ते मे हिमालय मे गल गये। इन्द्र के नन्दनवन को आजकल पारदिया प्रान्त कहते है (पर्शिया का इतिहास)। खाण्डव वन या नन्दन वन 'कवीर' के नाम से ईरान मे लवण सागर और क्षीरसागर के मध्य प्रदेश मे है (हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, २०)। पुराणो मे वर्णित 'उत्तर कुरु' को आज कुर्दिस्तान कहा जाता है। अपवर्त्त[१], नर्क[२], यमलोक[३], वैकुण्ठ[४], सत्यलोक (विष्णु पुराण) कल्पतरु (मत्स्यपुराण), सुरपुर (टाडराजस्थान), इन्द्रलोक (टाडराजस्थान), अग्नि आश्रम (भविष्य पुराण तथा हिस्ट्री आफ पर्शिया, (जिल्द १, ३१९, ३२१, ३६६)। वैबिलोनिया के सम्राट् पुरुरवा के पुत्र 'आयु' थे।[५] ईरानी जाति ययाति (Iatii) के वश मे है, जो दैत्य गुरु शुक्र तथा दैत्यपति वृषपर्वा के दामाद थ। (विष्णु भागवत तथा मत्स्यपुराण)। सावित्री के पिता अश्वपति भी भद्र के राजा थे। ईरान का मेडिया (Media) प्रदेश ही मद्रदेश था (कनिघम का इतिहास २ री जिल्द)।

धृतराष्ट्र का विवाह गाधार जिसको 'कावार' कहते हैं, वहाँ की राजपुत्री से हुआ। माद्री पाण्डु की स्त्री 'ईरान' के मद्रपति की कन्या थी। अर्जुन का विवाह पाताल[६] मे वहाँ के राजा की लडकी 'उलोपी' के साथ हुआ था। श्रीकृष्ण तथा अर्जुन 'अश्वतरी'[७] पर बैठकर 'उद्दालक' ऋषि को लाने के लिये पाताल लोक मे गए थे। युधिष्ठिर के यज्ञ मे वही से उद्दालक ऋषि को लाया गया था।

महाभारत शान्ति पर्व मोक्षधर्म मे व्यास-शुक सवाद है—जिसमे लिखा है—

मेरोर्हरेश्च द्वे वर्षे वर्ष हैमवत तत।
क्रमेणैव व्यतिक्रम्य भारत वर्षमासदत्॥

---

१ हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, पृ० ३१९। २ हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १ पृ० १०३
३ ,, ,, ,, ,, ,, १०३। ४ ,, ,, , ,, ,, १०३ (वि० पु०)
५ ,, ,, ,, २ ,, ५५। ६. अमेरीका को पहले पाताल लोक कहा जाता था परन्तु आजकल कुछ लोग अबीसिनिया को ही पाताल लोक कहते है। ७ अग्नियान-नौका।

स देशान् विविधान् पश्यंश्चीन हूणनिषेवितान् ।। (अ० ३२७)

इस श्लोक का भावार्थ यह है कि एक समय व्यास जी अपने पुत्र शुक और शिष्य सहित पाताल लोक (अमरीका) में रहते थे—जो भारतवर्ष के ही रहने वाले थे।

राजा परीक्षित की मृत्यु के बारह वर्ष बाद उनके पुत्र जन्मेजय ने 'सर्पसत्र, नीरिया के धनंजय आदि तक्षक सुतल के वासुकी वंश का खात्मा किया और वे जम्बू द्वीप तथा शाकद्वीप दोनों देशों के चक्रवर्ती सम्राट हुए। इस युद्ध में दधीचि के वंशजों ने, जो अब पठान हैं और इन्द्र ने जन्मेजय की सहायता की।[1] ऐसी बातें और अनेक हैं, जिनके आधार पर भ्रमवश पाश्चात्यजन एवं भारतीय भी यह करते हैं कि भारतीय आर्यों का मूलस्थान खुरासान के उत्तर या दक्षिण या काश्यप सागर के तट पर मध्य एशिया में था।

गवेषकों के विचार

पाश्चात्यजनों के विचार तो पाठक जान ही चुके। अब चन्द भारतीय लेखकों के विचार पर भी विचार करें। स्वर्गीय बालगंगाधर तिलक ने आर्यों का आदि स्थान ऋग्वेद के आधार पर उत्तरी ध्रुव के आस-पास बतलाया है।[2] दूसरे विद्वान हैं, स्वर्गीय डा० अविनाशचन्द्र दास। इन्होंने आर्यों का मूलस्थान भारत में ही बतलाया है।[3] तीसरे विद्वान हैं डा० श्री सम्पूर्णानन्द। इन्होंने आर्यों का आदि देश भारत में ही सरस्वती नदी—काश्मीर से सिन्धु नदी—सिन्ध प्रदेश के बीच में 'सप्तसिन्धव' बतलाया है। जिसके अन्तर्गत पंजाब के हड़प्पा और सिन्ध के 'मोहन जो दरो' दोनों स्थान पड़ते हैं।[4] चौथे विद्वान स्वर्गीय स्वामिदयानन्द सरस्वती का मत है कि "आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् त्रिविष्टप (तिब्बत) में सीधे आकर इस देश में बस गये।"[5] यहाँ से सम्पूर्ण विश्व में फैल गये। उन्ही लोगों ने स्थानों के नामकरण भी किये। क्योंकि उनसे पूर्व स्थानों के नाम थे ही नहीं।[6] पाँचवें लेखक हैं, श्री नीरजाकान्त चौधरी उपनाम देव शर्मा। इन्होंने विदेशियों के यात्रावर्णन के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि "भारत में आर्य बाहर से नहीं आये।"

---

१ अग्निपुराण क्र० १२। २ The Arctic Home in the Vedas (आर्यों का मूल निवास स्थान)। ३ The Rogvedic India ४ आर्यों का आदि देश। ५ सत्यार्थप्रकाश पृ० २७७। ६ भागवत-प्रियव्रत प्रसंग।

पाश्चात्यों एवं लोकमान्य तिलक के मत का खण्डन स्वर्गीय श्री दास तथा डा० सम्पूर्णानन्द ने जो किया है, सो तो उचित ही है। किन्तु स्वामी दयानन्द के कथनानुसार कुछ विद्वानों की मान्यता है कि तिब्बत से ही आदि काल में आर्य भारत में आये थे। उन लोगों का यहां तक कहना है कि वैशाली-राजवंश के मूल पुरुष भी तिब्बत से ही यहां आये थे। चन्द ऐतिहासिकों का कहना है कि वैशाली-राजवंश के मूल पुरुष भी ईरान से ही आये थे। भारतीय पुराणों द्वारा यह स्पष्ट प्रमाणित है कि वैशाली-राजवंश के मूल पुरुष सूर्य राजवंश के ही थे।

इतने बड़े-बड़े प्रकाण्ड पण्डितों के मत का खण्डन या मण्डन करना तो मेरे लिए—'छोटा मुँह और बड़ी बात' के समान है। किन्तु एक भारतीय आर्य होने के नाते मुझे भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने का अधिकार प्राप्त है।

आर्यों का मूल स्थान

पुराणों[१] तथा महाभारत[२] में लिखा है कि सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि आदि चारों युगों का प्रभाव केवल भारतवर्ष पर ही लागू है, अन्य देशों पर नहीं। प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न नाम के युग प्रचलित थे।

'एन्शियन्ट इंडियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन' में श्री पार्जीटर ने मनु वैवस्वत से राजा सगर तक सतयुग-कृतयुग और राजा सगर से दाशरथी राम तक त्रेता युग माना है। ऐसा मानने का कारण उन्होंने उपर्युक्त पौराणिक कथन बतलाया है। ऐसा मत व्यक्त करते समय श्रीमद्भागवत् (८।१।४) के इस कथन को नहीं देख पाये कि—"छै मनुओं के भोग काल को सतयुग कहते हैं, उसी में देवताओं आदि की उत्पत्ति हुई।"

"मन्वोऽस्मिन्व्यतीता षट्कल्पे स्वायंभुवादयः।
अद्यस्तेकथितो यत्र देवादिनांच सम्भवः॥"[३]

चाक्षुष मनु छठें मनु थे। उनका मन्वन्तर काल वरुण, विवस्वान-सूर्य, इन्द्र आदि देव काल तक चला। या यों कहा जाय कि सातवें मनु वैवस्वत के पहले तक। पुराणों तथा महाभारत के कथनानुसार चारों युगों का प्रभाव केवल भारतवर्ष पर ही था। इस कथन का साराश यह है कि आर्यों का मूल राज्य चारों युगों में भारत में ही था। हां, उनका राज्य-विस्तार उस समय जरूर शाक द्वीप (वर्तमान ईरान-पर्शिया) तक था।

१—ब्रह्म० २७,६४। वायु ३८१,४५,१३७,५७,२२। पद्मपुराण। ७,३।
२—महाभारतVI,१०,३८७।
३—श्रीमद्भागवत ८।१।४

सतयुग मे प्रथम मनु तथा प्रजापति स्वयभव थे, जिनका आरम्भिक समय ४०२२ ई० पू० है। छठें मनु और ३६ वें प्रजापति चाक्षुप हुए। उनके पुत्र उरु ने शाक द्वीप म उरराजवश की स्थापना की, जिसको आज ईराक कहा जाता है। चाक्षुप पुत्रो ने ही ईरान-पर्शिया, मिस्र, पैलेस्टाइन तथा अफ्रीका आदि देशों तक भारतीय आर्य राज्य का विस्तार कर लिया था।

पुराण तथा महाभारत के कथनो स यह स्पष्ट प्रमाणित है कि सातो मनुओ का भोग काल अर्थात् राज्यकाल भारतवर्ष मे ही है। इसका मतलब है कि आदिकाल से आर्य भारत मे ही थे। यही स उनका विस्तार चाक्षुप मन्वन्तर तथा देवकाल मे विश्व के अन्यान्य भागों मे हुआ।

ऋग्वेद तथा पुराणो के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि भारत मे सरस्वती नदी के आसपास काश्मीर मे उनका मूल स्थान था और जम्बू मे उनकी राजधानी थी, जिसे अब जम्मू कहा जाता है। वहा से हडप्पा–पजाब होते हुए सिन्ध तक पहुँचे और लगभग एक हजार वर्ष के बाद पश्चिम एशिया तक चले गये। वही से सम्पूर्ण विश्व मे फैल गये। अमेरिका म भूगर्भ की खुदाई होने पर 'मय' दानव के बनाये हुए मकानो के भग्नावशेष मिले है। इससे यह प्रमाणित होता है कि देवकाल मे आर्यो का राज्य-विस्तार अमेरिका तक हो गया था। महाभारत काल मे 'उद्दालक ऋषि को(पाताल)अमेरिका से बुलाया गया था', यह पौराणिक कथन अब सत्य हो गया।

आर्य और कश्मीर

चन्द भारतीय गवेषकों का कहना है कि 'आर्य' शब्द का मूल रूप 'अर' था। 'अर' से 'हर' हुआ। पुन 'हर' से 'हल' हो गया। जैसे 'पत्थर' से 'पत्थल'। 'हल' से ही किसान जमीन जोतते हैं। हल चलाने वाले को 'हलवाहा', हलपति तथा किसान कहते हैं। इसी आधार पर उन गवेषकों का कहना है कि 'आर्य'शब्द का अर्थ है—'कृपक' और अनार्य का अर्थ है 'अकृपक'। आर्य ही सर्वप्रथम कृपक हुए, जो कश्मीर मे थे।

कश्मीर—पाठक यह कह सकते है कि आर्य और 'जम्बू' शब्द का सम्बन्ध तो पुराणो मे है किन्तु 'कश्मीर' शब्द से आर्यो का सम्बन्ध मैने किस आधार पर बतलाया ?

ऋग्वेद मे आर्यो से सम्बन्धित सरस्वती नदी का वर्णन है। वह 'सरस्वती नदी' कश्मीर मे ही है। अब 'कश्मीर' नाम की तरफ चलिये। वर्तमान मानव सृष्टि के

पिता 'कश्यप' हैं। कश्यप के पिता का नाम 'मरीचि' था—जो स्वयं एक प्रजापति थे। मरीचि और कश्यप का मूल स्थान वहीं पर था—जिसको अब कश्मीर कहते हैं। 'कश्यप' का 'कश' और मरीचि का 'मीर' दोनों मिलकर 'कश्मीर' शब्द हो गया। इसी कश्यप का विवाह दक्षप्रजापति(४५)की पुत्रियों दिति, अदिति, दनु आदि से हुआ। पीछे, यही कश्यप 'कश्यप सागर' तक चले गये, जिनके नाम को आजतक कास्पीयन सी (Caspian Sea) कायम रखे हुये है, उन्हीं के नाम पर कास्पीआई जाति कहलाई जो ईरान की तरफ थी।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश-काल

१—सतयुग-कृतयुग—छै मनुओं का भोगकाल स्वायम्भव मनु से दक्ष प्रजापति (४५) तक ४५ पीढ़ियाँ	१२६० वर्ष
देवकाल—मरीचि-कश्यप, मित्रावरुण तथा इन्द्रादि	१०० वर्ष
योग—	१३६० वर्ष
२—त्रेता युग—सातवें मनु वैवस्वत से दाशरथी राम तक—३९ पीढ़ियाँ— ..	१०९२ वर्ष
३—द्वापर—दाशरथी राम से महाभारत संग्राम तक १५ पीढ़ियाँ	४२० वर्ष
४—महाभारत संग्राम से ईसा तक	३११० वर्ष
५—ईसा से पृथ्वीराज चौहान तक .. .	१२०० वर्ष
भारत में आर्यों का कुल भोगकाल	५२२२ वर्ष
६—१२०० ईस्वी से १५ अगस्त १९४७ तक—गजनी के गोर वंश पठान, मोगल, अंग्रेज आदि ..	७४७ वर्ष
७—१५ अगस्त १९४८ से भारतीय सम्वत् २०१५ तक	१० वर्ष
कुल योग—————	५९८० वर्ष

वर्त्तमान मानव राज्य का भोगकाल

पुराणों मे मनु वैवस्वत से महाभारत तक ९५ पीढ़ियां और मनु वैवस्वत से राम तक ६५ पीढियां बतलाई गई हैं। मेरे विचार से मनु वैवस्वत से दाशरथी राम तक ३९ पीढियां और राम से महाभारत तक १५ पीढियां यानी कुल (३९+१५=) ५४ पीडियां ही होनी चाहिए। यदि पौराणिक पीढ़ियों के अनुसार काल निश्चित किया जाय तो लगभग एक हजार(१०००) वर्ष और अधिक काल होगा। अर्थात् सशोधित पीढियो के अनुसार लगभग ६००० हजार वर्ष और पौराणिक पीढ़ियो के अनुसार लगभग ७००० हजार वर्ष।

४—प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश-सूची

(४०२२ ई० पू० से ५०० ई० पू० तक)

क्रम सं०	प्रजापतियों के नाम भारत-कश्मीर-जम्मू	राज्य काल औसत २८ वर्ष		विशेष विवरण
१	मनु स्वायंभुव	४०२२ ई०पू०		प्रथम विश्व प्रजापति।
	राज्यकाल	२८		
२	प्रियव्रत	३९९४	"	द्वितीय वि० प्रजापति।
	राज्यकाल	२८		
३	आग्नीध्र	३९६६	"	जम्बू द्वीप के अधीश्वर।
	"	२८		
४	नाभि	३९३८	"	इन्हीं के नाम पर हिमवर्ष का नाम नाभिवर्ष पड़ा।
	"	२८		
५	ऋषभदेव	३९१०	"	जैनधर्म के आदि प्रवर्तक।
	"	२८		
६	भरत-जडभरत-मनु-भरत	३८८२	"	इन्हीं के नाम पर नाभिवर्ष का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।
	राज्यकाल	२८		
७	सुमति	३८५४	"	
	"	२८		
८	इन्द्रद्युम्न	३८२६	"	प्रतापी प्रजापति हुए।
	"	२८		
९	परमेष्ठिन-परमेष्ठी	३७९८	"	ऋग्वेद के प्रथम वेदर्षि (१०।१२९)
	राज्यकाल	२८		
१०	प्रतिहार	३७७०	"	
	"	२८		
		३७४२	"	

क्रम सं०	प्रजापतियों के नाम भारत-कश्मीर-जम्मू	राज्य काल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
११	प्रतिहर्त्ता ..	३७४२ ई० पू०	प्रतापी प्रजापति।
	| राज्यकाल	२८	
१२	भुव ..	३७१४ "	"
	| "	२८	
१३	उद्ग्रीव ..	३६८६ "	"
	| "	२८	
१४	प्रस्तार ..	३६५८ "	"
	| "	२८	
१५	पृथु ..	३६३० "	"
	| "	२८	
१६	नक्त ..	३६०२ "	"
	| "	२८	
१७	गय ..	३५७४ "	"
	| "	२८	
१८	नर ..	३५४६ "	"
	| "	२८	
१९	विराट् ..	३५१८ "	"
	| "	२८	
२०	महावीर्य ..	३४९० "	"
	| "	२८	
२१	धीमान ..	३४६२ "	"
	| "	२८	
२२	महान ..	३४३४ "	"
	| "	२८	
		३४०६ "	

क्रम सं०	प्रजापतियों के नाम भारत-कश्मीर-जम्मू	राज्य काल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
२३	मनुस्थ ..	३४०६ ई०पू०	प्रतापी प्रजापति।
	| राज्यकाल	२८	
२४	त्वष्टा ..	३३७८ "	"
	| "	२८	
२५	विरज ..	३३५० "	"
	| "	२८	
२६	रज ..	३३२२ "	"
	| "	२८	
२७	विषज्ज्योति ..	३२९४ "	"
	| "	२८	
२८	अनिश्चित ..	३२६६ "	
	| "	२८	
२९	" ..	३२३८ "	
	| "	२८	
३०	" ..	३२१० "	
	| "	२८	
३१	" ..	३१८२ "	
	| "	२८	
३२	" ..	३१५४ "	
	| "	२८	
३३	" ..	३१२६ "	
	| "	२८	
३४	" ..	३०९८ "	
	| "	२८	
३५	" ..	३०७० "	पाँच मनुओं का भोगकाल १८० वर्ष समाप्त।
	| "	२८	
		३०४२ "	

क्रम स०	प्रजापतियों के नाम भारत कश्मीर जम्मू	राज्य काल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
३६	मनु चाक्षुप	३०४२ ई०पू०	इन्ही के पुत्रों ने जम्बू (जम्मू) कश्मीर हड़प्पा मोहन जो दरो से वर्तमान ईरान पर्शिया तक भारतीय आर्य राज्य का विस्तार किया। चाक्षुष ६ठ मनु हुए।
	राज्यकाल	२८	
३७	उर	३०१४	उर के निर्माता।
		२८	
३८	अग	२९८६	
		२८	
३९	वेन	२९५८	अपने को सब शक्तिमान कहा।
		२८	
४०	पृथुवैन्य	२९३०	प्रथम राजर्षि द्वितीयवेदर्षि ऋग्वेद (१०।१४८)प्रथम राजा।
		२८	
४१	अन्तर्धान	२९०२	
		२८	
४२	हविर्धान	२८७४	
		२८	
४३	प्राचीन बर्हिष	२८४६	
		२८	
४४	प्रचेतस	२८१८	तृतीय वेदर्षि ऋग्वेद(१०।१६४)।
		२८	
४५	दक्ष	२७९०	
		२८	
		२७६२	

क्रम सं०	प्रजापतियों के नाम भारत-कश्मीर-जम्मू	राज्य काल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
४६	मरीचि-कश्यप ..	२७६२ ई०पू०	चौथे वेदर्षि (ऋग्वेद १।९९)।
	राज्यकाल	५०	(देवकाल)
४७	सूर्य-आदित्य-विवस्वान-मित्र-विष्णु	२७१२ "	वरुण-ब्रह्मा-करतार-Lord Creator, Elohim, Orunzd देवराट् इन्द्र, अग्नि, भृगु, शुक्र, बृहस्पति, विश्वकर्मा, नारदादि सभी समकालीन हैं।
	राज्यकाल	५०	
		२६६२	

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंशों की सूची

(२६६२ ई० पू० से ५०० ई० पू० तक)

क्रम सं०	अयोध्या मूल सूर्य राजवंश	प्रतिष्ठान-हस्तिनापुर मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
४८	सातवें मनुवैवस्वत 1	चन्द्र-चन्द्रमा 1	२६६२ ई० पू०	त्रेता युगारंभ
			२८	
४९	इक्ष्वाकु 2	बुध + इला 2	२६३४ "	
			२८	
५०	विकुक्षी-शशाद 3	पुरूरवा + उर्वशी 3	२६०६ "	पुरुरवा इलावर्त्त और भारत दोनों जगहों का सम्राट्
			२८	
५१	कुकुत्स-पुरंजय 4	आयु 4	२५७८ "	
			२८	
५२	अनेनस 5	नहुष 5	२५५० "	
			२८	
			२५२२	

क्रम सं०	अयोध्या मूल सूर्य राजवंश	प्रतिष्ठान-हस्तिनापुर मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
६४	संहताश्व 17	रौद्राश्व 17	२२१४ ई० पू०	
			२८	
६५	अकृशाश्व 18	ऋचेयु 18	२१८६ "	
			२८	
६६	प्रसेनजित 19	मतिनार 19	२१५८ "	
			२८	
६७	युवनाश्व (द्वितीय)20	तंसु-सुमति 20	२१३० "	
			२८	
६८	मानधाता-मानधातृ 21	दुष्यन्त 21	२१०२ "	
			२८	
६९	पुरुकुत्स 22	भरत 22	२०७४ "	शकुन्तला-पुत्र
			२८	
७०	त्रसदस्यु 23	वितथ(भरद्वाज)23	२०४६ "	
			२८	
७१	सम्भूत-संभत 24	भूमन्यु-भुवमन्यु 24	२०१८ "	
			२८	
७२	स्रुक 25	बृहत्क्षण 25	१९९० "	
			२८	
७३	वृक 26	सुहोत्र 26	१९६२ "	
			२८	
७४	श्रुत 27	हस्तिन 27	१९३४ "	हस्तिन ने हस्तिनापुरका निर्माण किया
			२८	
७५	नाभाग 28	अजमीढ 28	१९०६ "	
			२८	
			१८७८ "	

नम सं०	अयोध्या मूल सूर्य राजवंश	प्रतिष्ठान हस्तिनापुर मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
७६	अम्बरीष 29	ऋक्ष 29	१८७८ ई०पू०	
			२८	
७७	सिन्धु द्वीप 30	सम्वरण 30	१८५० "	
			२८	
७८	शतरथ-ऋतशर्मन 31	कुरु 31	१८२२	
			२८	
७९	विश्वशर्मन 32	अविक्षित 32	१७९४ "	
			२८	
८०	विश्वसह(प्रथम)विश्व-महत्(प्र०) | 33	परीक्षित 33	१७६६ "	
			२८	
८१	दिलीप-खट्वांग 34	जन्मेजय (द्वितीय) (पार्जिटर) | 34	१७३८ "	
			२८	
८२	दीर्घबाहु 35	जह्नु (प्रधान) 35	१७१० "	
			२८	
८३	रघु 36	सुरथ 36	१६८२ "	
			२८	
८४	अज 37	विदुरथ 37	१६५४ "	
			२८	
८५	दशरथ 38	ऋक्ष 38	१६२६ "	
			२८	
८६	राम 39	सार्वभौम 39	१५९८ "	पृष्ट ३२ मे विशेष दखिये
			२८	
			१५७० "	त्रेतायुगसमाप्त
			२८[1]	
	कोशल श्रावस्ती			द्वापर युगारंभ
			१५५४ "	

1 राम के बाद महाभारत तक १५ पीढ़ियाँ मानी गई हैं और यहाँ पर नाम चौदह हैं इसलिये एक पीढ़ी का भोगकाल बढ़ा दिया गया।

क्रम सं०	कोशल, श्रावस्ती मूल सूर्य राजवंश		प्रतिष्ठान-हस्तिनापुर मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
८७	कुश 1	लव	जयत्सेन 1	१५१४ ई० पू०	
				२८	
८८	अतिथि 2	पुष्य	अराधीन 2	१४८६ "	
				२८	
८९	निषध 3	ध्रुवसंधि	महाभौम 3	१४५८ "	
				२८	
९०	नल 4	सुदर्शन	अयुतनाई 4	१४३० "	
				२८	
९१	नभस 5	अग्निवर्ण	अक्रोधन 5	१४०२ "	
				२८	
९२	पुण्डरीक 6	शीघ्र	देवातिथि 6	१३७४ "	
				२८	
९३	क्षेमधन्वन 7	मरु	रिक्षारोह 7	१३४६ "	
				२८	
९४	देवानीक 8	प्रसुश्रुत	भीमसेन 8	१३१८ "	
				२८	
९५	अहीनगु 9	सुसंधि	दिलीप-प्रतिश्रवस 9	१२९० "	
				२८	
९६	पारियात्र 10	अमर्षण	प्रतीप 10	१२६२ "	
				२८	
९७	बल 11	विश्रुतवन्त	देवापि,शान्तनु,बाह्लीक 11	१२३४ "	
				२८	
९८	उक्थ 12	विश्वबाहु	विचित्रवीर्य 12	१२०६ "	
				२८	
				११७८ "	

क्रम सं०	कोशल, श्रावस्ती मूल सूर्य राजवंश		हस्तिनापुर मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
९९	वज्रनाभ 13	प्रसेनजित	धृतराष्ट्र, पाण्डु 13	११७८ ई०पू०	
	|	|	|	२८	
१००	सखन 14	तक्षक	अर्जुन 14	११५०	महाभारत संग्राम।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंशों की सूची

(११५० ई० पू० से ५०० ई० पू० तक)

क्रम संख्या	मूल सूर्य राज वंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
१०१	बृहद्वल[1] 1	११५० ई.पू.	अभिमन्यु 1	११५० ई.पू	
	|		|	३६[2]	
१०२	बृहद्रण 2	११५० "	परीक्षित 2	१११४ "	कलि युगारम्भ
	|	२८	|	२८	
१०३	उरुक्षय 3	११२२ "	जन्मेजय 3	१०८६ "	
	|	२८	|	२८	
१०४	वत्सव्यूह 4	१०९४ "	शतानीक (प्रथम) 4	१०५८ "	
	|	२८	|	२८	
१०५	प्रतिव्यूह 5	१०६६ "	अश्वमेध दत्त 5	१०३० "	
	|	२८	|	२८	
१०६	दिवाकर 6	१०३८ "	अधिसीम कृष्ण 6	१००२ "	
	|	२८	|	२८	
		१०१० "		९७४ "	

१ बृहद्वल महाभारत संग्राम में मारा गया इसलिये उसका पुत्र बृहद्रण शीघ्र ही गद्दी पर बैठ गया। इसलिये उसका राज्यकाल २८ वर्ष नहीं घटाया गया।

२ महाभारत के ३६ वर्ष बाद परीक्षित राजा हुए (महाभारत)।

क्रम संख्या	मूल सूर्य राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
१०७	सहदेव 7	१०१०ई०पू०	निचक्षु-विवक्षु निर-वक्त्र 7	९७४ई०पू०	
	|	२८	|	२८	
१०८	बृहदश्व 8	९८२ "	उष्ण उक्त-भूरि 8	९४६ "	
	|	२८	|	२८	
१०९	भानुरथ 9	९५४ "	चित्ररथ 9	९१८ "	
	|	२८	|	२८	
११०	प्रतीताश्व 10	९२६ "	सुचिरथ 10	८९० "	
	|	२८	|	२८	
१११	सुप्रतीक 11	८९८ "	वृष्णीमन्त 11	८६२ "	
	|	२८	|	२८	
११२	मरुदेव 12	८७० "	सुषेन 12	८३४ "	
	|	२८	|	२८	
११३	सुनक्षत्र 13	८४२ "	सुनीथ सुतीर्थ 13	८०६ "	
	|	२८	|	२८	
११४	किन्नारा 14	८१४ "	रोचा, नृचक्ष 14	७७८ "	
	|	२८	|	२८	
११५	अन्तरिक्ष 15	७८६ "	सुखीबल 15	७५० "	
	|	२८	|	२८	
११६	सुषेन 16	७५८ "	परिप्लुत परिप्लव	७२२ "	
	|	२८	| 16	२८	
११७	अमित्रजीत | 17	७३० "	सुनया सुनायम | 17	६९४ "	
		२८		२८	
११८	बृहद्राजा | 18	७०२ "	मेधावीन 18	६६६ "	
		२८	|	२८	
		६७४ "		६३८ "	

क्रम संख्या	मूल सूर्य राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	मूल चन्द्र राजवंश	राज्यकाल औसत २८ वर्ष	विशेष विवरण
११९	धर्मिन 19	६७४ ई०पू०	नृपजय-पुरजय	६३८ ई०पू०	
		२८	19	२८	
१२०	कृतजय 20	६४६ "	उरांव-दुरांव-मृदु, तिग्म 20	६१० "	
		२८		२८	
१२१	बरात 21	६१८ "	बृहदरथ 21	५८२ "	
		२८		२८	
१२२	सजय 22	५९० "	सुदामन 22	५५४ "	
		२८		२८	
१२३	महाकोशल	५६२ "	सतानीक 23	५२६ "	
	23	२९[1]	(द्वितीय)	२६[2]	
१२४	प्रसेनजित[3] 24	५३३ "	उदयन[4] 24	५०० "	

१ केवल १ वर्ष मुँह मिलाने के लिये बढा दिया गया है।
२ मुँह मिलाने के लिये केवल २ वर्ष कम किया गया है।
३. यह निश्चित मत है कि प्रसेनजित का राज्याभिषेक ५३३ ई० पू० हुआ था।
४ यह निश्चित मत है कि ५०० ई० पू० उदयन का राज्याभिषेक हुआ था।

विशेष—मनु··· राम के मूलवंश वृक्ष में सत्य हरिश्चन्द्र, सगर और भगीरथ आदि नहीं थे। देखिये, सूर्यवंश शाखा-परिचय।

४-भारतीय पुराण

भारत के प्राचीन आर्य राजवंशों के वंशवर्णन तथा इतिहास भारतीय पुराणों में ही आजतक प्रकाशमान हैं। किन्तु सभी पुराणों में एक रूपता नहीं है। इसलिये राजवंशों पर विचार करने के पहले पुराणों पर एक दृष्टि दौड़ा लेनी चाहिये।

पुराणों की निर्माण-विधि

अति प्राचीनकाल से पृथ्वीराज चौहान तक समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति रहा करते थे, जो देवों, ऋषियों, चक्रवर्तियों, राजाओं तथा अन्यान्य प्रसिद्ध पुरुषों के मौखिक वंशवर्णन तथा गुणगान किया करते थे। वे लोग आदिकाल में सूत और पीछे मागध, बन्दी, चारण तथा राजभाट आदि नामों से पुकारे जाने लगे। ये बातें वायु तथा पद्मपुराण द्वारा विदित होती हैं। अन्यान्य पुराणों में भी ऐसी बातें हैं। परन्तु लिखने की प्रणाली में कुछ भिन्नता जरूर है। मगर सारांश सबों का एक ही है।

सूतजन—आख्यानों, उपाख्यानों, गाथाओं तथा कल्प-वाक्यों को कंठाग्र रखा करते थे। उन्हीं गाथाओं का संग्रह व्यासों द्वारा किया गया है। वही वर्त्तमान पुराणों का मूलरूप है। कुछ विद्वानों का कहना है कि गुप्तकाल में उनका सम्पादन हुआ है। कुछ गवेषकों का मत है कि पुराणों के वर्त्तमान रूप का निर्माण एक सौ ई० सन् के बाद से आठवीं शताब्दी तक होता रहा है।

मत्स्य पुराण (५३, ५४) के अनुसार श्रुति-पुराण का मतलब ही है—सुनी हुई पुरानी कहानियां। वायु पुराण, स्वयं अपने को इतिहास और पुराण कहता है (वायु १०३, ८८, ५१, ५५ ८)।

बाण के हर्ष चरित के अनुसार ६२० ईस्वी के पहले ही वायु पुराण के वर्त्तमान रूप का निर्माण हो चुका था। कौटलीय अर्थशास्त्र के अनुसार ४७५ ईस्वी के पूर्व ही पद्म तथा विष्णु पुराण का वर्तमान रूप बन चुका था।

इस विषय पर एफ. ई. पार्जीटर कृत अंग्रेजी भाषा में एक गवेषणा-ग्रन्थ भी है, जिसका नाम 'एन्शियण्ट इंडियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन है।'

पुराणों में क्या है ?

पुराणो मे प्राचीन भारतीय आर्यराजवंशो के सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीति कार्यों के वर्णन हैं। उनमे वंशवृक्ष भी हैं, जो ऐतिहासिक अमूल्य रत्न है। इन्हे के द्वारा आर्य—आज भारतीय प्रमाणित होते है। कठिनाइयां केवल यही है कि वंशवृक्षो मे कुछ भूल-भुलैया तथा धार्मिक रंग का गाढ़ा पोचारा है।

ऋग्वेद मे प्रधान-प्रधान राजाओं, देवो, ऋषियो तथा अन्यान्य जनो के भीतर है। यत्र-तत्र उनकी प्रधान कीर्तियां भी हैं।

महाभारत, वाल्मीकि रामायण, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद, सूत्र ग्रन्थो तथा चौदह पुराणो मे वंशावलियां है। उन पुराणो के नाम इस प्रकार है—

१—ब्रह्माण्ड, ६३,८-२६८। २—वायु, ८८,८-२१३। ३—ब्रह्म, ७, ४४-९६। ४—हरिवंश, ११, ६६०-१४, ८३२। ५—मत्स्य, १२ २५। ६—पद्म, V. ८, १३०-६२। ७—शिवपुराण, vii. ६०, ३३-६१, ३। ८—लिंग पु०, i, ६५३१-६६, ४५। ९—कुर्मपुराण, i, २०, १०-२१, ६। १०—विष्णु पुराण, iv, २, ३-४, ९। ११—अग्नि पुराण, २७२, १८,१। १२—गरुड पुराण, I, १३८, १७-४८। १३—श्रीमद्भागवत, ix, ६, ४-१२। १४—देवीभागवत। अपेक्षाकृत विष्णुपुराण मे विशेष स्पष्ट है।

उपर्युक्त ग्रन्थो मे वंशवृक्ष है तो जरूर परन्तु सबो मे एकरूपता नहीं होने के कारण कठिनाइयां उत्पन्न हो जाती हैं। सर्वत्र पुत्रो तथा उत्तराधिकारियों के संकेत भी नहीं हैं। कहीं-कहीं नामो मे भी परिवर्तन है। किसी पुराण मे एक राजा के पांच पुत्र कहे गये है तो दूसरे मे सात तथा तीसरे मे ८। इसके कुछ उदाहरण देखिये—चन्द्रवंश की ३०वीं पीढ़ी के राजा का नाम 'कुरु' है। कुरु के पुत्रों के विषय मे पुराणो का मत देखिये—वायु पुराण (९९, २१७,२१८) के अनुसार कुरु के चार पुत्र थे—सुधन्वन, जह्नु, परीक्षित और अरिमर्दन। महाभारत (१,९४, ५०, ५१) के अनुसार कुरु और वाहिनी के पांच पुत्र थे—अश्ववन्त-अविक्षित, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि और जन्मजय। उदाहरण स्वरूप कुछ और नमूना देखिये—

पुराणो मे सूर्य-पुत्र मनुवैवस्वत से राम तक त्रेतायुग और राम से महाभारत परीक्षित तक द्वापर युग कहा गया है। सूर्यवंशी राजा बृहद्बल महाभारत संग्राम में मारा गया था (महाभारत तथा भागवत)। सूर्यवंशी राजा मनुवैवस्वत से बृहद्बल तक विष्णु पुराण मे ९२, भविष्य मे ९१, भागवत मे ८८ और शिव पुराण में

पुराणों में क्या है ?

पुराणो मे प्राचीन भारतीय आर्यराजवंशो के सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों के वर्णन हैं। उनके वंशवृक्ष भी है, जो ऐतिहासिक अमूल्य रत्न है। उन्ही के द्वारा आर्य—आज भारतीय प्रमाणित होते है। कठिनाइयां केवल यही है कि वंशवृक्षो मे कुछ भूल भुलैया तथा धार्मिक रंग का गाढा पोचारा है।

ऋग्वेद मे प्रधान-प्रधान राजाओ, देवो, ऋषियो तथा अन्यान्य जनो के भी नाम है। यत्र-तत्र उनकी प्रधान कीर्तियां भी हैं।

महाभारत, बाल्मीकि रामायण, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक उपनिषद, श्रुत या श्रुतो तथा चौदह पुराणो मे वंशावलियां है। उन पुराणो के नाम इस प्रकार है—

१—ब्रह्माण्ड, ६३,८-२६८। २—वायु ८८,८-२१३। ३—ब्रह्म, ७, ४४, ८ ९४। ४—हरिवंश, ११, ६६०-१५, ८३२। ५—मत्स्य, १२ २५ ७। ६—पद्म, V. ८, १३०-६२। ७—शिवपुराण, VII. ६०, ३३-६१, ७३। ८—लिंग पु०, I, ६५३१-६६, ४५। ९—कुर्मपुराण, i, २०, १०-२१, ६०। १०—विष्णु पुराण, IV, २, ३४, ९। ११—अग्नि पुराण, २७२, १८-३९। १२—गरुड पुराण, I, १३८, १७ ४४। १३—श्रीमद्भागवत, IX, ६, ४-१२, ९। १४—देवीभागवत। अपेक्षाकृत विष्णुपुराण मे विशेष स्पष्ट है।

उपर्युक्त ग्रन्थो मे वंशवृक्ष है तो जरूर परन्तु सबो मे एकरूपता नहीं होने के कारण कठिनाइयां उत्पन्न हो जाती है। सर्वत्र पुत्रो तथा उत्तराधिकारियो के संकेत भी नहीं है। कहीं-कहीं नामों मे भी परिवर्तन है। किसी पुराण मे एक राजा के पांच पुत्र कहे गये हैं तो दूसरे मे सात तथा तीसरे मे ८। इसके कुछ उदाहरण देखिये—चन्द्रवंश की ३२वीं पीढी के राजा का नाम 'कुरु' है। कुरु के पुत्रों के विषय मे पुराणो का मत देखिये—वायु पुराण (९९, २१७,२१८) के अनुसार कुरु के चार पुत्र थे—सुधन्न, जह्नु, परीक्षित और अरिमर्दन। महाभारत (१,९४, ५०, ५१) के अनुसार कुरु और वाहिनी के पांच पुत्र थे—अश्वन्त-अविक्षित, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि और जन्मेजय। उदाहरण स्वरूप कुछ और नमूना देखिये—

८२ पीढ़ियाँ बतलाई गई है। महाभारत मे इनके दो खण्ड हैं, एक मे ३० और दूसरे में ४३। दोनो मिलाकर ७३ पीढ़ियाँ होती है। इतना ही नही, वरन् मनुवैवस्वत से महाभारत संग्राम तक ९५ पीढ़ियाँ कही गई है। उनमे तीन पीढ़ियो का स्थान रिक्त है, इसलिए ९२ की संख्या दी गई है। अब यहाँ पर पाठक स्वयं विचार करें कि किस पुराण की बात ठीक मानी जाये। कहा जाता है कि गुप्त काल मे पुराणो का सम्पादन हुआ था, परन्तु उस समय भी यह भूल रह गई। मनुवैवस्वत से राम तक पुराणो मे ६५ पीढ़ियाँ कही गई है, जिनमे दो स्थान रिक्त है, उन स्थानो को छोड देने पर ६३ पीढ़ियाँ होती है। पुराणो के अनुसार राजवंश की सूची पार्जीटर ने अपनी पुस्तक[1] मे दी है। उसकी नकल इस पुस्तक के अन्त मे मैंने भी दे दी है। परन्तु यह पौराणिक सूची शुद्ध नही जान पडती। ऐसा लिखने पर पाठक ऐसा कह सकते है कि—"छोटा मुँह और बडी बात।" अतएव यहाँ पर अपने कथन की पुष्टि के लिये सूर्य और चन्द्र वंश पर प्रकाश डालना आवश्यक है। उसके द्वारा पाठक निर्णय कर लेंगे कि मेरा कथन कहाँ तक ठीक है।

विवस्वान-सूर्य के पुत्र सातवें मनुवैवस्वत सरयू नदी के तट पर (ऋग्वेद ४।३०।१८) अयोध्या मे राज्य करते थे। वैवस्वत मनु की एक इला नाम की ज्येष्ठा पुत्री थी, जिसका विवाह बुध के साथ हुआ था। बुध के पिता का नाम चन्द्र-चन्द्रमा था। चन्द्रमा के पिता का नाम अत्रि था, जिनकी राजधानी अत्रियभूमि—अत्रिपत्तन मे थी। वैवस्वत मनु की पुत्री इला से छोटे और अपने सभी भाइयो मे बडे इक्ष्वाकु थे।

कोशल-अयोध्या के राजा मनुवैवस्वत के पिता का नाम चूँकि सूर्य-विवस्वान था, इसलिये उन्होंने अपने राजवंश को सूर्यवंशी राज्य की संज्ञा दी। पाश्चात्यजन इसी को ऐक्ष्वक राजवंश के नाम से सम्बोधित करते है। मनुवैवस्वत का समय २६६२ ई० पू० है। इसी समय से मनु के दामाद बुध + इला का प्रतिष्ठान-झुसी-प्रयाग मे राज्यकाल आरम्भ हुआ। बुध के पिता का नाम चूँकि चन्द्रमा था—इसलिये पुराणकारो ने उस राजवंश को चन्द्रवंश की संज्ञा दी है। दोनो राजवंश एक ही साथ आरम्भ हुए। अर्थात् चन्द्रवंश का आरम्भिक काल भी २६६२ ई० पू० है। चन्द्रवंश मे आगे चलकर हस्तिन नाम का एक राजा हुआ, जिसने हस्तिनापुर

---

१ एन्शियण्ट इण्डियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन।

पुराणों में क्या है ?

पुराणो मे प्राचीन भारतीय आर्यराजवशो के सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों के वर्णन हैं। उनके वशवृक्ष भी हैं, जो ऐतिहासिक अमूल्य रत्न है। उन्ही के द्वारा आर्य—आज भारतीय प्रमाणित होते है। कठिनाइयाँ केवल यही है कि वशवृक्षो मे कुछ भूल-भुलैया तथा धार्मिक रग का गाढा पोचारा है।

ऋग्वेद म प्रधान-प्रधान राजाओं, देवों, ऋषियो तथा अन्यान्य जनो के भी नाम है। यत्र-तत्र उनकी प्रधान कीर्तियाँ भी है।

महाभारत, बाल्मीकि रामायण, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद, श्रुत या श्रुतो तथा चौदह पुराणो म वंशावलियाँ है। उन पुराणो के नाम इस प्रकार है—

१—ब्रह्माण्ड, ६३,८-२६४। २—वायु, ८८,८-२१३। ३—ब्रह्म, ७, ४४, ८९४। ४—हरिवश, ११, ६६०-१४, ८३२। ५—मत्स्य, १२ २८-७। ६—पद्म, V. ८, १३०-६२। ७—शिवपुराण, VII. ६०, ३३-६१, ७३। ८—लिंग पु०, i, ६५३१-६६, ४५। ९—कुर्मपुराण, 1, २०, १०-२१, ६०। १०—विष्णु पुराण, iv, २, २४, ९। ११—अग्नि पुराण, २७२, १८-३९। १२—गरुड़ पुराण, 1, १३८, १७-६४। १३—श्रीमद्भागवत, IX, ६, ८-१२, ९। १४—देवीभागवत। अपेक्षाकृत विष्णुपुराण मे विशष स्पष्ट है।

उपर्युक्त ग्रन्थो मे वशवृक्ष है तो जरूर परन्तु सबो मे एकरूपता नही होने के कारण कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती है। सर्वत्र पुत्रो तथा उत्तराधिकारियो के सकेत भी नही है। कही-कही नामो म भी परिवर्तन है। किसी पुराण म एक राजा के पाँच पुत्र कहे गये है तो दूसरे म सात तथा तीसरे म ८। इसके कुछ उदाहरण देखिये—चद्रवश की ३२वी पीढी के राजा का नाम 'कुरु' है। कुरु के पुत्रो के विषय मे पुराणो का मत देखिये—वायु पुराण (९९, २१७,२१८) के अनुसार कुरु के चार पुत्र थे—सुधन्वन, जह्नु, परीक्षित और अरिमर्दन। महाभारत (१,९४, ५०, ५१) के अनुसार कुरु और वाहिनी के पाँच पुत्र थे—अश्वन्त अविक्षित, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि और जन्मेजय। उदाहरण स्वरूप कुछ और नमूना देखिये—

पुराणो म सूर्य-पुत्र मनुवैवस्वत से राम तक त्रेतायुग और राम से महाभारत-परीक्षित तक द्वापर युग कहा गया है। सूर्यवशी राजा बृहद्बल महाभारत सग्राम मे मारा गया था (महाभारत तथा भागवत)। सूर्यवशी राजा मनुवैवस्वत से बृहद्बल तक विष्णु पुराण मे ९२, भविष्य मे ९१, भागवत मे ८८ और शिव पुराण मे

८२ पीढ़ियाँ बतलाई गई है। महाभारत मे इनके दो खण्ड है, एक मे ३० और दूसरे मे ४३। दोनो मिलाकर ७३ पीढ़ियाँ होती है। इतना ही नही, वरन् मनुवैवस्वत से महाभारत संग्राम तक ९५ पीढ़ियाँ कही गई है। उनमे तीन पीढ़ियो का स्थान रिक्त है, इसलिए ९२ की संख्या दी गई है। अब यहाँ पर पाठक स्वयं विचार करें कि किस पुराण की बात ठीक मानी जाये ! कहा जाता है कि गुप्त काल मे पुराणों का सम्पादन हुआ था, परन्तु उस समय भी यह भूल रह गई। मनुवैवस्वत से राम तक पुराणो मे ६५ पीढ़ियाँ कही गई है, जिनमे दो स्थान रिक्त है, उन स्थानो को छोड़ देने पर ६३ पीढ़ियाँ होती है। पुराणो के अनुसार राजवंश की सूची पार्जीटर ने अपनी पुस्तक[1] मे दी है। उसकी नकल इस पुस्तक के अन्त मे मैंने भी दे दी है। परन्तु यह पौराणिक सूची शुद्ध नही जान पडती। ऐसा लिखने पर पाठक ऐसा कह सकते है कि—"छोटा मुँह और बडी बात।" अतएव यहाँ पर अपने कथन की पुष्टि के लिये सूर्य और चन्द्र वंश पर प्रकाश डालना आवश्यक है। उसके द्वारा पाठक निर्णय कर लेंगे कि मेरा कथन कहाँ तक ठीक है।

विवस्वान-सूर्य के पुत्र सातवें मनुवैवस्वत सरयू नदी के तट पर (ऋग्वेद ४।३०।१८) अयोध्या मे राज्य करते थे। वैवस्वत मनु की एक इला नाम की ज्येष्ठा पुत्री थी, जिसका विवाह बुध के साथ हुआ था। बुध के पिता का नाम चन्द्र चन्द्रमा था। चन्द्रमा के पिता का नाम अत्रि था, जिनकी राजधानी अत्रियभूमि—अत्रिपत्तन मे थी। वैवस्वत मनु की पुत्री इला से छोटे और अपने सभी भाइयो मे बडे इक्ष्वाकु थे।

कोसल अयोध्या के राजा मनुवैवस्वत के पिता का नाम चूँकि सूर्य-विवस्वान था, इसलिये उन्होंने अपने राजवंश को सूर्यवंशी राज्य की संज्ञा दी। पाश्चात्यजन इसी को ऐक्ष्वक राजवंश के नाम से सम्बोधित करते है। मनुवैवस्वत का समय २६६२ ई० पू० है। इसी समय मे मनु के दामाद बुध + इला का प्रतिष्ठान-झुसी-प्रयाग मे राज्यकाल आरम्भ हुआ। बुध के पिता का नाम चूँकि चन्द्रमा था—इसलिये पुराणकारो ने उस राजवंश को चन्द्रवंश की संज्ञा दी है। दोनो राजवंश एक ही साथ आरम्भ हुए। अर्थात् चन्द्रवंश का आरम्भिक काल भी २६६२ ई० पू० है। चन्द्रवंश मे आगे चलकर हस्तिन नाम का एक राजा हुआ, जिसने हस्तिनापुर

---

१ एन्शियण्ट इण्डियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन।

मनुवैवस्वत
पुत्र
पुत्री + दामाद
सूर्यवंश
कोशल-अयोध्या
इक्ष्वाकु
इला + बुध-चन्द्रवंश, प्रतिष्ठान-
प्रयाग, हस्तिनापुर
१
६
यथाति (६) के पुत्र से
सुदास का युद्ध हुआ जो
सूर्यवंश की ५१वीं पीढी
में था ।
१५
१५ विश्वामित्र
१९
१९ सहस्रार्जुन हैहय—इसको
परशुराम ने मरवाया था
जो सूर्यवंशी अश्मक (५२)
का समकालीन था ।
अनरण्य जो पुराणों ही
के अनुसार सूर्यवंश की
२५वीं पीढी में था—
रावण के द्वारा मारा गया
था । यह कभी संभव
नहीं है ।
२५
५०
५० युधिष्ठिर-महाभारत काल
५१
५२
पुराणों के अनुसार राम
६३वीं पीढ़ी में होते है ।
इसलिये रावण का समय
भी यही होना चाहिये ।
२५वीं पीढी में रावण
कैसे हुआ ?
६३
बृहद्बल महाभारत संग्राम
में मारा गया ।
९२
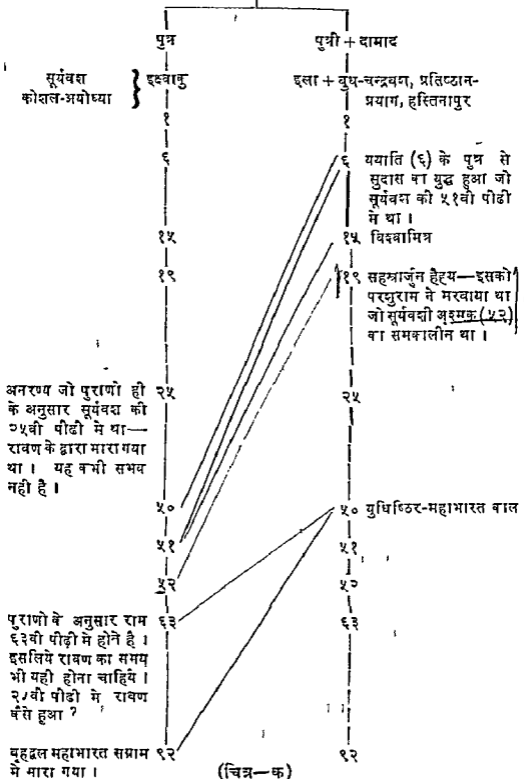
(चित्र—क)

वशवृक्ष के चित्र 'क' मे पाठक देखेंगे कि चन्द्रवश की ५०वी पीढ़ी मे युधिष्ठिर है जो पुराणो के अनुसार हैं, उनके समय म महाभारत सग्राम हुआ था। अब पाठक सूर्यवश की तरफ चलें तो देखेंगे कि पुराणो के अनुसार ६३वी पीढी मे राम है। यदि इसी को ठीक माना जाये तो इसी के अनुसार यह भी मानना पडेगा कि राम से १३ पीढ़ी पहले ही महाभारत सग्राम हो चुका था। १३ पीढियो का समय एतिहासिक विचारधारा के अनुसार (१३ × २८ =) ३६४ वष होता है। यहाँ पर निश्चित कि जिस समय युधिष्ठिर हुए थ, उसी समय महाभारत सग्राम हुआ था। उसमे १३ पीढ़ी अर्थात् ३६४ वष बाद राम हुए और लका म राम-रावण युद्ध भी हुआ। परन्तु यह बात निश्चित है कि राम और रावण महाभारत से पहले हुए थे। इसी पौराणिक आधार पर कुछ पाश्चात्य विद्वानो का कहना है कि—राम-रावण से पहले ही महाभारत सग्राम तथा श्रीकृष्ण हुए।

पुन इसी चित्र मे दूसरी घटना देखिये—चन्द्रवशी राजा ययाति के पुत्र जो सातवी पीढी मे था, उसका युद्ध सूर्यवशी राजा सुदास से हुआ जो सूर्यवश की ५१वी पीढी म था। अब पाठक यहाँ पर विचार कर कि जितने दिनो म चन्द्रवशी राजा सातवी पीढ़ी तक गये उतन ही दिनो म सूर्यवशी ५१वी पिढी म कैसे चले गये? इसका उत्तर तो असभव ही है।

तीसरा उदाहरण भी ऐसा ही है। चन्द्रवशी राजा ययाति के पुत्र द्रुह्यु जिस सर्वकाम द्वारा मारा गया था, वह सूर्यवश की ५०वी पीढी मे था। यह घटना भी सभव नही है।

चौथा उदाहरण—चन्द्रवश की १५वी पीढी मे पुराणो के अनुसार विश्वामित्र थे। उन्होने कल्मापपाद के द्वारा वशिष्ठ के पुत्रो को मरवाया था, जो कल्माप पाद पुराणो के अनुसार सूर्यवश की ५१वी पीढी म था। यह भी सभव नही है।

पाँचवाँ उदाहरण—चन्द्रवश की १९वी पीढ़ी मे सहस्रार्जुन हैहय था, उसको परशुराम ने मरवाया था। परशुराम का समकालीन राजा अश्मक सूर्यवश की ५२वी पीढी मे था। यह १९ और ५२ का भी समकालीन होना सम्भव नही है।

१०६४ वर्ष। इस हिसाब के अनुसार रावण—राम से १०६४ वर्ष पहले से जीवित और वर्त्तमान था। ऐसी ही उटपटाग बातें पुराणों मे अनेक है। इसीलिये पीढियो को निश्चित करने मे अनेक कठिनाइयाँ होती है। ऐसी परिस्थितियो में पिता-पुत्र तथा उत्तराधिकारियों का परिचय प्राप्त करना भी सरल काम नही है।

जिस रावण के साथ दाशरथी राम का युद्ध हुआ था, उस रावण के अतिरिक्त यदि अन्य रावण रहा हो, तब पौराणिक कथन ठीक माना जा सकता है। जैसे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आदि एक ही नाम के कई राजे हुआ करते थे, उसी तरह से यदि रावण को भी मान लिया जाये तो पौराणिक घटना सत्य हो जायगी। कुछ लोगो का कहना है कि अन्तिम रावण 'दसवां' था। दाशरथी राम के समय से पहले रावण नामक असुर राजे हो चुके थे। 'तामिल' रामायण में कदाचित ऐसा है। आशा है, विज्ञजन इस पर अन्वेषण करेगे।

महाभारत में लिखा है कि प्रधान पुरुषों के ही परिचय है। यथा—

> अपरे ये च पुर्वे वै भारता इति विश्रुताः।
> भरतस्यान्ववाये हि देवकल्पा महोजस॥
> बभूवुर्ब्रह्म कल्पाश्च बहवो राजसत्तमाः।
> येषामपरिमेयानि नामधेयानि सर्वश॥
> तेषांतु ते यथा मुख्यं कीर्तयिष्यामि भारत।
> महाभागान्देवकल्पान्सत्याजंवपरायणान॥
>
> (महाभारत आदिपर्व ३।३८,४५)

इसके अतिरिक्त पुराणो मे भी इस प्रकार है—

> सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तर तथा।
> वंशानुचरित चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

इसका सारांश यह होता है कि पुराणा में पाँच विषयो का निरूपण है। परन्तु प्रधानत उनमें सृष्टि और उसके उपोद्घात को ही दर्शाया गया है। ब्रह्म पुराण में विश्वनिर्माता ब्रह्म का वर्णन है। नारदपुराण मे नारद का, शिव पुराण में शिव का, विष्णु पुराण मे विष्णु का और वायु का वर्णन वायु पुराण मे है। पद्मपुराण म कमल का। अर्थात् सबसे प्रथम कमल की उत्पत्ति हुई। पुन. उसी से ब्रह्म और ब्रह्म के द्वारा सृष्टि की रचना हुई।

विश्व के वैज्ञानिको का भी यही कहना है कि सबसे पहले जल की उत्पत्ति हुई। उसके बाद जल मे ही 'सेवार' उत्पन्न हुआ। सेवार से कीटे-मकोडे उत्पन्न हुये

वशवृक्ष के चित्र 'क' मे पाठक देखेगे कि चन्द्रवश की ५०वी पीढी मे युधिष्ठिर हैं जो पुराणो के अनुसार हैं, उनके समय मे महाभारत सग्राम हुआ था। अब पाठक सूर्यवश की तरफ चलें तो देखेंगे कि पुराणो के अनुसार ६३वी पीढी मे राम है। यदि इसी को ठीक माना जायें तो इसी के अनुसार यह भी मानना पड़ेगा कि राम से १३ पीढ़ी पहले ही महाभारत सग्राम हो चुका था। १३ पीढियो का समय ऐतिहासिक विचारधारा के अनुसार (१३ X २८ =) ३६४ वर्ष होता है। यहाँ पर निश्चित कि जिस समय युधिष्ठिर हुये थे, उसी समय महाभारत सग्राम हुआ था। उससे १३ पीढी अर्थात् ३६४ वर्ष बाद राम हुये और लका मे राम-रावण युद्ध भी हुआ। परन्तु यह बात निश्चित है कि राम और रावण महाभारत से पहले हुये थे। इसी पौराणिक आधार पर कुछ पाश्चात्य विद्वानो का कहना है कि—राम-रावण से पहले ही महाभारत सग्राम तथा श्रीकृष्ण हुये।

पुन इसी चित्र मे दूसरी घटना देखिये—चन्द्रवशी राजा ययाति के पुत्र जो सातवी पीढ़ी मे था, उसका युद्ध सूर्यवशी राजा सुदास से हुआ जो सूर्यवश की ५१वी पीढ़ी मे था। अब पाठक यहाँ पर विचार करें कि जितने दिनो मे चन्द्रवशी राजा सातवी पीढी तक गये उतने ही दिनो मे सूर्यवशी ५१वी पिढ़ी मे कैसे चले गये? इसका उत्तर तो असभव ही है।

तीसरा उदाहरण भी ऐसा ही है। चन्द्रवशी राजा ययाति के पुत्र द्रुह्यु जिसे सर्वकाम द्वारा मारा गया था, वह सूर्यवश की ५०वी पीढी मे था। यह घटना भी सभव नही है।

चौथा उदाहरण—चन्द्रवश की १५वी पीढी मे पुराणो के अनुसार विश्वामित्र थे। उन्होने कल्मापपाद के द्वारा वशिष्ठ के पुत्रो को मरवाया था, जो कल्माप पाद पुराणो के अनुसार सूर्यवश की ५१वी पीढ़ी मे था। यह भी सभव नही है।

पाँचवाँ उदाहरण—चन्द्रवश की १९वी पीढी मे सहस्रार्जुन हैहय था, उसको परशुराम ने मरवाया था। परशुराम का समकालीन राजा अश्मक सूर्यवश की ५२वीं पीढ़ी मे था। यह १९ और ५२ का भी समकालीन होना सम्भव नही है।

छठा उदाहरण—पुराणो के अनुसार अनरण्य (द्वितीय) सूर्यवश की २५वी पीढ़ी म था। विष्णुपुराण (४।३।१४) के अनुसार वृद्धावस्था में वह रावण के द्वारा मारा गया था। अब पाठक विचार करें कि रावण जब सूर्यवश की २५वी पीढ़ी के समय जीवित था और ६३वी पीढी मे जब राम हुये तब तक उसका जीवित रहना कहाँ तक सम्भव है? ६३ – २५ = ३८ पीढियो का अन्तर है = (३८ X २८)

१०६४ वर्ष। इस हिसाब के अनुसार रावण—राम से १०६४ वर्ष पहले से जीवित और वर्त्तमान था। ऐसी ही उटपटाग बातें पुराणो मे अनेक हैं। इसीलिये पीढियो को निश्चित करने मे अनेक कठिनाइयाँ होती है। ऐसी परिस्थितियो में पिता-पुत्र तथा उत्तराधिकारियो का परिचय प्राप्त करना भी सरल काम नही है।

जिस रावण के साथ दाशरथी राम का युद्ध हुआ था, उस रावण के अतिरिक्त यदि अन्य रावण रहा हो, तब पौराणिक कथन ठीक माना जा सकता है। जैसे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आदि एक ही नाम के कई राजे हुआ करते थे, उसी तरह से यदि रावण को भी मान लिया जाये तो पौराणिक घटना सत्य हो जायेगी। कुछ लोगो का कहना है कि अन्तिम रावण 'दसवां' था। दाशरथी राम के समय से पहले रावण नामक असुर राजे हो चुके थे। 'तामिल' रामायण मे कदाचित ऐसा है। आशा है, विज्ञजन इस पर अन्वेषण करेंगे।

महाभारत मे लिखा है कि प्रधान पुरुषो के ही परिचय है। यथा—

अपरे ये च पुर्वे वै भारता इति विश्रुताः।
भरतस्यान्ववाये हि देवकल्प महोजसः॥
बभूवुर्ब्रह्म कल्पाश्च बहवो राजसत्तमाः।
येषामपरिमेयानि नामधेयानि सर्वशः॥
तेषांतु ते यथा मुख्यं कीर्तयिष्यामि भारत।
महाभागान्देवकल्पान्सत्याजंवपरायणान्॥
(महाभारत आदिपर्व ३।३४,४५)

इसके अतिरिक्त पुराणो में भी इस प्रकार है—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तरं तथा।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

इसका साराश यह होता है कि पुराणों में पांच विषयो का निरूपण है। परन्तु प्रधानत. उनमे सृष्टि और उसके उपोद्घात को ही दर्शाया गया है। ब्रह्म पुराण में विश्वनिर्माता ब्रह्म का वर्णन है। नारदपुराण मे नारद का, शिव पुराण में शिव का, विष्णु पुराण मे विष्णु का और शेष का वर्णन वायु पुराण मे है। पद्मपुराण मे कमल का। अर्थात् सबमे प्रथम कमल की उत्पत्ति हुई। पुन. उसी से ब्रह्म और ब्रह्म के द्वारा सृष्टि की रचना हुई।

विश्व के वैज्ञानिकों का भी यही कहना है कि सबसे पहले जल की उत्पत्ति हुई। उसके बाद जल मे ही 'सेवार' उत्पन्न हुआ। सेवार से कीडे-मकोडे उत्पन्न हुये।

इन बातों के अतिरिक्त दूसरी कठिनाई यह होती है कि एक ही नाम के अनेक व्यक्ति है और उनके अलग-अलग होने का कोई पता भी आसानी से नहीं मिलता है। यथा—

आंगिरस—इस नाम के यथार्थतः १५ व्यक्ति पुराणों में है। जो ठीक है। परन्तु पुराणों में ही १६-१७ 'आंगिरस' नाम हैं।

वशिष्ठ—वशिष्ठ नाम के भी कई व्यक्ति हुए हैं। ऐसा मालूम होता है कि भृगु की तरह वशिष्ठ के उत्तराधिकारी भी वशिष्ठ ही के नाम से प्रसिद्ध होते गये। एक वशिष्ठ वरुण-ब्रह्मा, सूर्य-विष्णु के समय में वर्त्तमान थे, जो मित्रा वरुण के ही पुत्र थे। एक वशिष्ठ आरंभिक काल में अयोध्या राज परिवार के गुरु थे। (ब्रह्माण्ड पुराण iii,४८, ६६। विष्णु iv, ३-१८। पद्मपुराण, vi, २१६,४८, २३७०१) महाभारत (i, १७८,६६४२।)

भृगु—भृगु के विषय में भी वैसे ही कहा जा सकता है। मत्स्य पुराण के अनुसार भृगु का विवाह पुलोमन की पुत्री दिव्या से हुआ था। दिव्या से बारह भृगु भगवान पैदा हुये (वायु पु० ६४,४। ब्रह्माण्ड ii,३८,४)।

ऋक्ष—ऋक्ष नाम भी कई व्यक्तियों के थे। एक ऋक्ष पुरुजानु के पुत्र या दिवोदास के परदादा के पिता का नाम कहा जा सकता है।

दूसरा ऋक्ष चन्द्रवंशी राजा अजमीढ़ का छोटा पुत्र था।

तीसरा ऋक्ष चन्द्रवंशी राजा विदुरथ का पुत्र था।

चौथा ऋक्ष चन्द्रवंशी राजा देवा तिथि का पुत्र था। पहला ऋक्ष यदि तृक्ष माना जाय तो भी ये तीन ऋक्ष हुये।

पांचवां ऋक्ष वाल्मीकि रामायण के रचयिता थे। उनका असली नाम ऋक्ष ही था।

इतना ही नहीं है। किसी एक व्यक्ति को एक पुराण में सूर्यवंश की १० वी पीढ़ी में कहा गया है तो उसी व्यक्ति को दूसरे पुराण में उसी वंश में या चन्द्रवंश में पीढ़ी संख्या बदल दी गई है। इन कठिनाइयों के बीच से मन्थन करके राजवंश रूपी नवनीत निकालना असम्भव नहीं तो टेढ़ी खीर जरूर है। इन कठिनाइयों के होते हुए भी प्राचीन ऐतिहासिक राजवंश उनमें अब तक वर्त्तमान हैं। उन्हीं के द्वारा कठिन परिश्रम करने पर आज प्राचीन आर्य राजे सजीव हो बोलने लगते हैं। उन्हीं के द्वारा वर्तमान मानव राजवंश का ऐतिहासिक काल-निर्णय भी निश्चित हो पाता है।

उन्हीं के द्वारा ऋग्वेदादि अमूल्य ग्रन्थों का काल भी निश्चित होता है। उन्हीं पुराणों का पर्सिया के इतिहास (History of Persia) के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रमाणित होता है कि ईरान पर्सिया के विजेता भारतीय आर्य ही थे। जल-प्रलय काल में जिस

अभिमन्यु या मनु की कथा मत्स्य द्वारा बचने की मत्स्य पुराण में है, उसी व्यक्ति को एशिया के इतिहास में 'अमनन' और 'मेमनन' आदि नामोंसे प्रकट किया गया है। होमर के 'ओडेसी' काव्य और ट्राय युद्ध का वर्णन भी तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ने पर स्पष्ट प्रमाणित होता है कि उनमें भी भारतीयआर्यों का ही वर्णन है—चाक्षुष-मन्वन्तर काल का। इन बातों पर विचार करने से यह प्रमाणित होता है कि आर्यों के अमूल्य वंशवृक्ष एवं शासक वृक्ष भारतीय पुराणों में हैं। जो विश्व में आज कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। आवश्यकता है कुछ विदेशी ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन की और हिन्दी भाषा में लिखने की।

पौराणिक आर्य राजवंशों पर शोधकार्य

पौराणिक आर्य राजवंशों पर चार प्रामाणिक गवेषणा ग्रन्थ हमारे समक्ष हैं। सबसे प्रथम कलकत्ता उच्च न्यायालय (HighCourt) के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री एफ० ई० पार्जीटर एम० ए० ने 'एन्शियन्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन' नामक पुस्तक लिखी। जिसमें उन्होंने मनुवैवस्वत से ५०० ई० पू० तक के आर्य राजवंशों की सप्रमाण छान-बीन की। महाभारत संग्राम काल पर भी शोधकार्य किया। उनके विचार से ६५० ई० पू० महाभारत संग्राम हुआ। इनके अतिरिक्त महाभारत संग्राम पर लोकमान्य तिलक तथा काशीप्रसाद जायसवाल ने भी शोधकार्य किया है। इन लोगों के मतानुसार म० भा० सं० काल १४२४ ई० पू० है। पार्जीटर के मतानुसार गौतम बुद्ध से ४५० ई० पू० महाभारत संग्राम हुआ।

उनके बाद डा० सीतानाथ प्रधान एम० एस-सी०, पी० एच० डी० ने 'क्रोनोलाजी आफ एन्शियण्ट इण्डिया' नामक दूसरी पुस्तक लिखी। जो १९२० ईस्वी में कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई। उनके अन्वेषण का उद्देश्य केवल महाभारत संग्राम काल निश्चित करना था। इसलिये इन्होंने दाशरथी राम से लगभग ५०० ई० पू० तक के आर्य राजवंशों की छान-बीन की। उसी सम्बन्ध में राम के पूर्व पुरुषों पर भी प्रकाश डाला। इनके विचार से ११५० ई० पू० महाभारत संग्राम काल निश्चित होता है। इन्होंने पार्जीटर द्वारा निश्चित आर्य राजवंशों की पीढ़ियों को अशुद्ध प्रमाणित किया।

तीसरी पुस्तक 'पोलिटीकल हिस्ट्री आफ एन्शियण्ट इण्डिया' नामक डा० हेमचन्द्र राय चौधरी ने लिखी। इन्होंने राजा परीक्षित से गुप्तकाल तक के आर्य राजवंशों की ऊहापोह की।

चौथी पुस्तक आचार्य चतुरसेन कृत वयं रक्षाम नामक उपन्यास है। यद्यपि यह उपन्यास है तथापि इस पुस्तक में सतयुग और त्रेता के आर्य राजवंशों से सम्बन्धित सामग्रियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। आचार्य चतुरसेन ने पार्जीटर और प्रधान की पुस्तकों पर भी पूरा

१२. मनु-रुद्र (भद्र) सावर्णि—(भाग० ८।१२।२७)
१३. मनु-देव सावर्णि—(भाग० ८।१३।३०)
१४. मनु-इन्द्र सावर्णि—(भाग० ८।१३।३३)

मन्वन्तर की अवधि

पुराणों के अनुसार एक मन्वन्तर मे ७१ चतुर्युगी का समय लगता है। प्रत्येक चतुर्युगी मे सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि का क्रम से एक बार होना आवश्यक है।

युगों की अवधि

पुराणों के अनुसार सतयुग का भोगकाल ४००० चार हजार वर्षों का होता है। इसके अतिरिक्त चार-चार सौ वर्ष सन्ध्यांश और सन्ध्या में लगते हैं।

त्रेतायुग का भोगकाल तीन हजार वर्षों का होता है। इसके अतिरिक्त तीन-तीन सौ वर्ष संध्या और संध्यांश मे लगते हैं।

द्वापर युग का भोगकाल दो हजार वर्षों का होता है। इसके अतिरिक्त दो-दो सौ वर्ष संध्या और संध्यांश मे लगते हैं।

कलियुग का भोगकाल एक हजार वर्ष का होता है। इसके अतिरिक्त एक-एक सौ वर्ष संध्या और संध्यांश मे लगते हैं।

उपर्युक्त परिभाषा को देखने से यह स्पष्ट विदित होता है कि जितने हजार वर्ष का एक युग होता है, उतने ही सौ वर्ष संध्या में तथा उतने ही सौ वर्ष संध्यांश मे लग जाते है। एक चतुर्युगी का समय निम्नांकित अंकों द्वारा समझिये—

एक चतुर्युगी

१.	सतयुग	...	...	४००० वर्ष
	संध्या	....	...	४०० "
	संध्यांश	...	...	४०० "
२.	त्रेता	...	...	३००० "
	संध्या	...	...	३०० "
	संध्यांश	....	...	३०० "
३.	द्वापर	...	...	२००० "
	संध्या	...	...	२०० "
	संध्यांश	...	...	२०० "
४.	कलि	...	...	१००० "
	संध्या		...	१०० "
			...	१०० "
				१२०००।

युग

युग का अभिप्राय यह है कि मानवकाल की घटनाओं को चार भागों में विभक्त किया गया है। परन्तु सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि ये चारों युग संसार पर लागू नहीं हैं। पुराणों तथा महाभारत के अनुसार ये युग केवल भारतवर्ष पर ही लागू हैं। (महाभारत VI, १०, ३८७। वायु पुराण २८१, ४८, १३७, ५७, २२। ब्रह्मपुराण, २७, ६४। पद्मपुराण, I, ७, ३)।

भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न नाम के युग थे।

मनु

मनुष्यों के नेता (युग पुरुष) को ही 'मनु' कहा गया है (ऋग्वेद १०।६२।११)। जैसे आज हमलोग बीसवीं शताब्दी के युग पुरुष या मनु महात्मा गांधी को कह सकते हैं। जब तक भारतीय जनतन्त्र कायम रहेगा तथा महात्मा गांधी के आदेशानुसार सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था होती रहेगी, तबतक गांधी मन्वन्तर काल कहा जा सकता है। जब इन्हीं के समान प्रभावशाली दूसरा कोई युग-पुरुष उत्पन्न होगा—तब गांधी मन्वन्तर बदलकर उस नये युग-पुरुष के नाम पर दूसरा मन्वन्तर आरंभ हो जायेगा।

मन्वन्तर

एक मनु से दूसरे मनु के बीच के समय को मन्वन्तर कहते हैं। मन्वन्तर का वर्णन निम्नलिखित पुराणों में है—वायु, मत्स्य, श्रीमद्भागवत, विष्णु, हरिवंश पुराण तथा दुर्गा सप्तशती।

मन्वन्तर काल वर्षों में

पुराणों के अनुसार एक मन्वन्तर में ७१ चतुर्युगी का समय लगता है। प्रत्येक चतुर्युगी में सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि का एक बार क्रम से होना जरूरी है।

पाठक पहले ही देख चुके हैं कि एक चतुर्युगी में बारह हजार वर्ष का समय लगता है। यह बारह हजार वर्ष हमलोगों के नहीं हैं। देवताओं के हैं।

देवताओं का एक वर्ष हमारे तीन सौ साठ वर्षों के बराबर होता है। इसलिये एक चतुर्युगी में (१२००० × ३६० =) ४३२०००० वर्ष लगते हैं। जब एक चतुर्युगी में ४३२०००० वर्ष लगते हैं तब एकहत्तर चतुर्युगी में (४३२०००० × ७१ =) ३०६७२०००० वर्ष लग जायेंगे। इस प्रकार एक मन्वन्तर का भोग काल ३०६७२०००० वर्ष हुआ।

सतयुग काल में छः मन्वन्तर बीत चुके हैं। इसलिये (३०६७२०००० × ६ =) १८४०३२०००० वर्ष सतयुग का भोगकाल हुआ।

इनके पुत्रो को मिलाकर दो पीढियाँ हुई । स्वायम्भुवमनु से दक्ष तक ४५ पीढियाँ और कश्यप, वरुण-सूर्यादि २ पीढ़ियाँ—कुल मिलाकर ४७ पीढियाँ हुई । यही ४७ पीढियो का भोगकाल छै मन्वन्तरो का भोगकाल सतयुग का भोगकाल हुआ । चाक्षुष मनु के बाद सातवें मनु सूर्यपुत्र मनुवैवस्वत हुये हैं ।

छठें मनु, चाक्षुष थे और सातवे मनु, वैवस्वत । इसलिये वैवस्वत मनु सातवें और चाक्षुष मनु छठे के बीच मे दक्ष (४५) के दामाद कश्यप और कश्यप के पुत्र वरुण-ब्रह्मा, सूर्य-विवस्वान आदि दो पीढियाँ और होती है । इसलिये पुराणों के वचनानुसार ४७ पीढियो के भोगकाल को सतयुग का भोगकाल कहना चाहिये । इतना कहने का साराश यह हुआ कि इन्ही ४७ पीढियो के भोगकाल को सतयुग का भोगकाल मानना चाहिये । यही ४७ पीढियाँ छै मन्वन्तरो की शासक पीढियाँ हैं ।

पुराणो के वचनानुसार ४७ पीढियो या छै मन्वन्तरो का समय १८४०३२०००० वर्ष होता है । इस हिसाब से एक शासक के भोगकाल का औसत यदि लिया जाय तो (१८४०३२०००० — ४७ =)३९१५३६१७ वर्ष हुआ । इसको आज का विवेकशील व्यक्ति कोई भी मानने को तैयार नही है । इस अत्युक्ति के लिये कोई शब्द मेरे पास नही है ।

विशेष—आचार्य चतुरसेन ने वयरक्षाम मे ४५ पीढियो के भोगकाल को ही सतयुग का भोगकाल माना है । वैवस्वत मनु से त्रेता का आरम्भ माना है, सो ठीक ही है । परन्तु वैवस्वत मनु के पहले जो दक्ष प्रजापति (४५) के दामाद मरीचि-कश्यप तथा दौहित्र वरुण ब्रह्मा, सूर्य-विस्वान आदि दो पीढियो को छोड दिया—मेरे विचार से इन दो पीढियो को सतयुग काल मे ही जोड देना आवश्यक है । इस प्रकार सतयुग के भोगकाल मे (४५ + २ =)४७ पीढियाँ हो जाती है ।

सातवें मनु वैवस्वत त्रेता के आरभ मे हुये, इसलिये उनसे पहले तक छठे मनु चाक्षुष का ही प्रभाव मानना चाहिये ।

वरुण-ब्रह्मा तथा सूर्य-विष्णु दो प्रधान पीढियो को कदापि नही छोडना चाहिये । जलप्रलय के बाद उन्ही के द्वारा पुन नवीन सृष्टि हुई है ।

ऐतिहासिक आधार पर विचार आगे पढिये ।

अज्ञात राज्यकाल

विश्व के बडे बडे विद्वानो ने अज्ञात राज्यकाल जानने की एक प्रणाली निश्चित की है । वह प्रणाली यह है कि एक पीढी का अज्ञात राज्यकाल कम-से कम बीस वर्ष और अधिक से अधिक २८ वर्ष मानना चाहिये । इस प्रणाली की यथार्थता को सिद्ध करने के लिये निम्न लिखित उदाहरण पाठको के समक्ष है—पहले उदाहरण का राज्यकाल पुराणो के अनुसार है—

वायु तथा ब्रह्म पुराण के अनुसार मगध के २२ क्रमबद्ध राजाओं के राज्यकाल निम्न प्रकार हैं—

१. सोमाधि	५० वर्ष	१२. सुव्रत	२४ वर्ष
२ श्रुतश्रवस	६ "	१३. धर्मनेत्र	५ "
३. अयुतायुस	२६ "	१४ निवृत्ति	५८ "
४. निरमित्र	४० "	१५. त्रिनत्र	२८ "
५. सुक्षत्र	५० "	१६ दृढ़सेन	८ "
६. वृहतकर्मन	२३ "	१७. महिनेत्र	३३ "
७. सेनजित	२३ "	१८. सुचल	२२ "
८. स्तुतजय	३५ "	१९. सुनेत्र	४० "
९. विभु	२८ "	२०. सत्यजीत	३० "
१०. शुचि	६ "	२१. विश्वजीत	२५ "
११ क्षेम	२८ "	२२. रिपुंजय	५० "
		कुल योग	६३८ वर्ष

यहाँ पर पुराणों के वचनानुसार २२ राजाओं के राज्यकाल का योगफल ६३८ वर्ष होता है। अब यदि प्रत्येक राजा के शासन काल का औसत निकाला जाये तो ६३८ में २२ का भाग देना होगा। ६३८ ÷ २२ = भागफल २९ होता है। और यदि ६३८ में २८ का भाग दियाजाये तो भागफल २२ राजा हो जाता है। इस विधि से यह प्रकट हो जाता है कि प्रत्येक राजा का औसत राज्यकाल २९ वर्ष या २८ वर्ष हो जाता है।

दूसरा उदाहरण

चन्द्रगुप्त प्रथम का राज्याभिषेक २६ फरवरी ३२० ई० में हुआ था। द्वितीय चन्द्रगुप्त (जिसका नाम चन्द्रगुप्त बालादित्य भी था) का राज्याभिषेक ४६९ ईस्वी म हुआ था। यह प्रथम चन्द्रगुप्त की पाँचवी पीढी म था। इसलिये दोनों के बीच का अन्तर (४६९ − ३२० =)१४९ वर्ष हुआ। अब प्रत्येक के शासनकाल का औसत (१४९ ÷ ५ =)२९⅘ वर्ष हुआ।

तीसरा उदाहरण

(Toiets Advanced History P 536)

१६९० म जार्ज प्रथम उनके बाद क्रमानुसार जार्ज द्वितीय, फ्रेडरिक, जार्ज तृतीय, जार्ज चतुर्थ, विक्टोरिया, सप्तम एडवर्ड तथा जार्ज पंचम १९२१।

इस प्रकार १६९० और १९२१के बीच मे आठ शासक हुये। इनका भोगकाल (१९२१ – १६९०=)२३१ वर्ष हुआ। इस २३१ वर्ष मे ८ राजे हुये। अब प्रत्येक का औसत शासन काल (राज्य काल) हुआ (२३१ ÷ ८) २८$\frac{7}{8}$ वर्ष।

चौथा उदाहरण

काश्मीर के प्रथम लोहर राजवश को लीजिये—

श्री नगर मे सग्राम राजा का राज्याभिषेक हुआ—१००३ ई० मे
उनके पुत्र अनन्त का " " १०२८ "
अनन्त के पुत्र खालसा का " " १०६३ "
खालसा के पुत्र हर्ष राजा हुआ " " १०८९ "

अब देखिये कि राजा सग्राम के राज्याभिषेक १००३ से हर्ष के राज्याभिषेक १०८९ तक तीन पीढियो का भोगकाल (१०८९ – १००३ =)८६ वर्ष होता है। इसलिये प्रत्येक के राज्यकाल का औसत (८६ ÷ ३ =)२८$\frac{2}{3}$ वर्ष। अब पाठको के समक्ष चार उदाहरण हैं।

इसी तरह भिन्न-भिन्न राजवंशो के शासन काल की जाँच करने पर यह देखा गया है कि कम से कम २० वर्ष और अधिक से अधिक २८ वर्ष के लगभग समय होता है। डा० प्रधान ने इसके अनेक उदाहरण दिये है। उन्ही मे से कुछ यहाँ दिये गये है।

स्वर्गीय बालगगाधर तिलक तथा स्वर्गीय श्रीकाशी प्रसाद जायसवाल का निर्णय भी इसी आधार पर है। परन्तु पार्जीटर ने महाभारत के बाद की पीढियो का भोगकाल २० वर्ष मे कम कर दिया हैं, इसलिये उनका समय ९५० वर्ष हो गया है।

आर्यों के मूल पुरुष स्वायंभुवमनु-काल

१९६५ वर्ष आज से पूर्व ईसा मसीह का समय है, जो सर्व विदित है।
११५० " मसीह से पूर्व महाभारत तथा श्रीकृष्ण का समय है।
४२० " महाभारत से पूर्व राम तथा रावण का समय है।
१०९२ " राम मे पूर्व सातवें मनुवैवस्वत का समय है।
५० " मनुवैवस्वत से पूर्व उनके पिता सूर्य तथा चाचा वरुण-ब्रह्मा और इन्द्र का काल है।
५० " पूर्व सूर्य तथा वरुण-ब्रह्मा से उनके पिता मरीचि-कश्यप का समय
१२६० " पूर्व कश्यप और दक्ष (४५) से स्वायभुव मनु प्रथम का समय है।

५९८७ वर्ष आज से पूर्व आर्यों के मूल पुरुष स्वायभुव मनु का समय है।

स्वायंभुव मनु-काल—जिनका आविर्भाव भारत-काश्मीर-जम्बू (जम्मू) में हुआ।[1]

११५० ई० पू० महाभारत संग्रामकाल।
१५७० " राम-रावण काल।
२६६२ " पाश्चात्यों तथा चंद भारतीय लेखकों के मतानुसार भारत में प्रवेश करनेवाले प्रथम आर्य राजा मनुवैवस्वत का समय।
२७१२ " वरुण-ब्रह्मा, सूर्य-विष्णु तथा इन्द्र का समय।
२७६२ " मरीचि-कश्यप और दक्ष (४५) प्रजापति का समय।
४०२२ " स्वायंभुव मनु प्रथम का समय।

विशेष—मन्वन्तर के अनुसार इनका भोगकाल तो पाठक देख ही चुके हैं। यहाँ पर ऐतिहासिक विधि से देखें—

१—स्वायंभुव मनु प्रथम, २—प्रियव्रत (प्रियव्रत के भाई उत्तानपाद थे, जिनके पुत्र ध्रुव हुये, जिनका वंशवृक्ष अलग चला) ३—आग्नीध्र, ४—नाभि-नभि, ५—ऋषभदेव, ६—भरत-जडभरत-मनुर्भरत, ७—सुमति, ८—इन्द्रद्युम्न, ९—परमेष्ठी, १०—प्रतिहार, ११—प्रतिहर्ता, १२—भुव, १३—उद्गीव, १४—प्रस्तार, १५—पृथु, १६—नक्त, १७—गय, १८—नर, १९—विराट्, २०—महावीर्य, २१—धीमान, २२—महान, २३—मनुस्य, २४—त्वष्टा, २५—विरज, २६—रज, २७—विषग्ज्योति, २८—से ३५ तक अनिश्चित। ३६—चाक्षुषमनु (३५वीं पीढ़ी पर प्रियव्रत शाखा पुत्राभाव में समाप्त हो गई। तब उत्तानपाद शाखा से चाक्षुष मनु आये। प्रियव्रत शाखा में स्वारोचिष, उत्तम, तामस और रैवत नामक चार मनु हुये। परन्तु राजवंश की पीढ़ी में नहीं हुये।) ३७—उर, ३८ अंग, ३९ वेन, ४० पृथुवैन्य, ४१ अन्तर्द्धान, ४२ हविर्द्धान, ४३ प्राचीन बर्हिष, ४४ प्रचेतस, ४५ दक्ष। पुत्राभाव में दक्ष का वंश वृक्ष समाप्त हो गया। इन ४५ पीढ़ियों का भोगकाल। ऐतिहासिक विधि से (४५×२८=) १२६० वर्ष होता है।

दक्ष प्रजापति का कोई पुत्र जीवित नहीं बचा। साठ पुत्रियाँ बचीं। उनमें १३ पुत्रियों के विवाह मरीचि प्रजापति के पुत्र कश्यप के साथ हुए।

कश्यप की सबसे बड़ी पत्नी का नाम दिति, उससे छोटी का नाम अदिति और उससे छोटी का नाम दनु था। दनु की सन्तानों के कुल का नाम मातृगोत्र पर दानव कुल

[1] ई० पू० (१९८७ – १९६५=)४०२२

पड़ा। अदिति की सन्तानों के कुल का नाम मातृगोत्र पर आदित्य कुल पड़ा। अदिति के गर्भ से कश्यप के बारह पुत्र हुये। जो सभी आदित्य कुल कहलाये। सबसे बड़े पुत्र का नाम वरुण पड़ा जो पीछे अपने कर्तव्य के अनुसार ब्रह्मा कहलाये। ये बातें पर्शिया के इतिहास द्वारा प्रमाणित होती है। श्रीमद्भागवत मे विधाता (ब्रह्मा) वरुण के ही एक भाई का नाम है। सबसे छोटे पुत्र का नाम विवस्वान था। वही पीछे सूर्य आदित्य विष्णु तथा मित्र आदि अनेक नामों से प्रसिद्ध हुये। इन्हीं विवस्वान-सूर्य के पुत्र सातवें मनु वैवस्वत के नाम से विख्यात हुये। जो भारतवर्ष के प्रथम आर्य राजा हुये—पाश्चात्यों के मतानुसार। इन्हीं विवस्वान के भाई यम थे जिनकी राजधानी यमपुरी ईरान मे ही हुई। यम के पुत्र आठ वसु हुये। उन्ही मे एक 'धर' वसु थे। धर के पुत्र रुद्र-शिव हुये। यानी यम के पौत्र रुद्र हुये।

कश्यप और वरुण ब्रह्म तथा विवस्वान-सूर्य आदि दो पीढ़ियों का भोगकाल नियमानुसार (२ × २८ =)५६ वर्ष ही होना चाहिये। परन्तु ये अधिक दिनों तक कार्यक्षेत्र म जीवित रहे और शासन कार्य बहुत दिन तक किये, इसलिये इनका राज्यकाल मैंने एक सौ वर्ष रखना उचित समझा है। इस प्रकार ४५ पीढ़ियों का भोगकाल १२६० वर्ष और इन दो पीढ़ियों का भोगकाल १०० वर्ष मिलाकर १३६० वर्ष सतयुग का भोगकाल होता है। यही छै मनुओं का भोगकाल हुआ।

विशेष—यहां पर पाठक याद रखें कि सातवें मनु वैवस्वत भारतीय आर्य राजवंश की ४८वीं पीढ़ी में थे। उन्ही को पाश्चात्य जन पहली पीढ़ी मे बतलाते है।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड दूसरा

सतयुग-कृतयुग

वर्त्तमान मानव सृष्टि का प्रजापति वंशारम्भ

(४०२२ ई० पू०)

१. प्रजापति-परिचय

(पूर्वार्द्ध)

१—प्रजापति[1] मनु[2] स्वायंभुव

प्रजाओं की रचना हो जाने पर मनु की उत्पत्ति हुई।[3] मनु ही स्वायंभुव मनु के नाम से विख्यात हुये।[4] यह प्रथम मनु तथा प्रजापति हुये।[5] मनु की पत्नी का नाम 'शतरूपा'[6] था। मनु के समय को ही मन्वन्तर काल[7] कहा गया है।

स्वायंभुव मनु की सन्तानें पाँच हुईं। जिनमें दो पुत्र—प्रियव्रत और उत्तानपाद। पुत्रियाँ तीन—प्रसूति, आकूति और देवहूति।[8] देवहूति का विवाह कर्दम प्रजापति के साथ हुआ, जिनके पुत्र सांख्य निर्माता कपिल थे।[9] शेष पुत्रियों के जो वैवाहिक सम्बन्ध बतलाये गये हैं, वे शुद्ध नहीं जान पड़ते।

स्वायंभव मनु ने प्रियव्रत को पृथ्वीपालन के लिये आज्ञा दी।[10] स्वायंभुव मनु ने समस्त कामनाओं और भोगों से विरक्त होकर राज्य छोड़ दिया। वे अपनी पत्नी शतरूपा के साथ तपस्या करने के लिये वन में चले गये।[11]

विशेष—प्राचीन भारतीय आर्यों के मूल पुरुष यही प्रथम मनु स्वायंभव हुये। प्रथम प्रजापति भी यही हुये। "मनु" शब्द का अर्थ ऋग्वेद (१०।६२।११) के अनुसार 'नेता' होता है। स्वायंभुव का अर्थ होता है, स्वयं होना। कथावाचक पण्डित 'मनुस्वायंभुव' का यह अर्थ किया करते हैं कि—"मनु बिना माता-पिता के

---

१ प्रजापालक=राजा। २ मनु=मनुष्यों के नेता (ऋग्वेद १०।६२।११)। ३. हरिवंशपुराण अ० २। श्लोक १। ४ हरिवंश पु० २१४। ५ हरिवंश, विष्णु तथा भागवत पु०। ६. हरिवंश पु० ७।१। ७ हरि० १।५२। ८. भाग० ४।१।१। ९. ४।१।१०। १०. भाग० ५।१।६। ११ भाग० ८।१।७।

स्वयं उत्पन्न हुये।" परन्तु मेरे विचार से इस शब्द का यह अर्थ कदापि नही है। हरिवंश पुराण का यह स्पष्ट कथन है कि "प्रजाओ की रचना होने के बाद मनु की उत्पत्ति हुई।" यह कथन मानने योग्य है। पुराणकार के कहने का तात्पर्य यह है कि प्रजाओं की उत्पत्ति हो चुकी थी परन्तु उनमे उस समय तक कोई नेता—मुखिया या प्रजापालक नही हुआ था। उस समय तक किसी तरह का राजनीतिक संगठन नहीं था। इसलिये आज की तरह 'मतो' (Vote) के द्वारा नेता के चुनाव का प्रश्न ही नही था। वैसी परिस्थिति मे एक व्यक्ति अपने प्रभाव से स्वयं नेता (मनु) बन बैठा। इसलिये उसी पुरुष को "मनु स्वायंभुव" कहा गया।

अज्ञात राजवंशो का कालनिश्चित करने के लिये जो ऐतिहासिक विधि है, उसके अनुसार विचार करने पर प्रथम मनु स्वायंभुव का समय ४०२२ ई० पू० होता है। जिसको आज से (४०२२ + १९६५ =) ५९८७ वर्ष पूर्व कह सकते है।

मनु स्वायंभुव के समय उनके सगे-सम्बन्धी तथा परिवार-परिजन के लोग शिक्षित थे। वैदिक संस्कृत भाषा की जानकारी भी उन्हें थी। इसके दो-तीन प्रमाण हमारे समक्ष हैं। मनु स्वायंभुव के दौहित्र कपिल ने उसी काल में 'सांख्य' दर्शन की रचना की थी। दूसरा प्रमाण ऋग्वेद के दसवें मण्डल का १२९वाँ सूक्त है। इस सूक्त के मन्त्रद्रष्टा प्रजापति-परमेष्ठी है। जो प्रजापति वंश की ९वी पीढ़ी मे होते हैं। यही ऋग्वेद के प्रथम वेदर्षि है—ऐसा मेरा निश्चित विचार है। तीसरा प्रमाण यह है कि यदि वे लोग स्वयं शिक्षित और सुसभ्य नही होते तो ऐसा नहीं लिखते कि—

"विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान"
(ऋग्वेद १।५१।८)

इस वेदमन्त्र का सारांश यह है कि शिक्षित को आर्य और अशिक्षित को दस्यु-अनार्य-असभ्य कहा गया।

इतना लिखने का मतलब यह है कि वैज्ञानिक लोग जिस काल को पाषाण युग की संज्ञा देते है, उसी युग मे आर्यों के मूल पुरुष शिक्षित, सभ्य और विवेकशील थे। इसीलिये स्वय नेता (मनु) बने। प्रजापालक बने। सर्वप्रथम आर्यो के मूल पुरुष ने ही राजनीति की नीव डाली।

अब प्रश्न उठता है उनके मूल स्थान का। इसका उत्तर पुराणो मे ही स्पष्ट हैं। उनकी वंशावलियो से प्रमाणित है। उन लोगो का मूलस्थान जम्मू (जम्बू) काश्मीर मे था—जिसको उस समय हिमवर्ष कहा जाता था। वही सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे। वहीं से वे लोग अपना राज्य विस्तार करने के लिये

मध्य एशिया मे तथा अन्यान्य द्वीपो मे भी गये। उन लोगो को खानाबदोश या घुमक्कड कहना कभी भी उचित नही है। वे लोग तो सातो द्वीपो के मालिक थे। उस आदि काल मे उनसे मोकाबला करने वाला कोई दूसरा था ही नही।

वंशवृक्ष

१. मनु स्वायंभुव (भाग० स्वायभुव मनु प्रसग)

२. प्रियव्रत, २ उत्तानपाद, प्रसूति, आकूति, देवहूति

राज्यकाल—४०२२ ई० पू० से ३९९४ ई० पू० तक।
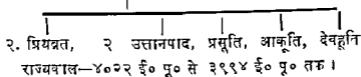
२—प्रजापति प्रियव्रत

स्वायभुव मनु ने प्रियव्रत को प्रजापालन के लिये आज्ञा दी।[1] प्रजापति होने के पश्चात् उन्हो ने विवाह किया। पत्नियां दो हुईं। पहली का नाम बर्हिष्मति था।[2] उससे ग्यारह सन्तानें हुईं।[3] जिनके नाम इस प्रकार है—आग्नीध्र, इध्मजिह्व, यज्ञबाहु, महावीर, हिरण्यरेता, घृतपृष्ठ, सवन, मेधातिथि, वितिहोत्र, कवि और उर्जस्वती नामक पुत्री।[4] तीन पुत्र-कवि, महावीर और सवन ने गृहस्थाश्रम स्वीकार नही किया। तीनो अविवाहित रहकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी बने रहे। इन लोगो ने निवृत्ति मार्ग का ही आश्रय ग्रहण किया।[5] दूसरी पत्नी से उत्तम, तामस और रैवत नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। वे अपने नाम वाले मन्वन्तरो के अधिपति हुए।[6] प्रियव्रत ने ही प्राणियों के सुभीते के लिये द्वीपों के द्वारा भूमि के विभाग किये और प्रत्येक द्वीप की अलग-अलग नदी, पर्वत और वन आदि से उनकी सीमा निश्चित् कर दी।[7] उन्होने सात द्वीपो के नामकरण किये।[8] उनके नाम इस प्रकार है—जम्बू द्वीप,[9] प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुशद्वीप,[10] क्रौंच द्वीप, पुष्कर द्वीप और शाकद्वीप।[11]

---

१. भागवत ५।१।६। २. भाग० ५।१।२४। ३. भाग० ५।१।२४। ४. भाग० ५।१।२५। ५. भाग० ५।१।२६। ६. भाग० ५।१।२८। ७. भाग० ५।१।४०। ८. भाग० ५।१।३१। ९. जिस द्वीप में हम रहते हैं उसे जम्बू द्वीप कहते हैं। भूमण्डल रूपकमल के कोश स्थानीय जो सात द्वीप हैं—उनमें सबसे भीतर का कोश है। इसका विस्तार एक लाख योजन है। यह कमलदल के समान गोलाकार है। (भाग० ५।१६।५ भूवनकोश का वर्णन)। १०. Africa or Cushdwipa—टाडराजस्थान। ११. भाग० ५।१।३२।

प्रियव्रत ने सातों पुत्रों को एक-एक द्वीप का अधिपति बनाया।[1] जम्बू द्वीप के अधिपति आग्नीध्र हुए।[2] इध्मजिह्व को प्लक्ष द्वीप, यज्ञबाहु को शाल्मलि द्वीप, हिरण्यरेता को कुश द्वीप, धृतपृष्ठ को क्रौंचद्वीप, मेधातिथि को शाकद्वीप और वितिहोत्र को पुष्कर द्वीप मिला।[3] उस समय भी सागर सात ही थे। उनके नाम करण भी प्रियव्रत ने इस प्रकार किये—(१) क्षार समुद्र, (२) इक्षुरस समुद्र, (३) सुरा समुद्र, (इसी का नाम आगे चलकर आदित्यों के समय में लाल सागर (Red sea) पड़ गया) (४) घृत समुद्र, (५) क्षीर सागर, (६) दधीमंड सागर और (७) शुद्ध जल सागर।[4] पाठकों को यहाँ पर जानना चाहिये कि नामों के अनुसार समुद्रों में गुण नहीं थे। दो समुद्रों के बीच जो भूमि थी, उसी का नाम द्वीप पड़ा।[5] प्रियव्रत राजनीति-निपुण एवं उदार प्रकृति के प्रजापति थे।

हम लोग जम्बूद्वीप के अन्दर रहते हैं और इस द्वीप के अधिपति आग्नीध्र हुये, इसलिये इन्हीं के वंशवृक्ष की तरफ बढ़ना चाहिये।

पैंतीस पीढ़ियों तक प्रियव्रत का वंशवृक्ष चला। इसमें (१) स्वायंभुव मनु, (२) स्वारोचिष, (३) उत्तम, (४) तामस (५) रैवत आदि पाँच मन्वन्तर चले। पाँचों मनुओं का भोगकाल (=३५×२८) ९८० वर्ष हुआ।

प्रियव्रत ने जम्बू द्वीप का अधीश्वर आग्नीध्र को बनाया। जम्बू द्वीप की राजधानी जम्बू-कश्मीर में थी। वही जम्बू आज जम्मू कहलाता है। आजतक काश्मीर में जम्मू नगरी महाराज आग्नीध्र के स्मारक रूप में विद्यमान है। जिस समय शिव (रुद्र) ने देवकाल में अफ्रीका को जय किया था और उसका नाम शिवदान द्वीप रखा था, उसी शिवदान का अपभ्रंश रूप सुडान (Sudan) आजतक अफ्रीका में शिव का स्मरण दिलाता है, उसी तरह 'जम्मू' शब्द आग्नीध्र तथा जम्बू द्वीप का स्मरण दिलाता है।

आज भी हम भारतीयों के यहाँ पूजा-पाठ-यज्ञ-जाप कराने के लिये जब पुरोहित आते हैं तब संकल्प करने के समय जम्बू द्वीप, भरतखण्ड और आर्यावर्त्त का नामोच्चारण करते हैं। यह स्पष्ट प्रमाणित करता है कि कश्मीर-जम्मू-गिलगिट में ही आर्यों के पूर्व पुरुषों का जन्म हुआ था। डा० सम्पूर्णानन्द ने 'आर्यों का आदि देश' नामक पुस्तक में आर्यों का मूल स्थान सप्तसिन्धव, अर्थात् सिन्धु नदी से सरस्वती तक के बीच में ऋग्वेद के आधार पर प्रमाणित किया है। उनका कथन प्रायः

१. भाग० ५।१।३२। २. भाग० ५।१।३३। ३. भाग० स्कन्ध ५। ४. भाग० स्कन्ध ५। ५. भागवत प्रियव्रत प्रसंग।

ठीक है। जम्बू कश्मीर में इनका राज्य था और उसी के उस तरफ उस समय इलावर्त्त और सुमेरु पर्वत भी था—जहाँ इनके दूसरे भाई को राज्य मिला था।
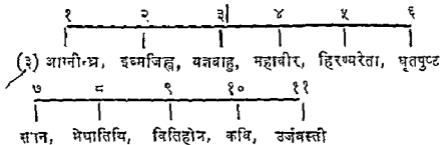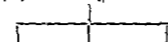
३—प्रजापति आग्नीध्र

जम्बू द्वीप के अधीश्वर

प्रजापति आग्नीध्र अपने पिता की आज्ञा का अनुसरण करते हुये जम्बू द्वीप की प्रजा का धर्मानुसार पुत्रवत् पालन करने लगे।[१] पूर्वचित्ती नामक एक सुन्दरी अप्सरा से विवाह किया।[२] आग्नीध्र के नौ पुत्र हुये। जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) किम्पुरुष, (२) हरिवर्ष, (३) रम्यक, (४) हिरन्यमय, (५) नाभि, (६) इलावृत्त, (७) कुरु, (८) भद्राश्व और (९) केतुमान।[३] आग्नीध्र ने जम्बू द्वीप के नौ खण्ड किये और एक एक खण्ड का अधिपति एक-एक पुत्र को बना दिया। सभी पुत्र अपने अपने वर्ष (भूखण्ड) के अधिपति होकर प्रजापालन करने लगे।[४]

पुत्रों का विवाह—पिता के परलोकवासी होने पर नवो भाइयों ने मेरु प्रजापति की नौ पुत्रियों से विवाह किया। पुत्रियों के नाम इस प्रकार हैं—मरुदेवी, प्रतिरूपा, उग्रदंष्ट्री, लता, रम्या, नारी, भद्रा, श्यामा और देववीति।[५]

---

१ भागवत ५।२।१। २ भाग० ५।२।२ से १८। ३ भाग० ५।२।१९। ४ भाग० ५।२।२१। ५ भाग० ५।२।२३।

नाभि के राज्य का नाम नाभिवर्ष—नाभिखण्ड हुआ । उस स्थान का पूर्व नाम हिमवान्' था ।[1]

स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश में[2] योरप देश को हरिवर्ष कहा है ।

जम्बू द्वीप

जिस देश में हम लोग रहते है, वह जम्बू द्वीप के अन्तर्गत है । भूमण्डल रूप कमल के कोश स्थानीय जो सात द्वीप हैं, उनमे सबसे भीतर का कोश है[3] । इसका विस्तार एक लाख योजन है ।४ यह कमल पत्र के समान गोलाकार है ।[5] इसमे नौ-नौ हजार कोस विस्तार वाले नौ वर्ष हैं; जो इनकी सीमाओ के विभाग करने वाले आठ पर्वतो से बँटे हुए हैं ।[6] इनके बीचोबीच इलावर्तनाम का दसवाँ वर्ष है । जिसके मध्य में कुल पर्वतों का राजा सुमेरु पर्वत है ।[7] (··इसी प्रकार सभी वर्षों का वर्णन है)। जम्बू द्वीप के अन्तर्गत ही आठ उप द्वीप और बन गये । ऐसा कुछ लोगों का कथन है ।[8] वे स्वर्ण प्रस्थ, चन्द्रशुल्क, रमणक, मन्दर हरिण, पाचजन्य, सिंहल और लंका आदि हैं ।[9]

प्रजापति आग्नीन्ध्र के परलोकवासी होने के पश्चात् सभी भाई आपस में स्नेह पूर्वक रहते हुए प्रजाओं का पुत्रवत् पालन करने लगे । सभी धर्म धुरन्धर और परम तेजस्वी हुए ।[10] नाभिवर्ष ही आगे चल कर भारत वर्ष के नाम से विख्यात हुआ । इस लिये नाभि के ही वंश वृक्ष को लेकर आगे बढना चाहिये ।

राज्यकाल ३९६६ ई० पू० से ३९३८ ई० पू० तक ।

---

१. भाग०५।२।२१ । २. स० प्र० दशम समुल्लास पृ० ३२६ । ३. भाग० स्कन्ध ५ । ४. एक योजन=चार कोस । ५. भागवत ५।१६।५ । ६. भागवत ५।१६।६ । ७. भागवत ५।१६।७ । ८. भागवत ५।१६।२६ । ९. भाग० ५।१६।३० । १०. भागवत स्कन्ध ५ ।

४—प्रजापति महाराज नाभि

आदि राजा (प्रजापति) स्वायंभुव मनु की चौथी पीढ़ी में 'नाभि' महाराज हुए। उनके पिता आग्नीन्ध्र जम्बू द्वीप के अधीश्वर थे। जम्बू द्वीप के एक भूखण्ड का नाम हिमवान-हिमवर्ष था। यही हिमवर्ष नाभि को अपने पिता से मिला। पिता ने ही हिमवान का नाम नाभिखण्ड—नाभि वर्ष रख कर उनका अधिपति नाभि को बनाया।[1] नाभि वर्ष का विस्तार नौ हजार योजन अर्थात् छत्तीस हजार कोस था।[2] नाभी महाराज को पहले कोई सन्तान नहीं थी। कुछ कालोपरान्त यज्ञ-जाप करने पर एक पुत्र रत्न सात्विक देवतुल्य उत्पन्न हुआ, जिसका नाम ऋषभदेव पड़ा।[3] नाभि ने अपने पुत्र का सुन्दर और सुडौल शरीर, विपुल कीर्ति, तेज-बल, ऐश्वर्य, यश, पराक्रम और शूरवीरता आदि गुणों के कारण उनका नाम ऋषभ (श्रेष्ठ) रखा।[4] अपने पुत्र ऋषभदेव को राज्य देकर अपनी पत्नी मेरुदेवी के साथ तपस्या करने के लिये गृहत्यागी हो गये।[5]

वंशवृक्ष

भारत के सम्राट तथा चतुर्थ प्रजापति

४. नाभि + मेरुदेवी

|

५. ऋषभदेव

राज्यकाल ३९३८ ई० पू० से ३९१० ई० पू० तक

५—प्रजापति ऋषभदेव

ऋषभदेव पांचवें प्रजापति तथा नाभि वर्ष (हिमवान-भारत वर्ष) के सम्राट हुए। पुराण[6] में ऋषभदेव जी के सौ पुत्र कहे गए हैं, परन्तु वर्णन दस के ही है। यही ठीक भी है। उनके नाम इस प्रकार हैं—भरत १, कुशावर्त २, इलावर्त्त ३, ब्रह्मावर्त ४, मलय ५, केतु ६, भद्र सेन ७, इन्द्रस्पृक ८, बीकट ९ और विदर्भ १०। भरत जी सब में बड़े थे।[7]

---

१ भागवत स्कन्ध ५। २ भागवत ५।११।६। मिस्टर स्मिथ ने भारत के घेरे का विस्तार करीब ५००० मील लिखा है। ३ भागवत ५।३।१ से २० तक। ४. भाग० ५।४।२। ५ भागवत ५।४।५। ६ भागव ५।४।६-१०। ७ भागवत ५।४।६-१०।

ऋषभदेव बड़े ही धर्मात्मा तथा सतस्वभाव के प्रजापति थे। श्रीमद्भागवत तथा अन्यान्य पुराणों में भी इनकी प्रशंसा बड़ी लम्बी चौड़ी है।[1] यह जैनधर्म के आदि प्रवर्त्तक माने जाते हैं।[2] ऋषभदेव ने अपने सकल्प मात्र से भरत को भूमि की रक्षा करने के लिये अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।[3] स्वयं गृह त्यागी हो गए।

६—प्रजापति भरत-जड़भरत-मनुर्भरत

पुराणों में ऐसा कहा गया है कि बचपन में भरत पढ़ते-लिखते नहीं थे इस लिये छोटे भाइयों ने ही उनको जड भरत कहना आरंभ किया। ज्येष्ठ होने के कारण पिता ऋषभ देव ने जब इन्हीं को अपने राज्य का अधीश्वर बना दिया और अपने राज्य नाभिखण्ड का नाम भरत खण्ड-भारत वर्ष कर दिया तब यह बहुत ही योग्य, न्यायी और प्रभावशाली शासक सिद्ध हुये। इन्होंने अपने सभी भाइयों के नाम पर भारतवर्ष में स्थानों के नाम निर्माण किये। इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भरत खण्ड—भारतवर्ष पडा।[4] ऋषभदेव ने अपने सकल्पमात्र से भरत को भूमि की रक्षा करने के लिये अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।[5] महाराज मनुर्भरत के पाँच पुत्र थे—१–सुमति, २–राष्ट्रभृत, ३–सुदर्शन, ४–आवरण और ५–धूम्रकेतु।[6] भरत जी के ज्येष्ठ पुत्र का नाम सुमति था। वही अपने पिता के उत्तराधिकारी मानवे प्रजापति हुए।[7]

---

१ पंचम स्कन्ध। २. जैनधर्मावलम्बियों द्वारा सम्पादित पुराणों की टीका देखिये। ३ भागवत ५।७।१। ४ भागवत ५।७।२-३। भाग० अ०-१३१। विष्णु पु० २।१।२२। शब्दकल्पद्रुम काण्ड ३। पृ० ५०१। ५ भागवत पुराण ५।७।१। ६ भागवत स्कन्ध ५। ७. भागवत ५।१५।१।

४—प्रजापति महाराज नाभि

आदि राजा (प्रजापति) स्वायंभुव मनु की चौथी पीढ़ी में 'नाभि' महाराज हुए। उनके पिता आग्नीन्ध्र जम्बू द्वीप के अधीश्वर थे। जम्बू द्वीप के एक भूखण्ड का नाम हिमवान हिमवर्ष था। वही हिमवर्ष नाभि को अपने पिता से मिला। पिता ने ही हिमवान का नाम नाभिखण्ड—नाभि वर्ष रख कर उनका अधिपति नाभि को बनाया।[१] नाभि वर्ष का विस्तार नौ हजार योजन अर्थात् छत्तीस हजार कोस था।[२] नाभी महाराज की पहले कोई सन्तान नहीं थी। कुछ कालोपरान्त यज्ञ-जाप करने पर एक पुत्र रत्न सात्विक देवतुल्य उत्पन्न हुआ जिसका नाम ऋषभदेव पड़ा।[३] नाभि ने अपने पुत्र का सुन्दर और सुडौल शरीर, विपुल कीर्ति, तेज-बल, ऐश्वर्य, यश, पराक्रम और शूरवीरता आदि गुणों के कारण उनका नाम ऋषभ (श्रेष्ठ) रखा।[४] अपने पुत्र ऋषभदेव को राज्य देकर अपनी पत्नी मेरुदेवी के साथ तपस्या करने के लिये गृहत्यागी हो गये।[५]

वंशवृक्ष

भारत के सम्राट तथा चतुर्थ प्रजापति

४. नाभि + मेरुदेवी

|

५ ऋषभदेव

राज्यकाल ३९३८ ई० पू० से ३९१० ई० पू० तक

५—प्रजापति ऋषभदेव

ऋषभदेव पाचवें प्रजापति तथा नाभि वर्ष (हिमवान भारत वर्ष) के सम्राट हुए। पुराण[६] में ऋषभदेव जी के सौ पुत्र कहे गए है, परन्तु वर्णन दस के ही है। यही ठीक भी है। उनके नाम इस प्रकार है—भरत १, कुशावर्त २, इलावर्त्त ३, ब्रह्मावर्त ४, मलय ५, केतु ६, भद्र सेन ७, इन्द्रस्पृक ८, कीकट ९ और विदर्भ १०। भरत जी सब में बड़े थे।[७]

---

१ भागवत स्कन्ध ५। २ भागवत ५।११।६। मिस्टर स्मिथ ने भारत के घेरे का विस्तार करीब ५००० मील लिखा है। ३ भागवत ५।३।१ से २० तक। ४. भाग० ५।४।२। ५ भागवत ५।४।५। ६ भागव ५।४।६ १०। ७ भाग० ५।४।६-१०।

ऋषभदेव बड़े ही धर्मात्मा तथा संतस्वभाव के प्रजापति थे। श्रीमद्भागवत तथा अन्यान्य पुराणों में भी इनकी प्रशंसा बड़ी लम्बी चौड़ी है।[1] यह जैनधर्म के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं।[2] ऋषभदेव ने अपने संकल्प मात्र से भरत को भूमि की रक्षा करने के लिये अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।[3] स्वयं गृह त्यागी हो गए।

६—प्रजापति भरत-जड़भरत-मनुर्भरत

पुराणों में ऐसा कहा गया है कि बचपन में भरत पढ़ते-लिखते नहीं थे इस लिये छोटे भाइयों ने ही उनको जड भरत कहना आरंभ किया। ज्येष्ठ होने के कारण पिता ऋषभ देव ने जब इन्हीं को अपने राज्य का अधीश्वर बना दिया और अपने राज्य नाभिखण्ड का नाम भरत खण्ड-भारत वर्ष कर दिया तब यह बहुत ही योग्य, न्यायी और प्रभावशाली शासक सिद्ध हुये। इन्होंने अपने सभी भाइयों के नाम पर भारतवर्ष में स्थानों के नाम निर्माण किये। इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भरत-खण्ड—भारतवर्ष पड़ा।[4] ऋषभदेव ने अपने संकल्पमात्र से भरत को भूमि की रक्षा करने के लिये अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।[5] महाराज मनुर्भरत के पाँच पुत्र थे—१–सुमति, २–राष्ट्रभृत, ३–सुदर्शन, ४–आवरण और ५–धुम्रकेतु।[6] भरत जी के ज्येष्ठ पुत्र का नाम सुमति था। वही अपने पिता के उत्तराधिकारी सातवें प्रजापति हुए।[7]

---

१. पंचम स्कन्ध। २. जैनधर्मावलम्बियों द्वारा सम्पादित पुराणों की टीका देखिये। ३. भागवत ५।७।१। ४. भागवत ५।७।२-३। भाग०-अ०-१३१। विष्णु पु० २।१।३२। शब्दकल्प द्रुम काण्ड ३। पृ० ५०१। ५. भागवत पुराण ५।७।१। ६. भागवत स्कन्ध ५। ७. भागवत ५।१५।१।

पुराणो मे मनुर्भरत की प्रशंसा बहुत ही अधिक है। स्वायंभुव मनु से दक्ष प्रजापति तक ४५ पीढ़ियाँ होती है। उन ४५ पीढ़ियो को मनुर्भरत वंश की संज्ञा पुराणो मे दी गई है। ये ४५ पीढ़ियो का समय १२६० वर्षों का होता है। इसी म छः मनु हुए है। छै मनुओ के भोगकाल को सतयुग कहा गया है।[1] इसी मन्वन्तर काल मे देवताओ की भी उत्पत्ति हुई।[2]

प्रथानुसार ज्येष्ठ पुत्र सुमति सातवें राज्याधिकारी हुये (भाग० ५।१५।१)

भारतवर्ष नामकरण

"भरत जी अपने भाइयो मे सबसे बडे और गुणवान थे। उन्ही के नाम से लोग इस अजनाम खण्ड को 'भारतवर्ष' कहने लगे।" (भागवत पुराण ५।४।९)

वंशवृक्ष

६ मनुर्भरत

१	२	३	४	५
(७) सुमति	राष्ट्रभृति,	सुदर्शन,	आवरण,	धुम्रकेतु

राज्य काल—३८८२ ई० पू० से ३८५४ ई० पू० तक।
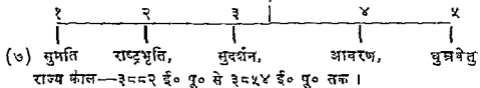
७वे प्रजापति 'सुमति' और ८वें प्रजापति सुमति के पुत्र 'इन्द्रद्युम्न' हुये। ९वे प्रजापति इन्द्रद्युम्न के पुत्र परमेष्ठी हुये।

९—प्रजापति परमेष्ठी-परमेष्ठिन

प्रजापति परमेष्ठी बडे ही न्यायप्रिय, प्रजापालक, कर्त्तव्यपरायण तथा विद्वान हुये। इन्हो ने ही ऋग्वेद का श्रीगणेश कर दिया।

ऋग्वेद मे १० मण्डल हैं। प्रत्येक मण्डल मे अनेक सूक्त (स्तोत्र) है। पहले मण्डल म १९१ सूक्त, दूसरे मे ४३, तीसरे में ६२, चौथे में ५८, पाचवें मे ८७, छठवें मे ७५, सातवें म १०४, आठवें मे १०३, नवें मे ११४ और दसवें मे १९१ सूक्त हैं। कुल मिलाकर १०२८ सूक्त (स्तुतियां) है। सातवे मण्डल के ऋषि (मत्र दृष्टा) वशिष्ठ है। तीसरे मण्डल के ऋषि (रचयिता)

विश्वामित्र हैं। शेष सूक्तो के रचयिता लगभग तीन सौ ऋषि है। ऋषियों और मन्त्रदृष्टाओ ने स्तोत्र रूप वाक्यो को बनाया है[1]। इस कथन का साराश यह है कि जो व्यक्ति वेदमत्र की रचना करते थे वही ऋषि, या वेदर्षि कहलाते थे। जो राजा वेदमत्र की रचना करते थे, वे राजर्षि की उपाधि प्राप्त करते थे। ऋग्वेद के सूक्तो की रचना एक समय मे नही हुई है। भिन्न-भिन्न सूक्तो की रचना का काल भिन्न-भिन्न है। ऋषियो का काल राजाओ के शासन काल से निश्चित् किया जा सकता है। उसके बाद प्रत्येक सूक्त का निर्माणकाल निश्चित् हो जायेगा।

इस पुस्तक मे सभी प्रजापतियो, देवो तथा राजाओ का शासन काल निश्चित किया गया है। अन्त मे राजवशो तथा ऋषियो की सूची भी दी हुई है।

ऋग्वेद मे जितने सूक्त (स्तुति) हैं, वे किसी-न-किसी देवता (राजा) के प्रति है। जैसे वरुण, इन्द्र, सूर्य, अग्नि, और अदिति आदि। परन्तु कुछ सूक्त के देवता 'भाववृत्तम्' भी है। ऐसा ही एक सूक्त १०वें मण्डल का १२९वा है। वह सूक्त निम्न प्रकार है —

(ऋषि—प्रजापति परमेष्ठी। देवता—भाववृत्तम्। छन्द-त्रिष्टुप)

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहन गभीरम्॥१
न मृत्युरासीदमृत न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेत.।
आनीदवात स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किंचनास॥२
तम आसीत्तमसा गूलहमग्रे ऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छये नाभ्वपिहित यदासीत्त पसस्तन्महिनाजायतकम्॥३
कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथम यदासीत्।
सतो वन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा॥४
तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत्।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्॥५
को अद्धा वेद क इह प्रवोचत्कुत आजाता कुत इय विसृष्टि।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव॥६
इय विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥७॥१७

1—"ऋषे मन्त्र कृतां स्तोमै" ऋग्वेद ६।११४।२ अथवा ऋषयो मन्त्र दृष्टार'।

साराश

प्रलय काल म असत् नही था। सत्य भी उस समय नही था। पृथ्वी और आकाश भी नही थे। आकाश मे स्थित सप्तलोक भी नही थे। तब कौन कहाँ रहता था? ब्रह्माण्ड कहाँ था? गम्भीर जल भी कहाँ था? उस समय अमरत्व और मृतत्व भी नही था। रात्रि और दिवस भी नही थे। वायु मे शून्य आत्मा के अवलम्ब से श्वास प्रश्वास वाले एक ब्रह्ममात्र ही थे। उनके अतिरिक्त सब शून्य थे ।।२।। सृष्टि रचना से पूर्व अन्धकार म अन्धकार को आवृत किये हुए था। सब कुछ अज्ञात था। सब ओर जल ही जल था। वह सर्वव्याप्त ब्रह्म भी अविद्यमान पदार्थ से ढका था। वही एक तत्त्व तप के प्रभाव से विद्यमान था ।।३।। उस ब्रह्म ने सर्व प्रथम सृष्टि-रचना की इच्छा की। उससे सर्व प्रथम बीज का प्राकट्य हुआ। मेधावी जनो ने अपनी बुद्धि के द्वारा विचार करके अप्रकट वस्तु की उत्पत्ति कल्पित की ।।४।। फिर बीज धारणकर्त्ता पुरुष की उत्पत्ति हुई। फिर महिमायें प्रकट हुई। उन महिमाओं का कार्य दोनो पार्श्वोंतक प्रशस्त हुआ। नीचे स्वधा और ऊपर का प्रयति का स्थान हुआ ।।५।। प्रकृति के तत्व को कोई नही जानता तो उनका वर्णन कौन कर सकता है? इस सृष्टिका उत्पत्ति कारण क्या है? यह विभिन्न सृष्टियाँ किस उपादान कारण से प्रकटी? देवगण भी इन सृष्टियो के पश्चात् ही उत्पन्न हुई? ।।६।। यह विभिन्न सृष्टियाँ किस प्रकार हुई? इन्हें किसने रचा? इन सृष्टियो के जो स्वामी दिव्यधाम म निवास करते ह वही, इनकी रचना के विषय म जानते हैं। यह भी सम्भव है कि उन्हें भी यह बातें ज्ञात न हो ।।७।। [१७]

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न ।
यो अस्याध्यक्ष परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ।।१।।
तम आसीत्तमसा गूलहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम् ।।२।।

ऋ० म० १०। सूक्त १२९।

भाष्य—हे (अङ्ग) मनुष्य! जिससे यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलय करता है, जो इस जगत का स्वामी, जिस व्यापक म यह सब जगत उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है, सोपरमात्मा है। उसको तू जान और दूसरे को सृष्टिकर्त्ता मतमान ।।१।। यह सब जगत सृष्टि के पहले अन्धकार से आवृत, रात्रि रूप म जानने के अयोग्य, आकाश रूप सब जगत तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एक देशी, आच्छादित था, पश्चात परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य स कारण रूप मे कार्य रूप कर दिया ।।२।। (सत्यार्थ प्रकाश—पृ० २५३)

स्वायंभुव मनु से बुद्धकाल तक १२४-१२५ पीढ़ियाँ सूर्य राजवंश की होती है। इनके अतिरिक्त चन्द्रवंश मे अत्रि-चन्द्रमा से बुद्धकाल तक ७७ पीढ़ियाँ होती है। इनमे प्रजापति परमेष्ठी नाम के एक ही व्यक्ति हैं। 'जो स्वायभव मनु की ९वीं पीढ़ी मे पड़ते है। उनके अतिरिक्त सम्पूर्ण मूल और शाखा आर्य राजवंशों मे प्रजापति परमेष्ठी' नामक कोई व्यक्ति नही है। कोई अन्य ऋषि भी इस नाम के नही है, जो प्रजापति हुये हों। इसलिए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ऋग्वेद के १०वें मण्डल का १२९वाँ सूक्त उसी प्रजापति परमेष्ठी का है, जो स्वायभुव मनु की ९वीं पीढ़ी मे थे। उनका समय ई० पू० ३७९८ है। इसलिये ऋग्वेद के प्रथम वेदर्षि वही हुये। उसी समय से ऋग्वेद का आरम्भ मानना चाहिये।

१०वें प्रजापति परमेष्ठी के पुत्र प्रतिहार हुये। इसी प्रकार ११–प्रतिहर्त्ता, १२–भुव, १३–उद्ग्रीव, १४–प्रस्तार, १५–पृथु, १६–नक्त, १७–गय, १८–नर, १९–विराट, २०–महावीर्य, २१–धीमान, २२–महान, २३–मनुस्य, २४–त्वष्टा, २५–विरज, २६–रज, २७–विषज्योति और २८ से ३५ तक अनिश्चित।

प्रियव्रत-शाखा काल की प्रधान घटनायें

(१) आज से लगभग ६००० हजार वर्ष पहले विश्व मे सर्वप्रथम प्रियव्रत के पिता स्वायंभुव मनु के द्वारा जम्मू-कश्मीर मे विश्व साम्राज्य की नींव पड़ी।

(२) प्रियव्रत-शाखा का भोगकाल ९८० वर्ष अर्थात् ४०२२ ई० पू० से ३०४२ ई० पू० तक रहा।

(३) इस शाखा मे कुल ३५ प्रजापति हुये। जिनमे २७ निश्चित और ८ अनिश्चित हैं।

(४) वंशाभाव मे ३५वीं पीढ़ी पर यह शाखा समाप्त हो गई।

(५) इस शाखा मे कुल पाँच मनु हुये। १—स्वायभुव, २—स्वारोचिष, ३—उत्तम, ४—तामस, (५) रैवत।

(६) पाँचों मनुओं का भोगकाल ९८० वर्ष तक रहा।

(७) प्रियव्रत के छोटे भाई उत्तानपाद का अलग वंशवृक्ष चल रहा था। उन्हीं के पुत्र प्रसिद्ध पुरुष 'ध्रुव' थे। उन्ही के वंशधर ३६वीं पीढ़ी मे चाक्षुष थे। वही प्रियव्रत शाखा के उत्तराधिकारी ३६वें प्रजापति हुये।

(८) इस शाखा के आरंभिक काल मे ही सांख्य शास्त्र के रचयिता प्रसिद्ध पुरुष 'कपिल' हुये। येही 'कपिल' प्रियव्रत के बहनोई थे।

(९) छठीं पीढी मे ३८८२ ई० पू० भरत हुये, जिनके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष-भरत खड पडा।

(१०) इस शाखा की ९वीं पीढी मे प्रजापति परमेष्ठी हुये। जिन्होंने एक सूक्त की रचना कर ऋग्वेद का निर्माण आरम्भ किया। यह सूक्त १०वें मण्डल का १२९वां है। इसलिये ऋग्वेद का प्रारम्भिक काल ई० पू० ३७९८ है।

(११) इस शाखाकाल अर्थात् ९८० वर्ष के अन्दर सरस्वती नदी—कश्मीर मे सिन्धु नदी—सिन्ध तक सप्त सिन्धव प्रदेश मे इन लोगों का राज्य विस्तार हुआ। सरस्वती और सिन्धु नदी के बीच मे सतलज, व्यासा, रावी चनाब और झेलम आदि पाच नदियाँ थी। उस समय इन नदियों के नाम 'वितस्ता' आदि दूसरे ही थे। पजाब मे 'हड़प्पा' और सिन्ध मे, 'मोहन जो दरो' के खडहर उसी काल की तरफ सकेत करते हैं।

(१२) सतयुग काल का आरम्भ ४०२२ ई० पू० मे हुआ।

(१३) तीसरे प्रजापति आग्नीध्र के भ्रातागण आरम्भिक काल मे ही अन्यान्य द्वीपो मे अपना-अपना राज्य निर्माण करने के लिये जा चुके थे।

(१४) आर्यों के पूर्व पुरुष राज्य विस्तार एव समतल और कृषि योग्य भूमि की खोज मे आरम्भिक काल मे ही भ्रमण करने लगे। इसलिये उनको खानाबदोश और घुमक्कड कहना उचित नही है। वे लोग तो विश्व-साम्राज्य के निर्माता थे।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड तीसरा

२. प्रजापति-परिचय

(उत्तरार्द्ध)

ईरान-पर्शिया में भारतीय आर्यों का प्रवेश

(३०४२ ई० पू०)

३६—प्रजापति चाक्षुष मनु

३५वीं पीढी मे प्रियव्रत शाखा समाप्त हो जाने पर, ३६वीं पीढी मे मनु चाक्षुष उत्तानपाद शाखा से इसी राजगद्दी पर चले आये। इनका आरम्भिक समय ३०४२ ई० पू० है। इन्ही के नाम से छठाँ मन्वन्तर काल आरम्भ हुआ।

छठें मन्वन्तर मे 'चाक्षुष' नामक 'मनु' और 'मनोज' नामक इन्द्र थे।[1] चाक्षुष के अति बलवान पुत्र उरु, पुरु और सुद्युम्न आदि राज्याधिकारी थे।[2] भिन्न-भिन्न पुराणो मे पुत्रो की सख्या भिन्न-भिन्न बतलाई गई हैं। श्रीमद्भागवत मे अतिरात्रि (अत्यराति जानन्तपति) एक पुत्र का नाम है। दूसरे पुत्र का नाम अभिमन्यु-मन्यु था, उनको ग्रीक मे मेमनन (Memnon) कहा गया है। उन्ही को पर्शिया का अमनन कैसिबर (The Amnan Kasibar of Persia) भी कहा जाता है। इनके अतिरिक्त एक और पुत्र थे, जिनका नाम तपोरत था। इस प्रकार कम से कम छै पुत्र प्रमाणित होते हैं। भागवत मे तो बारह पुत्र कहे गये हैं।

विश्व के दूसरे प्रजापति (सम्राट) प्रियव्रत ने ई० पू० ३९९४ मे सम्पूर्ण विश्व की भूमि को सात द्वीपो मे विभक्त किया था।[3] तदोपरान्त अपने एक-एक पुत्र को एक-एक द्वीप का अधिपति बनाकर वहाँ-वहा भेज दिया था। हमलोगों का देश जिस द्वीप मे पडा था, उसका नाम 'जम्बू' द्वीप रखा गया। प्रियव्रत के ज्येष्ठ पुत्र आग्नीन्ध्र उसके अधीश्वर हुये थे। जो तीसरे प्रजापति कहलाये। आग्नीन्ध्र के ९ पुत्र राज्याधिकारी होने के इच्छुक हुये। इसलिये उन्होने जम्बूद्वीप का ९ खण्ड किया। तद्पश्चात सभी पुत्रो को एक-एक खण्ड का मालिक बना दिया।

१. विष्णु पु० ३।१।१५। २. विष्णु पु० ३।१।१६। ३. भागवत पु०।

हूमलोगो का देश नाभि नामक पुत्र को मिला। तभी से इस देश का नाम नाभि-खंड पड़ा। उससे पहले इस देश का नाम हिमवर्ष-हिमवान था। जम्बूद्वीप की राजधानी जम्मू (काश्मीर) में रही। काश्मीर का 'जम्मू' अब तक प्रजापति आग्नीन्ध्र का स्मरण दिलाता है। इसी जम्मू नगर में महाराज नाभि की राजधानी बनी थी। नाभि के एक भाई का नाम इलावृत था। इसलिये उनके खण्ड का नाम इलावर्त पड़ा। इलावर्त जम्मू काश्मीर के उत्तर सुमेरु के पास था। शेष सात भाई सम्पूर्ण जम्बू द्वीप में फैल गये थे। जम्बूद्वीप का विस्तार उस समय नौ लाख योजन था। इतना लिखने का साराश यह है कि ३९३८ ई० पू० महाराज नाभि वर्तमान भारत के प्रथम सम्राट (४थे प्रजापति) हुये थे—उसी समय उनके भाई—किम्पुरुष, हरिवर्ष, रम्यक, हिरण्यनाभ, इलावृत, भद्राश्व, केतुमान तथा कुरु आदि सम्पूर्ण जम्बू द्वीप में फैल गये। मालूम होता है कि आज का एशिया उस समय का जम्बू द्वीप था। उसी के अन्दर वर्तमान ईरान-पर्शिया भी था। किन्तु ईरान को शकद्वीप कहा जाता है।

भारतीय पुराणों में प्रथम मनु स्वायम्भुव से वर्तमान मानव सृष्टि का इतिहास आरंभ होता है। जिनका समय ४०२२ ई० पू० होता है। उस समय से मानव सृष्टि का राजवंशवृक्ष विश्व में भारत के अतिरिक्त कहीं भी नहीं है। इसलिये निश्चित रूप से भारतीय आर्य राजवंश को प्राचीनतम कहा जा सकता है। उस अनादि काल को पाषाण युग कह सकते है। उससे पहले के समय को प्रागपाषाण युग कहा जायगा। इसका कारण यह है कि स्वायम्भुव मनु के समय (हरिवंश-पुराण के अनुसार) प्रजाओं की उत्पत्ति हो चुकी थी। अन्यान्य मानव भी थे। यदि नहीं थे तो स्वायम्भुव की पत्नी शतरूपा कहा से आयी? उनकी पुत्रियों का विवाह कैसे हुआ? स्वायम्भुव मनु के जामाता तथा कपिल के पिता कर्दम प्रजापति कहा से आये? इस से प्रमाणित होता है कि उस समय मनु के परिजन भी थे। और छोटे-छोटे प्रजापति भी थे। यह भी मालूम होता है कि उसी समय अर्थात् ४०२२ ई० पू० के लोग शिक्षित थे। सभ्यता की नींव पड़ चुकी थी। उनलोगों की मूल भाषा वैदिक संस्कृत जैसी थी। उसी समय कपिल ने 'सांख्य' दर्शन का निर्माण किया था। इसीलिये थोड़े ही दिनों के बाद नवें प्रजापति परमेष्ठी ने ऋग्वेद के प्रथम सूक्त (मण्डल १० सूक्त १२९) की रचना ईश्वर के सम्बन्ध में की। ऋग्वेद के १०२८ सूक्तों में ईश्वर के विषय में यह सूक्त सर्वोपरि है।

पाश्चात्यजनों के द्वारा ग्रीक-रोम की सभ्यता प्राचीनतम कही जाती है, वह इन्हीं लोगों की है। क्योंकि आज से लगभग ६००० हजार वर्ष पूर्व वे ही लोग

सम्पूर्ण संसार में फैल गये थे और ग्रीक रोम में तो तीसरे प्रजापति आग्नीन्ध्र के पुत्र ही चले गये थे। उस समय से आज तक का राजवंश वृक्ष क्रमबद्ध ग्रीक-रोम में भी नहीं है। परन्तु भारतीय पुराणों के अनुसार सप्रमाण २८ वर्ष औसत राज्यकाल मान कर स्वायंभव मनु से आज तक ६००० हजार वर्ष प्रमाणित हो जाता है। भिन्न-भिन्न देशों के जल वायु के अनुसार उनकी मूल संस्कृत भाषा तथा आकृति में विकृति आती गयी। यही कारण है कि ससार की भाषाओं में मूल संस्कृत के कुछ न कुछ विकृत शब्द मिलते हैं। विशेष कर संस्कृत, अवेस्ता, यूनानी, लैटिन तथा अंग्रेजी में। निम्नलिखित उदाहरण देखिये—

संस्कृत	अवेस्ता	यूनानी	लैटिन	अंग्रेजी
पितृ	पिटर	पेटर	पेटर	फादर
मातृ	मादर	मेटर	मेटर	मदर
भ्रातृ	भ्रातर	फ्रेटर	फ्रेटर	ब्रदर
द्वार	द्वार	थुरा	फोरेस	डोर
गौ	गौस	बौस	बॉस	काऊ

इतना लिखने का मतलब यह हुआ कि आज से छै हजार वर्ष पूर्व जब से विश्व में मानव-सृष्टि का राज्यकाल आरम्भ हुआ तभी से आर्यों के पूर्वजों का शासन-काल प्रजापति के रूप में आरम्भ हुआ। उसी समय से उन्ही के बन्धु-बान्धव एशिया तथा विश्व के अन्य स्थानों में गये और वहाँ सभ्यता तथा राज्य-व्यवस्था की नींव डाली। सम्भव है, जहाँ गए हो—वहाँ के मूलनिवासियों से लोहा लेना पड़ा हो और अन्त में विजयी हुए हो।

चाक्षुष मनु भारत के ३६वें प्रजापति थे। इसलिये स्वायंभुव मनु से इनके राज्याभिषेक के बीच में (३५×२८=)९८० वर्ष का समय होता है। इस ९८० वर्ष के अन्दर इनके पूर्वज अमेरिका (पाताल) तक जरूर ही पहुँच गये थे। उस समय की भौगोलिक परिस्थिति आज से भिन्न थी। उस अनादि काल में भी भारत से वहाँ लोग जाया-आया करते थे—जल और सूखा मार्ग दोनों से। इस बात के अनेक प्रमाण मिल चुके हैं। ऋग्वेद के आर्यों के संस्कृत शब्द ही प्रमाणित करते है कि वे लोग उत्तरी ध्रुव तक फैल गये थे।

नौ सौ अस्मी वर्षो मे जो इनके बन्धु-बान्धव थे उनमे तथा उत्तानपाद के दूसरे पुत्र उत्तम जाई के वशधरो (जिस वश मे इब्राहिम थे) मे राजसत्ता के लिये विवाद बढा। उसी समय उपयुक्त समय समझकर चाक्षुप के पुत्रो ने ईरान-पर्शिया पर अपना राज्य विस्तार के लिये अभियान कर दिया। उसी समय उनके पाँच पुत्र तथा एक पौत्र ने ईरान-पर्शिया मे अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया। अब उनके पुत्रो के वीरत्व की करामात दखिये—

उनके पाँच पुत्र—अत्यरातिजानन्तपति, अभिमन्यु-मन्यु, उर, पुर, तपोरत तथा एक पौत्र अगिरस ये छै बडे शक्तिशाली और विजेता हुये।

अत्यरातिजानन्तपति

वैदिक साहित्य तथा पुराणो के अनुसार प्राचीनकाल मे १६ परमप्रतापी आर्य सम्राट हुए हैं, जिनमे अत्यराति जानन्तपति को 'आसमुद्र क्षितीप'[१] कहा गया है। बारह चक्रवर्ती सम्राटो मे इनका स्थान सर्वोच्च था।[२] उन्होने आरमेनिया प्रान्त (Armenia Province) पर अपनी विजय-पताका फहराई। वही पर अपनी राजधानी बनाई। उन्ही के द्वारा अर्राट राजवश का निर्माण हुआ। उनका राज्य आर्द्र सागर (Adriatic Sea) से यवन सागर (Ianion Sea) तक फैला हुआ था। ईरान-पर्शिया के इतिहास मे इन लोगो को विदेशी विजेता कहा गया है। इसीलिये वहाँ के प्राचीन इतिहास मे उनलोगो का वशवृक्ष भी आज उपलब्ध नही हैं। आजतक जो स्थान ईरानियन पैराडाइज के नाम से देमावन्द एलबुर्ज[३] पहाड पर विख्यात है, उसी स्थान का नाम बैकुण्ठ धाम था, जहाँ अत्यराति की राजधानी थी। ईरान का अर्राट पहाड अबतक उनके नाम को जीवित रखे हुये है।

अभिमन्यु-मन्यु

यह चाक्षुपमनु के पुत्र और अत्यराति के अनुज थे। इनको ग्रीक मे मैन्यु और मेमनन (Memnon) कहा गया है। पर्शिया मे इन्ही को अमनन कैसिबर की (Amnan kasibar) सज्ञा दी गई है। वहाँ पर अफुमन (Aphuman) भी इन्ही को कहा गया है। यहाँ पर भी अभिमन्यु को ही अफुमन कर दिया गया है। ये सभी नाम एक ही व्यक्ति के है।

अभिमन्यु ने ही अर्जनम (Arzanem) मे Aphuman दुर्ग का निर्माण

---

१. ऐतरेय ब्राह्मण ६।४।१। २. ऐतरेय ब्राह्मण। ३, Demavand the modern Elburza or the Iranian Paradise ''' हिस्ट्री आफ पर्शिया-जिल्द, १, ११७ १२३।

अपने नाम पर किया था। इसकी राजधानी 'सुषा' में थी।[1] सुषा नगरी को ही मन्युपुरी कहा जाता था। ट्राय युद्ध में अपनी राजधानी सुषा से ही मन्युमहाराज अपनी सेना के साथ गये थे। उनकी वीरता की कहानी होमरने अपन ओडेसी महाकाव्य में इस प्रकार लिखी है—

"To troy no here came of nobler line,
Or if of nobler, Memnan it was thine" (Odyssey.)

ट्राय युद्ध में इथोपियन राजा[2] (Ethiopian king) के साथ लड़ने के लिये सुषा से अपनी सेना के साथ मन्युमहाराज गये थे।

ट्राय युद्ध के विषय में पर्शिया के इतिहास जिल्द १, पृष्ठ ५५ में इस प्रकार लिखा है—

"Memnon, who came to the aid of troy leading on army of susians (susa) and Ethiopians to the assistance of prium, who is his parental uncle. There are brief references to Memnon in Homer, and he is evidently regarded an important perosnage." ..."Susa is termed 'The city of Memnon.'

जलप्रलय

विश्व विख्यात जल-प्रलय भी इन्हीं मन्यु महाराज के समय में हुआ था। जिसको बायबिल में 'नूह' का संताप कहा गया है।

ईरान में केरमा नदी के तट पर बहुत ऊंचे स्थान पर मन्युपुरी–सुषा का निर्माण हुआ था। जल प्रलय काल में जब मन्युपुरी सुषा चारों तरफ अथाह जल से घिर गयी तब वहा पर नौका लेकर मेडागास्कर के राजा मत्स्य राज वहाँ पहुँचे। उन्ही की नौकाओं में सपरिवार-बन्धु-बान्धव सहित मन्यु सवार हो गये। वहाँ से प्राण बचाकर, जिस स्थान में पुनः आश्रय ग्रहण किया, उसी स्थान का नाम आर्य

---

१. "सुषानाम पुरी रम्या वरुणस्यपि धीमतः" (मत्स्य पुराण अ० १२३. श्लोक-२२)। "Susa or Sush or the city of Memnon, the ancient capital of Elam (इलावर्त्त) and the oldest known site in the world. H. P. Vol. I, 59।

२.—इथोपीयन राजा संभव है दस्यु रहे हों क्योंकि इथोपियनों को भी भारतीय कहा गया है परन्तु उनका रंग गोरा नहीं था। इसलिये मालूम होता है कि आग्नीन्ध्र के पुत्रों के पीछे-पीछे दस्यु भी वहाँ चले गये हों। दस्यु लोगों का रंग काला रहा होगा। टाडराजस्थान से प्रमाणित होता है कि इथोपीयन, भारतीय थे।

वीर्यान[1] पड़ा। पुराणों में प्रलयकाल की मत्स्य का अर्थ मछली किया जाता है—जो ठीक नहीं है। वहाँ पर मत्स्य का अर्थ मत्स्य जाति से है—जो मेडागास्कर में रहते थे। मत्स्य जाति वाले भी भारतीय थे। कुछ कालोपरान्त वरुण और यम आदि आर्यवीर्यान से मन्युपुरी में गये और उस मृत्यु लोक को पुनः आबाद किया।

पुरु-पुर (Pour)

पुरु या पुर भी चाक्षुष मनु के पुत्र थे। इनके भाई अत्यराति और मन्यु जब अपना राज्य ईरान में स्थापित कर चुके तब इन्होंने भी हाथ-पर-हाथ रख कर बैठना उचित नहीं समझा। इन्होंने भी ईरान के एक प्रान्त पर अपना अधिकार जमा लिया और वहाँ के मालिक बन बैठे। इन्हीं से पुर राजवंश की स्थापना हुई। महाराज 'पुर' की राजधानी 'पुर' नगरी में निर्माण की गई। पर्शिया के इतिहास (साइक्स—जिल्द १, पृ० २९७, २९८) में निम्न प्रकार है—

"Poura, now termed Pahra by the Baluchis and Fahraj by the Persian-Baluchistan. In the neighbourhood are ruins of two other forts, and the site is generally believed to be ancient. Arrian states that Poura was reached in 60 days from ora[2], and as the map makes the distance of 600 miles, this would in all the circumstances be a reasonable distance to be covered in the time."

आज भूतत्ववेत्ताओं का कहना है कि पुर नगरी भी प्राचीनतम है। एलबुर्ज (ईरानी बैकुराठ) के निकट एक स्थान 'पुरसियाः' है। हमारा ख्याल है कि पुरसियाः से ही पर्शिया बन गया है।

तपोरत

चाक्षुष मनु के पुत्र तपोरत ने ईरान में ही एक प्रान्त पर कब्जा किया। जिसका नाम तपोरिया प्रान्त पड़ा। उसी तपोरिया प्रान्त को आजकल मजादिरन (Mazanderan) कहते हैं—(The Mardi lived further west than the Tapuritae under Demavand of Tapuria. (हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, पृ० २८४)

---

१ आर्य वीर्यान=अजर बैजान=Azer bayjan=Adharbayjan.

२. Ora उर—राज्य 'उर' १७वें प्रजापति थे। उन्होंने भी 'उर' में अपना उपनिवेश किया था। १७वें प्रजापति का परिचय देखिये।
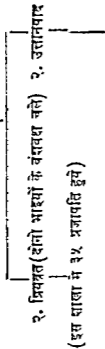
वंशवृक्ष (उत्तानपादशाखा)
१—प्रजापति स्वायंभुव मनु
२. प्रियव्रत (दोनो भाइयों के वंशवश चले)
२. उत्तानपाद
(इस शाखा में ३५ प्रजापति हुये)
३. ध्रुव
उत्तम (उत्तमजाई पठान)
(य०र०उ०भा० पृ० ९२)
४. श्लिष्ट, भव्य
५. ऋभु
६ से ३५ तक अज्ञात
३६ चाक्षुपमनु (यह प्रियव्रत शाखा के ३६वें प्रजापति हुये)
१
२
३
४
५
६
अत्यरातिजानन्तपति
(आरमेनिया के अरॉट)
अभिमन्यु
(ग्रीक के मेमनन, पर्शिया के अमनन कैंगिवर)
पुरु
(पुरुसिया के निर्माता)
तपोरत
(तपुरिया के निर्माता)
सुद्युम्न
(अन्य भाइयों के साथ भारत में ही रहे)
३७. उग्र (एलाम, बैबीलोनिया के विजेता, निर्माता, उरराजवंश के संस्थापक)
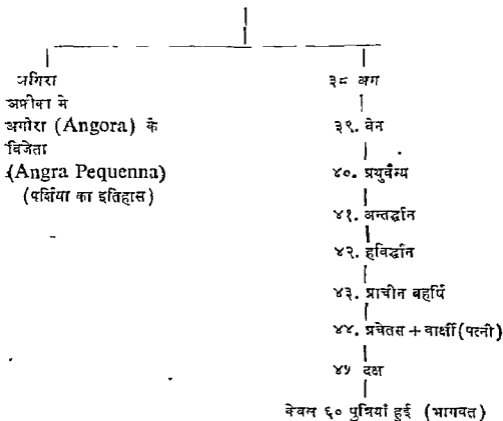
राज्यकाल (चाक्षुष) २०४२ ई० पू० से २०१४ ई० पू० तक।

३७—प्रजापति उरू-उर (UR)

चाक्षुष मनु के पुत्र 'उरु' ३७वें प्रजापति हुये। ये सभी भाई धुरन्धर तथा वीर विजेता हुये। इनमे किसी को छोटा या बडा नही कहा जा सकता। को बड छोट कहो अपराधू। यह कहावत चरितार्थ होती है। महाराज 'उर' ने भी अपना भारतीय राज्य विस्तार करना चाहा। इसलिये अपने भाइयो से किसी

तरह पीछे नहीं रहे। इन्होंने भी ईरान के एक प्रान्त पर कब्जा जमा लिया। वहीं पर 'उर' राजवंश की नींव पड़ गई। उर नगरी का भी निर्माण हो गया। उर नगरी को ही आज ईराक कहा जाता है। प्राचीन उर नगरी की आज खुदाई हो चुकी हैं। भूगर्भ से मिले सामान लन्दन के अजायब घर में रखे गये है। विश्व के भूतत्त्ववेत्ताओं का कहना है कि 'उर' नगरी विश्व की प्राचीनतम नगरी थी। इस कथन का मतलब यह होता है कि चाक्षुप मनु के पुत्रो के पहले की कोई ऐतिहासिक सामग्री अभी तक पाश्चात्यों को वहाँ नहीं मिली है। इसीलिये वे लोग आर्यों को वहीं का आदिवासी कहने में नहीं हिचकते। भारतीय विद्वान भी उन्हीं की नकल किया करते हैं। लेकिन वे लोग चाक्षुप मनु के पहले के आर्य-वंश-वृक्ष पर विचार करने का कष्ट नहीं करते।

चाक्षुप मनु छठे मनु थे। उनके पहले पाँच मनुओं का काल भारत में ही बीत चुका था। इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' भी हो चुका था। पजाब-हड़प्पा में उन लोगो का राज्य था। सरस्वती से सिन्धु नदी तक सप्त सिन्धव प्रदेश में राज्य उन्हीं लोगो का था। इसीलिये मैक्स मूलर ने भी ठीक ही कहा है कि—"It can be now proved even by geographical evidence that the Zoroastrian[1] had been settled in India before they emigrated to 'Persia."

महाजल प्रलय मे मन्युपुरी-सुपा नगरी तो मृत्यु सागर बन गई, इसलिये मन्यु-महाराज अपने परिवार-परिजन सहित अजरबैजान में आकर बस गये, किन्तु 'उर' नगरी उस विपत्ति में बच गई। उर राजवंश दो सौ वर्षो तक चलता रहा (The English man dated 20 th April 1925) महाराज उर के राज्यकाल में ही जनाब इब्राहिम थे, जो उनके भय से वहाँ से भाग गये थे। पर्शिया के प्राचीन इतिहास में जहाँ-तहाँ उनका वर्णन है।

भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग—चाक्षुप मन्वन्तरकाल के आरम्भ होते ही उनके पुत्र अत्यरातिजानन्तपति, अभिमन्यु, उर, पुर, तपोरत और उर-पुत्र अंगिरा आदि छै भारतीय आर्य विजेताओं ने अपना उपनिवेश पश्चिम एशिया तक बढा लिया। उन लोगों ने अपना राज्य ही नहीं बढ़ाया बल्कि उसका सुन्दर ढंग से निर्माण किया। वहाँ भिन्न-भिन्न नामों से सभ्यता फैलाई। उन्ही के वंशधर सुमेर में रहते थे, जिनमे सुमेरियन सभ्यता का जन्म हुआ।[2]

---

१. जोरास्ट्रियन=भारतीय (मैक्समूलर)। २. हिस्ट्री आफ सुमेर।

भारतीय पुराण तथा पर्शिया के प्राचीन इतिहास का तुलनात्मक अध्ययन करने से ऐसा आभास मिलता है कि ४५वें प्रजापति महाराज दक्ष की भी राजधानी उर नगरी मे ही थी। दक्ष की एक पुत्री का नाम 'उमा' था। इससे यह झलक लिलती है कि 'उमा' भी 'उर' की ही रहने वाली थी। राष्ट्रकवि दिनकर ने जो 'उर्वशी' महाकाव्य की रचना की है, वह उर्वशी भी उसी उर नगरी की रहने वाली थी। ऐसा कहने का कारण यह है कि देवकाल मे 'उरवशी' अप्सरा का जन्म हुआ था। वह मित्रावरुण के राजदरबार मे हाजिरी बजाया करती थी। इन्द्र के दरबार की तो वह प्रधान अप्सरा थी ही। वेदर्षि वशिष्ठ भी उर्वशी के ही पुत्र थे। इन सब घटनाओ से स्पष्ट मालूम होता है कि मित्रावरुण तथा इन्द्र की राजधानी भी 'उर' नगरी मे थी।

ईरान-पर्शिया नामकरण—ईरान नामकरण के विषय में इतिहास वेत्ताओं का भिन्न-भिन्न मत है। परन्तु मेरा विचार यह है कि महाराज 'उरू' के ही नाम पर ईरान और पुरु के नाम पर पर्शिया हुआ है।

उपर्युक्त छै भारतीय विजेताओं के विषय मे एक मोटा इतिहास लिखा जा सकता है। इन लोगो के पूर्वजो का इतिहास आजतक भारतीय पुराणो मे ही है। वहाँ नही है। इन्ही घटनाओं के आधार पर पाश्चात्यजन आर्यों को मध्य-एशियावासी कहा करते है, जो तथ्यहीन है।

'उर' की चर्चा ऋग्वेद (६।७५।९) मे भी है, यथा—"उरवो व्रातसाहा।" उर-स्थान फारस और अरब का मध्यवर्त्ती देश है। भारतीय पुराणो मे 'उर लोक' कहा गया है। इसका अर्थ होता है उर का राज्य। 'उर' भिन्न-भिन्न नामो से प्रसिद्ध था जैसे—उरजन Ormuzed, सुषा भी कहा गया है। उर= चाल्डिया आदि।

महाराज उर की पत्नी का नाम पुष्करिणी था। (भागवत)
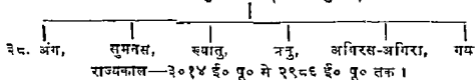
३८—प्रजापति अंग

महाराज उर के ज्येष्ठ पुत्र अग ३८वें प्रजापति हुये। अग की पत्नी का नाम सुनीथा था (भागवत) सुनीथा के पिता का नाम मृत्यु था जो ईरान नरेश थे। उनके गर्भ से क्रूरकर्मा, परमदुष्ट 'वेन' नामक पुत्र हुआ (स्वायभुव कथा प्रसग—श्रीमद्भागवत तथा महाभारत ५७।९६।१३६ शान्ति पर्व।)

प्रजापति अग के एक भाई का नाम अगिरा था जो बडे ही विजेता थे। उन्होने स्वय अपने बल से अफ्रीका मे राज्य स्थापित किया, जिसका नाम अगोरा पिक्चूना पडा।

वशवृक्ष
३८. अग
|
(३९) वेन

राज्यकाल—२९८६ ई० पू० से २९५८ ई० पू० तक

३९—प्रजापति वेन

३९वीं पीढी मे अपने पिता प्रजापति अग के उत्तराधिकारी 'वेन' प्रजापति हुये। राजगद्दी पर बैठते ही उन्होंने भूमि पर होने वाले सभी यज्ञ याज्ञ आदि धार्मिक कृत्य बन्द कर दिय। पुराणो मे उनको बहुत ही क्रूर, हिंसक और दुष्ट प्रकृति का कहा गया है।

प्रजापति वेन का कहना था कि "हम ही देवता है। हम ही ईश्वर है। हमही यज्ञो के भोक्ता है। हमारा ही पूजन करो[1]।" उनकी दुष्टता से तग आकर उनके पिता महाराज अग राजभवन त्याग कर वनवासी वन गय। गुरु-

---

१ "अहमिन्द्रश्च पूज्यश्च सर्वयज्ञैर्द्विजातिभि।
मयि यज्ञो विधातव्यो मयि होतव्यमित्यपि॥
स्रष्टा धर्मस्य कश्चान्य श्रोतव्य कस्य वैमया।
वीर्यश्रुत तप सत्यैर्मया वा क समो भुवि॥
प्रभव सर्वलोकाना धर्माणा च विशेषत।
इच्छन् दहेय पृथिवीं प्लावयेय जलेन वा॥
सृजेय वा ग्रसेय वा नात्र कार्या विचारणा।" (वायु पु०)

पुरोहित सभी रुष्ट हो गये। जनता में भी शान्ति नहीं रही। उसके परिणाम स्वरूप महाराज वेन राजगद्दी से उतार दिये गये। तद्पश्चात गुरु-पुरोहित, ऋषि तथा जनता द्वारा उनके ज्येष्ठ पुत्र पृथुरश्मि को राजगद्दी देकर ४०वाँ प्रजापति बनाया गया। वेन के पुत्र तीन थे—पृथुरश्मि, रायोवाज और वृहद गिरि।

विशेष—पुराणों में वेन की बहुत ही निन्दा की गई है। यहाँ पर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि प्रजापति वेन गुरु-पुरोहित या ऋषियों के हाथ की कठपुतली बनकर रहना नहीं चाहते थे। वह पुरानी प्रथा के विरोधी थे। यज्ञादि कर्मों को पाखण्डपूर्ण समझते थे। मुझे तो ऐसा लगता है कि वह साम्यवादी विचारधारा के समर्थक थे। उसके प्रभावशाली हो जाने पर याजकों की दाल नहीं गलती। इसलिये इन लोगों ने उनके शासन को समाप्त करवा देना ही उचित समझा।

राज्य से वंचित करने के लिये ही वेन को मातामह के साथ दोषी बतलाया गया। (पद्मपुराण, वेन-कथा)
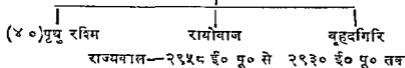
४०—प्रजापति-राजा पृथुवैन्य

(पृथ्वी का प्रथम राजा एवं राजर्षि)

"आदि राजो महाराज पृथुवैन्यः प्रतापवान।"

(वायु पुराण अ० ६२ श्लोक १३६)

प्रजापति वेन को राजगद्दी से उतारने पर उनके पुत्रों से पूछा गया कि तुम्हारी कामना क्या है? इस पर पृथु रश्मि ने उत्तर दिया था कि "क्षेत्र काम हूँ।" उसके लिये क्षेत्र दिया गया अर्थात् राज्याधिकारी बनाया गया—

"अथाब्रवीत् पृथुर्रश्मि: क्षेत्र कामोऽहमस्मीति। तस्मै क्षेत्रं प्रायच्छत्। स एव पृथुवैन्य।" (जैमिनीय ब्राह्मण १।१८६)

भाइयों में ज्येष्ठ भी पृथुवैन्य ही थे इसलिये अनुजों ने भी कोई आपत्ति नहीं की। पृथुवैन्य वेन का पुत्र और अंग का पौत्र था। प्रजापति अंग की पत्नी सुनीथा

ईरान-नरेश मृत्यु की कन्या थी।[1], पृथुवैन्य के पाँच पुत्र हुये—विजिताश्व-अन्तर्धान, हर्यश्व, धूम्रकेश, वृक और द्रविण।

प्रथम राजा

प्रतापी प्रजापति पृथुवैन्य इस पृथ्वी पर विश्व मे सर्वप्रथम 'राजा' हुआ। ऐसा कथन वायु पुराण (६२।१३६)का है। इसका अभिप्राय यह है कि अबतक शासक लोग प्रजापति कहलाते थे परन्तु पृथुवैन्य ने राजगद्दी पर बैठते ही अपने को राजा घोषित कर दिया। अबतक प्रजापतियो की राज्य व्यवस्था सुन्दर और पूर्ण नही थी।

पाठकों को मालूम है कि पृथु का पूरा नाम पृथु रश्मि था किन्तु राजगद्दी पर बैठने के समय उसका नाम पृथुवैन्य अर्थात् वेन का पुत्र 'पृथुवैन्य' हुआ। इनका राज्याभिषेक खूब धूमधाम मे किया गया। जिसका वर्णन वायु-पुराण मे पर्याप्त है।

'वसुधाधिप'

राजतिलक के ही समय ऋषियो ने पृथुवैन्य को 'वसुधाधिप' की उपाधि से विभूषित किया। (वायु पु० ६२।१३४)

यह बचपन से ही प्रजापालक, न्यायी, मधुरभाषी तथा कर्मवीर था। 'होनहार विरवान के होत चीकनो पात' वाली कहावत चरितार्थ होती थी।

सर्वप्रिय राजा

प्रजापतियो के समय मे प्रजारजन के लिये जिन बातो का अभाव था, उनकी पूर्ति पृथुवैन्य ने कर दी। राज्य-व्यवस्था सुचारु रूप से होने लगी। राज मार्ग का निर्माण किया गया। प्रजाओ की सुख-सुविधा पर पूर्ण ध्यान दिया जाने लगा। यज्ञ-याग होने लगा। गुरु-पुरोहितो की मान प्रतिष्ठा होने लगी। (पुराण, महा०)

भूमिकी सज्ञा पृथ्वी

राजा होने पर पृथुवैन्य ने ही सर्वप्रथम भूमि का सस्कार किया। कृषिकार्य के लिये भूमि को समतल करवाना आरम्भ किया। इसलिये उसी के समय से उसी के नाम पर भूमि की सज्ञा पृथ्वी हुई। (वायु पु० ६२।१६०।१७२।, महाभारत द्रोण पर्व ६९।२७। मत्स्य पु० १०।३।)

धनुष का आविष्कार

राजा पृथु वैन्य ने सर्वप्रथम धनुष का आविष्कार किया। दूर के शत्रुओ को आघात पहुँचाने वाला यह पहला अस्त्र था—

---

१ महाभारत ५८।६।१३६ शान्ति पर्व। विष्णु पुराण—स्वायम्भुव कथा प्रसग।

अभ्यः प्रहराणां राज्ञो भाद्रवतो सुतः
पृथुस्तूपपादयामास धनुराद्यमरिन्दम ।'' (महाभारत शान्ति पर्व)

अर्थशास्त्र का सूत्रपात

राजा पृथुवैन्य ने ही नियमपूर्वक कृषि कार्य की व्यवस्था की । जब अन्नोत्पादन होने लगा तब अर्थशास्त्र का भी सूत्रपात हो गया ।

भौम ब्रह्म

प्रजापति पृथु वैन्य से राजतिलक के ही समय 'भौम ब्रह्म' के पालन की प्रतिज्ञा करायी गई । महाभारत शान्ति पर्व के निम्न लिखित श्लोक में यह प्रकट होता है—

''प्रतिज्ञा चाधिरोहस्व मनसा कर्मणा गिरा ।
पालयिष्याम्यहं भौमब्रह्म इत्येवचासकृत् ॥

ऋग्वेद का प्रथम राजर्षि

ऋग्वेद के दसवें मण्डल में १४८ वाँ सूक्त के मन्त्रद्रष्टा 'पृथुवैन्य' हैं और उस सूक्त के देवता 'इन्द्र' हैं । यहाँ पाठकों को यह जान लेना चाहिये कि मित्रावरुणादि देवों के समय में जो इन्द्र थे, उनका उस समय जन्म भी नहीं हुआ था । पृथुवैन्य के समय चाक्षुष मन्वन्तर काल था—उस समय के इन्द्र का नाम विष्णु पुराण के अनुसार ''मनोज'' था । महाभारत (शान्ति पर्व २८, १३७, १८२। ५८, १२१ १२२) का कथन है कि पृथुवैन्य ही ऋग्वेद का प्रथम वेदर्षि था । परन्तु मेरा उससे प्रबल मतभेद है । पृथुवैन्य से बहुत दिन पहले ही प्रजापति परमेष्ठी ने दसवें मण्डल के १२९वें सूक्त की रचना की थी । इसलिये पृथुवैन्य ऋग्वेद के दूसरे वेदर्षि कहे जा सकते हैं । हाँ, यहाँ पर इनको प्रथम राजर्षि जरूर कहा जा सकता है क्योंकि प्रथम 'राजा' सूक्त-निर्माता यही हुये हैं ।

पृथुवैन्य के राज्य काल में प्रजायें पूर्ण सुखी थीं । दूध-दही की नदियाँ बहती थीं । इसके प्रमाण पुराणों तथा महाभारत में भरे हुये हैं ।
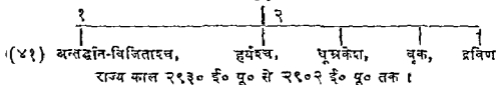
४१—प्रजापति अन्तर्द्धान

पृथुवैन्य का ज्येष्ठ पुत्र अन्तर्द्धान इक्तालीसवीं पीढी का उत्तराधिकारी हुआ। इसका दूसरा नाम विजिताश्व भी था। इसके पुत्र का नाम हविर्धानि था। वही उत्तराधिकारी हुआ।

वंशवृक्ष (भाग०)

४१. अन्तर्द्धान

|

(४२) हविर्धानि

राज्यकाल—२९०२ ई० पू० से २८७४ ई० पू० तक।

४२—प्रजापति हविर्द्धानि

इनकी पत्नी का नाम हविर्धानी था (भागवत)। इनके पुत्र छः थे। वर्हिष—प्राचीन बर्हिषद, गय, शुक्ल, कृष्ण, सत्य और जितव्रत (भागवत)। यह चौथे वेदर्षि थे (ऋ० वे० १०।११,१२)।

राज्यकाल—२८७४ ई० पू० से २८४६ ई० पू० तक।

४३—प्रजापति बर्हिष-प्राचीन बर्हिषद

बर्हिष अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे, इसलिये यही राजा हुये। इन्हीं का नाम प्राचीन बर्हिषद भी था। ये बडे ही कर्मकाडी और योगविद्या में निपुण हुये (भागवत)। इन्हे यज्ञ करने का व्यसन ही हो गया था (भागवत)। इनके दस पुत्र हुये। वे सभी प्रचेता के नाम से प्रसिद्ध हुये। बर्हिष की पत्नी का नाम शतद्रुति था (भागवत)।

६

वंशवृक्ष
४३. बर्हिष + शतद्रुति

(४४) १ प्रचेता, २ प्रचेता, ३ प्रचेता, ४ प्रचेता, ५ प्रचेता, ६ प्रचेता, ७ प्रचेता, ८ प्रचेता, ९ प्रचेता, १० प्रचेता

राज्यकाल—२८४६ ई० पू० से २८१८ ई० पू० तक।
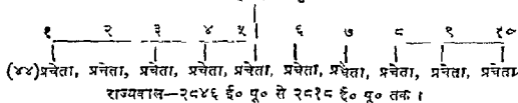
४४—प्रजापति प्रचेता

सब में बड़े प्रचेता पिता के उत्तराधिकारी हुये। मारिषा नामक एक ही कन्या से दसों भाइयों का विवाह हुआ। उस मारिषा का नाम वार्क्षी था। इस कन्या के विषय में भागवत पुराण में एक कहानी है, जो निम्न प्रकार है—

"एक महर्षि कण्डु थे। उन्हीं के आश्रम के आस-पास 'प्रमलोचा' नामक एक अति सुन्दरी अप्सरा रहती थी। उस अप्सरा और ऋषि में प्रेम सम्बन्ध हो गया। उसी के परिणाम स्वरूप एक कमल नयनी कन्या उत्पन्न हुई। उस नवजात शिशु को एक वृक्ष के नीचे रखकर उसकी माँ वहाँ से गायब हो गई।

नवजात शिशु वृक्ष के नीचे पाई गई, इसलिये कण्डु ऋषि ने उसका नाम वार्क्षी रख दिया। वयस्क होने पर उसी का नाम मारिषा पड़ा। उसी मारिषा का ब्याह कण्डु ने प्रचेताओं के साथ कर दिया। विवाहोपरान्त सभी भाई सांसारिक सुखों को भोगते हुये, सुचारुरूप से राज्यव्यवस्था करने लगे। सभी भाइयों में पूर्ण स्नेह था। कालान्तर में उनके एक सर्वगुण सम्पन्न पुत्र रत्न हुआ। वही प्रचेता पुत्र—'दक्ष' प्रजापति के नाम से परम प्रसिद्ध हुये (भागवत)।

प्रचेता ऋग्वेद के पाँचवें वेदर्षि थे (ऋ० १०।१६४)।

पश्चिम समुद्र के तट पर एक जाजलि मुनि आश्रम बनाकर रहते थे। वहीं प्रचेतागण अपने पुत्र दक्ष को उत्तराधिकारी बनाकर सन्त जीवन व्यतीत करने के लिये चले गये (भागवत)।

वंशवृक्ष
४४. प्रचेता
|
(४५) दक्ष
राज्यकाल—२८१८ ई० पू० से २७९० ई० पू० तक।

४५—प्रजापति दक्ष

अभी तक छत्तीसवीं पीढी में जो छठे मनु चाक्षुप हुये थे, उन्ही का मन्वन्तर काल चल रहा था। क्योंकि अभी तक सातवें मनु का जन्म ही नही हुआ।

पाठकों को स्मरण होगा कि इसी मन्वन्तर मे भयकर जलप्रलय हुआ, जो ईरान को वीरान बना गया था। इस वीरान भूमि को चमन मे परिवर्त्तन करनेवाले दक्ष के ही दौहित्र (नाती) हुये।

पुराणो के अनुसार दक्ष ब्रह्मा के मानस पुत्र थे (वायु पुराण,६७।४३। मत्स्य पुराण ६९।९)। परन्तु औरस पुत्र प्रचेता के थे (महाभारत आदि पर्व ७०।४ तथा शान्ति पर्व १०।२३।५२)। यहाँ पर मानस पुत्र का अभिप्राय माना हुआ या पुत्रवत् स्वीकृत होना चाहिये। परन्तु यह अर्थ करने पर भी युक्तिसगत बात नही बनती है। इसका कारण यह है कि वरुण-ब्रह्मा तथा विष्णु आदि दक्ष के दौहित्र थे। यह बात आगे स्पष्ट होगी। नाना को (माता वा पिता) नाती का मानस पुत्र कैसे कहा जा सकता है? ऐसी बेतुकी बातें पुराणो मे अनेक हैं। यहाँ ब्रह्मा न कहकर 'ब्रह्म' कहा जा सकता है। हाँ, वर्त्तमान सृष्टि के आदि मे कमल से जो ब्रह्मा उत्पन्न हुये थे, उनका मानस पुत्र कहा जा सकता है।

ब्रह्मा के मानस पुत्र

पुराणो के अनुसार ब्रह्मा के दस मानस पुत्र थे। मरीचि, अत्रि, अगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, भृगु, वशिष्ठ, दक्ष[१] और नारद। भिन्न-भिन्न ग्रन्थो मे कुछ नामो मे भिन्नता भी है। तथ्य जो हो।

दक्ष की पत्नी का नाम असिक्नी था, जो वीरण प्रजापति की कन्या थी। (वायु पुराण, ६५।१२८।१२९) भागवत पुराण के अनुसार पंचजन्य प्रजापति की कन्या उनकी पत्नी थी। जिसका नाम असिक्नी था।

दक्ष और असिक्नी के विषय में श्रीमद्भागवत के अनुसार पौराणिक कथा का साराश निम्न प्रकार है :—

"असिक्नी के दस हजार हर्यश्व नामक पुत्र हुये।" इतने पुत्रो का नाम सुनकर पाठक अचभा मे पडेंगे। अब इसका समाधान भी भागवत के ही अनुसार देखिये।

पौराणिक कथा का सारांश—"दक्ष अपने वीर्य और पत्नी के रजको मिलाकर घृत के अनेक घडो मे बूँद-बूँद रख कर उनके मुँह को बन्द कर दिया करते थे। उन्ही

१ मनुस्मृति में 'प्रचेता' को मानस पुत्र कहा गया है।

कीटाणुओं से घृत के घड़े में बच्चे समय पर पैदा हो जाया करते थे।" ये बातें तो काल्पनिक जरूर मालूम होती हैं। परन्तु आज के वैज्ञानिक जब सुइयो (इनजेक्सन) के द्वारा पशुओं का गर्भाधान करा रहे हैं, तब संभव है कि दक्ष के समय के लोग इस वैज्ञानिक कला में आज से अधिक दक्ष रहे हों। इसके अतिरिक्त यदि पत्नियाँ अनेक हों और पुरुष साढ की तरह उन सभी का पति एक ही हो, तो भी अनेक पुत्र का होना संभव माना जा सकता है। यदि एक पुरुष की श्रीकृष्ण की तरह हजारों पत्नियाँ हों, तो हजारों पुत्र का होना भी संभव है।

दस हजार पुत्रों के विषय में यह भी लिखा है कि वे सभी तपस्वी हो गये। तदोपरान्त शवलाश्व नामक एक सहस्र पुत्र और भी उत्पन्न किये। ये भी तपस्वी हो गये। तब अन्त में साठ कन्यायें पैदा की गईं। उन साठों पुत्रियों के नाम तथा वैवाहिक सम्बन्ध इस प्रकार हैं :—

दक्ष की १३ पुत्रियाँ

दक्ष की १३ पुत्रियों का पाणिग्रहण मरीचि प्रजापति के पुत्र कश्यप ने किया, जिनके नाम ये हैं—

१—दिति, २—अदिति, ३—दनु, ४—काष्टा, ५—अरिष्टा, ६—सुरसा, ७—इला, ८—मुनि, ९—क्रोधवशा, १०—ताम्रा, ११—सुरभि, १२—सरमा, १३—तिमि। यहाँ पर पाठकों को यह जान लेना चाहिये कि दिति, अदिति और दनु ये तीन नाम प्रामाणिक हैं। शेष नामों के विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि वे ठीक ही हैं। कद्रु और विनिता महाभारत के अनुसार कश्यप की ही पत्नियाँ थीं।

दक्ष की २७ पुत्रियाँ (भाग०)

दक्ष की २७ पुत्रियों का पाणिग्रहण अत्रि प्रजापति के पुत्र सोम-चन्द्र ने किया, जिनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

१—कृतिका, २—रोहिणी, ३—मृगशिरा, ४—आर्द्रा, ५—पुनर्वसु, ६—पुष्य, ७—अश्लेषा, ८—मघा, ९—पूर्वा फाल्गुनी, १०—उत्तरा फाल्गुनी, ११—हस्त, १२—चित्रा, १३—स्वाती, १४—विशाखा, १५ अनुराधा, १६—ज्येष्ठा, १७—मूल, १८—पूर्वाषाढ, १९—उत्तराषाढ, २०—श्रवण, २१—धनिष्ठा, २२—शतभिशाखा, २३—पूर्वाभाद्रपद, २४—उत्तराभाद्रपद, २५—रेवती, २६—अश्विनी, २७—भरणी।

यहाँ पर पाठकों को एक बात यह जान लेनी चाहिये कि चन्द्रमा की इन २७ पत्नियों से सन्तान एक भी नहीं हुई। गुरु बृहस्पति की स्त्री का नाम तारा था। उसके साथ चन्द्रमा का गुप्त प्रेम हो गया। उसका परिणाम यह हुआ कि तारा चन्द्रमा के साथ भाग गई। इसके लिये चन्द्रमा और गुरु बृहस्पति में विवाद बढ़ने लगा। अन्त में दोनों के सहायकों द्वारा पचायत हुई। पंचों ने यह निर्णय किया कि "तारा बृहस्पति को वापिस मिल जाना चाहिये। उस समय तक तारा गर्भवती हो चुकी थी, इसलिये उस गर्भ की सन्तान चन्द्रमा को मिलना चाहिये।" क्योंकि वीर्य चन्द्रमा का ही था। इसी शर्त के अनुसार जो बच्चा पैदा हुआ, वह चन्द्रमा को मिल गया। उसी बच्चे का नाम बुध पड़ा।

बुध का विवाह सातवें मनुवैवस्वत की पुत्री इला से हुआ।

बुध ने अपने पिता के नाम पर प्रतिष्ठान[1]—झुसी-प्रयाग में २६६२ ई० पू० चन्द्रवंशी राज्य की स्थापना की।

दक्ष की १० पुत्रियाँ (भाग०)

सूर्य-विवस्वान के पुत्र यम ने दक्ष की १० पुत्रियों का पाणिग्रहण किया, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१—भानु, २—लम्बा, ३—ककुभ, ४—जामि, ५—विश्वा, ६—साध्या, ७—मरुत्वती, ८—मुहूर्त्ता, ९—सकल्पा, १०—वसु।

दक्ष की ४ पुत्रियाँ (भाग०)

दक्ष की चार पुत्रिओं का पाणिग्रहण अरिष्ठनेमि ने किया परन्तु भागवत पुराण के अनुसार तार्क्ष्य मुनि ने लिया। नाम ये हैं—

विनिता-वनिता, कद्रू, पतगी, यामिनी।

नोट—विनिता और कद्रू कश्यप की पत्नी थी (महाभारत)

दक्ष की २ पुत्रियाँ

सती और स्वधा का पाणिग्रहण अंगिरा ने किया। (भागवत)

नोट—सती तो शिव को मिली। यह सर्वविदित है। वही सती यज्ञकुण्ड में जलमरी थी, जिसके लिये शिव ने दक्ष को ही उसी कुण्ड में डाल दिया।

दक्ष की २ पुत्रियाँ

अर्चि और धृषणा कृशाश्व को मिली।

१. कुछ गवेषकों का कहना है कि 'प्रतिष्ठान' को ही 'पेशावर' कहा जाता है।

दक्ष की २ पुत्रियाँ

सरुपा और डाकिनी भृगुपुत्र को मिली परन्तु भागवत के अनुसार भूत को मिली ।

आदि साठ पुत्रियाँ केवल । पुत्राभाव मे पुराणो मे वर्णित मनुर्भरत वंशवृक्ष समाप्त हो गया ।

× × × ×

अभी चाक्षुप मन्वन्तर काल ही मानना चाहिये । क्योकि अभी तक सातवें मनु का जन्म नही हुआ है ।

[भारतीय आर्य-इतिहास का सम्बन्ध मनुर्भरत वंश, मरीचि-कश्यप, चन्द्र-तारा के पुत्र बुध, तथा कश्यप के पुत्र आदित्य-वरुण, भृगु, वशिष्ठ आदि से है । विश्व का सम्पूर्ण वर्तमान मानव सृष्टि—दक्ष-पुत्री, दिति, अदिति तथा दनु आदि से है । ये तीनो कश्यप की प्रधान पत्नियाँ थी । कश्यप सागर तट पर दिति से दैत्य, अदिति से आदित्य और दनु से दानव कुल चला । सभी कुलो के नामकरण मातृ गोत्र पर ही हुये । वहाँ पर वे सदा भारतीय शासक बने रहे ।

पुत्राभाव मे दक्ष का वंशवृक्ष समाप्त हो गया । तदोपरान्त उनके दौहित्रो (कश्यप-पुत्रो) का वंशवृक्ष चला ।]

अदिति

मित्र, अर्यमा और वरुण तीनो अदिति के पुत्र है (ऋ०वे० १०।१८५।१२) ।

अदिति के लिये भी ऋग्वेद मे स्तुति की गई है—(ऋ०वे० १०।१८५)

ऋषि—सत्य धृतिवारुणि: । देवता अदिति । (ऊपर का सूक्त)

अदिति के विजयशील पुत्र भग थे ।

ऋषि-वशिष्ठ । देवता-लिङ्गोक्त. भग. उषा: ।

—"प्रातर्जित भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।" (ऋ० वे० ७।४१।२)

कर्मकार के समान सृष्टि के आदि मे अदिति ने देवताओ को जन्म दिया। वे नाम और रूप से रहित देवता नाम, रूप आदि के सहित प्रकट हुये।

"ब्रह्मणस्पतिरेता स कर्मारइमाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत ॥२॥ (ऋ०वे० १०।७२।२)

दक्ष-पुत्रि अदिति ने जिन देवताओ को जन्म दिया है, वे अविनाशी देवता स्तुतियो के योग्य है। (ऋ०वे० १०।७२।५)

अदिति के आठ पुत्र उत्पन्न हुये। (ऋ० वे० १०।७२।८)
देवगण अदिति के पुत्र थे। (ऋ०वे० १०।६३।१३)
द्वादश आदित्य हुये। (ऋ० वे० ७।५१।३)
अदिति के पुत्र देवता और वरुणादि द्वादश देव हमारे लिये मगलकारी हो। (ऋ० वे० ५।५१।१२)

अदिति के पुत्र थे—वरुण, अर्यमा, पूपा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, इन्द्र और विवस्वान, त्रिविक्रम(वामन)आदि। यह बारह आदित्य कहलाये।(भा०६।६।३९) किन्तु यह कथन सर्वशुद्ध नही है। ऋग्वेदमे वरुण, मित्र, अर्यमा, पूपा, धाता, विधाता आदि ही मिलते है। ऋग्वेद के द्वारा यह प्रमाणित है कि इन्द्र दूसरी अदिति। और दूसरे कश्यप के पुत्र थे। इन्द्र देवों के भाई नही थे।

चाक्षुप-शाखा काल की प्रधान घटनाएँ

१० प्रजापतियो का भोगकाल २८० वर्ष। ३०४२ ई०पू० से २७६२ ई० पू० तक।
(सतयुग का उत्तरार्द्ध)

१—पश्चिम एशिया (ईरान-पर्शिया, अफ्रीका) तक भारतीय आर्य साम्राज्य का विस्तार।

२—विश्व विख्यात जल-प्रलय हुआ। जिसका वर्णन भारतीय पुराण, कुरान शरीफ तथा बाइबिल मे भी है। भारतीय पुराणों मे मनु का जलप्रलय और उसी को बाइबिल तथा कुरान मे 'नूह' का सैलाब कहा गया है।

३—३६वें प्रजापति चाक्षुप मनु के जीवन काल मे ही अत्यरातिजानन्तपनि की राजधानी 'वैकुण्ठधाम' का निर्माण हुआ।

४—ऋग्वेद मे द्वितीय वेदर्षि वेन (३९) तथा तृतीय वेदर्षि और प्रथम राजर्षि पृथुवैन्य (४०) हुआ।

५—सम्भवतः चौथे वेदर्षि हविर्द्धान (४२), पांचवें वेदर्षि प्रचेता (४४) और छठें वेदर्षि मरीचि कश्यप (४६) हुये।

७—४५वीं पीढ़ी में दक्षप्रजापति (४५) में स्वायम्भुव मनु-वंश का वंशवृक्ष समाप्त हो गया।

८—इसी मन्वन्तर काल में देव, दैत्य, दानव, इन्द्र, असुर आदि का जन्म हुआ।

९—चाक्षुष मन्वन्तर काल में ही दक्ष-पुत्री दिति, अदिति, दनु आदि से जल-प्रलय के बाद नवीन सृष्टि की वृद्धि और विकास हुआ।

दक्ष के दामाद मरीचि के पुत्र कश्यप थे। वही वर्त्तमान मानव सृष्टि के पिता है। जिनका जन्म इसी मन्वन्तर काल में हुआ।

१०—ऋग्वेद का विकास इसी मन्वन्तर काल में होने लगा। यह सांस्कृतिक कार्य हुआ।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड चौथा

सतयुग का अन्तिम चरण

(महा जलप्रलय के बाद)

वर्त्तमान मानव सृष्टि की वृद्धि और विकास

(अदिति, कश्यप, देव, इन्द्र, असुर, रुद्र आदि)

देव—असुर—काल

२७६२ ई० पू० से २६६२ ई० पू० तक

(४५ + १ =)४६—प्रजापति कश्यप

चाक्षुष मनु (३६) के पुत्रों ने पश्चिम एशिया तक भारतीय आर्य साम्राज्य का विस्तार और निर्माण तो किया किन्तु महाजल प्रलय मे, जो ईरान मे ही हुआ था, इन लोगो का सर्वनाश हो गया। वृद्ध राजा अभिमन्यु कुछ परिवारो के साथ प्राण बचाकर आर्यवीर्यान मे आकर ठहरे। वही मे पुन वृद्धि आरंभ हुई। परन्तु सन्तोषप्रद नही। उस वशवृक्ष मे दक्ष अन्तिम (४५) हुये। दक्ष का कोई पुत्र नही रहा। केवल पुत्रियाँ रही। ऐसी परिस्थिति मे दक्ष का चिन्ताग्रस्त होना कोई अस्वाभाविक बात नही है।

दक्ष की प्रथम कन्या 'दिति' जब व्याह-योग्य हुई तब दक्ष को योग्य वर की चिन्ता हुई। वर ऐसा होना चाहिये था जो उनका उत्तराधिकारी होकर राज्य-सचालन कर सके। उन लोगो के सगे सम्बन्धी पश्चिम एशिया से काश्मीर तक थे ही। उन्ही मे वर की तलाश होने लगी।

जिस स्थान को आज कश्मीर कहते हैं, वही पर उन्ही लोगों मे वगवर एक मरीचि प्रजापति रहते थे। उनके पुत्र का नाम कश्यप था।[1] ऐसा मालूम होता है कि कश्यप का 'कश' और मरीचि का 'मीर' बन कर एक शब्द 'कश्मीर' बन गया। उसी कश्मीर के निवासी मरीचि के पुत्र कश्यप के साथ दक्ष-पुत्री 'दिति' का

---

1 कश्यप की कथा वैदिक साहित्य तथा पुराणों के साराश पर आधारित है।

विवाह हुआ। विवाहोपरान्त दक्ष ने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि—कश्यप सपत्नी वहीं रहें। कश्यप ने वहाँ पर रहना स्वीकार तो किया, किन्तु वहीं सागर तट पर अलग अपना राज्य स्थापित कर। दक्ष ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और इस कार्य में सहायता भी की। चूंकि वहाँ राज्य तो दक्ष ही का था, इसलिये यह कार्य बिना कठिनाई के पूरा हो गया। कश्यप भी वहाँ के प्रजापति बन बैठे। उसके बाद समय-समय पर अदिति, दनु, कद्रु, विनिता, आदि अपनी सालियों से भी विवाह करते गये। इस प्रकार प्रजापति दक्ष (४५) की १३ कन्याओं का पाणिग्रहण कश्यप ने किया। वहाँ पर कश्यप एक प्रभावशाली और प्रसिद्ध प्रजापति कहलाने लगे। जिस सागर तटपर कश्यप रहते थे, उस सागर का नाम कश्यप सागर (Caspian sea) पड़ गया। वही कास्पीयन सागर आजतक कश्यप के नाम को जीवित रखे हुए है।

कश्यप की पत्नियाँ

प्रजापति दक्ष (४५) की १३ पुत्रियाँ जो कश्यप के साथ व्याही गई थी, उनके नाम इस प्रकार हैं—

दिति, अदिति, दनु, काष्टा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, सरमा, तिमि और अरिष्टा।[1]

अरिष्टा से गन्धर्व उत्पन्न हुये।[2] विनिता के पुत्र गरुड हुये जो भगवान विष्णु के वाहन हैं। विनिता के ही दूसरे पुत्र अरुण हैं, जो भगवान सूर्य के सारथि हैं। कद्रु से २६ नागवंश चले। जिनमें वासुकि नाग बहुत ही बलवान और प्रसिद्ध हुआ।[3]

गरुड, नाग और अरुण सभी हमलोगों की ही तरह मानव थे। उन लोगों का भी अपना राज्य था। जहाँ नागों का राज्य था, उस स्थान को आज तुर्किस्तान कहा जाता है। तुर्क लोग नागवंशी ही है। नागों का दो दल हो गया था। एक दल के नाग सूर्य-विष्णु के समर्थक थे और दूसरे दलवाले नाग, शिव के अनन्य भक्त थे। समय पडने पर रुद्र अपने दल वाले नागों की सहायता किया करते थे। इसलिये वे नाग सदा शिव के साथ रहा करते थे। उसका अर्थ यह लगाया जाने लगा कि शिव के गले में साँप लपेट कर उनको सँपेरा बना दिया गया। गरुड सूर्य्य-विष्णु के अनन्य भक्त थे, इसलिये उनको वाहन बना दिया गया। गरुडों का राज्य गरेडेसिया में था। यथार्थ में ये लोग देवों के ही पारिवारिक थे।

---

१ भाग० ६।६।२४, २५, २६। २ भाग० ६।८।२६। ३ भाग० ६।६।२२।

कुछ लोगों का मत है कि कद्रु और विनिता भी कश्यप की ही पत्नी थी। यदि यह बात मान ली जाये तो वैसी हालत में गरुड और नाग भी देवों के सौतेले भाई हो जायेंगे। गरुड और नाग आपस में एक दूसरे के जानी दुश्मन थे।

महाभारत के अनुसार कश्यप की १३ पत्नियों के नाम इस प्रकार हैं—दिति, अदिति, दनु, दनायु, काला, सिंहिका, क्रोधा, प्राधा, विश्वा, विनिता, कपिला, मुनि और कद्रु।

अदिति और कश्यप से जो वंशवृक्ष चला, उसका नाम मातृगोत्र पर 'आदित्यकुल' पड़ा। आदित्य का अर्थ होता है—सूर्य—और सूर्य को देवता कहा जाता है, इसलिये आदित्य कुल वाले अपने को देवकुल कहने लगे। बारह भाई आदित्य थे—जिनमे सबसे बड़े वरुण थे जो पीछे अपने कर्त्तव्य कर्म के अनुसार ब्रह्मा[1] कहलाये। सबसे छोटे विवस्वान थे, जिनका अनेक नाम था, जैसे विवस्वान, आदित्य-सूर्य-मित्र और विष्णु आदि।

दनु और कश्यप के जो वंशवृक्ष चला वह दानव कुल कहलाया।

कहा जाता है कि मरीचिकश्यप का नाम बचपन में अरिष्टनेमि था। जो भी हो। आर्य-इतिहास में कश्यप तो अनेक हुये हैं परन्तु मरीचि प्रजापति के पुत्र कश्यप वास्तव में विश्व के सम्पूर्ण नृवंश के पिता है। प्रजापति दक्ष की जो पुत्रियाँ—उन्हें पत्नी के रूप में मिली थीं, उन्हीं से देव, दैत्य, दानव, असुर राक्षस मानव, गन्धर्व, किन्नर, अरुण, गरुड नाग आदि के वंश वृक्ष चले। इतना ही नहीं पुराणों में तो जीव-जन्तु, सर्प-सिंह, शेर, गाछ-वृक्ष आदि सभी की उत्पत्ति दक्ष-पुत्रियों से ही कही गई हैं। परन्तु उन सभी पर विचार करना इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है। यहाँ तो केवल आर्य राजवंशो पर ही विचार करना है।

उपर्युक्त बातें मरीचिकश्यप के विषय में पौराणिक आधार पर लिखी गई हैं। उनका समर्थन पाश्चात्य पुरातत्ववेत्ताओं के द्वारा किस प्रकार होता है सो भी देखिये—

पुरातत्ववेत्ताओं का कहना है कि एशिया माइनर में पहले कोई 'कस्सीआई' जाति रहती थी। जिसके पूर्वज का नाम 'कस्पी ओन' था। इसी 'कस्सी-आई'

---

१. पद्म पुराण में जिसे "ब्रह्मा" कहा गया है, वह ब्रह्मा यह नहीं थे। वह ब्रह्मा तो मानव सृष्टि के आरम्भ में क्षीरसागर पुष्कर (अजमेर) में पैदा हुए थे। उसके बहुत दिनों के बाद स्वायंभुव मनु हुए हैं। ये ब्रह्मा तो प्राग्नारायण युग के आदि देवता (मानव) थे। क्षीरसागर उस समय भारत में ही था जहाँ आज अजमेर है।

जाति के नाम पर काकेसस पर्वत और कैस्पियन समुद्र पड़ा। इसी 'कस्पी-आई' जाति की राजधानी हिरकेनिया थी। वह 'कस्पी-आई जाति 'कैस्पियन सागर' तट पर थी। वहीं पारसियों के पैगम्बर जरदस्त का जन्म दैत्य नदी के किनारे हुआ था। वह दैत्य नदी कैस्पियन सागर में गिरती थी।

पुराणों में दैत्य नदी तथा हिरण्यकशिपु की राजधानी हिरण्य पुरी का वर्णन मिलता है। कश्यप तो नृवश के पिता ही बतलाये गये हैं। यहाँ पर भूतत्त्ववेत्ताओं की बातों से मिलान करने पर यह स्पष्ट समझ में आ जाता है कि 'कस्पीआई' कहलाने वाले कश्यप के ही वशज थे। हिरण्यपुरी के लिये हिरकेनिया शब्द का प्रयोग किया गया है। दैत्य नदी भी पुराणों वाली ही है।

काश्यप-सागर (Caspian Sea)

कश्यप का सम्बन्ध काश्यप सागर से है। इसलिये यहाँ पर काश्यप सागर का भी सक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेना अनावश्यक नहीं होगा।

ईरान में एक Caspia Province है, उसी काश्यपी प्रदेश में काश्यप सागर (Caspian Sea) है। ऐसा मालूम होता है कि पुराणों में जिसको 'कच्छप' अवतार कहा गया है, वह यही कश्यप प्रजापति थे। भारतीय पुराणों में समुद्र-मथन की जो कथा है, वह भी इसीकश्यप (कच्छप) सागर के विषय में है। पर्शिया के इतिहास जिल्द—१, पृष्ठ २८ में इस प्रकार लिखा है—"The name by which the Caspian sea is known in Europe is drived from the Caspii, a tribe that dwelt on its western shorses."

यह पौराणिक कथा सर्वविदित है कि समुद्रमन्थन में ही 'लक्ष्मी' मिली थी। यहाँ पर 'लक्ष्मी' से अभिप्राय स्वर्णखान से है। धन-दौलत-स्वर्ण को सभी 'लक्ष्मी' कहते हैं। मालूम होता है कि उस समय तक लोग काश्यप सागर को पार नहीं कर पाये थे। समुद्रमन्थन का अभिप्राय है समुद्र के इस पार और उस पार जाना-आना। पहले-पहल जब उस पार गये तो उसको समुद्रमन्थन कहा गया। उस पार में स्वर्ण की खान मिली, उसी को 'लक्ष्मी' कहा गया है। तभी से धन-दौलतवाले को 'लक्ष्मीपात्र' कहा जाने लगा। पहले दैत्यों ने ही समुद्र पार किया था। इसलिये दैत्यों को ही पहले स्वर्ण-खान (लक्ष्मी) मिली थी। कश्यप और दिति के पुत्र जो कशिपु थे—उन्हीं का नाम 'हिरण्यकशिपु' प्रसिद्ध हुआ क्योंकि

पहले-पहल उन्हीं को स्वर्णखान मिली। वही प्रह्लाद के पिता थे। पर्शिया के इतिहास जिल्द एक में इस प्रकार लिखा है—

"High ways of the world gold mines of Asia-Mainor or Sivas"

यहाँ एशिया माइनर का टेबुल लैण्ड (Table Land) है, जो बहुत ऊँचाई पर है। यही पर भृगु रहते थे। इसलिये यही भृगु स्थान था। इसे भृगु (Brygy) भी कहते हैं। ये तो काश्यप और काश्यप सागर सम्बन्धी कुछ इधर-उधर की बातें हुईं। अब मूल विषय की तरफ पाठक चलें।

मरीचि-कश्यप की पाँच पत्नियाँ प्रधान हुईं। दिति, अदिति, दनु, विनिता और कद्रु। उनकी पत्नियाँ इस प्रकार हैं—
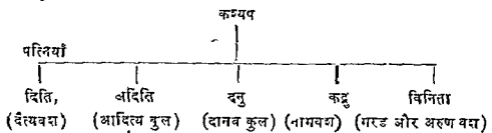
(अदिति ने सृष्टि के आदि में देवताओं को जन्म दिया—ऋ० १०।७२।७)

राज्यकाल—५०। २७६२ ई०पू० से २७१२ ई० पू० तक।

आदित्य कुल

पहले आदित्य कुल का परिचय पढ़िये—उसके बाद अन्यान्य का। इसका कारण यह है कि अदिति के ही वंशज तथा उनके गुरु-पुरोहित देव—आर्य कहलाते थे। दिति, दनु, कद्रू और वनिता के वंशधर आर्यों के समाज में सम्मिलित नहीं हुये। वे लोग इनके वैदिक धर्म तथा यज्ञादि के बन्धन में आना नहीं चाहते थे।

कश्यप के अदिति में बारह पुत्र हुये। वरुण, अर्यमा, पूषा, सविता, भग, धाता, विधाता, शक्र, उरुक्रम, मित्र और विवस्वान। ये नाम भागवत के अनुसार है। परन्तु सभी नाम यथार्थ नहीं जान पड़ते। पुराणों से ही जान पड़ता है कि मित्र नाम विवस्वान का ही था। विवस्वान के पाँच नाम प्रसिद्ध हैं। १—विवस्वान, २—आदित्य, ३—सूर्य, ४ मित्र, ५ विष्णु। पर्शिया के इतिहास द्वारा वरुण का ही नाम ब्रह्मा भी प्रमाणित होता है।

बारह पुत्र निश्चित् प्रमाणित होते हैं। उनमें सबसे बड़े वरुण थे जो पीछे अपने कर्मों के द्वारा ब्रह्मा कहलाये और सबसे छोटे विवस्वान थे। बीच के नाम विवादास्पद हैं।

बारहों भाई आदित्य कुल (देव) कहलाते थे। इसमें सन्देह नहीं है।

मरीचि-कश्यप छठें वेदर्षि हुये क्योंकि इनसे पूर्व ५ हो चुके हैं यथा—१ प्रजापति परमेष्ठी(९)ऋ० वे० १०।१२९। रचना काल–३७९८ ई० पू०। दूसरे वेदर्षि 'वेन'(३६)ऋ०वे० १०।१२३। रचनाकाल २९५८ ई० पू०। तीसरे वेदर्षि और प्रथम राजर्षि–पृथुवैन्य(४०)ऋग्वेद १०।१२४। रचनाकाल—२९३० ई०पू०। चौथे वेदर्षि हविर्धान (४२) ऋ०वे० १०।११,१२। रचनाकाल–२८७८ई० पू०। पांचवें वेदर्षि प्रचेता(४४)ऋग्वेद १०।१६४। रचनाकाल—२८१८ ई० पू०।

छठें वेदर्षि कश्यप का सूक्त निम्न प्रकार है—रचनाकाल–२७६२ ई० पू०

(ऋषि—कश्यपो मरीचि पुत्र। देवता—अग्निर्जातवेदा। छन्द-त्रिष्टुप)

जातवेदसे सुनवाम सोमरातीयतो नि दहाति वेदः।

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥१॥७

(ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ९९)

सारांश—हम धनोत्पादक अग्नि के लिये सोम निष्पन्न करें। शत्रुओं के धनों को भस्म करें। जैसे नाव नदी को पार करा देती है, वैसे ही वह अग्नि हमको दुःखों से पार करें और हमारे रक्षक हों।

अदिति के पुत्र देवता और वरुणादि द्वादशदेव थे (ऋग्वेद २।२७।१२)।

'हे दक्ष! तुम्हारी पुत्री अदिति ने जिन देवताओं को उत्पन्न किया है, वे अविनाशी देवता स्तुतियों के योग्य हैं (ऋग्वेद १०।७२।५)।

तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥ (ऋग्वेद १०।७२।५)

मित्र, अर्यमा और वरुण तीनों अदिति के पुत्र हैं (ऋग्वेद १०।१८५।१,२)।

देवगण अदिति के पुत्र थे (ऋ० १०।६३।३)।

वंशवृक्ष

४६. कश्यप + अदिति

वरुण–ब्रह्मा (ज्येष्ठ)	बारह भाई (आदित्य कुल)	विवस्वान-सूर्य-आदित्य (४७) मित्र विष्णु (सबसे छोटे)

कश्यप का राज्यकाल—५० वर्ष २७६२ ई० पू० से २७१२ ई० पू० तक।
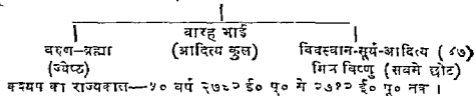
(४५ + २ =)४७—आदित्य-विवस्वान-सूर्य-मित्र-विष्णु

४५वीं पीढी में पुत्राभाव में प्रजापति दक्ष का वंशवृक्ष समाप्त हो गया। ४६वीं पीढी में दक्ष (४५) की पुत्री अदिति और कश्यप ४६वीं पीढी में हुए। ४७वीं पीढी में अदिति-कश्यप के पुत्र सूर्य राजा हुये। सूर्य के बडे भाई वरुण भी उसी पीढी में राजा हुये। इसलिये दोनों भाई ४७वीं पीढी में ही कहे जायेंगे। सूर्य-विवस्वान के पुत्र सातवें मनु वैवस्वत भारतवर्ष के उत्तराधिकारी हुये। अब सूर्य का परिचय देखिये।

अदिति-कश्यप के बारह पुत्रों में विवस्वान सबसे छोटे थे। मातृगोत्र पर कुल का नाम आदित्य कुल पडा। इसलिये सभी भाई आदित्य कहलाये। आदित्य शब्द का अर्थ होता है 'सूर्य'। सूर्य को 'देव' 'देवता' तथा 'भगवान' कहते है। इसी आधार पर आदित्य कुल वाले सभी भाई देवकुल कहलाने लगे। उसी समय उन्ही लोगों के आस पास में एक व्यक्ति का जन्म हुआ, जिसने अपने को इन्द्र घोषित किया। कालक्रम से उसी ने अपने को 'देवराट् इन्द्र' भी बनाया और देवों ने भी उसे स्वीकार कर लिया। जहाँ ये लोग रहने लगे, उस स्थान ग्राम-नगर को देवलोक—सुरपुर के नाम से विख्यात किया। वह स्थान ईरान-पर्शिया में ही था, जिसका परिचय आगे यथास्थान मिलेगा। देवलोक का अर्थ होता है देवों का राज्य—देवों का स्थान। बारह भाई आदित्य थे।[1] मित्र, अर्यमा और वरुण तीनों अदिति के पुत्र हैं।[2] देव पृथ्वी के ही वासी थे।[3] मनुष्यों को ही प्राचीन काल में देव कहते थे।[4] देवों का सर्वश्रेष्ठ भोजन नीवार (चावल) था।[5]

"त्वष्टा देवता अपनी पुत्री सरण्यू का विवाह कर रहे है। इसमें सम्मिलित होने को विश्व के सब प्राणी आये। जब यम की माता सरण्यू का पाणिग्रहण हुआ, तब वह सूर्य की पत्नी कहीं छिप गई।"[6]

बारह आदित्यों में सबसे छोटे भाई का नाम विवस्वान था। मातृगोत्र पर 'आदित्य' का नाम प्रसिद्ध हुआ। आदित्य शब्द का अर्थ सूर्य होता है, इसलिये 'सूर्य' नाम भी प्रसिद्ध हुआ। चूंकि यह लडाकू प्रकृति के थे, इसलिए अन्यान्य राज्य शक्तियाँ इनसे मित्रता रखना चाहती थीं, अतः सभी लोग इनको 'मित्र'

---

१. ऋग्वेद ७।५१।३। २ ऋग्वेद १०।१८५।१३। ३ शतपथ ब्राह्मण १४।३।२।४। अथर्ववेद ११।५।१६।४।११।८। ४ श० प० ब्रा० ११।१।२।१२। ५ तैत्तरीय ब्रा० १।३।६।८।

६ त्वष्टा दुहित्रे वहतु कृणोतीतीद विश्व भुवनं समेति।
यमस्यमाता पर्यु ह्यमाना महोजाया विवस्वतो ननाश ॥१॥ (ऋग्वेद १०।१७।१)

भी कहने लगे। पीछे 'विष्णु' नाम से भी ये प्रसिद्ध हुये। इस तरह ये पाँचोंनाम 'सूर्य' के हुये। इनके लिये मैं 'सूर्य-विष्णु' शब्द का प्रयोग करूँगा।

सूर्य-विष्णु के विवाह का वर्णन ऋग्वेद में १०वें मण्डल के १७वें सूक्त में है। जिसका एक मन्त्र पृष्ठ ९५ के फुटनोट नं० ६ में है।

सूर्य के ज्येष्ठ भ्राता वरुण की पत्नी का नाम चर्षणी था। उससे भृगु जी का जन्म हुआ।[१] भृगु के एक पुत्र का नाम शुक्र, काव्य, कवि, उशना, उशान आदि था। काव्य-शुक्र-ऊशना के एक पुत्र का नाम 'त्वष्टा' था जो विश्वकर्मा-मय के पिता थे। उसी त्वष्टा की पुत्री सरण्यू थी। सरण्यू के भी चार नाम प्रसिद्ध हैं—सरण्यू—रेणु—संज्ञा और अश्विनी। रेणु परम सुन्दरी थी और सूर्य उसकी अपेक्षा असुन्दर थे। इसीलिये रेणु विवाह के समय छिप रही थी। मतलब यह है कि रेणु अपने जैसा सुन्दर-रूपवान योग्य पति चाह रही थी। परन्तु सूर्य प्रसिद्ध और शक्तिशाली राजा थे तथा अपने ही कुल के भी थे, इसलिये त्वष्टा ने अपनी पुत्री रेणु का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध होने पर भी कर दिया।

सूर्य की ससुराल

भारतीय पुराणों में उत्तर कुरु की चर्चा अनेक स्थानों पर है। आजकल जिस स्थान को 'कुर्दिस्तान' कहते है, उसी का नाम देवकाल अर्थात् प्राचीनकाल में 'उत्तर कुरु' था। यह स्थान आरमेनिया प्रदेश से नीचे है। सूर्य-विष्णु के श्वसुर त्वष्टा वहीं के महिदेव (राजा) थे। उनकी राजधानी 'वन' थी।

सूर्य की राजधानियाँ चार थीं—आदित्य नगर, कश्यप नगर, इन्द्रवन और भण्डार।[२] पुराणों में उत्तर कुरु की राजधानी 'वन' का भी नाम है। इसका कारण यह है कि कुछ दिनों तक सूर्य वहाँ भी थे। जिस स्थान को आज 'अदन' कहते है, वही सूर्य का आदित्य नगर था। आदित्य का मन्दिर भी था, जिसकी छत में हीरा-मोती जड़े हुये थे। वह मन्दिर सोने चांदी की ईंटों से बना।[३]

जिसको आज फारस की खाड़ी कहते हैं—वही देवकाल में क्षीर सागर कहलाता था—जहाँ सूर्य विष्णु रहते थे। पुराणों में वर्णित "शीनार" प्रदेश भी पर्शिया की खाड़ी के ही ऊपर था। उसीका प्राचीन नाम "Land of Shinar" है।[४]

---

१ श्रीमद्भागवत ६।१८।४। २ भविष्य पुराण सूर्य-कथा। कनिंघम जिल्द पाँच सेक्सन मुल्तान। ३ हिस्ट्री आफ अरेबिया। ४. "As journeyed from the east we found a plain and settled in the land of Shinar' (Book of Genesis)

उसी को 'शीनार' भूमि कहते हैं, जो पर्शियन गल्फ के ऊपर है।[१] आज जिस स्थान को 'अरब' कहते हैं, पौराणिक विचारधारा के अनुसार उसी का प्राचीन नाम भूमि, नाभि, सुमेर और शीनार था। सभी देवासुर संग्राम भी वहीं हुये थे। मतलब यह है कि चाक्षुष मनु के पुत्र तो पश्चिम एशिया में गये थे और वहां अपना उपनिवेश भी बनाया था, परन्तु जलप्रलय काल में उन लोगों को बहुत नुकसान उठाना पड़ा। मगर देव-असुरकाल में पुन. उन लोगों का साम्राज्य पश्चिम एशिया में काबुल, कन्धार, मक्का, अरब, ईरान, पर्शिया आदि देशों में प्रभावशाली हो गया। अब पाठक समझ गये होंगे कि भारत से लगातार पश्चिम एशिया तक आर्यों का राज्य विस्तार हो गया था। सूर्य-विष्णु और वरुण तथा इन्द्रादि का प्रभाव इसी से जाना जा सकता है। असुरों का राज्य विस्तार भी हो रहा था। अब सूर्य का पारिवारिक परिचय पढ़िये।

सूर्य-परिवार

सूर्य अपनी पत्नी रेणु के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करने लगे। रेणु-सज्ञा के गर्भ से एक पुत्र रत्न हुआ, जिसका नाम वैवस्वत रखा गया। अर्थात् विवस्वान-सूर्य के पुत्र मनुवैवस्वत हुये।[२] यही सातवें मनु हुये, जिनका मन्वन्तर काल अभी चल रहा है। यही भारत की ४८वी पीढी में शासक हुये। इन्हीं के शासन काल से त्रेता युग का आरम्भ मानना चाहिये।

वैवस्वत मनु के भाई यम थे। विवस्वान के पुत्र यम थे।[३] वैवस्वत के बाद यम और यमी का जन्म हुआ। ये दोनों ही जुड़वां सन्तान हैं। इसी प्रकार तीन शिशुओं की माता रेणु-सज्ञा बन गई। चूंकि रेणु सूर्य की अपेक्षा अधिक सुन्दरी थी इसलिय रूपगर्विता नायिका होना स्वाभाविक था। समय-समय पर हँसी-दिल्लगी में हो सूर्य को चिढाया करती थी। ऐसे ही एक बार हँसी-मजाक में ही पति पत्नी दोनों में झगड़ा हो गया। सूर्य ने रेणु का दो-चार लप्पर-थप्पर जमा दिया। उसके बाद मौका पाकर रेणु अपने पिता त्वष्टा के घर चुपके से चली गई। जाते समय अपनी दासी सवर्णा को बच्चों की देखभाल के लिय कहती गई।

---

१ "The land of Shinar or Sumer is on the head of the Persian Gulf" (Genesis)। २. ऋग्वेद १०।६३।१।

३ ऋग्वेद १०।५८।१। १०।६०।१०।

सवर्णा

सवर्णा सेविका तो थी जरूर मगर उम्र मे अभी किशोरी थी। रंग-रूप मे भी रेणु से किसी तरह कम नही थी।

सूर्य-विष्णु, रेणु को मनाने के लिये नही गये बल्कि कुछ दिनो तक चुप लगा गये। रेणु समझती थी कि सूर्य देव मनाने के लिये जरूर आयेंगे। परन्तु वह गये नही, इसलिये वियोगिनी बनकर अपने पिता के घर समय व्यतीत करने लगी। इधर सूर्य धीरे-धीरे सवर्णा पर प्रेमासक्त हो गये। उसका परिणाम वही हुआ जो प्राय. हुआ करता है। अब तो सवर्णा नई रानी बन गई। वैवस्वत मनु और यम की सौतेली माता ही बन बैठी। सवर्णा पहले भी कहने के लिये सेविका थी, परन्तु रग-रूप और प्रकृति से रानी थी। प्रौढा थी ही। रूप यौवना थी। यह भी रूप गर्विता नायिका ही थी। मृदुभाषिणी भी थी। पुरुषो पर नयन बाण चलाने मे भी कम प्रवीण नही थी।

संज्ञा के जाने पर वह स्वयं मालकिनी बन बैठी। धीरे-धीरे अपने प्रेमपाश मे सूर्य को लपेट ही लिया। परिणाम स्वरूप संज्ञा का स्थान उसीने ग्रहण कर लिया।

सवर्णा से भी सूर्य की तीन सन्ताने हुई। एक पुत्र शनैश्चर (इसी को ईरान वाले मनुचेहर कहते हैं) या शनि हुआ। तप्ती और विष्टी नाम की दो पुत्रियाँ हुई।

अब सूर्य-विष्णु के घर मे छै बच्चे हो गये। तीन रेणु-संज्ञा के और तीन सवर्णा के। सूर्य बराबर राजकार्य से बाहर ही जाया करते थे, इसलिये उन बच्चो की देखभाल सवर्णा को ही करना पडता था। सवर्णा अपने बच्चो को विशेष सुविधा देने लगी और रेणु के बच्चो को तिरस्कार। ये बातें वैवस्वत और यम से छिपी नही रहीं। वैवस्वत तो सज्जन-स्वभाव के थे परन्तु यम नटखट लडका था। इसलिये सौतेली माता से यम को खटपट हो जाना स्वाभाविक था। एक दिन की घटना इस प्रकार घटी कि किसी बात पर रूठकर यम ने अपनी विमाता को लात मार दी। इस पर सवर्णा ने यम को टाग पर एक ऐसी लकडी मारी कि बेचारे यम की टाग ही टूट गई। उस समय सूर्य घर मे नही थे। जब आये तब यम ने नालिश की। सूर्य ने सवर्णा को बहुत डाँटा-फटकारा। उसके बाद अपनी धर्मपत्नी रेणु को लाने के लिये अपने स्वसुर त्वष्टा के घर उत्तर कुरु चले गये। जाते समय अपना प्रसिद्ध घोडा उच्चैश्रवा भी साथ लेते गये।

× × × ×

संज्ञा क्रोधावेश मे आकर अपने पिता के घर तो चली आई थी, परन्तु पति-वियोग और बच्चो की चिन्ता मे सदा दुःखी रहा करती थी। अब वह अपनी भूल पर पश्चाताप कर रही थी। इसी परिस्थिति मे सूर्य अपने उच्चैश्रवा घोड़े पर सवार वहाँ पहुँचे। उनको देखते ही मन ही मन तो आनन्द सागर मे गोते लगाने लगी मगर ऊपरी हाव-भाव से सूर्य पर ही अपना रंग जमाने लगी। उसने कहा कि—"इतने दिनो पर मेरे पास किस लिये आये हो?" अन्त मे त्वष्टा ने ही बेटी—दामाद मे मेल-मिलाप करवा दिया। तब दोनो मे यह राय हुई कि यही उत्तर कुरु के मनोरम 'वन' मे कुछ दिनो तक वन-विहार किया जाये।

× × × ×

उत्तर कुरु के एक मनोरम प्रदेश मे त्वष्टा ने बेटी-दामाद के रहने का प्रबन्ध कर दिया। ये सपत्नी वही आमोद-प्रमोद करने लगे। इसी आधार पर पुराणो मे कहा गया है कि सूर्य-विष्णु की राजधानी 'वन' भी थी। वहाँ उच्चैश्रवा अश्व भी साथ ही रहने लगा। वही पर रेणु भी उच्चैश्रवा पर सवारी करने मे अभ्यस्त हो गई। इसलिये सूर्य उसको अश्विनी (घोड़ चढ़नी) कहकर पुकारने लगे। इस प्रकार उसका एक नाम अश्विनी भी प्रसिद्ध हो गया। इसी घोड़ चढ़नी की कहानी को पुराणों तथा ऋग्वेद में भी भिन्न-भिन्न ढंग मे वर्णन किया गया है।

अब सरण्यू का चार नाम प्रसिद्ध हो गया—सरण्यू, रेणु, संज्ञा और अश्विनी।

× × × ×

सूर्य और रेणु दोनों पति-पत्नी जंगल मे मंगल मनाते हुए समय व्यतीत करने लगे। वही पर पुनः जुड़वाँ सन्तान उत्पन्न हुई, जिनका नाम नासत्य और दस्र पड़ा। यही दोनो भाई नासत्य और दस्र अश्विनीकुमार के नाम से प्रसिद्ध हुये। दोनो अश्विनी कुमार बहुत बड़े चिकित्सक हुये (ऋग्वेद तथा पुराण)।

× × × ×

यम की टाँग टूटने पर जब सूर्य—रेणु को लेने के लिये उत्तर कुरु चले गये तब यम ने विमाता के पास रहना उचित नही समझा। इसलिये अपने बड़े चाचा वरुण के पास चला गया। वरुण ने यम को सान्त्वना दी और कहा कि "तुमको हम राजा बनायेंगे। चिन्ता मत करो।" उसी के बाद वरुण ने मन्युपुरी-सुषा की तरफ प्रस्थान किया और अपने पूर्वजो का राज्य जो जलप्रलय के समय मृत्यु सागर बन गया था, उसका पानी सुखाकर वही का राजा यम को बना दिया। तभी से

मृत्यु लोक के राजा यम हुये। यम और यमी दोनों ही वेदर्षि है (ऋग्वेद-मण्डल १० और सूक्त १० तथा १४)।

वंशवृक्ष

(४५+२) सूर्य + रेणु (सरण्यू-सज्ञा-अश्विनी)

(४५ + २ + १) मनुवैवस्वत-सावर्णि मनु (विमाता के नाम पर)	यम, यमी (विवरण आगे देखिये)	नासत्य, दस्र (यही दोनो अश्विनी कुमार के नाम से प्रसिद्ध हुये)

(२६६२ ई०पू० यही वैवस्वत मनु भारत-अयोध्या के सूर्यवंशी राजा हुये)।

(४५ + २) सूर्य + सवर्णा (दूसरी पत्नी)

शनैश्चर–शनि–श्रुतिश्र्मा	तप्ती (पुत्री)	विष्टि (पुत्री)

× × × ×
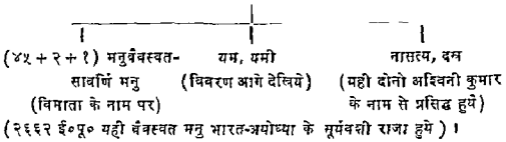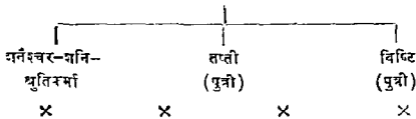
सूर्य सम्बन्धी कुछ प्रधान बातें

१. ऋग्वेद के आरंभिक रचयिताओं की सूची

१. प्रजापति	(९) परमेष्ठी	ऋग्वेद	१०।१२९—३७९८ ई०पू०	
२. "	(३९) वेन	"	१०।१२३—२९५८	"
३. राजा	(४०) पृथुवैन्य	"	१०।१४८—२९३०	"
४. प्रजापति	(४२) हविर्द्धान*	"	१०।११,१२—२८७४	"
५. "	(४४) प्रचेतस	"	१०।१६४—२८१८	"
६. "	(४६) मरीचि-कश्यप	"	११९९ —२७६२	"
७. देव	(४७) विवस्वानादित्य		१०।११३—२७१२	"
८. "	वामदेव (नारद)		अनेक सूक्त	
९. गुरु-पुरोहित	वशिष्ठ		"	

इनके बाद सभी अन्य शान्तनु तक।

---

* यह सन्देहजनक है।

२ पाश्चात्य विद्वानों ने ईरान-पर्शिया तथा अरब आदि देशों के प्राचीन इतिहासो मे—आदित्य, आद, मित्र तथा सूर्य भगवान (Sun God) आदि नामो का प्रयोग एक ही व्यक्ति के लिये किया है। टाडराजस्थान पृष्ठ ४२६ मे इस प्रकार लिखा है—"Carneus or Sun God and Druidic monuments scattered throughout Europe"

३. हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, पृष्ठ ४१९ मे सूर्य ही के लिये मित्र शब्द का प्रयोग है—' Mithraea or temples of Mitra have been founded all over Germany and so far away as york and Chester."

४. 'आद' शब्द भी पाश्चात्यो ने सूर्य ही के लिये प्रयोग किया है। अरेबिया के प्राचीन इतिहास मे इस प्रकार लिखा है—"अदन मे आद का नगर था। वहाँ 'आद' का मन्दिर था—जो सोने-चांदी की ईंटो मे बना हुआ था। उसकी छतो मे हीरे और मोती जडे हुते थे।"

५. अरब मे आद, आदम, रब, रा, गारब, Edom, Ery thros, सूर्य ही के नाम हैं। लाल सागरका नाम 'एदम' और पर्शियन गल्फ का नाम एरी थ्रोस पहले था (चैम्बर्स डिक्शनरी)।

६. प्राचीन अरब आदवशी (Ad) हैं।

७ मुसलमानो के कथनानुसार 'आदम' का जन्म लका के निकट 'मालद्वीप मे हुआ था। इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि आदित्य (सूर्य) को ही आदम कहा गया है। बाइबिल म जो आदम की कथा है, वह सूर्य-कथा ही है। अरबी भाषा मे 'अरब' या 'यारा' भी सूर्य ही के नाम है। 'खोट' भी सूर्य ही का नाम है। अरब म एक खोट प्रा त है।

८ आजकल जिस स्थान का नाम अदन' है, वहीं पर देवकाल मे आदित्य-सूर्य की एक राजधानी थी, और उस समय उसका नाम आदित्यपुर-आदित्यनगर था (अरेबिया का इतिहास)।

९ आदित्यो ने बेबीलोनिया, सीरिया और मिस्र को जय करके 'त्रिविक्रम' की पदवी पाई थी।

१०. देवकाल मे अर्थात् २७६२ ई० पूर्व एलाम और पर्शिया के लोग मित्र और वरुण की उपासना तथा पूजा किया करते थे (हिस्ट्री आफ पर्शिया)।

११. मिस्र के ऊपर दमित्र'—विष्णुपुर था। दमिस्र (Demeter,) दमित्त Demitta विष्णु को ही कहा जाता है (Greek Legends)।

१२. उत्तर कुरु की राजधानी 'वन' थी (वि० पुराण)।

City of van in Armenia (टाडराजस्थान)

प्राचीन उत्तर कुरु आजकल का कुर्दिस्तान है (टाडराजस्थान)

१३ रेड सी (Red Sea)—लाल सागर का नाम पहल एडम (Edom) था। लाल रग सूर्य का बोधक है। स्वायंभुव मनु-प्रियव्रत के समय मे इसी का नाम सुरा सागर रखा गया था।

१४ फारस की खाड़ी (Persian gulf) का ही प्राचीन नाम क्षीरसागर था। उसी का नाम पहले Erythrian sea था (चैम्बर्स लूगर इंगलिश डिक्शनरी)

१५. अमेरिका के रेड इंडियन भी सूर्यवंशी है। वे अवतक सूर्य की पूजा करते हैं तथा अग्नि को कभी बुझने नही देते।

१६. मूलतान (मूल स्थान) मे सूर्य (मित्र) ने स्वयं तप (राज्य) किया था (भविष्यपुराण, कनिंघम जिल्द ५ मुस्लिम प्रसंग। पर्शिया का इतिहास जिल्द १, पृ० ८२०)।

ऋग्वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ

१. सूर्य ने स्वर्ग को स्थिर किया है (ऋ० वे० १०।८५।१)

इसका अभिप्राय यह है कि स्वर्ग (सुरपुर) का निर्माण सूर्य-विष्णु ने किया है।

२ दक्ष की पुत्री अदिति ने जिन देवताओं को जन्म दिया है, वे अविनाशी देवता स्तुतियो के योग्य है (ऋ० वे० १०।७२।५)।

३. अदिति के आठ पुत्र उत्पन्न हुये (ऋ० वे० १०।७२।८)।

नोट—जिस समय यह ऋचा बनी, उस समय तक आठ ही पुत्र उत्पन हुए होंगे। उनके बाद चार आदित्यो का जन्म हुआ होगा।

४. त्वष्टा देवता अपनी पुत्री सरण्यू का विवाह कर रहे हैं। इसमे सम्मिलित होने को विश्व के सब प्राणी आये। जब यम की माता सरण्यू का विवाह हुआ, तब सूर्य की पत्नी कहीं छिप गई। सरण्यू मनुष्यों के पास छिपाई गई और उसके समान रूपवाली स्त्री की रचना करके सूर्य को दी गई। तब अश्व के रूपवाली सरण्यू ने अश्विद्वय को धारण कर जुड़वाँ सन्तान उत्पन्न की।

टिप्पणी—ऐसा ही अर्थ सभी वेद-भाष्यकार किया करते है। यहाँ तक कि सायन ने भी ऐसा ही अर्थ किया है। इसी के आधार पर पुराणकारों ने भी

सरण्यू-रेणु-संज्ञा को एक समय में घोड़ी का रूप कह दिया है। अश्विनी कुमार का अर्थ लोगों ने घोड़ी का बच्चा कर दिया है। यह अर्थ का अनर्थ किया गया है। यथार्थ बात यह है कि जब सूर्य महाराज रेणु को मनाने के लिये अपने श्वसुर त्वष्टा के घर उत्तर कुरु गये थे, तब रेणु के साथ उत्तर कुरु के 'वन' में ही कुछ समय तक रह गये थे। यहीं जंगल में सूर्य की सहायता से रेणु भी अश्व की सवारी करने में बहुत ही अभ्यस्त हो गई। अब वह अकेली उच्चैश्रवा अश्व को लेकर सरपट दौड़ाने लगी। यहाँ तक हुआ कि अब वह सूर्य महराज से भी बाजी मारने लगी। उसी समय में सूर्य ने उसकी संज्ञा अश्विनी (अश्वारोहिणी) रख दी। इसका यह अर्थ नहीं होगा कि 'रेणु घोड़ी की शकल वाली बन गई। वे मन्त्र निम्न प्रकार है—

"त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महोजाया विवस्वतो ननाश॥१॥
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामददुर्विवस्वते।
उताश्विनाव भरद्यत्तदासीद् जहादु द्वा मिथुना सरण्यूः॥२॥
(ऋग्वेद मण्डल १०। सूक्त १७। मन्त्र १, २)

५. "विष्णु युद्ध कार्य में कुशल थे" (ऋ० वे० ८।२५।१२)।

६. यह सूर्य देवता सब पशुओं के स्वामी है। भेड़ की ऊन के वस्त्र को वही चुनते और वही धोते है। मन्त्र इस प्रकार है —

आधीषमाणायाः पतिः शुचायाश्च शुचस्य च।
वासोवायोऽवीनामा वासांसि मर्मृजत्॥ (ऋ० वे० १०।२६।६)

७. विवस्वान-सूर्य के पुत्र मनुर्वैवस्वत थे और मनुर्वैवस्वत के एक पुत्र का नाम नाभानेदिष्ट था। नाभानेदिष्ट के बड़े भाई इक्ष्वाकु थे। जिनके वंशवृक्ष में दाशरथी राम हुये। उसी नाभानेदिष्ट का एक सूक्त १०वें मण्डल में ६१वाँ है। उसी सूक्त के १८वें मन्त्र में नाभानेदिष्ट स्वयं कहते है—"स्वर्ग लोक में मेरा और सूर्य का जन्म स्थान है।" (ऋ० वे० १०।६१।१८)

टिप्पणी—जहाँ आदित्यों-देवों का स्थान था, उसी स्थान का नाम सुरपुर-स्वर्ग था। ईरानी लोग आजतक उस स्थान को 'ईरानियन पैराडाइज' कहते हैं। उसी स्थान को हिस्ट्री आफ पर्शिया में सर्ग (Surg) कहा गया है। आजकल जिसको राज्य कहते हैं, उसी को प्राचीन काल में लोक कहा जाता था। जैसे विष्णु लोक = विष्णु का राज्य या विष्णु का नगर या विष्णु का पुर। देवलोक = देवों की नगरी, देवों का राज्य।

८. मित्र (सूर्य) अर्यमा और वरुण तीनों अदिति के पुत्र हैं (ऋ० वें० १०।१८५।३)।

९. देव पृथ्वी के ही वासी थे (शतपथ ब्राह्मण १४।३।२।४)।

१०. मनुष्यों को ही प्राचीनकाल में देव कहते थे (श०प०ब्रा० ११।१।२।१२)।

११. देवों का सर्वश्रेष्ठ भोजन नीवार[1] था (तैत्तरीय ब्राह्मण १।३।६।८)।

१२. जो पहले पैदा हुये वे देव और जो पीछे पैदा हुये वे मनुष्य थे (शतपथ ब्राह्मण ७।४।२।४०)।

१३. देव और मनुष्य एक ही समय जन्मे (श०प०ब्रा० २।३।४।४)।

१४. देव सोम पीते थे और मनुष्य सुरा (तैत्तरीय ब्रा० १।३।३।३३)।

१५. प्रारम्भ में मनुष्य रूपी मरुदगण अपने पुण्य कर्मों द्वारा देवता बने (ऋ० वें० १०।७७।२)।

इसका सारांश यह है कि मरुद्गण पहले मनुष्य ही थे, परन्तु पीछे जब देवताओं के समाज में रहने लगे और उनकी आज्ञा का पालन करने लगे तब देवश्रेणी-समाज में ले लिये गये और उनको भी देवता घोषित कर दिया गया।

१६. द्वादश आदित्य हुये (ऋ० वें० ७।५१।३)।

× × × ×

सूर्य-विष्णु के ही ज्येष्ठ पुत्र मनुवैवस्वत भारतवर्ष के ४८वें उत्तराधिकारी हुये। मनुवैवस्वत के भाई यम ईरान में ही यमपुरी (मन्युपुरी-सुषा) के राजा हुये और उनका वंशवृक्ष वहीं चला (देखिये—यम का विवरण)। सवर्णा के पुत्र शनि को भी वहीं का राज्य मिला।

श्रीमद्भागवत

१७. विवस्वान की पत्नी संज्ञा के गर्भ से श्राद्ध देव वैवस्वत मनु एवं यम-यमी का जोड़ा पैदा हुआ। संज्ञा ने ही अश्विनी कुमारों को जन्म दिया (भाग० ६।६।४०)।

१८. विवस्वान की दूसरी पत्नी छाया (सवर्णा) से शनैश्चर तथा तप्ती नाम की कन्या उत्पन्न हुई (भाग० ६।६।४१)।

नोट—भागवत में छाया शब्द का प्रयोग इसलिये किया गया है कि वह यथार्थतः धर्मपत्नी नहीं थी। बल्कि धर्मपत्नी की छाया अर्थात् दासी प्रेमिका थी।

सूर्य-विष्णु का राज्यकाल—

५० वर्ष—२७१२ ई० पू० से २६६२ ई० पू० तक

---

१. नीवार=चावल।

यमराज

सूर्य की पहली पत्नी संज्ञा से चार पुत्र हुये थे। १—मनुवैवस्वत, २—यम, ३-४ दो भाई अश्विनी कुमार—नासत्य और दस्र।

चूंकि पश्चिम एशिया में ये लोग अधिक दिलचस्पी ले रहे थे, इसलिये भारत की राजनीतिक स्थिति ढीली पड़ती जा रही थी। ऐसे समय में मनु जैसे कर्मठ पुरुष को ही भारत का उत्तराधिकारी बनाना सूर्य ने उचित समझा। ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते भी उन्हीं को भारतवर्ष मिलना चाहिये था। हुआ भी ऐसा ही। मनु के दूसरे भाई यम वहीं रहे।

विवस्वान के पुत्र यम थे (ऋ० वे० १०।६०।१०—१०।५८।१)।
मनुवैवस्वत के भाई यम थे (ऋ० वे० १०।६०।१०)।
यम की माता सरण्यू थी (ऋ० वे० १०।१७।१,२,३)।

यम की माता के चार नाम थे—सरण्यू, रेणु, संज्ञा और अश्विनी। यम की विमाता का नाम सवर्णा था। इसीलिये यमके भाई मनुवैवस्वत को सावर्णि मनु भी कहा जाता है।

यम वेदर्षि हुये। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में दो सूक्तों की रचना यम की है। सूक्त संख्या १० और १४=ऋ० वे० १०।१०,१४।

यम के बचपन में ही उनकी माता रेणु रूठ कर अपने पिता के घर चली गयी थी, उसी समय सौतेली माँ ने मारकर उनकी एक टाँग तोड़ दी थी। इसलिये यम भी अपने घर से रूठकर अपने बड़े काका वरुण के पास चले गये। वरुण ने अपने पास प्यार के साथ रख लिया और कहा—"तुमको हम राजा बनादेंगे।" इतना सुनकर यम वरुण के चरणों में लिपट गया। यम यह भी समझ रहा था कि वैवस्वत बड़े हैं, इसलिये भारत के राजा वही होंगे। और यहाँ (ईरान) दैत्य-दानव आदि असुरों में आये दिन युद्ध ही होता रहता है।

यम के साथ एक जुड़वाँ बहन भी पैदा हुयी थी, जिसका नाम यमी पड़ा था। जब दोनों वयस्क हुये तब यमी ने यम के साथ विवाह करने के लिये प्रस्ताव किया। यम ने उसका विरोध किया और कहा कि 'ऐसा नहीं हो सकता है।" इन दोनों के सवाल-जवाब का ऋग्वेद के दसवे मण्डल में दसवाँ सूक्त है। उस सूक्त का सारांश यहाँ देता हूँ जो निम्न प्रकार है—"हे यम! मैं इस विशाल समुद्र के मध्य तुमसे मिलने की इच्छा करती हूँ। तुम माता की कोख में ही मेरे जन्म के साथी

हो ॥१॥ हे यमी ! तुम मेरी सहोदरा हो। हमारा अभीष्ट यह नहीं है। प्रजापति के स्वर्गलोक के रक्षक देवगण सब देखते हुये विचरण करते हैं ॥२॥ हे यम ! देवताओं को अपना इच्छित करने की सामर्थ्य प्राप्त है। अत तुम मेरी इच्छा के अनुसार वर्तो ॥३॥ हे यमी ! हम सत्यभाषी हैं, कभी मिथ्या नहीं बोलते। सूर्य-लोक के निवासी जलधारक आदित्य और वहीं वास करने वाली योषा हमारे पिता-माता है ॥४॥ हे यम ! सबके आत्मारूप प्रजापति ने हमें जन्म से ही साथी बनाया है। आकाश-पृथ्वी भी हमारे इस जन्म-सम्बन्ध को जानते हैं। अत प्रजापति के कर्म कोई अन्यथा करने मे समर्थ नहीं है।" इसी तरह से बहुत लम्बा सवाल जवाब है। अन्त मे यमी को निराश होना पडा क्योकि यम राजी नहीं हुये। इसी समय मे यम 'धर्मराज' कहलाने लगे।

× × × ×

यम के जन्म से लगभग दो सौ वर्ष पहले ईरान-पर्शिया मे एक भयकर बाढ आई थी, जो महाजल प्रलय के नाम मे विख्यात है। उस जल प्रलय के समय चाक्षुष मनु के पुत्रो का राज्य वहाँ तक फैल चुका था।

चाक्षुष मनु के पुत्र अभिमन्यु-मन्यु जो यम के ही पूर्वज थे, उनकी राजधानी ईरान मे ही बेरमा नदी के तट पर १४००० फुट की ऊँचाई पर मन्युपुरी-सुषा मे थी। वहाँ से प्राण बचाकर मन्यु महाराज सपरिवार भाग गये थे। पीछे जिस स्थान पर रहे, उस स्थान का नाम आर्यवीर्यान पडा। आजकल उसीको 'अजर-बैजान' कहते हैं। यहाँ से उर नगरी तक ये लोग रहते थे। अर्थात् दक्ष का राज्य-विस्तार था।

उस भयकर बाढ मे इतना पानी आया था कि बडे-बडे पेड पौधे तक जल मे डूब गये। पशु-पक्षी तक का नामोनिशान भी वहाँ से मिट गया। उसके बाद उसी समय से उस स्थान का नाम मृत्युसागर-मृत्युलोक पड गया।

वरुण ने अपनी उस प्राचीन पैतृक भूमि का उद्धार करना आवश्यक समझा। इसलिये वहाँ गये और अनेक नहरें खुदवाकर उस जल को समुद्र मे गिरवा दिया। उसके बाद मन्युपुरी पुन निवास योग्य नगरी बन गई। अब वरुण महाराज ने अपने भतीजा यम को वही का राजा बना दिया। तभी से यम मृत्युलोक के राजा कहलाने लगे। इस प्रकार मृत्युलोक के राजा यमराज प्रसिद्ध हुये। यम के ही वशधर पारसी है। यम के ही वश मे इन्द्र भी हुये। मृत्युलोक को ही भारतीय

पुराण मे 'अपवर्त्त' कहा गया है । सुषा पुरी के विषय मे मत्स्य पुराण मे लिखा है—"सुषा नाम पुरी रम्या वरुणस्यपि धीमत ।"

ईरान पर्शिया मे एक प्रकार का मुर्गा होता है, जिसका नाम कृकवा है । मत्स्यपुराण का निम्नलिखित श्लोक देखने से मालूम होता है कि यम और कृकवा मे विशेष सम्बन्ध है—

"अलिवार्या भवस्यादि का कथान्येषु जन्तुषु ।
कृकवा कूर्मथादत्तो य कृमीन्भक्षयिष्यति ।"

ईरान मे जहाँ यम की राजधानी थी, उसी स्थान को यमपुरी (जमपुरी) कहा जाता है । उसी को 'दोजख'-'नर्क' और सस्कृत मे 'अपवर्त्त' कहा गया है ।

हिस्ट्री आफ पर्शिया जिल्द १, पृष्ठ १०७ देखने से मालूम होता है कि ईरानी यम को ही प्रथम विजेता मानते है ।

The hero Yama was held to be the first to show the way to many, and being the first to arrive in "the vasty halls of death". Yama becomes transformed into the king of the dead (हिस्ट्री आफ पर्शिया)

जल प्रलयकाल मे ईरान का जो स्थान मृत्युलोक के नाम से प्रसिद्ध हो चुका था, वह स्थान दो-ढाई सौ वर्षों तक वैसा ही बना रहा । अपने चाचा वरुण की सहायता से उसी स्थान पर जाकर यम ने अपना राज्य सचालन आरम्भ किया । वैसी अवस्था मे वहाँ के लोगो ने इनको मृतको का राजा माना—जो स्वाभाविक ही था । इन्ही यम को रोमन लोग प्लूटो और फिनलेण्डर्स यमात्मा कहते हैं ।

यम का वशवृक्ष

सूर्य विवस्वान-आदित्य-मित्र-विष्णु + रेणु-सरण्यू सज्ञा-अश्विनी

- ७वें मनु वैवस्वत (यह भारतवर्ष के राजा हुये । इन्ही के वशवृक्ष मे दाशरथी राम हुये ।)
- यम (पृष्ट १०८ देखिये)
- नासत्य, दस्र (ये दोनो भाई अश्विनी कुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं)

१ 'साध्या' शब्द का रूप वहाँ 'सीथीस' हो गया। टाडराजस्थान ५१ म इसके विष में इस प्रकार लिखा है—"Scythes had two sons pal and Napas and the nations were called after them the Palas and Napians. They led their forces as far as the Niles"

२ 'रुद्र' को 'कपर्दी' भी कहा गया है—

"कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सव" (ऋ० वे० ७।८३।८)

३. 'मुगल' शब्द मंगोल का अपभ्रंश है। पर्शिया के इतिहास जिल्द १ १४५ में इस प्रकार लिखा है—"Moghul means Mongols, especially at dynasty of India"

यम का विवाह और वंशवृक्ष

पाठकों को स्मरण होगा कि प्रजापति दक्ष की दस कन्याओं का पाणिग्रहण यम ने किया था। जिनके नाम इस प्रकार थे—(१) भानु, (२) लम्बा, (३) ककुभ, (४) जामि, (५) विश्वा, (६) मरुत्वती, (७) मुहूर्ता, (८) संकल्पा, (९) साध्या और १० वसु (भाग० पु०)।

यम के वसु में आठ पुत्र हुये, जो मातृ गोत्र पर सभी वसु कहलाये। यही आठों वसु प्रसिद्ध है। ज्येष्ठ वसु का नाम 'धरवसु' था, जिनके ही पुत्र रुद्र थे। रुद्रों के ग्यारह कुल चले। उनमें एक कुल में शंकर-शिव-महादेव हुये। इस प्रकार महादेव यम के पौत्र और सूर्य-विष्णु के परपौत्र हुये। साध्या का वंशवृक्ष देखने से पाठकों को उनके वंशधरों की जानकारी होगी। उन लोगों का वंश विस्तार विशेष-कर उसी तरफ हुआ। इनके वंशधरों से भिन्न-भिन्न जातियाँ बनी।

'साध्या' की सन्तान सोदियन्स कहलाई। ग्रीस के आदि निवासी पालवंशी सोदियन्स ही थे। नीपवंश को जन्मेजय ने नष्ट किया। वसु, घोष, साध्य, हंस, विश्वकर्मा, मनीषि, द्रविड. हुन, मंगोल, रमण, धर, हयलाल आदि शाकद्वीपी जातियाँ यम की ही सन्तान है। मंगोल–मोग (Mong) शब्द से बना है, जिसका अर्थ सिंह या वीर है। उसी मोगलवंश के चगेज खाँ, हलाकू, तैमूरलंग, बाबर, आदि बड़े-बड़े विजेता नरेश हुये। मंगोल सूर्योपासक तथा मूर्तिपूजक थे।

ये सभी जातियाँ भारतीय आर्यवंशों की शाखायें है। प्राचीन ईरान का इतिहास भी इन्हे मानता है। वहाँ की सभी जातियाँ यम के पिता सूर्य को ही सभी जातियों का मूल पुरुष (God of all Nations) मानती थी। यम को ही यमराज, धर्मराज तथा धर्मदेव भी कहा जाता है।

रुद्र-शिव-शङ्कर-हर-महादेव

सूर्य-विष्णु के दूसरे पुत्र यम थे।[1] वैवस्वत के भाई यम थे।[2] प्रजापति दक्ष (८४) की १० पुत्रियों का पाणिग्रहण यम ने किया था। इसका मतलब यह हुआ कि अपने परपिता कश्यप की सालियों से यम ने विवाह किया। यम की १० पत्नियों में एक का नाम 'वसु' था। यम और उनकी पत्नी वसु से आठ पुत्र हुये। मातृगोत्र पर आठों वसु कहलाये। उन लोगों का अलग-अलग भी नाम था, परन्तु

---

१ ऋ० वे० १०।६०।१०।१०।५८।१। २. ऋग्वेद १०।६०।१०।
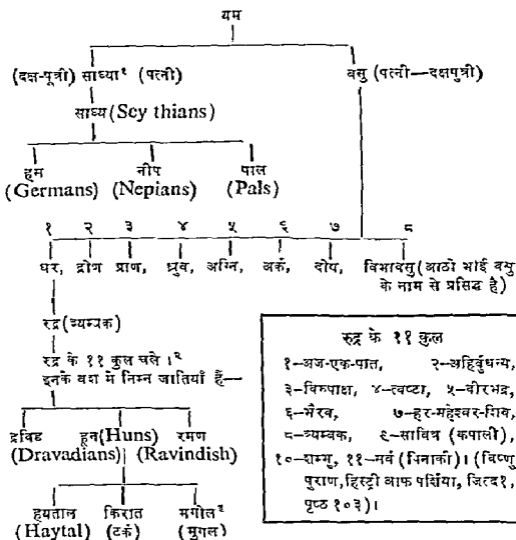
१ 'साध्या' शब्द का रूप वहाँ 'सीथीस' हो गया। टाडराजस्थान ५१ में इसके विषय में इस प्रकार लिखा है—"Scythes had two sons pal and Napas and the nations were called after them the Palas and Napians. They led their forces as far as the Niles".

२. 'रुद्र' को 'कपर्दी' भी कहा गया है—
"कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः" (ऋ० वे० ७।८३।८)

३. 'मुगल' शब्द मंगोल का अपभ्रंश है। पर्शिया के इतिहास जिल्द १, पृ० १४५ में इस प्रकार लिखा है—"Moghul means Mongols, especially, the great dynasty of India."

यम का विवाह और वंशवृक्ष

पाठकों का स्मरण होगा कि प्रजापति दक्ष की दस कन्याओं का पाणिग्रहण यम ने किया था। जिनके नाम इस प्रकार थे—(१)भानु,(२)लम्बा,(३) ककुभ, (४) जामि, (५) विश्वा, (६)मरुत्वती, (७) मुहूर्त्ता, (८) सकल्पा, (९) साध्या और १० वसु (भाग० पु०)।

यम के वसु मे आठ पुत्र हुये, जो मातृ गोत्र पर सभी वसु कहलाये। यही आठो वसु प्रसिद्ध है। ज्येष्ठ वसु का नाम 'धरवसु' था, जिनके ही पुत्र रुद्र थे। रुद्रों के ग्यारह कुल चले। उनम एक कुल में शकर-शिव-महादेव हुये। इस प्रकार महादेव यम के पौत्र और सूर्य-विष्णु के परपौत्र हुये। साध्या का वशवृक्ष देखन से पाठकों को उनके वशधरो की जानकारी होगी। उन लोगो का वश विस्तार विशेष-कर उसी तरफ हुआ। इनके वशधरो स भिन्न भिन्न जातियाँ बनीं।

'साध्या' की सन्तान सौदियन्स कहलाई। ग्रीस के आदि निवासी पालवशी सौदियन्स ही थे। नीपवश को जन्मेजय न नष्ट किया। वसु, घोष, साध्य, हस, विश्वकर्मा, मनीषि, द्रविड. हुन, मगोल, रमण, धर, हयलाल आदि शाकद्वीपी जातियाँ यम की ही सन्तान है। मगोल–मोंग (Mong) शब्द से बना है, जिसका अर्थ सिह या वीर है। उसी मोगलवश के चगेज खाँ, हलाकू, तैमूरलग, बाबर, आदि बडे-बडे विजेता नरेश हुये। मगोल सूर्योपासक तथा मूर्त्तिपूजक थे।

ये सभी जातियाँ भारतीय आर्यवशो की शाखायें है। प्राचीन ईरान का इतिहास भी इन्हें मानता है। वहाँ की सभी जातियाँ यम के पिता सूर्य को ही सभी जातियो का मूल पुरुष (God of all Nations) मानती थी। यम को ही यमराज, धर्मराज तथा धमदेव भी कहा जाता है।

रुद्र-शिव-शङ्कर-हर-महादेव

सूर्य विष्णु के दूसरे पुत्र यम थे।[१] वैवस्वत के भाई यम थ।[२] प्रजापति दक्ष (४७) की १० पुत्रियो का पाणिग्रहण यम ने किया था। इसका मतलब यह हुआ कि अपने परपिता कश्यप की सालियों से यम ने विवाह किया। यम की १० पत्नियो मे एक का नाम 'वसु' था। यम और उनकी पत्नी वसु से आठ पुत्र हुये। मातृगोत्र पर आठो वसु कहलाय। उन लोगो का अलग अलग भी नाम था, परन्तु

१ ऋ० वे० १०|६०|१०|१०|५८|१। २. ऋग्वेद १०|६०|१०।

प्रसिद्ध 'वसु' ही के नाम से हुये। ज्येष्ठ 'वसु' का नाम 'धर' था। इसलिये वह 'धरवसु' कहलाये (विष्णुपुराण, पर्शिया का इतिहास जिल्द १, पृ० १०३)। धर के पुत्र रुद्र हुये, जिनका ११ कुल चला (भाग०, मत्स्य पु०) ग्यारह रुद्रों के नाम इस प्रकार है—अज-एक-पात, अहिर्बुध्न्य, विरुपाक्ष, त्वष्टा, वीरभद्र, हर, बहुरूप, त्र्यम्बक, सावित्र, शम्भ, शर्व। कुछ नामों में भिन्नता भी है।

रुद्र ११ भाई थे। सभी का अलग अलग कुल चलने लगा। परन्तु रुद्र नाम से सभी विख्यात थे। उनमें एक रुद्र 'हर' थे, जो अनेक नामों से प्रसिद्ध हुये, जैसे—रुद्र, हर, महेश्वर, महादेव, शिव, शङ्कर और पशुपति आदि।[१] पुराणों[२] के अनुसार भी रुद्र यम के पौत्र और धर के पुत्र थे। रुद्र को 'कपर्दी'[३] भी कहा गया है। 'कपर्दी' शब्द का अर्थ है बालों का जूड़ा रखने वाला। इससे जान पड़ता है कि शिव भी सिखों की तरह जूड़ा बांधते होंगे।

यहाँ पर केवल एक रुद्र जो महादेव के नाम से प्रसिद्ध है, उन्हीं पर ऐतिहासिक ढंग में संक्षिप्त प्रकाश डालना है।

पूर्व के पाठों से पाठक यह समझ गये होंगे कि रुद्र का जन्म भी पश्चिम एशिया में ही हुआ था। उस समय ऐसी प्रणाली नहीं थी कि सम्पूर्ण परिवार एक ही जगह रहे। आर्य राजवंशों में ज्येष्ठपुत्र उत्तराधिकारी राजा हुआ करता था। शेष पुत्र तथा परिवार के लोग अलग-अलग अपना राज्य स्थापित किया करते थे।

रुद्र-स्थान

वंशवृक्ष से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि रुद्र सूर्य-विष्णु के ही वंशज थे। इनके पिता धरवसु थे (प्राचीन पर्शिया का इतिहास जिल्द १, पृ० १०३ तथा वि० पु०)। रुद्र सभी भाई भयंकर वीर-बलवान थे। रुद्र के रहने का स्थान सदा बदलता रहा है। आरंभ में रुद्र-हेमकूट पर रहे, जो हिन्दूकुश का प्रत्यंत पर्वत है। पुनः कुछ दिन 'शरवन' में रहे। यह स्थान एशिया माइनर में था। उसीको 'शिवदेश' कहा जाता था। ईरान में शकर प्रदेश के अन्तर्गत एक 'जाटा' प्रान्त है जहाँ 'जाटा' और 'जिप्सी' जाति के लोग रहते थे। मालूम होता है कि इसी 'जाटा' प्रान्त में शिव रहा करते थे—इसीलिये लोगों ने शिव को 'जटाधारी' बना दिया है। ईरान में एक स्थान का नाम 'हिरात' है—मालूम होता है कि प्राचीन

---

१. अमरकोश में देववर्ग देखिये। २. श्रीमद्भागवत स्वयंभुव वंश तथा मत्स्यपुराण।
३. "कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सव ।।" (ऋ० वे० ७।८३।८)

काल में हिरात का नाम 'हुर राष्ट्र' था। उसी के आस-पास ईरान का रुदवर (Rudbar) प्रान्त था—जहाँ रुद्र (शिव) रहा करते थे। कैलाश पर्वत के पूर्व की ओर लौहित्यगिरि के ऊपर 'भद्रवट' है—वहाँ भी शिव रहा करते थे। शिव का जब दूसरा विवाह पार्वती से हिमाचल प्रदेश मे हुआ तब वे हिमालय मे ही बस गये और कैलाश को अपनी राजधानी बनाया। कुवेर, रावण के द्वारा लका से वहिष्कृत किये जाने पर यही हिमालय मे अलकापुरी बसा कर रहता था। मालूम होता है कि कुवेर ने ही शिव का विवाह वहाँ कराया—जिसमे शिव भी वहीं रहने लगें और कुवेर के पडोसी बन जायें। कुछ दिनो तक अफ्रीका मे भी शिव की प्रधानता रही। उस समय उसको शिवदान द्वीप कहा जाता था। शिवदान का ही विकृत रूप 'सुडान' अफ्रीका म अवतक वर्त्तमान है, जो शिव का स्मरण दिलाता है। इस प्रकार शिव की प्रधानता सर्वत्र ही रही।

पाठको को यह सदा ध्यान म रखना चाहिये कि यम शिव आदि सभी भारतीय आर्य-वशज ही थे। परन्तु आर्य-सगठन के नियमाधीन नही रहते थे।

लिंग-पूजा

कुछ विद्वानो का कहना है कि शिव स्वय लिंग की पूजा किया करते थे, इसीलिये सम्पूर्ण ससार मे लिंग-पूजन-विधि प्रचलित हो गई। विदेशों मे भी बहुत बडे बडे जाठ की तरह शिव-लिंग मिले है। अरब और अफ्रीका मे शिव के अनेक स्थान है। मक्का का प्रसिद्ध 'सगे असवद' प्राचीन 'शिवलिंग' ही है।[१] शिव-सम्प्रदाय (Sabaism-Sabeanism) अरब का प्राचीन धर्म था (History of Rome, Liddle, 14,2) सग-असवद का ही दर्शन करने के लिये मुसलमान लोग मक्का मे जाते हैं, जिसको 'हज' करना कहते है।

शिव ने लिंग पूजा क्यो प्रचलित की—इसका अनुमान लोग यह लगाते हैं कि—पुरुष के वीर्य मे जो कीटाणु होते हैं, उनका आकार लिंग की तरह रहता है और महिलाओ के 'रज' मे जो कीटाणु होते हैं, उनकी शक्ल भगाकार होती है। जब उन दोनों का सयोग, प्रसग के पश्चात गर्भाशय मे हो जाता है, तभी गर्भाधान होता है, अन्यथा नही। इसलिये शिव न इस कीटाणु-रहस्य को समझ कर सृष्टि की वृद्धि के लिये लिंग पूजा प्रचलित की। उन्ही की देखा-देखी सभी लोग

१ Mohammad and the Black Stone (एशिया का इतिहास जिल्द २)।

ंगपूजा करने लगे। भारत से भी अधिक अरब-ईरान-अफ्रीका आदि देशों में शिव की उपासना होने लगी थी। शिवइज्म के मानने वाले उधर के अनेक लोग थे।[1]

जैसे देवों ने अपनी पूजा प्रचलित की थी, वैसे ही शिव ने भी लिंग-पूजा प्रचलित की। जिसका प्रभाव आजतक है।

× × × ×

आज जो तुर्किस्तान है, वहाँ के तुर्क लोग नागवंशी हैं। रुद्र नागों के मित्र थे, इसलिये नागवंशी किसी से डरते नहीं थे। कुछ नाग सूर्य-विष्णु से रक्षित थे। इस प्रकार सभी नागवंशी सुरक्षित थे। वे भी आदमी थे, सर्प नहीं।

× × × ×

ऋग्वेद के आरम्भिक काल में ग्यारह रुद्र ही थे, परन्तु धीरे-धीरे उनकी संख्या अनेक हो गई है। ऐसा शतपथ ब्राह्मण से प्रकट होता है। क्योंकि स्तुतियाँ वैसी ही हैं।

× × × ×

अरब में एक 'उमा' प्रदेश है, और रुद्र की पत्नी का नाम भी 'उमा' था। इससे अन्दाज लगता है कि दक्ष प्रजापति (४५) की राजधानी उमा प्रदेश में भी थी और इसीलिये उनकी पुत्री का नाम उमा भी था। यह भी सम्भव है कि 'उर' में राजधानी रही हो, इसीलिये उमा नाम पड़ा। तथ्य जो भी हो, शिव का विवाह सती से हुआ। सती को ही उमा भी कहा गया है। विवाहोपरान्त कुछ कालतक रुद्र ससुराल में ही रहे। पुनः अलग हो गये। कुछ कालोपरान्त बाद की घटना है। जब दक्ष यज्ञ करने लगे तब सबको यज्ञ भाग दिया परन्तु शिव को नहीं दिया। सती और रुद्र को निमन्त्रण भी नहीं दिया था। परन्तु सती स्वय बिना बुलावा के भी पिता के घर चली आई थी। इससे मालूम होता है कि कहीं शिव निकट ही में रहते होंगे। जब रुद्र को यज्ञभाग नहीं मिला तब सती यज्ञकुण्ड में गिरकर भस्म हो गईं। जब रुद्र को यह दुखद घटना मालूम हुई तब वहाँ गये और अपने श्वसुर दक्ष को ही यज्ञकुण्ड में डाल दिया। वे भी भस्म हो गये। ऐसा जान पड़ता है कि उसी के बाद वहाँ से रुद्र उपहास के कारण हटकर कैलाश में चले गये।

× × × ×

---

१. मासिक कल्याण, गोरखपुर का एक विशेषांक है, जिसका नाम शिवपुराण है। उसमें लिंग-पूजा पर अध्यापक रामदास गौड़ का खोजपूर्ण एक उत्तम निबन्ध है।

यम आर्य संगठन मे सम्मिलित नही हुये थे, यद्यपि उनके निर्माण किये हुये दो सूक्त ऋग्वेद मे है। वैसे ही रुद्र उनके पौत्र पहले दैत्य-दानव असुरो के ससर्ग मे रहा करते थे। इसलिये देवो ने उनको अपने साथ देव-आर्य संगठन में नही रखा। तब रुद्र ने खुल्लम-खुल्ला दैत्य-दानवों की सहायता करनी आरम्भ की। उन की सहायता पाकर दैत्य-दानव बलवान होने लगे। इसलिये देवो की चिन्ता का बढना स्वाभाविक हो गया। उस समय तक इन्द्र, सूर्य, वरुण आदि वृद्ध हो चले थे। इन लोगो ने रुद्र को अपनी पार्टी मे मिलाना आवश्यक समझा। जब इन लोगो ने रुद्र को बुलाकर अपनी पार्टी मे मिलने को कहा, तब रुद्र ने उत्तर दिया—"आप लोगो न मुझको तो देवकुल मे रखा नही है। मुझको यज्ञभाग भी नहीं देते है। इसलिये असुरो का साथ देना मेरे लिये अनिवार्य हो गया है।" तब देवो ने कहा—"अब आपको बराबर यज्ञभाग मिला करेगा। इसके अतिरिक्त आपको आज से 'महादेव' की उपाधि दी जाती है।" इस पर रुद्र प्रसन्न हो गये। परिणाम स्वरूप देव और महादेव मे मेल-मिलाप हो गया।

× × × ×

ऋग्वेद मे दूसरे ऋषि ने रुद्र की स्तुति की है, परन्तु रुद्र ने स्वय एक सूक्त की भी रचना नही की। देवो के ज्येष्ठ भ्राता वरुण की भी रचना नही है।

× × × ×

रुद्र मरुतों के पूर्वज

ऋषि—गृत्समद। देवता रुद्र।

"आ ते पितार्मरुतां सुम्नमेतु" (ऋग्वेद-मण्डल २। सूक्त ३३। मन्त्र १।)

इस मन्त्र का साराश है कि—"हे मरुद्गण के जनक रुद्र!" इससे यह प्रकट होता है कि रुद्र मरुतो के पूर्वज हैं। मरुत दिति की सन्तान है। इसलिये उनकी सज्ञा पहले दैत्य की थी। उनके ४९ कुल थे। सभी युद्धकर्त्ता और लडने मे बहादुर थे। पहले ये लोग देवो की श्रेणी मे नहीं थे। इसलिये इनको देवलोग यज्ञभाग भी नही देते थे। परन्तु पीछे इन्द्र ने इन लोगो को अपनी पार्टी म मिला लिया तब देवो की श्रेणी मे आ गये और यज्ञ-भाग भी पाने लगे।

अश्विनी कुमार

सूर्य-विष्णु के पुत्र तथा मनुर्वैवस्वत और यम के भाई अश्विनी कुमार थे। ये दो भाई जुड़वां उत्पन्न हुये थे। उत्तर कुरु की राजधानी 'वन' मे इनका जन्म हुआ

था अर्थात् ननिहाल में। ये दोनों भाई बहुत बड़े चिकित्सक तथा वीर देश थे। इनके विषय में यहाँ पर अधिक न लिखकर ऋग्वेद का ही कुछ अंश पाठकों के समक्ष रखा जाता है। इतना ही से उनके जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है।

१—अश्विनी कुमार दानी, दयालु तथा परोपकारी थे। राजा 'पेदु' के पास जो घोड़ा था, वह दुष्ट प्रकृति का था, इसलिये अश्विनी कुमारों ने उन 'पेदु' राजा को कल्याणकारी श्वेत अश्व प्रदान किया। वह घोड़ा सदा ही युद्धों में विजेता रहा (ऋ० वे० १।११।६)।

२—अश्विनी कुमारोंने 'अत्रि' (चन्द्रमा के पिता) को अन्धकार वाले पाप-स्थान (पीड़ादायक यन्त्रगृह) से परिवार सहित मुक्त किया (ऋग्वेद १।११७।३)।

३—अश्विनी कुमारों ने वृद्धच्यवन को युवा बनाया (ऋग्वेद १।११७।३)।

४—अश्विनी द्वय बहुत बड़े चिकित्सक थे। उन्होंने रोते हुये कण्व को देखने की शक्ति दी अर्थात् चक्षुवान बना दिया (ऋग्वेद १।११६।२४)।

५—राजा खेल की पत्नी का पैर युद्ध में कट गया था। अश्विनी कुमारों ने उसके चलने के लिये लोहे की जाँघ बना दी (ऋग्वेद १।११६।१५)।

६—अश्विनी कुमार शक्तिशाली और बहादुर थे। उन्होंने 'प्रटेरी' को भेड़िये के मुख से निकाला था (ऋग्वेद १।१२६।१४)।

७—ऋग्वेद के पहले मण्डल का ११६वाँ सूक्त (स्तोत्र) कक्षीवान् ऋषि ने अश्विनी कुमारों के लिये बनाया है।

८—अश्विनी कुमारों ने तीन रात और तीन दिन तक द्रुतगति से चलते हुये रथ द्वारा 'भुज्य' को समुद्र के पार सुरक्ष स्थान पर ले आये। निराधार समुद्र में पड़े 'भुज्य' को सौ चप्पेवाली नाव सहित पार पहुँचाया। यह कार्य अश्विनी कुमारों का अत्यन्त वीरतापूर्ण है (ऋग्वेद १।११६।४,५)।

इसी प्रकार अनेक ऋषियों ने अश्विनी कुमारों की ऋग्वेद में स्तुति की है।

और सबसे छोटे का नाम सूर्य-आदित्य-मित्र-विवस्वान-विष्णु आदि था। वरुण की पत्नी का नाम चर्षणी था। उससे भृगुजी का जन्म हुआ।[1] वरुण महाराज के तीन पुत्र थे। अंगिरा, नारद और भृगु। अंगिरा के पुत्र बृहस्पति थे। वही देव-गुरु के नाम से प्रसिद्ध हैं।

वरुण का राज्य

यद्यपि सूर्य-विवस्वान के पुत्र मनुवैवस्वत को भारतवर्ष का ४८वां उत्तराधिकारी बनाया गया था तथापि वरुण देव का राज्य पश्चिम एशिया से भारत तक था। उसका स्पष्ट प्रमाण ऋग्वेद के निम्नलिखित सूक्त में है—

ऋग्वेद मंडल १०। अनुवाक ६। सूक्त ७५।

(ऋषि—सिन्धुक्षित्प्रैमेधः। देवता नद्यः।)

"प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः।
प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा ॥१॥
प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद्वाजाँ अभ्यद्रवस्त्वम्।
भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि ॥२॥
दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना।
अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत् ॥३॥
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित्सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि ॥४॥
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥५॥
तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे ॥६॥
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि ज्रयांसि भरते रजांसि।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ॥७॥
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम् ॥८॥
सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ।
महान्ह्यस्य महिमा पनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः ॥९॥

1. भाग० ६।१८।४।

सूक्त का भावार्थ

हे जल ! उपासना करने वाले यजमान के घर में, मैं तुम्हारी श्रेष्ठ महिमा का बखान करता हूँ। सात-सात के रूप में नदियाँ तीन प्रकार से गमनशील हुईं। उनमें सिन्धु नाम की नदी अत्यन्त प्रभाववाली है ॥१॥ हे सिन्धु नदी, जब तुम हरे-भरे प्रदेश की ओर गमन करनेवाली हुई, उस समय वरुण ने तुम्हारे प्रवाहित होने के लिये मार्ग को विस्तीर्ण किया। तुम सब नदियों में श्रेष्ठ हो और पृथ्वी पर उत्कृष्ट मार्ग से गमन करती हो ॥२॥ सिन्धु नदी का निनाद पृथ्वी से उठकर आकाश को गुंजाता है। यह नदी अपनी प्रचण्ड लहरों और अत्यन्त वेग के साथ गमन करती है। जब यह बैल के समान घोर शब्द करती है, तब ऐसा लगता है जैसे गर्जनशील मेघ जल की वर्षा कर रहे हों ॥३॥ माता जैसे बालक के पास जाती है और पयस्विनी गौएँ अपने बछड़ों की ओर गमन करती है, वैसे ही प्रभावित होती हुई सब नदियाँ सिन्धु की ओर गमन करती हैं। जैसे युद्ध में प्रवृत्त राजा अपनी सेना को संग्राम भूमि में ले जाता है, वैसे ही तुम अपने साथ चलने वाली दो नदियों को आगे-आगे लेकर चलती हो ॥४॥ हे गंगा, यमुना, सरस्वती, शतद्रु, परुष्णी, असिक्नी, मरुद्वृधा, वितस्ता, सुषोमा आर्जीकीया आदि नदियों ! तुम मेरे स्तोत्र को अपने-अपने भाग में विभाजित कर मेरी याचना श्रवण करो ॥५॥ हे सिन्धु नदी ! तुम पहले तृष्टामा के संग चली। फिर सुसर्त्तु, रसा और श्वेत्या के साथ हुई। तुमने ही क्रमु और गोमती को कुभा और मेहत्नु से सुसंगत किया। तुम इन सब नदियों में मिलकर प्रवाहित होती हो ॥६॥ श्वेतवर्ण वाली सिन्धु नदी सरलता से गमन करने वाली है। उसका वेगवान् जल सब ओर पहुँचता है, क्योंकि सिन्धु नदी सबसे अधिक वेगवाली है। वह स्थूल नारी के समान दर्शनीय और अश्व के समान सुन्दर है ॥७॥ सिन्धु नदी सुन्दर, रथ, अश्व, वस्त्र, सुवर्ण, अन्नादि से सम्पन्न है। इसके प्रदेश में तृण भी उत्पन्न होते हैं। यह मधुरता के बढ़ाने वाले पुष्पों से ढकी हुई है ॥८॥ यह नदी कल्याणकारी अश्वों वाले रथ में योजित करती है। अपने उस रथ के द्वारा अन्न प्रदान करे। सिन्धु नदी के इस रथ की यज्ञ में प्रशंसा की जाती है। वह रथ कभी हिंसित न होनेवाला महान और यशस्वी है ॥९॥

स्पष्टीकरण

इस सूक्त में भारतीय नदियों की प्रार्थना की गई है। प्रधानतः सिन्धु नदी की। कश्मीर और सिन्ध के बीच में जितनी नदियाँ है, उन सभी का गुणगान है। गंगा-

यमुना की भी प्रशंसा है। उनकी प्रार्थना क्या की गई है, वह भी स्पष्ट है अर्थात् उन नदियों के द्वारा भारत में उपज अधिक होती है। उस उपज के द्वारा यहाँ की जनता सुखी रहती है। उस धन-धान्य से यहाँ की प्रजा और राजा दोनों ही लाभ उठाते हैं।

इस सूक्त (स्तोत्र) में स्पष्ट रूप से सिन्धु नदी की ही प्रशंसा की गई है परन्तु यथार्थ बात यह है कि इस सूक्त के द्वारा 'वरुण' का यहाँ का राजा प्रमाणित किया गया है। इस सूक्त के दूसरे मन्त्र की पहली पंक्ति में साफ कहा गया है कि—वरुण ने तुम्हारे प्रवाहित होने के लिये मार्ग का विस्तीर्ण किया।"

यहाँ पर स्पष्ट बात यह है कि वरुण देव ने अपने राज्य में कृषि कार्य की उन्नति के लिये सिन्धु नदी के पाट को चौड़ा किया। यह कार्य दूसरे के राज्य में वरुण देव ने नहीं किया होगा। यह निश्चित बात है। इससे प्रमाणित होता है कि सिन्ध से सरस्वती-कश्मीर तक उस समय वरुण का ही राज्य था। यह मानना पड़ेगा कि वरुण के पहले से यहाँ आर्यों का राज्य था। वरुण बहुत बड़े प्रभावशाली देव-आर्य राजा हुए, इसलिये अपने राज्य में भ्रमण कर प्रजाओं की परिस्थिति देखने लगे। प्रजाओं को सुखी-सम्पन्न करने का उपाय करने लगे। उसी सिलसिले में सिन्धु नदी के मार्ग को भी विस्तीर्ण करवाया। इस सूक्त से यह झलक मिलती है कि वरुण देव के समय गान्धार सिन्धव प्रदेश में उन लोगों का राज्य तो पहले से ही था, परन्तु प्रयाग-अयोध्या से कलकत्ते तक का प्रदेश अविकसित रूप में था, इसलिये वरुण देव के भतीजा और सूर्य के बेटा वैवस्वत मनु को भारत का ४८वाँ उत्तराधिकारी बनाकर इसी तरफ रखा गया और अयोध्या में राजधानी बनाई गई। इस सूक्त की दूसरी ऋचा की दूसरी पंक्ति में कहा है कि— "सब नदियों में श्रेष्ठ हो और पृथ्वी पर उत्कृष्ट मार्ग से गमन करती हो।" ऐसा इसलिये कहा गया कि सिन्धु नदी आर्य-राज्य-देश में बहने वाली थी। आर्य राज्य ही श्रेष्ठ था। यदि किसी दूसरे के राज्य में बहती तो उसे 'उत्कृष्ट' नहीं कहा जाता। इस सूक्त के अर्थ से स्पष्ट प्रमाणित है कि वरुणदेव के पहले से ही आर्यों का राज्य भारत में था। यह कहना कि वरुण के भतीजा मनुवैवस्वत भारत में आनेवाले प्रथम आर्य राजा थे—बिल्कुल ही कोरी कल्पना है। सत्य से दूर है। भारतीय आर्यों के प्रति अन्याय करना है। प्राचीन भारतीय इतिहास को भ्रामक बनाना है।

वरुण ही ब्रह्मा हुये

वरुण की शक्ति को समझने के लिये जल-प्रलय के विषय में जानना जरूरी है। इसके द्वारा पाठकों को यह समझ में आजायगा कि वरुण को ही ब्रह्मा क्यों कहा गया तथा उनके भी अनेक नाम क्यों पड़े।

आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व ईरान में विश्व विख्यात जल प्रलय हुआ था। उस जल प्रलय के कुछ काल पहले से ही भारतीय आर्यों का राज्य विस्तार वहाँ तक हो चुका था। चूंकि वहाँ तक भारतीय राज्य था, इसीलिये पुराणों में उसकी चर्चा यहाँ की गई। यदि भारतीय राज्यान्तर्गत वह घटना नहीं होती तो उसकी चर्चा भी यहाँ के ग्रन्थों में नहीं रहती। उस समय ३६वें प्रजापति चाक्षुष मनु के पुत्रों का राज्य वहाँ तक था। चाक्षुष-पुत्र अभिमन्यु-मन्यु के राज्य में प्रलय हुआ था। मन्यु को ही ग्रीक में अमनन तथा मेमनन कहा गया है। कुरान तथा बायबिल में उसी जलप्रलय को 'नूह' का सैलाब कहा गया है। उस प्रलय में मन्यु का समूचा राज्य जलमग्न हो गया था। केवल उनकी राजधानी मन्युपुरी-सुषा बहुत ऊँचे पहाड़ पर होने के कारण बची हुई थी। ईरान का बहुत-सा स्थल अथाह जल में डूब गया। गाछ-वृक्ष सभी जल में लापता हो गये। मानव तथा पशु-पक्षी भी सदा के लिये विनष्ट हो गये। मन्यु महाराज मत्स्य[1]राज की नौका के द्वारा किसी तरह सपरिवार प्राण बचाकर वहाँ से पलायन हुये। जिस स्थान में पुन. आश्रय ग्रहण किया, उस स्थान का नाम आर्यवीर्यान (Aryanem vaijo) पड़ा। आजकल उसी स्थान को अजरबैजान कहते हैं जो ईरान और रूस के सीमान्त प्रदेश में है।

जल प्रलय का कारण

जैसे यहाँ बरसात के दिनों में किसी साल भयंकर बाढ आ जाया करती है, उसी तरह एक भयंकर ज्वालामुखी का विस्फोट होने के कारण वहाँ भी भयंकर बाढ आ गई थी। उस समय के डूबे हुये ईरान के कुछ अंश अभीतक समुद्र में ही हैं।

---

१ कथावाचक पंडितों द्वारा मत्स्य का अर्थ मछली किया जाता है। यह तथ्य नहीं है। उस समय वहाँ मेडागास्कर में मत्स्य जाति के लोग रहते थे, जो नाविक थे। उन लोगों का भी राज्य था (पर्शिया का इतिहास)।

मृत्यु सागर (Dead sea)

चूंकि वहाँ के मानव, पशु-पक्षी, जीवजन्तु इत्यादि सदा के लिये विनष्ट हो गये और सदा के लिये वहाँ अगाध जल भर गया, इसलिये उसी समय से उसका नाम मृत्यु सागर (Dead Sea) तथा मृत्यु लोक पड़ गया।

मृत्युलोक

आर्मेनोभेनिया में आर्यों की वंश वृद्धि तथा राज्य विस्तार भी पुनः होने लगा। इधर भारत-पंजाब-कश्मीर में जो लोग थे, उनसे तो सम्बन्ध था ही।

चाक्षुष मनु की १०वीं पीढ़ी में (स्वायम्भुव मनु वंश की ४५वीं) प्रजापति दक्ष हुये। उन्हीं की पुत्रियों से दैत्य-दानव-असुर तथा आदित्य-देवकुल चला। देवकुल में सबसे बड़े वरुण थे। उनको यम को वहाँ का राजा बनाना जरूरी हो गया था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये वरुण ने मृत्यु सागर की तरफ यात्रा की। वहाँ जाने पर अपनी पैतृक भूमि का उद्धार करने के लिये दृढ़प्रतिज्ञ हो गये। अनेक नहरें खुदवा कर वरुण ने उस एकत्रित जल को समुद्र में गिरवा दिया। उसके बाद मन्युपुरी-सुषा की सफाई करवाई गई। वरुण की आज्ञा पाकर समुद्र भी अधिकार में आ गया। वरुण ने समुद्र से कहा—"ऐ जल तुम दो हिस्से में बँट जा।" उनकी आज्ञा का पालन समुद्र ने कर दिया। तभी से वरुण जल देवता तथा नारायण[1] कहलाने लगे।

वरुण ने 'सुषा[2]' में सूर्य-पुत्र यम की राजगद्दी बना दी। तभी से मृत्यु लोक के राजा यम हो गये, अर्थात् 'यमराज' कहलाने लगे। वहीं से निकट ही वरुण ने वैकुण्ठ में अपनी राजधानी बनाई। उसी समय से वरुण का नाम अनेक हो गया जैसे—कर्तार, लार्डक्रीयेटर (Lord creator), ब्रह्मा, इलोहिम, एलाही, और रब इत्यादि।[3] टाडराजस्थान के अनुसार उस समय तीन राज्य स्थापित हुये यथा—

"The Egyptian, Chinese and Assyrian monarchies are generally stated to have been established about 150

1. संस्कृत में 'नारा' कहते हैं जल को और अयन' कहते हैं घर को। इसलिये नारायण शब्द का अर्थ हुआ—जिसका जल में ही घर अर्थात् निवास हो।
2. "सुषा नाम पुरी रम्या वरुणस्यापि धीमतः" (मत्स्य पुराण)। सुषा नगरी की खुदाई हो गई है। वहाँ की चीजें ८००० वर्ष पुरानी कही जाती हैं।
3. देखिये—जेनेसिस और टरनर का इतिहास।

year after the great event of the flood. Egyptians under 'Misrain.' 2188 B C., Assyrian in 2059 B. C. and chinese in 2207 B. C."

Mosaic Narrative, टर्नर के इतिहास तथा जेनेसिस मे इनके सम्बन्ध की अनेक महत्वपूर्ण बातें है ।

देव और असुरो तथा इन्द्रादि का वृत्तान्त पढ़ने से पता चलता है कि वरुण समन्वयवादी विचारधारा के थे । सूर्य की प्रकृति इसके विपरीत थी ।

ब्रह्मा की स्तुति

ऋग्वेद मे अनेक देवताओ की स्तुति है परन्तु ब्रह्मा के लिये किसी ने कलम नही उठाई । वरुण, सूर्य के लिये तो अनेक सूक्त है । इससे जान पडता है कि 'आदि ब्रह्मा' स्वायम्भुवमनु मे भी लाखो वर्ष पहले हो चुके है । देवकाल मे वरुण को ही लोगो ने ब्रह्मा कहा परन्तु ऋषियो ने उनको ब्रह्मा नही कहा । ऋग्वेद मे तो अनेक देवो की स्तुति है किन्तु ब्रह्मा की नही ।
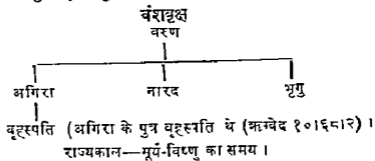
वरुण के पुत्र

अंगिरा—वरुण के पुत्र अंगिरा थे । अंगिरा के पुत्र बृहस्पति थे (ऋ० वे० १०।६८।२) ।

बृहस्पति—यह बहुत बडे विद्वान थे । राजपाट के झंझट से दूर ही रहना चाहते थे । इसलिये उन्होने गुरु-पुरोहित का कार्य करना आरम्भ किया । बृहस्पति की पत्नी का नाम 'जुहू' था, जिसको इन्होने छोड दिया था (ऋ०वे० १०।१०९।१)। बृहस्पति ऋग्वेद के अनेक मन्त्रो के रचयिता हैं (ऋ० वे० १०।६८।१२) । पणियो का वध करके बृहस्पति ने गौओ को प्राप्त किया (ऋ० वे० १०।६८।६) । बृहस्पति प्रथम पदार्थ का नामकरण करते है (ऋ० वे० १०।७१।१) । बृहस्पति ने ऋग्वेद के कई सूक्तो की रचना की, इसीलिये वेदर्षि कहे जाते हैं । पहले यह

देवगुरु थे। पीछे दैत्यों के भी याजक बन गये। इनकी एक पत्नी 'तारा' नाम की अति सुन्दरी थी। उसको चन्द्रमा से गुप्त प्रेम हो गया था। वह चन्द्रमा के साथ भाग गई थी। कुछ दिनों तक चन्द्रमा के साथ रहने पर विवाद बढ़ने लगा। अन्त में पंचायत द्वारा पुन बृहस्पति को वापस मिली। उस समय तारा गर्भवती थी। उस गर्भ के शिशु के लिये तकरार बढ़ा। अन्त में महादेव द्वारा यह निर्णय हुआ कि गर्भ का बच्चा चन्द्रमा को मिलेगा। बृहस्पति के घर तारा से उस गर्भ से जो बच्चा पैदा हुआ, वह चन्द्रमा को मिला और उसका नाम बुध पड़ा। वही बुध भारत के चन्द्रवंशी राजाओं का मूल पुरुष हुआ।

नारद—नारद जी को कौन नहीं जानता। इनको भी राजपाट से कोई सरोकार नहीं था। यह बिना परिश्रम के सुखमय जीवन व्यतीत करना चाहते थे। यह विद्वान तो थे ही, इसके अतिरिक्त चलता पुर्जा भी बहुत अधिक थे। उस समय इन्द्र अपनी प्रशंसा के लिये परेशान रहा करते थे, इसलिये नारद को वे एक अच्छे यजमान मिल गये। नारद इन्द्र की प्रशंसा में ऋग्वेद के सूक्तों की रचना करने लगे और इन्द्र से खूब धन दौलत तथा स्वागत-सत्कार पाने लगे। इस तरह सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे। वशिष्ठ के विरुद्ध इन्होंने वामविधि चलाई, इसलिये नारद वामदेव के नाम से प्रसिद्ध हुये। ऋग्वेद के चौथे मण्डल में ५८ सूक्त हैं। वे प्राय सभी सूक्त वामदेव (नारद) के हैं।

भृगु

वरुण-ब्रह्मा, सूर्य-विष्णु के काल में ही भृगु भी उत्पन्न हुये थे। पुराणों के अनुसार यह ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं। मानस पुत्र या औरस पुत्र किसके हैं, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। परन्तु देवों के निकट सम्बन्धी या परिवार-परिजन जरूर थे। प्राचीन ईरान का इतिहास देखने से मालूम होता है कि भृगु का स्थान एशिया माइनर में ही था। वहाँ पर एक टेबुल लैण्ड (Table land) है, जो बहुत ऊँचे स्थान पर है। उसी को भृगु (Brygy) कहते हैं।

भृगु की पत्नियाँ दो थीं। पहले उन्होंने दैत्यपति हिरण्यकशिपु की पुत्री दिव्या का पाणिग्रहण किया। कुछ समय बाद पुन दानव राज पुलोमन की पुत्री पौलोमी का भी पाणिग्रहण किया।

दिव्या से भृगु के शुक्र-काव्य-कवि-उशना नामक प्रसिद्ध पुत्र हुआ। वही शुक्र दैत्य-दानव कुल का याजक हुआ। किसी किसी का कहना है कि इसी शुक्र के पुत्र 'अत्रि' हुये जो चन्द्रमा के पिता थे। अत्रि उनके पुत्र हों या नहीं, परन्तु त्वष्टा उनके पुत्र जरूर थे जो प्रसिद्ध शिल्पी हुये। देवों में उनका नाम विश्वकर्मा और

दैत्यों मे 'मय' प्रसिद्ध हुआ। पौलोमी की सन्तानो मे च्यवन, ऋचीक, जमदग्नि और परशुराम आदि प्रसिद्ध पुरुष हुये। श्रीमद्भागवत (६।१८।४) मे लिखा है कि वरुण की पत्नी का नाम चर्षणी था, जिससे भृगु जी का जन्म हुआ।

त्वष्टा देव और ऋग्वेद

ऋग्वेद मे त्वष्टा देव की प्रशंसा बहुत है, उन्ही मे से कुछ अंश पाठकों के अवलोकनार्थ यहाँ दिये जाते है—

—त्वष्टादेव श्रेष्ठपात्र बनाते हैं (ऋ० वे० १०।५३।९)।

—इन्द्र का लौह वज्र त्वष्टा ने ही बनाया था (ऋ० वे० १०।४८।३)।

—ऋषि उशना की सहायता इन्द्र ने की थी (ऋ० वे० १०।४९।३)।

—भृगुओं द्वारा रथ बनाया जाता था (ऋग्वेद १०।३९।१०)।

—त्वष्टा की पुत्रि सरण्यू थी। उसका विवाह सूर्यदेव से हुआ था। यम की माता सरण्यू थी। पाणिग्रहण के समय सरण्यू छिप गई थी। सरण्यू ने अश्विद्वय को उत्पन्न किया। यम और यमी सरण्यू की जुडवाँ सन्तान हैं। (ऋ०वे० १०।१७।१,२,३)।

—वायु त्वष्टा के जामाता हैं (ऋग्वेद ८।२६।२२)।

—वायु भी देवताओं मे प्रमुख थे (ऋग्वेद ८।२६।२५)।

—त्वष्टा ने इन्द्र के लिये सौगांठ और सहस्र धारवाले वज्र को बनाया था (ऋग्वेद ६।१७।१०)।

—त्वष्टा ने शब्दधारी वज्र को पैदा किया (ऋग्वेद १।३२।२)।

—त्वष्टा ने इन्द्र के लिये शब्द युक्त वज्र बनाया (ऋ०वे० १।६१।१)।

त्वष्टा और उत्तर कुरु

त्वष्टा देव उत्तर कुरु के राजा थे।

उत्तर कुरु—आरमीनिया प्रदेश के नीचे का भूभाग वरुण-विष्णु-भृगु के समय मे उत्तर कुरु के नाम से विख्यात था। आज कल उसी का नाम कुर्दिस्तान है।

उस समय मे उत्तर कुरु के अधीश्वर भृगुवंशीय त्वष्टा-विश्वकर्मा सूर्य के श्वसुर थे। वहीं पर सूर्य के जुडवाँ पुत्र अश्विनी कुमारों का जन्म हुआ था।

उत्तर कुरु के विषय मे मिस्टर टाड क्या कहते हैं सो देखिये—"Uttarcuras of the Greek Historians, modern Kurdisthan....."

भृगुवंश

भृगु के वंशधर भार्गव कहलाते है। च्यवन भृगु कहे जाते है। (महाभारत iii,५१,२६८५)। भृगु पुत्र भी भृगु कहे जाते हैं (मोनियरविलियमकृत 'राम' का इन्डेक्स)।

ऋचीक भी भृगु कहे जाते हैं (वायु पुराण ६५,९३; ९९,९३ । ब्रह्माण्ड iii,६६,५७)। भृगु पुत्र भी भृगु कहे जाते है (महाभारत xiii, ५६, २९१०। वायुपुराण ९१,६७-८, ७१ आदि) ऋचीक के पौत्र रामजमदग्नेय भी भृगु कहे जाते हैं। (महाभारत vii, ७०,२४३५)।

भार्गवों का वंश वर्णन इस प्रकार है :—

वायु पुराण ६५,७२-९६ । ब्रह्माण्ड iii,१,७३,१०० । मत्स्य, १९५,११-४६ । पहले दो मे वर्णन अधिकतर अच्छे हैं। तीसरे में केवल नाम और गोत्र है। महाभारत में भी संक्षिप्त वर्णन है (i, ५-९, ६६, २६०५—१३ और xiii, ८५, ४१८५-६ सारांश)।

दैत्यपति हिरण्यकशिपु की पुत्री दिव्या तथा दानवराज पुलोमन की पुत्री पौलोमी से भृगु ने विवाह किया था (मत्स्य पुराण)। दिव्या से १२ भृगु भगवान पैदा हुये (वायु पुराण, ६४, ४ । ब्रह्माण्ड ii, ३८-४)।

भृगु का वंशवृक्ष

(वायु पुराण, ६५।९०।९१, ६५।७२।९४, ७०।२६)

भृगु

- दिव्या—पहली पत्नी
  - शुक्र[1]-काव्य-उशान-उशना-कवि
    - त्वष्टा, वरत्री, शण्ड, मर्क
      - त्वष्टा: (१) त्रिशिरा (२) (विश्वरूप-विश्वकर्मा-मय)
      - त्रिशिरा भी दैत्य गुरु थे।
- पौलोमी (दूसरी पत्नी)
  - च्यवन = च्यवन + सुकन्या (पत्नी) मनुपुत्र शर्याति की पुत्री सुकन्या।
    - पुत्री-सुमेधा (पति-विष्णुव)
    - आप्तवान + रुचि (नहुष पुत्री)
      - उर्व[2]-और्व
        - ऋचीक
          - जमदग्नि
            - परशुराम
      - दधीचि
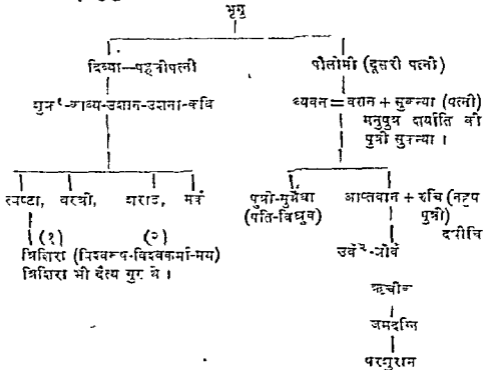
१. दिव्या से बारह भृगु भगवान पैदा हुये। (वायु ६४।४। ब्रह्माण्ड ii. ३८, ४) परन्तु

शुक्र का ही नाम काव्य-कवि-उशान-उशना आदि था। पहले दैत्य गुरु थे। पीछे देवों के भी आचार्य हो गये (महाभारत, 1, ६६, २६०७)।

च्यवन का विवाह मनुपुत्र शर्याति की पुत्री सुकन्या से हुआ था।

पौराणिक कथा है कि शुक्र की पत्नी दिव्या को किसी कारणवश सूर्य-विष्णु ने मरवा डाला था। इसलिए क्रोधावेश मे आकर शुक्र ने सूर्य-विष्णु को लात मारी थी। और इस कारण दैत्य भी नाराज हो गये थे। क्योंकि उनकी पुत्री मारी गई थी।

शुक्राचार्य—काव्य-शुक्र-उशना को ही शुक्राचार्य कहते हैं। इनका मूलस्थान एशिया माइनर मे गुरुद्वारम (Gordium) था। (Siwas in Asia Minor' Gordium पर्शिया का इतिहास जिल्द ७।५५) यह दैत्य-दानव के याजक थे—"बृहस्पति देवानां पुरोहित आसीत् उशना काव्योऽसुराणाम् ।" (जैमिनीय ब्राह्मण १—१२५) (ताण्ड्य ब्राह्मण ७।५।२०)।

देव-दैत्य-प्रदेश—भारतवर्ष के उत्तर पूर्व मे हिमालय मे देव प्रदेश (स्वर्ग लोक) था। उत्तर-पश्चिम मे दैत्य प्रदेश था। यह उत्तर-पश्चिम का भाग ही उस समय इलावर्त्त कहलाता था। आधुनिक दृष्टि मे गिल्गित के समीप का देश एशियायी रुस का दक्षिण-पश्चिम भाग और ईरान का पूर्वी भाग इलावर्त्त के अंग थे। इन देशो मे दक्ष-पुत्री और कश्यप पत्नी दिति और दनु की सन्तानें रहती थी। और देव प्रदेश मे अदिति की सन्ताने बस रही थी। उनकी संज्ञा देव थी। इसी इलावर्त्त के बटवारे के लिये दैत्य दानव और देवों मे बारह देवासुर संग्राम हुये (वा०रा० उ० भाष्यम्)।

आरम्भिक काल से दैत्य-दानवो के गुरु शुक्राचार्य थे। यह बात पाठक पहले ही पढ चुके हैं। शिष्यो की सहायता गुरु को करना ही चाहिये। इसके अतिरिक्त दैत्य-दानवो की बेटी से उनका विवाह भी हुआ था। इसलिये वे लोग इनके सम्बन्धी भी थे। इस कारण से भी उन लोगो की सहायता करना इनके लिये

यथार्थतः भृगु के दो ही पुत्र मालूम होते हैं। शुक्र काव्य-उशान-उशना और च्यवन। गुरु पुरोहित कुलों के संस्थापक शुक्र हुये। शुक्र स्वयं दैत्यों, सर्यदेव और च्यवन के गुरु थे। ऋचीक को पुराणों के अनुसार १०० पुत्र था, जिनमें सबसे बड़े का नाम जमदग्नि था। जमदग्नि के चार पुत्र थे, जिनमें सबसे बड़े का नाम राम या परशुराम था। (पुराण)

२ उर्व-और्व के नाम पर 'अरब' देश नाम पड़ा। उनके रहने का स्थान यहीं था।

आवश्यक था। देव लोग भी इनके अपने ही आदमी थे, परन्तु विशेष घनिष्टता दैत्य-दानवों से ही थी। दैत्य-दानवों और देवों में बराबर राज्य के लिये विवाद उठा करते थे। उनमें दैत्य-दानवों की ही सहायता शुक्राचार्य किया करते थे। ये बड़े ही नीति निपुण व्यक्ति थे। इसलिये दैत्य-दानव बाजी मार लिया करते थे।

विश्व में सब से प्रथम शुक्र ने ही 'औशनस' नामक अर्थशास्त्र की रचना की थी। यह संसार का पहला राजनीतिक ग्रन्थ था।

मौर्य महामन्त्री चाणक्य ने अपने अर्थ शास्त्र के ग्रन्थ के व्यवहाराध्याय में 'औशनस' की चर्चा की है। इसके अतिरिक्त द्रोण, भारद्वाज, कौणपन्त आदि अर्थ-शास्त्रों का भी मूलाधार यह औशनस अर्थशास्त्र ही है। व्यास जी ने भी महाभारत में औशनस शास्त्र को उद्धृत किया है। काव्य-शुक्र-उशना के धर्म शास्त्र और धनुर्वेद के वचन अब भी यत्र-तत्र उद्धृत रूप में मिलते हैं। इस अर्थशास्त्र से असुरों को देवासुर संग्रामों में विशेष सहायता मिला करती थी। (व०र०उ०भा०)

पाठकों को यह मालूम है कि पौलोमी शुक्र की विमाता थी। शुक्र की मौसी अर्थात् विमाता की बहन का नाम 'शची' था। जिसका पाणिग्रहण देवराट् इन्द्र ने किया था। इन्द्र की पुत्री का नाम 'जयन्ती' था। जयन्ती का विवाह शुक्र-काव्य-उसना के साथ हुआ था। दैत्य गुरु शुक्राचार्य को अपने पक्ष में करने के लिये इन्द्र महाराज ने ये चाल चली थी। (बौधायन श्रौत सूत्र १८।४६)। परन्तु शुक्र ने दैत्यों से सम्बन्ध विच्छेद कर विग्रह करना उचित नहीं समझा। तथा पौरोहित्य को छोड़ना भी लाभप्रद नहीं समझा। इसलिये देवराट् इन्द्र ने अपनी पुत्री जयन्ती को पुनः अपने अधिकार में करके पर उसका विवाह ऋषभ से कर दिया।

दैत्य-दानवों और देवों के बीच बहुत दिनों तक देवासुर संग्राम चलते ही रहे। कभी देव जीत जाते और कभी असुर। अन्त में आज के राष्ट्रसंघ की तरह का शान्ति-स्थापन के लिये वरुण ब्रह्मा ने एक आयोजन किया। उस आयोजन का उद्देश्य यही था कि अब शान्ति-स्थापित होना चाहिये। उस सभा में सूर्य-विष्णु ने यह वचन दिया कि अब इस पृथ्वी पर दैत्य-दानवों का रक्त नहीं गिरेगा। परन्तु सूर्य-विष्णु के ही षडयन्त्र से प्रेरित होकर इन्द्र और वरुण ने बलि को यज्ञ विधि में फँसाकर उसका सारा राज्य हड़प लिया। तथा बलि को बन्दी बनाकर नागों के राज्य में भेज दिया। शुक्र ने देवों के इस अन्याय का घोर विरोध किया। परन्तु देव अपने स्वार्थ साधन से जरा भी विचलित नहीं हुये। इसलिये शुक्र वहाँ से

असन्तुष्ट होकर अरब मे (और्व देश) चले गये (शुक्र प्रसग मत्स्यपुराण) यहाँ उनके पौत्र उर्व रहते थे। शुक्र के चले जाने पर दैत्यों के भी गुरु बृहस्पति बन बैठे।

दस वर्ष तक शुक्र अरब मे ही रहे। उसके बाद पुन दैत्यलोक (राज्य) म लौट गये। (ब० र० उ० भा०)

शुक्र के पौत्र उर्व-और्व के नाम पर 'अरब' नाम पडा। ऐसा जान पडता है।

इन्द्र

स्वारोचिष मन्वन्तर काल मे 'पारावत विपश्चित[1]', उत्तम मन्वन्तर काल म 'सुशान्ति[2]', तामस मन्वन्तर काल मे 'शिवि[3]', रैवत मन्वन्तर काल म 'विभु[4]' और चाक्षुष मन्वन्तर काल मे 'मनोज[5]' नामक इन्द्र थे।

इन बातो पर प्रकाश डालने से यह स्पष्ट विदित होता है कि शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिये तीन व्यक्तियो का होना आवश्यक था। पहले मनु दूसरे प्रजापति और तीसरे इन्द्र। मनु, अखिल भारतीय काग्रेस का नेता महात्मा गाधी को समझना चाहिये। प्रजापति, प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल या राष्ट्रपति को मान लीजिये। तीसरे प्रधान सेनापति को इन्द्र समझिये।

देव और असुरों के आरम्भिक शासनकाल मे इन्द्र का पद रिक्त था। क्योंकि 'मनोज' नामक इन्द्र मर चुके थे। उनका प्रभाव भी समाप्त हो गया था। देव और दैत्य-दानव-असुर आदि सौतेले भाइयो मे राज्य के लिये सदा विग्रह छिडा रहता था। वरुण की जवानी ढल रही थी। सूर्य अभी पूर्ण बलवान थे। उसी काल में एक अति बलवान नवयुवक ने अपने को 'इन्द्र' घोषित कर दिया।

जिस नवयुवक ने अपने को इन्द्र घोषित किया, उसका निवास स्थान कश्यप सागर तट पर, देव-दैत्यो के आसपास ही एक छोटी सी बस्ती मे था। उस बस्ती के ग्रामपति (मुखिया) का नाम कौशिक कश्यप था। पाठको को यह स्मरण रखना चाहिये कि यह कश्यप-मरीचि प्रजापति का पुत्र नहीं वरन् एक अन्य व्यक्ति था।

इन्द्र का जन्म

ग्रामपति कौशिक को एक अविवाहित कन्या से गुप्त प्रेम हो गया था। जब वह गर्भवती हो गई, तब उसने कौशिक को विवाह करने के लिये कहा। इस

---

१. वि० पु० ३।१।१०। २. वही—३।१।१३। ३ वही—३।१।१७। वही—३।१।२०। ५ वही—३ १।२६।

बात पर वह सहमत नहीं हुआ । बल्कि बस्ती से बाहर निकाल दिया । बाहर ही एक गोशाला में उस गर्भवती ने प्रसव किया । एक बालक का जन्म हुआ । गर्भवती कन्या का नाम अदिति था । जब अदिति पुत्र वयस्क हुआ तब अपने जन्म-रहस्य को समझ कर अपने पिता कश्यप का टाँग पकड़ कर मार डाला । उस मुखिया के मारे जाने पर उस लड़के से ग्राम के लोग भयभीत हो गये । उसी समय उसने अपने को इन्द्र घोषित कर दिया । धीरे-धीरे आस-पास के ग्रामों के लोग भी उसी को अपना इन्द्र (नेता) मानने लगे । जब इधर प्रभाव जम गया तब असुरों को भी मिलाने लगा । उधर देवों पर भी अपना रंग जमाने लगा । यहाँ तक कि एक बार सूर्य के रथ को ही रोक लिया था । ये सब घटनायें वरुण से भी छिपी नहीं रहीं । वरुण बुद्धिमान और समन्वयवादी विचारक थे । इसलिये इन्द्र को अपने पक्ष में मिला लेना ही उन्होंने श्रेयस्कर समझा । हुआ भी ऐसा ही ।

जिस परिषद में देवों का इन्द्र से मेल-मिलाप हुआ—उसी परिषद में यह तै हो गया कि 'इन्द्र' देवराट होंगे । तभी से 'देवराट इन्द्र' के नाम से प्रसिद्ध हो गये ।

ऋग्वेद के निम्नलिखित सूक्तों द्वारा इन्द्र के जन्म पर प्रकाश पड़ता है—

१—"इन्द्र अपनी मङ्गलमयी माता अदिति की कोख से उत्पन्न हुये हैं" (ऋ० वे० १०।१३४।५) । २—इन्द्र अदिति के पुत्र हैं (ऋ० वे० १०।१०१।१२) ।

३—"लोगों का कथन है कि इन्द्र आदित्य से प्रगट हुये हैं । परन्तु वे बल से उत्पन्न हुये हैं । ऐसा मैं जानता हूँ । यह इन्द्र उत्पन्न होते ही शत्रुओं की अट्टालिकाओं की ओर दौड़े । वे किस प्रकार उत्पन्न हुये, इसे उनके सिवाय और कोई नहीं जानता" (ऋ० वे० १०।७३।१०) ।

४—"उशना के समान स्तोत्र करने वाले ऋषि इस मन्त्र के रचयिता हैं । वे इन्द्र की उत्पत्ति के ज्ञाता हैं" (ऋ० वे० ६।९७।७) ।

५—"उत्पन्न होते ही अनेक कर्म वाले इन्द्र ने अपनी माता से पूछा कि "कौन प्रसिद्ध और पराक्रमी हैं ?" माता ने उत्तर दिया कि "ऊर्णनाभ, अहिशुव आदि कितने ही हैं, उन्हें पार लगाना चाहिये" (ऋ० वे० ८।७७।१,२) ।

६—"कश्यप ने इन्द्र को संग्राम के निमित्त प्रकट किया । वे इन्द्र मनुष्यों के स्वामी और सेनानायक हैं (ऋ० वे० ७।२०।५) ।

७—"हे इन्द्र ! तुम्हारा कौन-सा शत्रु पैरों को पकड़कर तुम्हारे पिता की हत्या कर, तुम्हारी माता को विधवा बना सकता है ? तुमको सोते या चलने में

कौन मार सकता है ?" (ऋग्वेद ४।१८।१२)। इस सूक्त के रचयिता हैं ऋषि वामदेव (नारद)।

"कस्ते मातर विधवामचक्रच्छयुं कस्त्वामजिघांसच्चरन्तम्।
कस्ते देवो अधि मार्डीक आसीद्यत्प्राक्षिणाः पितरं पादगृह्य ॥(ऋग्वेद ४।१८।१२)

इस स्तोत्र के द्वारा नारद जी स्पष्ट कहते हैं कि 'हे इन्द्र ! तुम्हारे पिता की टांग पकड़ कर मारने वाला ऐसा कौन बलवान शत्रु है ?' अर्थात कोई नहीं। "तुम्हारी माता को विधवा बनाने वाला ऐसा बहादुर कौन है ?' इसका साराश है कि तुमने ही मारा है। ऐसे ही जन्म सम्बन्धी सूक्तों में व्याज-स्तुति ही मालूम होती है।

ऋग्वेद में इन्द्र की प्रशंसा

इन्द्र परम प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ थे। 'देवराट' होने पर उन्होंने सर्वप्रथम वामदेव-नारद को अपने पक्ष में किया। इसका कारण यह था कि नारद एक मुक्खड़ ऋषि थे। जो कोई स्वागत-सत्कार करता, उसकी प्रशंसा करने लगते। इन्द्र ने उनका यथेष्ट पुरस्कार दिया। अत वामदेव ने इन्द्र की प्रशंसा में अनेक सूक्तों की रचनायें कर डाली। यहां तक कि वामविधि प्रचलित हो गई। उसके बाद वशिष्ठ आदि अन्यान्य ऋषि भी इन्द्र की स्तुति (सूक्त) ऋग्वेद में बनाने लगे और मुंहमांगा पुरस्कार पाने लगे। इस प्रकार इन्द्र की प्रशंसा का डंका चारों तरफ बजने लगा। परन्तु ईरानवासी इनको जालिम समझते थे। अत वे प्रसन्न भी नहीं रहते थे। वे लोग इनको इन्द्र दोगस कहा करते थे।

इन्द्र-पद

प्रधान सेनापति का जैसा पद होता है, वैसे ही इन्द्र का भी एक पद था। प्रजापति काल में हर मन्वन्तर में एक इन्द्र भी होता गया है। वैसे ही देव असुर काल में भी एक व्यक्ति स्वयं अपने प्रभाव से इन्द्र के पद पर बैठ गया। यह व्यक्ति पहले के सभी इन्द्रों से अधिक प्रभावशाली हो गया। यहां तक कि स्वयं सम्राट भी बन गया। देव असुर काल में इन्द्र ने अपने को सम्राट घोषित किया। इसीलिये देवराट इन्द्र कहलाया। दैत्य दानव असुर आदि इन्द्र को अपना सम्राट नहीं मानते थे। पहले से जैसे प्रजापतियों की राजगद्दी चली आ रही थी और प्राय ज्येष्ठ पुत्र ही उत्तराधिकारी प्रजापति हुआ करता था, वैसे ही इस इन्द्र ने अपनी राजगद्दी स्थापित कर ली।

इन्द्र की आयु

ऋग्वेद से स्पष्ट मालूम होता है कि सतयुग काल में भी सौ वर्ष ही जीवित रहने के लिये ऋषि लोग प्रार्थना किया करते थे। वैसी हालत में एक इस इन्द्र का हजारों वर्ष जीवित रहना कभी भी सम्भव नहीं माना जा सकता। राम के पिता दशरथ के समय तक इन्द्र की चर्चा ऋग्वेद में है। पुराणों से जान पड़ता है कि सूर्य के समय से राम के समय तक इन्द्र की राजगद्दी रही परन्तु एक ही इन्द्र, इतने दिनों तक जीवित नहीं रहा। राजा ययाति को भी इन्द्र का पद मिला था, परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद ऋषियों ने उनको अयोग्य कह कर पुनः हटा दिया।

इन्द्र-दरबार

इन्द्र के ही समय से राजदरबार का आरम्भ कहा जा सकता है। उसी ने सर्वप्रथम अपना राजदरबार लगाना आरम्भ किया। उसके दरबार में वेदर्षि और याजक लोग एकत्र हुआ करते थे। इन्द्र-दरबार में नारद (वामदेव) की विशेष प्रधानता थी। उसके दरबार में अप्सरायें भी आती थीं। उर्वशी (उरबसी) अप्सरा भी इन्द्र-दरबार की एक प्रधान कलाकार थी। वह 'उर' नगरी की ही रहनेवाली थी। 'उर' में ही इन्द्र की राजधानी भी थी। जलप्रलय के समय उर नगरी विनष्ट होने से बच गई थी। इन्द्र-दरबार में उसके प्रशसकों की प्रधानता सदा बनी रही।

ऋग्वेद और इन्द्र

ऋग्वेद के अधिकाश सूक्त इन्द्र की प्रशसा में ही बनाये गये हैं। उस प्रशसा के दरम्यान कुछ ज्ञान-विज्ञान की बातें भी हैं। इन्द्र सम्बन्धी ऋग्वेद के कुछ अश यहाँ दिये जाते है, जो इस प्रकार है —

१—"एतश ऋषि की रक्षा के लिये इन्द्र ने युद्ध में सूर्य पर भी आक्रमण किया था (ऋ० वे० ४।३०।६)।"

२—"कौलितर के पुत्र शम्बर नामक असुर को पर्वत से नीचे गिराकर इन्द्र ने मार डाला (ऋ० वे० ४।३०।१४)।"

३—शचिपति इन्द्र ने ययाति के शाप से च्युत राजा यदु और तुर्वसु को संकट से पार किया (ऋ० वे० ४।३०।१७)।"

४—"इन्द्र ने तत्क्षण 'सरयू' के पार रहने वाले 'ऊर्ण' और 'चित्ररथ' नामक राजा का संहार किया (ऋ० वे० ४।३०।१८)।"

इस सूक्त मे सरयू नदी के पार की चर्चा है। यहाँ पर इन्द्र ने युद्ध भी किया। इससे प्रमाणित होता है कि सरयू नदी तक इन्द्र का प्रबल प्रभाव था।

५—"इन्द्र ने दिवोदास को शम्बर के पाषाण से बने सौ नगर दिये (ऋ० वे० ४।३०।२०)।"

६—"एतश ऋषि के साथ सूर्य का युद्ध हुआ था। उसमे इन्द्र ने सूर्य के रथ को रोक दिया था (ऋग्वेद ५।३१।११)।"

७— इन्द्र ने शम्बर के निन्यानबे पुरो को ध्वस्त किया। सौवें पुर को अपने निवास के लिये रखा। वृत्र और नमुचि को मार दिया (ऋ० वे० ७।१९।५)।"

८—'कुत्स की रक्षा इन्द्र ने की। पुरुकुत्स-पुत्र त्रसदस्यु है(ऋ०वे० ७।१९।३)।"

९—"भृगु कुलोत्पन्न नेम ऋषि कहते हैं कि 'इन्द्र किसी का नाम नहीं है, इन्द्र को किसी ने भी नही देखा, फिर हम किसका स्तव करें?"(ऋग्वेद ८।१००।३) इस सूक्त के द्वारा वर्तमान इन्द्र के जन्म के प्रति सदेहजनक संकेत है। नेम ऋषि का मतलब है कि यह इन्द्र तो जन्म से इन्द्र नहीं है। पीछे अपने बल से बन गया है।

१०—"इन्द्र अदिति के पुत्र है (ऋ० वे० १०।१०१।१२)" पाठकों को यह जानना चाहिये कि यह अदिति दक्षपुत्री नही है। दूसरी है।

११—"कश्यप ने इन्द्र को संग्राम के निमित्त प्रकट किया (ऋ०वे० ७।२०।५)।" यह मरीचि के पुत्र कश्यप नही हैं। बल्कि एक दूसरे, ग्राम-निवासी है।

१२—इन्द्र के जन्म का वर्णन ऋग्वेद १०।७३ मे देखिये।

१३—"लोगों का कथन है कि इन्द्र आदित्य से प्रकट हुये है। परन्तु वे बल से उत्पन्न हुए है, ऐसा मैं मानता हूं। वे किस प्रकार उत्पन्न हुये, इसे उनके सिवाय अन्य कोई नही जानता (ऋ० वे० १०।७३।१०)।"

१४—"तुम अपनी मंगलमयी माता अदिति की कोख से उत्पन्न हुये हो (ऋ० वे० १०।१३४।१)।"

१५—'मैं इन्द्र किसी के सामने नहीं झुका (ऋ० वे० १०।४८।६)।"

१६—"इन्द्र का लौह वज्र त्वष्टा ने ही बनाया था (ऋ०वे० १०।४८।३)।"

१७—'उशना के समान स्तोत्र करने वाले ऋषि इस मन्त्र के रचयिता हैं। वे इन्द्र की उत्पत्ति के ज्ञाता हैं (ऋ० वे० ६।९७।७)।"

१८—"इन्द्र ने देवक को मारा। शिला से शम्बर का भी संहार किया (ऋ०वे० ७।१८।२०)।"

१९—"इन्द्र ने द्रुह्यु, कवष, श्रुत और वृद्ध नामक शत्रुओं को जलमग्न कर दिया (ऋ०वे० ७।१८।१२)।"

२०—"इन्द्र ने अनुपुन का घर तृत्सु को दिया (ऋ० वे० ७।१८।१३)।"

२१—"अनु और द्रुह्य की गौओं की कामना करने वाले छियासठ सहस्र छियासठ सम्बन्धियों का सुदास के लिये वध किया (ऋ० वे० ७।१८।१४)।"

२२—"इन्द्र की पत्नी 'शची' थी (ऋ० वे० ४।१६।१०)।"

२३—"जैसे गौ बलवान बछड़े को जन्म देती है, वैसे ही इन्द्र की माता अदिति अपनी इच्छा पर चलने वाले सर्व शक्ति सम्पन्न इन्द्र को जन्म देती है (ऋ० वे० ४।१८।१०)।"

२४—"अत्यन्त हर्ष वाली युवती अदिति ने ममतामय होकर इन्द्र को जन्म दिया (ऋ० वे० ४।१८।८)।"

२५—'कुषवा' नाम्नी राक्षसी ने इन्द्र को शिशुकाल में ही अपना ग्रास बनाने की चेष्टा की (ऋ० वे० ४।१८।८)।" इन्द्र के गुप्त पिता कौशिक द्वारा वह राक्षसी भेजी गयी।

२६—"हे इन्द्र! तुम्हारा कौन सा शत्रु पैरों को पकड़ कर तुम्हारे पिता की हत्या करके तुम्हारी माता को विधवा बना सकता है? तुमको सोते या चलते में कौन मार सकता है? (ऋ० वे० ४।१८।१२)।" इसका मतलब है कि अपने पिता को तुम्ही ने टांग पकड़ कर मारा है।

२७—"इन्द्र ने अपनी महिमा से सिन्धु नदी को उत्तर की ओर प्रवाहित किया (ऋ० वे० २।१५।१६)।"

विशेष—यहां पर विचारने की बात यह है कि इन्द्र-जन्म के पहले से ही यदि आर्य-राज्य यहां नहीं होता तो इन्द्र सिन्धु नदी को उत्तर की तरफ क्यों फेरता? उस समय यहां के लोगों से युद्ध करना पड़ता। ऐसे ही वरुण देव ने भी सिन्धु का पाट चौड़ा किया था। इन घटनाओं से यह प्रमाणित हो जाता है कि देवकाल के पहले से ही आर्यों का राज्य यहां था अर्थात् यहां के ही वे लोग मूलनिवासी थे।

२८—"इन्द्र सम्राट थे (ऋ० वे० १।१७।१)।"

२९—इन्द्राणी का सूक्त है ऋ० वे० १०।१४५।

३०—शची पौलोमी का सूक्त है ऋ० वे० १०।१५९।

ऐसे ही इन्द्र की कीर्तियों के वर्णन ऋग्वेद में यत्र-तत्र हैं।

३१—ऋषि मेधा तिथि कहते हैं—"मैं, सम्राट् इन्द्र और वरुण से रक्षा चाहता हूं।" सूक्त इस प्रकार है—

"इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आवृणे।" (ऋ० वे० १।१७।१)।

प्रथम भारतीय सम्राट

स्वर्गीय श्री जैशकर प्रसाद (नागरी प्रचारिणी पत्रिका) तथा आचार्य चतुर सेन (वय रक्षाम.) ने इन्द्रको 'प्रथम भारतीय सम्राट' कहा है। अन्यान्य विद्वान भी ऐसा ही कहा करते है। ऐसा कहना प्राचीन भारतीय आर्य राजवशो के प्रति घोर अन्याय करना है। इन्द्र को प्रथम भारतीय सम्राट कहने से ऐसा मालूम होता है कि इन्द्र से पहले भारत मे कोई आर्य सम्राट' हुआ नही। यह बात सत्य से बहुत दूर है। प्रथम भारतीय सम्राट तो मनुर्भरत थे, जिनके नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा।

स्वायभुव वश की ३६वीं पीढी मे चाक्षुष मनु हुये थे। पाठकों ने पूर्व के पाठो मे यह देखा है कि चाक्षुष मनु के पुन अत्यराति, अभिमन्यु आदि न जब ईरान विजय किया था, उसी समय आसमुद्र क्षितीश की पदवी दी गई थी। पृथ्वीपति की उपाधि भी मिली थी। आसमुद्रक्षितीश का अर्थ सम्राट से भी बढकर प्रतिष्ठित होता है। ऐसी हालत मे इन्द्र को प्रथम सम्राट कभी भी नही कहा जा सकता। वरुण देव भी प्रथम सम्राट नही थे। सम्राट तो छत्तीसवी पीढी मे ही हो चुके थे। यहाँ पर इतना ही कहा जा सकता है कि भारतीय आर्य राजवश के राज्य-विस्तार मे इन्द्र भी सहायक हुये। उन्होने सिन्ध प्रदेश को उपजाऊ बनाने के लिये वरुण के पीछे सिन्धु नदी का सुधार किया था। ऋग्वेद के इस कथन मे स्पष्ट सिद्ध होता है कि वरुण-इन्द्रादि देवो के पहले से ही आर्य साम्राज्य भारत मे था। सिन्ध प्रदेश की तरफ वरुण-इन्द्रादि थे, इसी लिये मनुवैवस्वत ने अयोध्या मे अपनी राजधानी बनाई। क्योकि अपने ही लोगो का राज्य वहाँ था। इधर उस समय असुरो के आने का भी भय बना हुआ था।

इन्द्र की प्रतिष्ठा

ऋग्वेद के सूक्तो द्वारा यह मालूम होता है कि इन्द्र की प्रतिष्ठा बहुत अधिक थी। परन्तु उसी के द्वारा यह भी मालूम होता है कि इन्द्र का शासन प्रेम का नही था वरन् भय का था। जो खुशामदी ऋषि तथा राजा लोग इन्द्र की प्रशंसा मे ऋग्वेद के सूक्तो की रचना किया करते थे, उन्ही की सहायता इन्द्र भी किया करते थे। उनके उत्तराधिकारी जो इन्द्र हुये वे भी पुरानी लीक पर ही चलते रहे।

ईरान-पर्शिया के प्राचीन इतिहास द्वारा यह मालूम होता है कि वहाँ के लोग इन्द्र को पसन्द नही करते थे। बल्कि मन-ही-मन इन्द्र से घृणा करते थे। इसीलिए इन्द्र को उन लोगो ने 'इन्द्र बोगम' कहा है। मतलब यह है कि इन्द्र सर्व प्रिय सम्राट नही थे। परन्तु धुरधर और चलता पुर्जा जरूर थे। आदम प्रणाली के

भूखे थे। सोमपान के परम प्रेमी थे। वे भी भारतीय थे, इस लिये भारतीय सम्राट कहना उचित है। पुराणो के अनुसार प्रथम भारतीय सम्राट तो प्रजापति (६) मनुर्भरत हैं।

इन्द्र का राज्य

देवराट् इन्द्र का राज्य धीरे-धीरे फारस के उत्तर पूर्व से अफगानिस्तान-पामीर तक और भारत मे सिन्ध प्रदेश तथा पजाब तक था। उनका राज्य देवो और असुरो से हर जगह मिला हुआ था। इन्द्र देवो के मित्र थे, इसलिये असुरो से सदा खट-पट ही होता रहता था। इन्द्रपुरी ईरान मे थी। देवलोक भी ईरान ही मे था। पुराणो मे वर्णित देवो के सभी प्रसिद्ध स्थान ईरान ही मे थे। इसके अनेक प्रमाण ले० क० साइक्सकृत पर्शिया के इतिहास तथा जेनेसिस मे हैं।

इन्ही सब कारणो से पाश्चात्यजन कहा करते है कि आर्यो का मूल स्थान ईरान ही मे था। वे लोग इनके पूर्वजो का इतिहास भूल जाते हैं।

राजपुरोहित वेदर्षि वशिष्ठ

भारतीय आर्य राज्यकाल मे वशिष्ठ एक ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति है, जिनका वर्णन वरुण, विष्णु, इन्द्रादि के समय से दाशरथी राम के समय तक मिलता है। प्रथम वशिष्ठ का जन्म वरुण, सूर्य के समय मे हुआ।

उर्वशी अप्सरा का नाम प्राय सभी जानते है। परन्तु यह नही जानते कि वह कहां की रहनेवाली अप्सरा थी। इतना लोग जरूर जानते है कि वह इन्द्र दरबार की अप्सरा थी और पीछे ययाति की पत्नी भी बनी।

चाक्षुष मनु (३६) के पुत्र 'उर' ने जिस नगरी का निर्माण ईरान मे किया था, वही उर नगरी देवो के अधिकार मे आ गई थी। सभवत उसी उर नगरी की रहने वाली उर्वशी अप्सरा प्रसिद्ध हुई। वही उर्वशी, वरुण, सूर्य और इन्द्रादि सभी के दरबारो मे हाजिरी बजाया करती थी। उसके साथ वरुण और सूर्य दोनो भाइयों का गुप्त प्रेम था। उन्ही दोनो देवो के द्वारा उर्वशी के गर्भ से एक पुत्र हुआ, जिसका नाम वशिष्ठ पडा। इसका समर्थन ऋग्वेद के द्वारा होता है।

"वशिष्ठ उर्वशी के मानस पुत्र एव मित्रावरुण की सन्तान है।"

उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसोऽधि जात" (ऋ०वे० ७।३३।११)।

इस वेद मन्त्र के रचयिता वशिष्ठ और उनके पुत्र है। वशिष्ठ के लिये ऋग्वेद बहुवचन का प्रयोग है जैसे—"वशिष्ठो ने इस स्तोत्र के द्वारा इन्द्र की पूजा की

प्रथम भारतीय सम्राट

स्वर्गीय श्री जैशंकर प्रसाद (नागरी प्रचारिणी पत्रिका) तथा आचार्य चतुर सेन (वय रक्षाम.) ने इन्द्र को 'प्रथम भारतीय सम्राट' कहा है। अन्यान्य विद्वान भी ऐसा ही कहा करते है। ऐसा कहना प्राचीन भारतीय आर्य राजवंशो के प्रति घोर अन्याय करना है। इन्द्र को प्रथम भारतीय सम्राट कहने म एसा मालूम होता है कि इन्द्र से पहले भारत म कोई आर्य 'सम्राट' हुआ नही। यह बात सत्य से बहुत दूर है। प्रथम भारतीय सम्राट तो मनुभरत थे, जिनके नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा।

स्वायंभुव वंश की ३६वीं पीढ़ी मे चाक्षुष मनु हुये थे। पाठकों ने पूर्व के पाठों मे यह देखा है कि चाक्षुष मनु के पुत्र अत्यराति, अभिमन्यु आदि ने जब ईरान विजय किया था, उसी समय आसमुद्र क्षितीश की पदवी दी गई थी। पृथ्वीपति की उपाधि भी मिली थी। आसमुद्रक्षितीश का अर्थ सम्राट म भी बढ़कर प्रतिष्ठित होता है। ऐसी हालत मे इन्द्र को प्रथम सम्राट कभी भी नही कहा जा सकता। वरुण देव भी प्रथम सम्राट नही थे। सम्राट तो छत्तीसवी पीढ़ी मे ही हो चुके थे। यहाँ पर इतना ही कहा जा सकता है कि भारतीय आर्य राजवंश के राज्य-विस्तार मे इन्द्र भी सहायक हुये। उन्होने सिन्ध प्रदेश को उपजाऊ बनाने के लिये वरुण के पीछे सिन्धु नदी का सुधार किया था। ऋग्वेद के इस कथन से स्पष्ट सिद्ध होता है कि वरुण-इन्द्रादि देवो के पहले से ही आर्य साम्राज्य भारत मे था। सिन्ध प्रदेश की तरफ वरुण-इन्द्रादि थे, इसी लिये मनुवैवस्वत ने अयोध्या मे अपनी राजधानी बनाई। क्योंकि अपने ही लोगो का राज्य वहाँ था। इधर उस समय असुरो के आने का भी भय बना हुआ था।

इन्द्र की प्रतिष्ठा

ऋग्वेद के सूक्तो द्वारा यह मालूम होता है कि इन्द्र की प्रतिष्ठा बहुत अधिक थी। परन्तु उसी के द्वारा यह भी मालूम होता है कि इन्द्र का शासन प्रेम का नही था वरन् भय का था। जो खुशामदी ऋषि तथा राजा लोग इन्द्र की प्रशंसा मे ऋग्वेद के सूक्तों की रचना किया करते थे, उन्ही की सहायता इन्द्र भी किया करते थे। उनके उत्तराधिकारी जो इन्द्र हुये वे भी पुरानी लीक पर ही चलते रहे।

ईरान पर्शिया के प्राचीन इतिहास द्वारा यह मालूम होता है कि वहाँ के लोग इन्द्र को पसन्द नहीं करते थे। बल्कि मन-ही-मन इन्द्र से घृणा करते थे। इसीलिये इन्द्र को उन लोगों ने 'इन्द्र बोगस' कहा है। मतलब यह है कि इन्द्र सर्व प्रिय सम्राट नही थे। परन्तु धुरंधर और चलता पुर्जा जरूर थे। आत्म प्रशंसा

भूखे थे। सोमपान के परम प्रेमी थे। वे भी भारतीय थे, इस लिये भारतीय सम्राट कहना उचित है। पुराणो के अनुसार प्रथम भारतीय सम्राट तो प्रजापति (६) मनुर्भरत हैं।

इन्द्र का राज्य

देवराट् इन्द्र का राज्य धीरे-धीरे फारस के उत्तर पूर्व से अफगानिस्तान-पामीर तक और भारत मे सिन्ध प्रदेश तथा पजाब तक था। उनका राज्य देवो और असुरो से हर जगह मिला हुआ था। इन्द्र देवो के मित्र थे, इसलिये असुरो से सदा खट-पट ही होता रहता था। इन्द्रपुरी ईरान मे थी। देवलोक भी ईरान ही मे था। पुराणो मे वर्णित देवो के सभी प्रसिद्ध स्थान ईरान ही मे थे। इसके अनेक प्रमाण ले० क० साइक्सकृत पर्शिया के इतिहास तथा जेनेसिस मे हैं।

इन्ही सब कारणो से पाश्चात्यजन कहा करते हैं कि आर्यों का मूल स्थान ईरान ही मे था। वे लोग इनके पूर्वजो का इतिहास भूल जाते हैं।

राजपुरोहित वेदर्षि वशिष्ठ

भारतीय आर्य राज्यकाल मे वशिष्ठ एक ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, जिनका वर्णन वरुण, विष्णु, इन्द्रादि के समय से दाशरथी राम के समय तक मिलता है। प्रथम वशिष्ठ का जन्म वरुण, सूर्य के समय मे हुआ।

उर्वशी अप्सरा का नाम प्राय सभी जानते हैं। परन्तु यह नही जानते कि वह कहाँ की रहनेवाली अप्सरा थी। इतना लोग जरूर जानते है कि वह इन्द्र दरबार की अप्सरा थी और पीछे ययाति की पत्नी भी बनी।

चाक्षुप मनु (३६) के पुत्र 'उर' ने जिस नगरी का निर्माण ईरान मे किया था, वही उर नगरी देवो के अधिकार मे आ गई थी। सभवत उसी उर नगरी की रहने वाली उर्वशी अप्सरा प्रसिद्ध हुई। वही उर्वशी, वरुण, सूर्य और इन्द्रादि सभी के दरबारो मे हाजिरी बजाया करती थी। उसके साथ वरुण और सूर्य दोनो भाइयो का गुप्त प्रेम था। उन्ही दोनो देवो के द्वारा उर्वशी के गर्भ से एक पुत्र हुआ, जिसका नाम वशिष्ठ पडा। इसका समर्थन ऋग्वेद के द्वारा होता है।

"वशिष्ठ उर्वशी के मानस पुत्र एव मित्रावरुण की सन्तान है।"

"उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसोऽधि जात." (ऋ०वे० ७।३३।११)।

इस वेद मत्र के रचयिता वशिष्ठ और उनके पुत्र है। वशिष्ठ के लिये ऋग्वेद मे बहुवचन का प्रयोग है जैसे—"वशिष्ठो ने इस स्तोत्र के द्वारा इन्द्र की पूजा की

है" (ऋ० वे० ७।३३।६) । इसी सूक्त में यह स्पष्ट है कि वशिष्ठ के वंशधर भी वशिष्ठ ही कहलाते थे। अर्थात् वशिष्ठ की भी गद्दी स्थापित हो गई थी। इसी लिये उनके उत्तराधिकारी का भी वशिष्ठ ही नाम से पुकारा जाता था।

वशिष्ठ के जन्म के विषय में श्रीमद्भागवत का कथन भी देखिये—"उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण दोनों का वीर्य स्खलित हो गया। उसे उन लोगों ने घड़े में रख दिया। उसी से मुनिवर अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म हुआ। (भाग० ६।१८।५)।

"यम द्वारा विस्तृत वस्त्र बुनने के लिये वशिष्ठ उर्वशी द्वारा उत्पन्न हुये" (ऋ० वे० ७।३३।१२)

"द्वादश आदित्य, उनचास मरुद्गण, तेंतीस गो तेतीस देवता, तीनों ऋभु, दोनों अश्विनी कुमार, इन्द्र और अग्नि की स्तुति वशिष्ठ ने की है" (ऋ० वे० ७।५१।३)।

वशिष्ठ ने रुद्र के लिये भी सूक्त बनाया (ऋ० वे० ७।५९)।

"शम्बर संग्राम के बाद वशिष्ठ ने सुदास से सौ गौ और दो रथ प्राप्त किये" (ऋ० वे० ७।१८।२२)।

ऋग्वेद के सातवें मण्डल में १०४ सूक्त हैं। उन सभी के रचयिता वशिष्ठ ही हैं। इसलिये उनको सातवें मण्डल का ऋषि कहा जाता है।

वशिष्ठ सभवत ईरान की मग जाति के ब्राह्मण थे। मग, मौनी, मुनि तथा मिहिर आदि वशिष्ठ के जाति सम्बन्धी नाम हैं। मग ब्राह्मण मगोलिया निवासी थे (मानवेर जन्मभूमि—उमेशचन्द्र विद्या रत्न)।

वशिष्ठ का जन्म तो ईरान में हुआ ही—वहीं उन्होंने ऋग्वेद के सूक्तों का निर्माण भी किया। यह भी इन्द्र के प्रशंसक हुये। इन्द्र से सदा पुरस्कार पाते रहे। पीछे भारत में चले आये। वैदिक सूक्तों के देखने से मालूम होता है कि यहाँ भी उन्होंने ऋग्वेद के सूक्तों की रचना की। उत्तरपांचाल के राजा वैदिक सुदास के भी राजपुरोहित तथा मंत्री थे। पीछे उनसे मतभेद हो गया। इन सब बातों पर

वशिष्ठ आरम्भिक काल से अयोध्या के राजपरिवार के गुरु थे।[1] यहाँ पर भी सन्देहजनक बात है। मनुवैवस्वत से अयोध्या का राजवंश आरम्भ होता है। तब से राम तक पुराणों के ही अनुसार ६५ पीढ़ियों तक एक वशिष्ठ का जीवित रहना कभी सम्भव नहीं है। इसलिये यही बात सत्य जान पड़ती है कि वशिष्ठ के वंशधर भी वशिष्ठ ही नाम से पूजित होते गये। वशिष्ठ बड़े ही राजनीतिज्ञ थे। ये और विश्वामित्र दोनों ही आर्य राजाओं को सदा नचाते रहे और स्वयं मौज ते रहे। उनके बचपन का नाम देवराज था।

अत्रि और चन्द्रमा-चन्द्र-सोम

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंशों में अत्रि और उनके पुत्र चन्द्रमा का एक विशिष्ट स्थान है। जिस समय वरुण, सूर्य, इन्द्रादि तथा दैत्य, दानव आदि असुरों का प्रभाव चतुर्दिक् फैल रहा था, उसी समय अत्रि प्रजापति का भी उदय हुआ था। उनके पुत्र का नाम सोम-चन्द्रमा था।[2] उन्हीं के नाम पर भारत में चन्द्र-वंशी राज्य की स्थापना हुई थी। चन्द्रवंशियों ने ही महाभारत संग्राम की रचना की थी। उसी राजवंश को श्री पार्जीटर ने एन्शियन्ट इंडियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन में 'ऐलारेस' के (Aila Race = Aryan Race) नाम से सम्बोधन किया है।

अत्रि का राज्य हिमालय के उस पार अपवर्त्त में था। उनके राज्य को अत्रिय भूमि, अत्रिय देश कहा जाता था (अत्रयोऽथ भरद्वाज प्रस्थला सदसेरका। एते देशा उदीच्यास्तु। मत्स्य पु० अ० ११३। श्लोक ४२-४३) अत्रिय-देश का नाम 'अत्रिपत्तन' (Atropatene) था। वहीं पर पुराणों में वर्णित अत्रीक (Atrek) नदी भी थी। पर्शिया के इतिहास में भी अत्रिपत्तन और अत्रीक नदी की चर्चा है। आजकल उसी का नाम अजरबैजान है, जो ईरान और रूस के सीमान्त प्रदेश में है। अत्रिपत्तन या अजरबैजान और अत्रीक नदी कश्यप सागर तट पर है (पर्शिया का इतिहास, जिल्द १, पृष्ट ३१०-३२१)। अत्रिय भूमि को ही स्वर्ग या वैकुण्ठ कहा गया है (पर्शिया का इतिहास, जिल्द १, पृ० ४०, ४२, ५०)। अत्रि के वंशधर जो मुसलमान हो गये वे वहाँ पर अभी तक अनेक है। चन्द्र के वंशधर होने के कारण वहाँ के मुसलमानी राज्य के झण्डे पर चाँद फहराता है।

---

1 ब्रह्माण्ड iii, ४८, ७६। विष्णु iv, ३, १८। पद्म vi २१६, ४४, २७१, १। महाभारत i, १७०, ६६४२। 2. देखिये--अमरकोश देववर्ग।

है" (ऋ० वे० ७।३३।६) । इसी सूक्त से यह स्पष्ट है कि वशिष्ठ के वंशधर भी वशिष्ठ ही कहलाते थे। अर्थात् वशिष्ठ की भी गद्दी स्थापित हो गई थी। इसी लिये उनके उत्तराधिकारी को भी वशिष्ठ ही नाम से पुकारा जाता था।

वशिष्ठ के जन्म के विषय में श्रीमद्भागवत का कथन भी देखिये—"उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण दोनों का वीर्य स्खलित हो गया। उसे उन लोगों ने घड़े में रख दिया। उसी से मुनिवर अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म हुआ। (भाग० ६।१८।५)।

"यम द्वारा विस्तृत वस्त्र बुनने के लिये वशिष्ठ उर्वशी द्वारा उत्पन्न हुये" (ऋ० वे० ७।३३।१२)

"द्वादश आदित्य, उनचास मरुद्गण, तेंतीस सौ तेंतीस देवता, तीनों ऋभु, दोनों अश्विनी कुमार, इन्द्र और अग्नि की स्तुति वशिष्ठ ने की है" (ऋ० वे० ७।५११३)।

वशिष्ठ ने रुद्र के लिये भी सूक्त बनाया (ऋ० वे० ७।५९)।

"शम्बर संग्राम के बाद वशिष्ठ ने सुदास से सौ गौ और दो रथ प्राप्त किये" (ऋ० वे० ७।१८।२२)।

ऋग्वेद के सातवें मण्डल में १०४ सूक्त हैं। उन सभी के रचयिता वशिष्ठ ही हैं। इसलिये उनको सातवें मण्डल का ऋषि कहा जाता है।

वशिष्ठ सम्भवतः ईरान की मग जाति के ब्राह्मण थे। मग, मौनी, मुनि तथा मिहिर आदि वशिष्ठ के जाति सम्बन्धी नाम हैं। मग ब्राह्मण मंगोलिया निवासी थे (मानवेर जन्मभूमि—उमेशचन्द्र विद्या रत्न)।

वशिष्ठ का जन्म तो ईरान में हुआ ही—वहीं उन्होंने ऋग्वेद के सूक्तों का निर्माण भी किया। यह भी इन्द्र के प्रशंसक हुये। इन्द्र से सदा पुरस्कार पाते रहे। पीछे भारत में चले आये। वैदिक सूक्तों के देखने से मालूम होता है कि यहाँ भी उन्होंने ऋग्वेद के सूक्तों की रचना की। उत्तरपांचाल के राजा वैदिक सुदास के भी राजपुरोहित तथा मंत्री थे। पीछे उनसे मतभेद हो गया। इन सब बातों पर विचार करने से यह स्पष्ट मालूम होता है कि एक ही वशिष्ठ वरुण-विष्णु, इन्द्र के समय से दाशरथी राम तक जीवित नहीं रहे। वशिष्ठ को रुद्र शिव की तरह अमर भी नहीं कहा गया है। वैसी हालत में हजारों वर्ष तक वशिष्ठ का जीवित रहना कदापि सम्भव नहीं है।

वशिष्ठ आरम्भिक काल से अयोध्या के राजपरिवार के गुरु थे।[1] यहाँ पर भी सन्देहजनक बात है। मनुवैवस्वत से अयोध्या का राजवंश आरम्भ होता है। तब से राम तक पुराणों के ही अनुसार ६५ पीढ़ियों तक एक वशिष्ठ का जीवित रहना कभी सम्भव नहीं है। इसलिय यही बात सत्य जान पड़ती है कि वशिष्ठ के वंशधर भी वशिष्ठ ही नाम से पूजित होते गये। वशिष्ठ बड़े ही राजनीतिज्ञ थे। ये और विश्वामित्र दोनों ही आर्य राजाओं को सदा नचाते रहे और स्वयं मौज उड़ाते रहे। उनके बचपन का नाम देवराज था।

अत्रि और चन्द्रमा-चन्द्र-सोम

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंशों में अत्रि और उनके पुत्र चन्द्रमा का एक विशिष्ट स्थान है। जिस समय वरुण, सूर्य, इन्द्रादि तथा दैत्य, दानव आदि असुरों का प्रभाव चतुर्दिक फैल रहा था, उसी समय अत्रि प्रजापति का भी उदय हुआ था। उनके पुत्र का नाम सोम-चन्द्रमा था।[2] उन्हीं के नाम पर भारत में चन्द्र-वंशी राज्य की स्थापना हुई थी। चन्द्रवंशियों ने ही महाभारत संग्राम की रचना की थी। उसी राजवंश को श्री पार्जीटर ने एन्शियन्ट इंडियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन में 'ऐलारेस' के (Aila Race = Aryan Race) नाम से सम्बोधन किया है।

अत्रि का राज्य हिमालय के उस पार अपवर्त्त में था। उनके राज्य को अत्रिय भूमि, अत्रिय देश कहा जाता था (अमयोज्य भरद्वाज प्रस्थला सद्सरका। एते देशा उदीच्यास्तु। मत्स्य पु० अ० ११३। श्लोक ४२-४३) अत्रिय देश का नाम 'अत्रिपत्तन' (Atropatene) था। वहीं पर पुराणों में वर्णित अत्रीक (Atrek) नदी भी थी। पर्शिया के इतिहास में भी अत्रिपत्तन और अत्रीक नदी की चर्चा है। आजकल उसी का नाम अजरबैजान है, जो ईरान और रूस के सीमान्त प्रदेश में है। अत्रिपत्तन या अजरबैजान और अत्रीक नदी कश्यप सागर तट पर है (पर्शिया का इतिहास, जिल्द १, पृष्ठ ३१०-३२१)। अत्रिय भूमि को ही स्वर्ग या वैकुण्ठ कहा गया है (पर्शिया का इतिहास, जिल्द १, पृ० ४०, ४२, ५०)। अत्रि के वंशधर जो मुसलमान हो गये थे वहाँ पर अभी तक अनेक हैं। चन्द्र के वंशधर होने के कारण वहाँ के मुसलमानी राज्य के झण्डे पर चाँद फहराना है।

---

१ ब्रह्माण्ड III, ४८, २६। विष्णु IV, ३, १८। पद्म VI २१६, ४४, २७१, १। महाभारत I, १७०, ६:४२।   २. देखिये—अमरकोश देववर्ग।

अत्रिय भूमि को तपोभूमि कहा जाता था—यहाँ रात-दिन प्रवास रहता था (तथापि दिवसाकारं प्रवास तदहर्निशम्—मत्स्य पु० अ० ११८ श्लोक ६)। अत्रिय भूमि की विशेषता पुराणों में जो बतलाई गयी है—उसका समर्थन वर्णियो के इतिहास द्वारा भी होता है। अत्रि असुर याजक थे। वेदर्षि थे।]

वंशवृक्ष
अत्रि
|
चन्द्र-चन्द्रमा-सोम
|
मंत्रद्रष्टा ऋ० वे० १०।९५। बुध + इला (मनु-पुत्री)
|
मंत्रदृष्टा-ऋ० वे० १०।९५। पुरुरवा

गुरु-पुरोहित-याजक

इन लोगों के वर्णन निम्नलिखित ग्रन्थों में हैं—

(१) याजक—वायु, ब्रह्माण्ड, लिङ्ग और हरिवंश।

(२) पुरोहित—मत्स्यपुराण और महाभारत।

(३) उपाध्याय—महाभारत।

(४) आचार्य—वायु, ब्रह्माण्ड, कुर्म तथा पद्मपुराण।

(५) गुरु—महाभारत i, ६६, २६६७, ८१—३३६७। मत्स्यपुराण—३०, ९। ब्रह्म—९५, २८-८; १४६, २५-४। पद्म पु० vi, ४, १०।

दैत्य वंश (= कश्यप + दिति)

दिति के हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के अतिरिक्त उनचास पुत्र और थे। उन्हें मरुद्गण कहते हैं। वे सब निःसन्तान रहे। देवराट इन्द्र ने उन्हें अपने ही समान देवता बना लिया (भाग० पु०६।१८।१९)।

'देवता बना लिया' का मतलब यह होता है कि अपने देव संगठन में सम्मिलित कर लिया। इसलिये तब से उनकी भी संज्ञा देव की हो गई।

कश्यप की पहली पत्नी 'दिति' थी। उसकी संतति मातृगोत्र पर दैत्य कहलाई। दैत्यों की माता चूंकि सबसे बड़ी थी, इसलिये दैत्य लोग अपने सौतेले भाइयों देवों से अपने को श्रेष्ठ समझा करते थे। अदिति के लड़के आदित्य लोग

अपने को आदित्य कुल के नाम से श्रेष्ठ समझा करते थे। इसीलिये आगे चलकर अदिति के वंशधर देवों में बराबर दैत्य-दानवों का देवासुर संग्राम चलता रहा।

दैत्यों की सभ्यता को ही पुरातत्वविद "हिलियोलिथिक" सभ्यता कहते हैं। इन्हीं दैत्यों की एक शाखा अमेरिका में 'मयसभ्यता' के नाम से विकसित हुई। अमेरिका में भूगर्भ की खुदाई होने पर 'मयका' मकान मिला है। दूसरी शाखा मिस्र में "मैसोपोटामिया" नाम से विकसित हुई। तीसरी शाखा बैबिलोनिया में असुरों के नाम से विकसित हुई। असीरिया उन्हीं का था।

पुराणों के अनुसार उनका वंशवृक्ष इस प्रकार है —

हिरण्याक्ष का वंशवृक्ष

१ उत्कुर, २ शकुनि, ३ भूतसन्तापन, ४ महानाभि, ५ महाबाहु, ६ कालनाभि

ये लोग परम पराक्रमी हुये। इनकी सन्तानों का अनन्त विस्तार हुआ।

संह्लाद
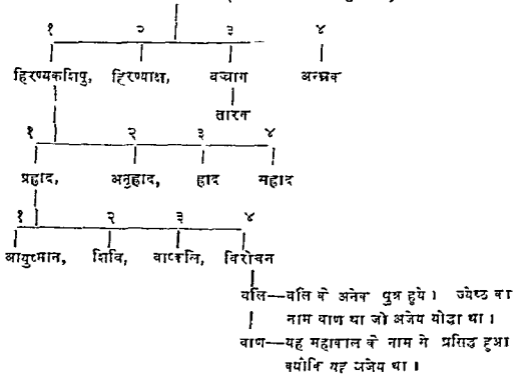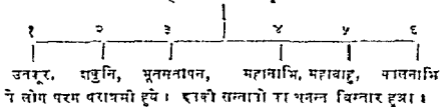
इनके वंश में निवित (निवात) और कवच हुये जो तपस्वी हो गये।

दैत्य-दानवों का राज्य विस्तार

कश्यप सागर तट में गजनी, हिरात, हरम, कुज शहर, खुरासान बुखारा, गलदमन, शकारा, इक ग्रावटारिया, वशपुर, बाम्पोरम कष्ट और कश आदि देशों में इसी दैत्यवंश का विस्तार हुआ।

हिरण्यकशिपु

इसने अपनी नयी राजधानी हिरण्यपुरी बनाई, जो एक प्रसिद्ध नगरी हो गई। यह नगरी कश्यप सागर तट पर उस पार थी, जहा स्वर्ण खान मिली थी। पर्शिया का लूट या लट प्रदेश जहाँ है और जिसे कवीर भी कहते हैं, वही स्थान पीछे नन्दन वन के नाम से प्रसिद्ध हो गया। काश्यप सागर की जो भूमि आजकल औवसस या पारदिया कहाती है, उसी के ऊपरी भाग में दाह स्थान या नन्दन वन था। इसी भूमि को ग्रेट डेजर्ट और साल्ट डेजर्ट भी कहते है। यहीं सर्वप्रथम स्वर्ण की खान मिली थी। इसीके लिये देवासुर संग्राम आरंभ हुआ।

हिरण्याक्ष

इसने बैबीलोन पर अपना अधिकार जमाया। इसके अतिरिक्त आस पास में दैत्य दानवों के और भी राज्य थे। इतना लिखने का अभिप्राय यह है कि समूचा एशिया माइनर उस समय दो ही शक्तियों में बटा हुआ था। एक तरफ दैत्यदानवों के राज्य थे जो पीछे असुर कहलाये और दूसरी तरफ आदित्यों के राज्य थे जो पीछे देव के नाम से प्रसिद्ध हुये। उस समय दैत्य-दानवों का संगठन देवों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था।

मरुत

मरुत भी दिति की संतान हैं। इसीलिये पहले इनकी दैत्य संज्ञा थी। इनके उचास (४९) परिवार थे। ऋग्वेद २।३४।१ "आते पितु मरुता सम्नमे" यह देखने से मालूम होता है कि रुद्र मरुतो का पूर्वज है।

दिति की एक पुत्री का नाम सिंहिका था। उसका विवाह विप्रचिति दानव से हुआ। उसी के वंश में शल्य, वातापि, नमुचि, इल्वल, नरक, कालनाभ, वक्रयोधि, राहु आदि १३ पुत्र हुये। सभी पुत्र बडे बहादुर थे। ये सब सैंहिकेय कहलाये। इन लोगों में राहु सब से भयंकर प्रसिद्ध हुआ। प्रसिद्ध दैत्य निवात और कवच

तपस्वी थे जो महलाद के वश में थे (विष्णु पुराण, हरिवंशपुराण, योगवाशिष्ठ, महाभारत आदिपर्व)

हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष बडे प्रतापी थे। इन्होंने अनेक देवों को अपने राज्य से पदच्युत किया। सभवत बलि और हिरण्यकशिपु उत्तर-पश्चिम फारस और अफगानिस्तान के शासक थे।

हिरण्यकशिपु—यह इक्ष्वाकु के भाई नृसिंह द्वारा मारा गया। नृसिंह को पर्शिया के इतिहास में 'नरमसिन' कहा गया है।

प्रह्लाद—इन को सुरत्व की प्राप्ति हुई। (पद्मपुराण—सृष्टि खराड ७२। ऐतरेय ब्राह्मण। मत्स्यपुराण)

प्रह्लाद—इन्हों ने विष्णु सूर्य से सुलह की थी। इस कारण पिता-पुत्र में विरोध हुआ (भागवत तथा शतपथ ब्राह्मण)। दैत्यों में प्रह्लाद और उसके पुत्र विरोचन की बडी घटना का उल्लेख नहीं है, परन्तु विरोचन के पुत्र बलि की दान शीलता और पुरुषार्थ का विशेष उल्लेख मिलता है। उसने दैत्य वश का एक नया शक्ति शाली राज्य कायम कर लिया था। उसकी राजनीतिज्ञता ने दैत्यों तथा दानवों की शक्ति का विशेष सगठन हो गया था।

स्वय राजा बलि राजनीतिज्ञता, दान शीलता, न्याय प्रियता, धर्म-कर्म आदि गुणों से विभूषित था।

बाण—बलिपुत्र बाण रणकौशल में परम प्रवीण था। इसीलिये उसकी उपाधि 'महा तेज' की थी।

घटनाओं को देखने से ऐसा ज्ञान पडता है कि हिरण्यकशिपु के नृसिंह द्वारा मारे जाने के पश्चात् से बलि के समय तक देव भी अधिक सङ्गठित हो चुके थे।

प्रलय काल में मत्स्यजाति वाले नाविक थे, परन्तु इस समय नाविकों का कार्य नागगण किया करते थे। नागों की ही किश्तियों द्वारा देवों ने समुद्रपार आना-जाना आरभ किया था, जिसको समुद्र मथन कहा गया है। उस आवागमन में दैत्य भी साथ थे। बल्कि दैत्यों को ही पहले स्वर्ण खान मिली थी। रुद्र से नागों की बडी मित्रता थी, इसलिये नागों के सिरपर सदा शिव का हाथ रहा करता था। नागों की मित्रता देवों से भी थी, इसलिये देव भी उनके रक्षक थे। इन्हीं कारणों से विष्णु का वाहन कहा गया है और शिव के गले में सर्प ही लपट दिया जाता है। यथार्थत वे लोग सर्प नहीं थे। बल्कि हम ही लोगों की तरह मानव थे। यह सभव है कि उनकी मुखाकृति सर्प की तरह रही हो।

दानव वंश (=कश्यप + दनु)

कश्यप की तीसरी पत्नी दनु से दानव वंश चला। इस वंश के प्रमुख पुरुष श्रीमद्भागवत के अनुसार इस प्रकार हैं—

दनु के गर्भ से ६१ दानव उत्पन्न हुये। उनमें जो बलवान और प्रमुख हुये उनके नाम इस प्रकार है—

द्विमुर्द्धा, शम्बर, अरिष्ट, हयग्रीव, विभावसु, अयोमुख, शङ्कु-शिरा, स्वर्भानु, कपिल, करूण, प्रलोभ, वृषपर्वा, एकचक्र, अनुतापन, धूम्रकेश, विरुपाक्ष, विप्रचित्ति तथा दुर्जय आदि (भागवत)

दूसरी सूची—सपर, शंकर, एकचक्र, महाबाहु, तारक, वृषपर्वा, पुलोम और विप्रचित्ति आदि।

वृषपर्वा = सीरिया-नरेश

वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा का विवाह चन्द्र वंशी राजा ययाति (६) के साथ हुआ था। ययाति की यह दूसरी पत्नी थी। शर्मिष्ठा का ही पुत्र पुरु था जो चन्द्र वंश का प्रमुख पुरुष हुआ।

दनुकी पुलोमा और कालिका नामक दो पुत्रियां भी हुईं। जिनमें कालिकेय और पौलोम वंश चले।

पुलोम, कालिका (दो पुत्रियां) इनमे पौलोम और कालिकेय वंश वृक्षवृक्ष चले।
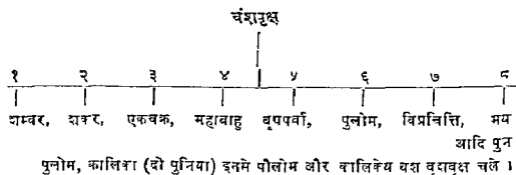
राक्षस

दक्ष की पुत्री और कश्यप की पत्नी सुरसा से राक्षस वंश चला। (भागवत)

'राक्षस' शब्द पर आचार्य चतुर सेन का विचार (वय रक्षाम उत्तरार्द्ध-अर्थ भाष्यम् पृष्ट १११ पर) निम्न प्रकार है—

"रा + क्षस"। 'रा' मिश्री भाषा मे सूर्य को कहते है। सूर्य आदि बारहों भाई आदित्य कहाते थे। आदित्यो की सभ्यता का प्रतीक 'रा' शब्द है। क्षस'-'दक्ष'

का प्रतीक। 'यक्ष' संस्कृति का संस्थापक विश्रवा-पुत्र कुबेर था। रावण ने अपने भाई कुबेर की 'यक्ष' संस्कृति और आदित्यों की 'रा' संस्कृति को मिलाकर 'राक्षस' (रा + यक्ष) संस्कृति एक राक्षस जाति का संगठन किया।

'रक्षामः' रक्षा करें। 'यक्षाम.' खायेंगे। ये दो मूल संस्कृति के आधार-सिद्धान्त रावण और कुबेर ने स्थापित किये थे। कुबेर का अभिप्राय था कि धन वैभव और राज्य भोग करने मौज-मजा-करने के लिये है। रावण का अभिप्राय था कि धन-वैभव और राज्य रक्षण करने के लिये है। अत' रावण और यक्ष दोनों ने अपने-अपने आदर्श पर यक्ष-रक्ष जातियो का संगठन किया। दोनों जातियों के परिवार-परिजन एक ही थे, भाई-बन्द रिश्तेदार थे। बाद मे जब कुबेर और रावण मे संघर्ष हुआ, और कुबेर को पराग्न होना पड़ा, तो रावण के सम्प्रदाय मे बहुत यक्ष आ-आ कर राक्षस धर्म स्वीकार करने और राक्षस बनने लगे। इस प्रकार 'रा' सूर्य-धर्म आदित्यों की संस्कृति, और 'यक्ष' बड़े भाई कुबेर की संस्कृति को मिलाकर उसने राक्षस संस्कृति और राक्षस जाति का निर्माण किया।"

श्रीमद्‌भागवत के अनुसार सुरसा के वंशधर हों या आचार्य चतुर सेन के कथन सही हों या कुछ और ही तथ्य हो। जो कुछ हो। इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दैत्य, दानव, राक्षस, असुर और देव आदि सभी एक ही परिवार के थे। परन्तु पीछे राजसत्ता के लिये आपस मे मतभेद हुआ और अलग-अलग राजनीतिक पार्टियां बन गई। जैसे आज कांग्रेस और साम्यवादी दल (कम्युनिस्ट पार्टी)।

असुर

'असु' धातु से असुर शब्द बनता है। इसका अर्थ है प्राण। असुर शब्द का अर्थ है प्राणवान, सामर्थ्यवान, बलवान। वैदिक साहित्य मे 'सुर' शब्द कहीं नहीं है। 'असुर' शब्द इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि आदि के लिये प्रयुक्त हुआ है तथा सब देवों का समावेश असुरो मे ही किया गया है। कहीं देवो के अतिरिक्त अन्य असुर कहे गये हैं।[1]

परन्तु ब्राह्मणो, अरण्यकों और उपनिषदों मे अनेक स्थानों पर देवासुर शब्द हैं। पुराणो मे 'देवासुर-संग्राम' तथा बौद्ध-ग्रन्थों मे 'देवासुर-संगामो' भी है। इनसे यह प्रमाणित होता है कि मसीह से पूर्व लगभग दसवीं सदी के बाद देवों से असुरो को भिन्न कर दिया गया था। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि जब

1 "अनायुधासो असुरा अदेवा" (ऋग्वेद ८।९६।९)।

असीरियन लोगो ने वैबिलोनिया को निरन्तर चढाई करके जयकर लिया तो सर्वत्र उनका प्रभाव छा गया । उनके मुख्य देवता असुर थे तथा विजयी होने से वे अपने को असुर कहने लगे थे । अत. 'असुर' शब्द उसी भाँति घृणा और तिरस्कार से लिया जाने लगा, जिस प्रकार 'राक्षस' शब्द (व० र० उ० अर्थभाष्यम्—पृ० ११ ।)

(असुर और राक्षस शब्द की व्याख्या आचार्य चतुरसेन ने की है, वही ज्यो का त्यों यहाँ पर है ।)

विशेष—वेद, वैदिक साहित्य तथा पुराणो द्वारा यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि आदित्यो-देवो को ही पहले असुर कहा जाता था । पर्शिया के प्राचीन इतिहास द्वारा भी इसका समर्थन हो जाता है । यथार्थ बात यह मालूम होती है कि जिस समय आदित्यो के अधिकार मे वैबीलोनिया था, उस समय वे लोग अपने को असुर (शक्तिशाली) कहा करते थे । परन्तु जब उनके सौतेले भाई दैत्य-दानवो न वैबी-लोनिया पर पुनः अधिकार कर लिया और आदित्यो को वहाँ से भगा दिया तब वे ही लोग अपने को असुर (शक्तिशाली) कहने लगे । इसके बाद आदित्यो ने इन्द्र के साथ मिलकर अपने को 'देव' घोषित कर दिया । अब देव और असुर दो दल हो गये । दोनों दलों मे सदा विग्रह चलते रहे । इसलिये असुरो से देवो का घृणा करना स्वाभाविक हो गया । हालाकि चन्द देवो ने असुर-कन्या से विवाह भी किया था । यहाँ पर यथार्थ बात यह मालूम होती है कि आदित्य-देव, दैत्य-दानव-राक्षस, असुर नाग, गरुड और अरुण वंशवाले सभी एक ही परिवार के थे । जैसे इगलैड, फ्रास, जर्मनी और रूस आदि देशो के निवासी आर्य ही है, वैसे ही वे सभी आर्य ही थे । वे तो दस्यु-अनार्य थे नही ।

नाग वंश

दक्ष प्रजापति (४५) की पुत्री और कश्यप प्रजापति की एक पत्नी का नाम कद्रू था । कद्रू की सततियो से छब्बीस नाग वश चले । जिनमे निम्नलिखित बडे प्रतापी राजा हुये—

शेष, वासुकी, कर्काटक, तक्षक, धृतराष्ट्र, धनंजय, महानील, अश्वतर, पुष्पदंत तथा शखरोमा आदि ।

नागों के राज्य—इनके राज्य सीरिया, कोचारिस्तान, हसन अब्दाल, पाताल, एबीसीनिया और तुर्किस्तान मे थे । तुर्किस्तान उनकी सबसे बडी राजधानी थी ।

नागलोक अर्थात् नागो का राज्य जिस स्थान मे था, उसी को आज तुर्किस्तान कहा जाता है । उन्ही नागों के वंशधर आज तुर्क कहलाते हैं ।

(नन्द लाल दे कृत रसातल नामक पुस्तक देखने से यह मालूम होता है कि शेष और वासुकी नाग के नाम पर 'सन' और 'वासक' आदि उप जातियाँ आज भी तुर्की में है।)

उत्तरी तुर्किस्तान में भी नागो का राज्य था, जिसको कम्बोज कहा गया है। सुरमा के पुत्र एलपात्र, अश्वतर, शेष कर्कोटक, धनंजय आदि नाग थे (विष्णु पुराण)।

अश्वतर का राज्य सिन्ध के उस पार था (मार्कण्डेय पुराण)।

काबुल, युसुफजाई, हसन अब्दाल टोचरिस्तान (Tocharistan) आदि देश नागो ही के थे। पहले सीरिया पर भी नागो ही का राज्याधिकार था। (Ishak Aj-Dahak family of Syria पर्शिया का इतिहास जिल्द—१)।

इलाम में भी शेष नाग का राज्य था (Shushinak family of Elam 2400 B. C—पर्शिया का इतिहास जिल्द १)।

विष्णु ने शेष नाग को अपने अधिकार में कर लिया था। इसीलिये विष्णु को शेषशायी कहा गया है।

गरुड़ और अरुण वंश

दक्ष प्रजापति (८५) की पुत्री विनिता थी जो मरीचि प्रजापति के पुत्र कश्यप प्रजापति के साथ ब्याही गई थी। उसी के पुत्र गरुड और अरुण थे। अरुण के दो पुत्र हुये—जटायु और सम्पाति। इनके अनेक वंशधर हुये।

गरुडो का राज्य—इन लोगो का राज्य गरुड धाम था। उसी को आजकल गरेडेशिया कहते है। यह तुर्किस्तान के ऊपर है। गरुड और नाग दोनो जातिया आदित्यो की सहायक थीं। परन्तु आपस मे, दोनों मे वैर-भाव रहा करता था। इसका कारण यह था कि दोनो के राज्य आस-पास ही थे। गरुड नागो के परम शत्रु थे।

तुर्किस्तान जो अफगानिस्तान के ऊपर है, वहाँ नागो का राज्य था (नागलोक)। उसी के सामने एक बडा सा मैदान है, जिसको गिरेडिशिया कहा जाता है। वहीं गरुडो का राज्य था। इस तरह नाग और गरुड दोनो पडोसी थे—परन्तु शत्रुता में दोनो एक दूसरे के जानी दुश्मन थे। इन दोनो जातियो को सूर्य-विष्णु अपने मेल मे रखा करते थे। उनमे स्वयं सहायता लिया करते थे और आवश्यकता पडने पर उनकी भी सहायता दिया करते थे। इसीलिये पुराणो मे नाग (साप) और गरुड को विष्णु का वाहन बनाया गया है। पुराणो के इस कथन का अभिप्राय यह है कि वहाँ नाग जाति के लोग विष्णु के रक्षक रहा करते थे। पुराणो मे यह भी

लिखा है कि जब विष्णु भगवान वैकुण्ठ धाम में रहा करते थे तब गरुड पर सवारी किया करते थे। इसका अभिप्राय यह है कि वैकुण्ठ धाम के रक्षक गरुड थे। नाग और गरुड दोनो में पटरी नहीं खाती थी, इसलिए दोनों का अलग-अलग रहा करते थे। सूर्य-विष्णु की दोनो जगह राजधानियां थी। नाग लोक का सम्बन्ध क्षीर सागर से था। और गरुड लोक का सम्बन्ध वैकुण्ठ धाम से था।

ईरान, मिश्र, पैलस्टाईन, वैवीलोनिया और अफ्रीका आदि देशों को स्वायम्भुव मनु के वंशधरों ने जीत कर वहां अपने महाराज्य की स्थापना की। इसी काल में प्रलय हुआ। प्रलय के पश्चात् दक्ष की पुत्रियों के द्वारा जब पुनः सृष्टि का विस्तार हुआ, तब वैकुण्ठ का निर्माण भी हुआ। (हरिवंश, विष्णु, मत्स्य पुराण श्रीमद्भागवत तथा वनियों का इतिहास जिल्द—१)

सतयुग—१३६० वर्ष

(४०२२ ई० पू० से २६६२ ई० पू० तक)

छै मनुओं के भोग काल का सतयुग-कृतयुग कहते हैं *(श्रीमद्भागवत—८।१।४)*। इस काल के छै मनुओं के नाम इस प्रकार हैं—१. स्वायम्भुव, २. स्वारोचिष, ३. उत्तम, ४. तामस, ५. रैवत, ६. चाक्षुष (विष्णु पुराण)।

प्रथम पांच मन्वन्तरों का भोगकाल—४०२२ ई० पू० से ३०४२ ई० पू० तक अर्थात् ९८० वर्ष।

छठें चाक्षुषमन्वन्तर का भोग काल ३०४२ ई० पू० से २६६२ ई० पू० तक अर्थात् सातवें मनु वैवस्वत के पूर्व तक ३८० वर्ष।

छै मनुओं का भोगकाल (= ९८० + ३८०) १३६० वर्ष।

१३६० वर्षों के दरम्यान की प्रधान घटनायें

१—*४०२२ ई० पू० प्रथम मनु एवं प्रजापति स्वायम्भुव द्वारा प्रजापति वंश कश्मीर-जम्मू में प्रारंभ हुआ।*

२—३८८२ ई० पू० छठें प्रजापति भरत-मनुर्भरत के नाम पर इस देश का नाम करण 'भारत वर्ष—भरत खण्ड' हुआ। उसके पहले इस देश का नाम 'हिमवान्—हिमवर्ष' था (भागवत, विष्णु तथा मत्स्यपुराण)।

३—३७६८ ई० पू० नवें प्रजापति परमेष्ठी ने सर्व प्रथम ऋग्वेद (१०।१२९) के एक सूक्त की रचना कर वेद का निर्माण आरम्भ कर दिया। इसलिये प्रथम वेदर्षि वही हुये।

८—३०४२ ई० पू० प्रियव्रत शाखा ३८ वी पीढी मे समाप्त हो गई। उसी के साथ पाचवाँ रैवत मन्वन्तर काल भी समाप्त हो गया।

५—प्रियव्रत शाखा काल मे पाच मनु और ३५ प्रजापति हुये।

६—स्वायंभुव वंश की ५वीं पीढी मे जैनधर्म के आदि प्रवर्तक ऋषभदेव हुये।

७—प्रियव्रत-शाखा काल अर्थात् ९८० वर्षो के अन्तर्गत प्रजापतियों का राज्य-विस्तार कश्मीर से सिन्ध प्रदेश तक हुआ। पंजाब के 'हडप्पा' और सिन्ध प्रदेश के "मोहन जो दरो' उसी काल की तरफ इंगित करते है।

चाक्षुप मन्वन्तर काल

३०४२ ई० पू० से छठाँ, चाक्षुप मन्वन्तरकाल आरभ हुआ।

इस मन्वन्तर की प्रधान घटनाये—

१. ३०४२ ई० पू० के लगभग चाक्षुप-पुत्रो ने मध्य एशिया मे ईरान-पर्शिया आदि देशो पर विजय-पताका उडाई। वहा पर उनके पुत्रो ने अपने अपने नाम पर राजवंश तथा राजधानी स्थापित की।

२—कुछ दिनो के बाद विश्व विख्यात जलप्रलय हुआ। अर्थात भयकर बाढ आई, जिसमे आर्यो का बहुत कुछ विनष्ट हो गया।

३—जलप्रलय के समय मनुपुरी-सुषा से भाग कर आर्यवीर्यान (अजरबैजान)मे बसे।

४—२९३० ई० पू० पृथुवैन्य चालीसवाँ प्रजापति हुआ। उसने सर्व प्रथम अपने को 'राजा' घोषित किया।

(क) उसीने सुव्यवस्थित कृषिकार्य आरभ करवाया।

(ख) उसने भूमि को समथर यानी चौरस करवाया।

(ग) उसी काल मे राजा पृथु के नाम पर भूमि की सज्ञा 'पृथिवी' हुई।

५—इस मन्वन्तर काल मे ऋग्वेद के रचयिताओ की सख्या बढने लगी। यथा—वेन, पृथुवैन्य, हविर्द्धान, प्रचेतस, मरीचि-कश्यप तथा विवस्वान आदि।

६—२७६२ ई०पू० दक्षप्रजापति(४५)के समय स्वायंभुव मनु वंश समाप्त हो गया।

७—२७६२ ई० पू० चाक्षुप मन्वन्तर के अन्तिम काल मे दक्ष-पुत्री दिति, अदिति, दनु आदि से पुत्र दैत्य, आदित्य दानव आदि से नवीन सृष्टि और राजवंश का निर्माण होने लगा। मतलब यह कि सतयुग या चाक्षुप मन्वन्तर के अन्तिम चरण मे ही आदित्य देव तथा दैत्य दानव असुर-राक्षस के जन्म हुये।

यहाँ यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय आर्य इतिहास की बडी-बडी प्रधान घटनायें सतयुग के उत्तरार्द्ध और चाक्षुप मन्वन्तर काल मे ही हुई।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड पाँचवाँ

त्रेतायुग-भोगकाल १०६२ वर्ष

२९६२ ई० पू० से १७७० ई० पू० तक

सूर्य राजवंश

(सातवें मनुवैवस्वत से दाशरथी राम तक)

(४७+१) राजा मनुवैवस्वत

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश के अड़तालीसवें उत्तराधिकारी सातवें मनु राजा वैवस्वत हुये। पाश्चात्य विद्वानों के कथनानुसार मध्य एशिया से भारत में प्रवेश करने वाले प्रथम आर्य यही हैं। उनके पीछे अन्य भी आये और कुछ दिनों तक आते रहे।

गत खण्डों में पाठक सप्रमाण देख चुके हैं कि पुराण तथा महाभारत के अनुसार सतयुग की घटनायें भारतीय हैं। पाश्चात्यजन सतयुग का आरम्भ मनुवैवस्वत से ही लिखा करते हैं। 'प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास' नामक पुस्तक में (पृ० १९२) डा० रांगेय राघव ने भी पार्जीटर (एन्शियण्ट इण्डियन हिस्टोरीकल ट्रेडीशन) का हवाला देते हुये उसी का समर्थन किया है। ऐसा लिखते समय वे लोग यह भूल जाते हैं कि छै मनुओं के भोगकाल को सतयुग कहते हैं। प्रथम मनु स्वायम्भुव थे, जिनका समय ४०२२ ई० पू० है। छठें मनु चाक्षुप हुये, जिनका काल ३०४२ ई० पू० से आरम्भ हुआ। वैवस्वत तो सातवें मनु हैं, इसलिये इनके पहले ही सतयुग का भोगकाल समाप्त हो गया। सातवें मनु से त्रेता युग का आरम्भ हुआ है। इन बातों से स्पष्ट प्रमाणित है कि पाश्चात्यजनों तथा रांगेयराघव आदि भारतीयों का कथन प्रमाण रहित और तथ्यहीन है।

पंजाब में 'हड़प्पा' और सिन्ध में 'मोहन जो दरो' की खुदाई होने के बाद से पाश्चात्यजनों के विचार में भी परिवर्तन आने लगा है और वे लोग कहने लगे हैं

कि पर्शिया मे जाने के पहले भारतीय (जोराष्ट्रियन) भारत मे बस चुके थे (It can be now proved even by geographical evidence that Zorastrian had been settled in India before they emigrated to 'Persia'.—मैक्समूलर)।

पश्चिमी एशिया तक राज्य विस्तार करने के बाद भी प्रजापतियों तथा देवो ने अपनी भारतीय राष्ट्रियता का परित्याग कभी नही किया। इसीलिये वे सारी सतयुग की घटनायें भारतीय कही गई।

प्रथम आर्य 'राजा'

मनुर्वैवस्वत को प्रथम आर्य 'राजा' इसलिये कहा जाता है कि—आर्यकुल मे सर्वप्रथम वही 'राजपद' के स्थायी अधिष्ठाता हुये। इनसे पहले देवकुल का और देवकुल से पहले प्रजापति कुल का राज्य था। ४०वें प्रजापति पृथुवैन्य ने अपने को 'राजा' घोषित किया था, किन्तु वह 'राजपद' स्थायी नहीं हो सका बल्कि पृथु के बाद ही समाप्त हो गया। अतएव, उसको राजकुल का संस्थापक नही कहा गया।

मनुर्वैवस्वत के पूर्व भारत में आर्यराज्य

यह कहना कि मनुर्वैवस्वत से ही भारत में आर्य राज्य का श्रीगणेश हुआ—बिल्कुल निराधार और काल्पनिक है। उनसे पहले उन्हीं के पिता सूर्य का राज्य यहाँ जरूर था। यदि उनका राज्य यहाँ नहीं था तो उनके बडे काका (सूर्य के ज्येष्ठ भ्राता) वरुण ने सिन्धु नदी के पाट को चौडा किस प्रकार और किस लिये किया?[1] इसका उत्तर यही है कि जब उनका राज्य वहाँ था, तभी ऐसा किया—उपज वृद्धि के लिये। ऋग्वेद[2] मे लिखा है कि "इन्द्र ने अपनी महिमा से सिन्धु नदी को उत्तर की ओर प्रवाहित किया।"

इन्द्र को ऐसा करने का प्रयोजन क्या था? जरूर सिन्ध प्रदेश (भारत) मे उनका भी राज्य था। इन घटनाओं से निस्सन्देह मालूम होता है कि मनुर्वैवस्वत के पहले ही भारत मे वरुण, सूर्य तथा इन्द्रादि देवों का राज्य था। इनके अतिरिक्त अन्य आर्य राजा भी सिन्ध प्रदेश मे थे। जैसे 'भावयव्य' जो बहुत बडे याज्ञिक थे। इनके विषय मे ऋग्वेद का निम्न सूक्त देखिये-(१।१२६।१ ५)—

"अमन्दान्स्तोमान्प्र भरे मनीषा सिन्धावधि क्षियतो भाव्यस्य।
यो मे सहस्रममिमीत सवानतूर्तो राजा श्रव इच्छमान ॥१॥

---

१ प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे पथ सिन्धो यदाजॉ अभ्यद्रवस्त्वम् (ऋ० वे० १०।७५।२)।
२. 'सादञ्च सिन्धुमरिणान्महित्वा" (ऋ० वे० २।१५।६)।

शतं राज्ञो नाधमानस्य निष्कान्छतमश्वान्प्रयतान्सद्य आदम् ।
शतं कक्षीवाँ असुरस्य गोनाँ दिवि श्रवोऽजरमा ततान ॥२॥
उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता वधूमन्तो दश रथासो अस्थुः ।
षष्टिः सहस्रमनु गव्यमागात्सनत्कक्षीवाँ अभिपित्वे अह्नाम् ॥३॥
चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति ।
मदच्युतः कृशनावतो अत्यान्कक्षीवन्त उदमृक्षन्त पज्राः ॥४॥
पूर्वामनु प्रयतिमाददे वस्त्रीन्युक्ताँ अष्टावरिधायसो गाः ।
सुबन्धवो ये विश्या इव व्रा अनस्वन्तः श्रव ऐषन्त पज्राः ॥५॥

भावार्थ—मैं, सिन्धु नदी के तट पर वास करने वाले राजा 'भावयव्य' के लिये बुद्धि द्वारा स्तोत्र भेंट करता हूँ। उस राजा ने यश की इच्छा से मेरे निमित्त सहस्र यज्ञानुष्ठान किये है ॥१॥ मुझ कक्षीवान् ने भेंट करते हुए राजा से सौ स्वर्णहार, सौ सुन्दर अश्व और सौ गायें ग्रहण की। उस राजा का अक्षय यश आकाश तक फैल रहा है ॥२॥ स्वनय के दिये हुये विभिन्न वर्णों के अश्व और दश रथ, मुझे प्राप्त हुये। साठ हजार गौयें भी मिली, मुझ कक्षीवान ने ग्रहण कर अपने पिता को भेंट कर दिया ॥३॥ हजार गौओं की कतार के आगे दश रथ चले आये। स्वर्णाभूषणों से युक्त अश्वों को कक्षीवान् के पुत्र मलने लगे। ४॥ हे पज्र-वंशियो ! मैं प्रथम दान के अनुसार तुम्हारे लिये तीन जुते हुये रथ और आठ उत्तम गौयें लाया हूँ। कुटुम्ब वाले पज्रवंशी लोग शकट से युक्त होकर यश के इच्छुक हो ॥५॥ (ऋग्वेद १।१२६।मन्त्र १ से ५)।

इन्द्र और वरुण दोनों को ही ऋग्वेद मे 'सम्राट कहा गया है—"मैं, सम्राट इन्द्र और वरुण से रक्षा चाहता हूँ"—'इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आवृणे" (ऋग्वेद १।१७।१)।

देवों के पहले प्रजापतियो का राज्य था, जो पाठक पहले पढ चुके है।

मनुर्वैवस्वत दूरदर्शी और सर्वगुण सम्पन्न एक योग्य शासक थे। उन्होने देखा कि सप्त सिन्धव प्रदेश मे अपना राज्य-सचालन हो ही रहा है किन्तु पूर्वीय भारत अविकसित एव अरक्षित है। इसलिये कोशल-अयोध्या मे उन्होने अपनी राजधानी बनाई। अपने पिता के नाम पर 'सूर्य राजवंश' नाम रखा।

मनु को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम 'सुद्युम्न' पडा। कुछ वयस्क होने पर सुद्युम्न का यौन परिवर्तन हो गया। तब उसका नाम 'इला' पडा। अब वह मनु पुत्री इला के नाम से प्रसिद्ध होने लगी। इला का विवाह चन्द्रमा-सोम के

पुत्र बुध से हुआ, जिनकी माता बृहस्पति की पत्नी तारा थी। विवाह के समय इला को दहेज के रूप मे पिता की तरफ से ईरान में राज्य मिला, जिसका नाम 'इलावर्त्त' पड़ा।

मनु ने अपने दामाद बुध को प्रतिष्ठानपुर-प्रयाग मे बसाया। वही पर बुध ने अपने पिता चन्द्र के नाम पर 'चन्द्रवंश' राज्य की नीव डाली। उधर २७०० ई० पू० से ३४५ ई० पू० तक सुपा प्रदेश मे देवो (सुरों) का सुरपुर बना रहा। ६४५ ई०पू० असुर राजा वाणिपाल ने वैबीलोनिया और सुपा के 'इन्द्रावोगस' को जीत कर शाक द्वीप मे देवो की राजधानी इन्द्रासन को समाप्त कर दिया।

मनु और राजकुमार सुद्युम्न की कथा श्रीमद्भागवत (८।१३।०) मे विस्तार-पूर्वक है।

विवस्वान (सूर्य) के पुत्र मनु थे।[१] मनुष्यो के नेता मनु थे।[२] मनु का नाम सावर्णि मनु भी है।[३] मनु-पुत्र नाभानेदिष्ठ थे।[४] वैवस्वत के भाई यम थे।[५] मनु-पुत्री पर्शु ने बीस पुत्र उत्पन्न किये।[६]

मनु ने ऋग्वेद के सूक्तो की रचना की, इसलिये उनको राजर्षि कहा गया।[७]

इला और पर्शु के अतिरिक्त पुराणों के अनुसार मनुवैवस्वत के नौ पुत्र थे।[८] उनके नाम ये है—इक्ष्वाकु १, नृग २, धृष्ठ ३, शर्याति ४, नरिष्यन्त ५, नाभाग ६, अरिष्ठ ७, करुष ८ और पृषध्र ९। ये अत्यन्त लोक प्रसिद्ध और धर्मात्मा नौ पुत्र हैं (विष्णु पुराण, अंश ३, अध्याय १, श्लोक ३३-३४)। नृग का दूसरा नाम नृसिंह भी है। नाभाग का दूसरा नाम नाभानेदिष्ट है। नरिष्यन्त के पुत्र तृणविन्दु प्रात्य आन्ध्रालय (आस्ट्रेलिया) के महिदेव थे। जिनकी पुत्री इलविला का विवाह पुलस्त्य से हुआ, जिसका पुत्र विश्रवा हुआ। पृषध्र को प्राशु भी कहा गया है। कुछ और नामो मे भी हेर-फेर है।

जिस समय मनु ने सरयू नदी के इस पार अयोध्या मे अपनी आर्य राजधानी बनाई, उस समय सरयू नदी के उस पार 'अर्ण' और 'चित्ररथ' नामक राजा रहते

१ ऋ० वे० १०।६३।१। २. ऋ० वे० १०।६२।११। ३. ऋ० वे० १०।६२।८। ४. नाभानेदिष्ठो मानवः ऋ०वे० १०।६१। ५. वही—१०।६०।१०। ६. वही—१०।८६।२३। ७ ऋ०वे० ६।६२।५-६।६६।१२। ८. ब्रह्माण्ड iii ६०,२-३। वायु ८५,३-४। ब्रह्म ७,१-२। हरवंश-१०, ६१३-१४। लिंग-i, ६५,१७-१६। शिव-vii ६०, १-२। कुर्म-i, २०,४-६। अग्नि पुराण-२७२, ५-७।

थे। उन लोगों से वैवस्वत मनु का विवाद बढ़ने लगा। तब मनु ने इन्द्र को ससैन्य बुलाकर अर्ण और चैत्ररथ का संहार करवाया (उत त्या सद्य आर्या सरयो-रिन्द्र पारत। अर्णाचित्ररथावधी ॥ ऋ० वे० ४।३०।१८)। इस घटना से यह झलक निकलती है कि आदि काल में सप्त सिन्धव प्रदेश में आर्यों का राज्य था। परन्तु जब वे लोग पश्चिम एशिया की तरफ बढ़ने लगे—तब इधर पूर्वी भारत में उन्हीं के बन्धु-बान्धव अपना सर उठाने लगे। इसलिये इधर ही रहना मनु के लिये आवश्यक हो गया।

मनुवैवस्वत के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र इक्ष्वाकु दूसरी पीढ़ी में अयोध्या के राजा हुये। यह सूर्यवंश की मूल राजगद्दी हुई।

मनु-पुत्र शर्याति ने अपने पुत्र आनर्त के नाम पर गुजरात में खम्भात की खाड़ी के पास आनर्त राजवंश की स्थापना की। यह मुख्य सूर्यवंश की शाखा हुई।

मनु के एक पुत्र नाभानेदिष्ठ ने वर्त्तमान विहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला में एक राज्य की स्थापना की। उसी वंशवृक्ष में एक प्रसिद्ध 'विशाल' नामक राजा हुये, तब से उन्हीं के नाम पर 'वैशाली राज्य' प्रसिद्ध हुआ। उसी वैशाली में बहुत दिनों के बाद लिच्छवियों का जनतांत्रिक राज्य विख्यात हुआ। वैशाली राज्य सूर्य राजवंश की दूसरी शाखा थी।

मनु के एक पुत्र का नाम नृग-नृसिंह था। उन्होंने पश्चिम एशिया में वैबिलोनिया पर अपनी विजय-पताका फहराई। नृसिंह युद्ध-संचालन करने में बड़े बहादुर थे। 'डी-मार्गन मीशन' को वैबिलोनिया में एक प्राचीन मूर्ति मिली है, जिसके द्वारा नृसिंह की बहादुरी तथा सेना-संचालन का पता चलता है। भागवत पुराण (अध्याय ६४) की कथा से यह मालूम होता है कि 'नृग' को इन्द्र बनाया गया था। पीछे शापवश उनको गिरगिट बनाकर अन्धकूप में डाल दिया गया। इलाम के सुषिया प्रदेश में जिस स्थान को सुरपुर कहा जाता था, वहीं पर नृगवंशी रहा करते थे। उन्हीं को नृगिटो (Negrito) कहा गया है। यह नृगिटो जाति फारस की खाड़ी से भारतवर्ष तक फैली थी (पर्शिया का इतिहास, जिल्द १, पृष्ठ ५४,५५)।

विश्वामित्र के कुछ वंशजों को भारत से बहिष्कृत कर दिया गया था (एतरेय ब्राह्मण ७।४।१८)। ये बहिष्कृत कौशिकजन 'आन्ध्र' नामसे प्रसिद्ध हुये। और जहाँ जाकर बसे उस स्थान का नाम 'आन्ध्रालय' प्रसिद्ध हुआ। वही आन्ध्रालय पीछे आस्ट्रेलिया नाम से विख्यात हुआ। आधुनिक खोजों से पता चलता है।

आस्ट्रेलिया के मूल निवासियो को तथा भारतीय द्रविड, कोल, भील और सथालो की एक ही मूल भाषा है। उसी आन्ध्रालय मे नरिष्यन्त के पुत्र तृणविन्दु महिदेव (राजा) थे। उस समय भारत और आन्ध्रालय की भौगोलिक परिस्थिति आज की जैसी नही थी, वरन् भूमि सश्लिष्ठ थी। उसी काल मे महर्षि पुलस्त्य वहा गये और तृण विन्दु के अतिथि बने। उन दिनो राज सत्ता और धर्म सत्ता सभी आर्य-अनार्य जातियो मे सयुक्त थी। अधिकाश मे ऐसा ही था। महर्षि पुलस्त्य को तृणविन्दु न अपना जामाता बना कर वही रख लिया।

पुलस्त्य का पुन विश्रवा हुआ। जिसको उन्होन वेदज्ञ बना दिया। विश्रवा का पुन वैश्रवण हुआ। वैश्रवण को धनेश कुवेर का पद तथा एक पुष्पक विमान भी मिला। वह लका का लोकपाल हुआ।

पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा की दूसरी पत्नी सुमाली दैत्य की पुत्री कैकसी हुई। कैकसी से चार सन्तानें हुई—तीन पुत्र और एक पुत्री। पुत्रो मे रावण, कुम्भ कर्ण, विभीषण और पुत्री सूर्पनखा।

यह कथा वाल्मीकि रामायण की है। परन्तु काल का समन्वय नही जान पडता। वैवस्वत मनु के पुत्र नरिष्यन्त थे। उनका पुत्र तृण विन्दु था। तृणविन्दु ने अपनी पुत्री, पुलस्त्य को दी। पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा हुये। विश्रवा का पुत्र रावण हुआ। यही रावण और विभीषण आदि दाशरथी राम के समय होते है। पुराणो के अनुसार मनु की ६३वी पीढी मे राम हुये। हमारे विचार से ३९वी पीढ़ा मे होते है। अब पाठकगण विचार करें कि रावण और राम का समकालीन होना कहाँ तक सम्भव है? अर्थात् कदापि नही।

इन घटनाओ पर विचार करने मे यह मानना पडता है कि दाशरथी राम का समकालीन रावण इसी वश का कोई अन्य रावण नामधारी व्यक्ति था।

सातवें मनु—मनुवैवस्वत

दक्ष प्रजापति (४४) की पुत्री 'अदिति' थी। अदिति का विवाह मरीचि क पुत्र कश्यप से हुआ। उसी अदिति के कनिष्ट पुत्र का नाम विवस्वान-आदित्य-मित्र-सूर्य-विष्णु था। सूर्य पुन मनुवैवस्वत थे (महाभारत आदिपर्व ७०, ५।७०-८।९०-७। वायुपुराण ६७।८३। वालमीकि रामायण वालकाण्ड ५।२, ऋ० वे० १०।६३।१)। मनु स्वय राजर्षि थे। उन्होन अपने दो सूक्त अपने पुत्र नाभानेदिष्ट को दिय, जो उन्ही के नाम से प्रसिद्ध हैं (तैत्तिरीय सहिता, ३-१-९। मैत्रेय सहिता १-५-८। ऐतरेय ब्राह्मण ५।१४)।

विवस्वान के पुत्र श्राद्धदेव ही सातवें मनु (वैवस्वत) हैं (भागवत ८।१३।१)। वर्तमान मन्वन्तर ही उनका कार्यकाल है (भाग० ८।१३।१)।

मनु प्रथम आर्य राजा, प्रथम कर ग्रहण कर्त्ता, प्रथम दण्डविधान निर्माता तथा प्रथम नगर निर्माता थे (शतपथ ब्राह्मण १३।४।३।३। वाल्मीकि रामायण ५।२ अर्थशास्त्र-कौटिल्य)। ये अपने पिता विवस्वान के नाम पर वैवस्वतमनु और विमाता के नाम पर सावर्णिमनु के नाम से विख्यात है।

१ राजा मनु वैवस्वत (मुख्य सूर्य राजवंश—अयोध्या)

२. इक्ष्वाकु (अन्य आठ पुत्र भारत तथा ईरान-पर्शिया में शाखा राज्य के संस्थापक हुये)

राज्य काल २६६२ ई० पू० से २६३४ ई० पू० तक।

(४७ + २) राजा इक्ष्वाकु (२६३४ ई० पू० से २६०६ ई० पू० तक)।

मनु के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण यही उत्तराधिकारी दूसरी पीढ़ी में राजा हुये। इन्हीं से मुख्य सूर्य राजवंश कोशल-अयोध्या में चलने लगा। पुराणों के अनुसार इनके सौ पुत्र थे। किन्तु भारतीय आर्य राजवंश में दो ही के नाम आते है। एक विकुक्षी-शशाद और दूसरे नेमि या निमि। निमि स्वयं अपने को विदेह कहा करते थे। इन्होंने 'विदेह' राज्य की स्थापना की। वही पीछे मिथिला राज्य के नाम से विख्यात हुआ। इसी की उपशाखा साकास्य है। ऋग्वेद[१] में लिखा है कि "शत्रुओं को नाश करने वाले और ऐश्वर्यवान् राजा इक्ष्वाकु रक्षक कर्म में प्रसिद्ध है" अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों में इक्ष्वाकु को 'एक्काको' (Accaco) भी कहा गया है। इनके बाद इनके पुत्र विकुक्षी-शशाद तीसरी पीढ़ी में अयोध्या के राजा हुये।

(४७ + ३) राजा विकुक्षी-शशाद (२६०६ ई० पू० से २५७८ ई० पू० तक)।
इनके पुत्र कुकुत्स्थ-पुरंजय उत्तराधिकारी राजा हुये।
(४७ + ४) राजा कुकुत्स्थ-पुरंजय (२५७८ ई० पू० से २५५० ई० पू० तक)।
इन्होंने युद्ध में इन्द्र की सहायता की थी। इनके पुत्र अनेनस हुये।
(४७ + ५) राजा अनेनस (२५५० ई० पू० से २५२२ ई० पू० तक)।

१. "यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान्मराय्ये धते" (ऋ० वे० १०।६०।४)

(४७ + ६) राजा पृथु (२५२२ ई० पू० से २४९४ ई० पू० तक)।

(४७ + ७) राजा विष्टराश्व-विश्वराश्व (२४९४ ई० पू० से २४६६ ई० पू० तक)

(४७ + ८) राजा आर्द्र (२४६६ ई० पू० से २४३८ ई० पू० तक)।

(४७ + ९) राजायुवनाश्व (प्रथम) २४३८ ई० पू० से २४१० ई० पू० तक)।

(४७ + १०) राजा श्रावस्त-श्रीवस्त—२४१० ई० पू० से २३८२ ई० पू० तक।

इन्होंने अयोध्या से अलग श्रावस्ती नगर का निर्माण किया। वहीं पर इन्होंने अपनी राजधानी रखी थी। पीछे उत्तर कोशल की राजधानी यही हो गई। दाशरथी राम ने अपने पुत्र लव को यहाँ का राजा बनाया।

विशेष—पटना से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र 'प्रदीप' में दिनांक ११-१०-६४ को श्री के० के० मालवीय द्वारा लिखित एक निबन्ध प्रकाशित हुआ था—वह ज्यों का त्यों यहाँ दिया जाता है—

"श्रावस्ती—जहाँ के राजा भगवान राम के पुत्र लव थे। ढाई हजार वर्ष पूर्व भारत की छः प्रमुख महान नगरियों में यह सबसे वैभवशाली नगरी मानी जाती रही। जिनेन्द्र महावीर और भगवान बुद्ध की तपोभूमि होने का इसे गौरव प्राप्त है। लम्बे कालतक तो उसका सुदूर विदेशों से सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्ध रहा है, यहां जेतवन विहार के उस गंधकुटी का ध्वंसावशेष दर्शनीय है। जहाँ भगवान बुद्ध कभी निवास किया करते थे। उस बोधिवृक्ष की छाया में थोड़ी देर बैठिए, जहाँ बुद्ध कभी ध्यान मग्न हुआ करते थे। जैनियों के तीसरे तीर्थङ्कर श्री सम्भवनाथ के उस टूटे हुए मंदिर के फर्श पर बैठकर जेतवन की सुषमा को निहारिये। ढाई हजार वर्ष पूर्व के अतीत की एक अमूल्य झांकी, आपकी आंखों के सामने चलचित्र की भांति साकार हो उठेगी। एक क्षण के लिए ही यहां आपको एक विचित्र प्रकार के आरम्भिक शान्ति का अनुभव हुए बिना न रहेगा।

विष्णु पुराण के अनुसार, सूर्यवंशी राजा श्रीवस्त के द्वारा, श्रीवस्ती की स्थापना हुई थी। भगवान राम ने अपने पुत्र लव को यहाँ का शासक बनाया। यह उत्तर कौशल राज्य की राजधानी थी। बौद्धतथा जैन साहित्य में 'सावत्थि' या 'सावत्थिपुर' नाम से इस नगर की चर्चा मिलती है। ईस्वी पूर्व छठी शती के पहले की श्रावस्ती का इतिहास, विश्वसनीय नहीं है। भगवान बुद्ध तथा जिनेन्द्र

महावीर के जीवन से सम्बद्ध होने के कारण छठीं शती से यह नगर, इतिहास के प्रकाश में आता है।

बौद्धों का तीर्थ-स्थान

बौद्धधर्म के आठ तीर्थ-स्थानों में श्रावस्ती की गणना प्रमुख थी, क्योंकि यहाँ भगवान बुद्ध ने बडे-बडे चमत्कारो का प्रदर्शन किया था। बुद्ध के समय मे उत्तर कोशल का शासक प्रसेनजित था, वह बुद्ध का बड़ा भक्त था और बाद मे उसने बौद्ध धर्म भी ग्रहण कर लिया था। बौद्ध ग्रन्थों में प्रसेनजित के पुत्र कुमार जेत और श्रावस्ती के धनी सेठ (महासेठी : सुदत्त) की कथा मिलती है। सुदत्त का दूसरा नाम अनाथ पिंडक (अनाथों का पालन करने वाला) भी था। पहली ही भेंट मे वह भगवान बुद्ध का भक्त बन गया और उसने बौद्ध-धर्म भी स्वीकार कर लिया। उसकी इच्छा थी कि भगवान बुद्ध के लिये श्रावस्ती नगरी के निकट ही एक विहार का निर्माण कराये। इसके लिये नगर के दक्षिण राजकुमार जेत का उद्यान ही उसे उपयुक्त दिखायी पडा। राजकुमार जेत से जब सुदत्त ने उक्त भूमि देने की प्रार्थना की तो वह इस शर्त पर तैयार हुआ कि जितनी भूमि पर सुदत्त सोने के सिक्के बिछा कर देगा—बदले मे उतनी भूमि उसे प्राप्त हो जायगी।

सुदत्त ने बैल गाडियो पर स्वर्ण मुद्राए मँगायी और उन्हे भूमि पर बिछाकर अठारह करोड़ स्वर्ण-मुद्राओ मे उद्यान को खरीद लिया। फिर, यहाँ उसने विशाल जेतवन विहार का निर्माण कराया जो अनेक शालाओ, संथागारों एव दर्शनीयकुटियो से सुशोभित था। महात्मा बुद्ध को बुलाकर यह विहार उसने उन्हे अर्पित किया। बुद्ध का जेत वन विहार बहुत प्रिय था। यहाँ उन्होने पच्चीस वर्षों (चतुर्मास) निवास कर भिक्षुओ एव गृहस्थो को उपदेश दिये। उनके द्वारा ४१६ जातक कथाएँ एव अनेक सूत्र भी इसी स्थान पर कहे गये। इस विहार मे सैकडो भिक्षु निवास करते थे। गध कुटी मे भगवान बुद्ध स्वय निवास करते थे—अन्य कुटियो म 'करेरि कुटो', 'चदन माला', 'सलल घर' एव कौसम्ब कुटी प्रमुख थी।

प्रसिद्ध बुद्ध शिष्या विशाखा ने भगवान बुद्ध के निवास के लिये जेत वन के पूर्व म 'पूर्वाराम' नामक एक बृहत सथागार का निर्माण कराया। फाहियान और ह्वेनसाग दोनो चीनी यात्रियो ने इस मठ की प्रशसापूर्ण चर्चा की है। उन्होने लिखा है कि यह सथागार लकडी और पत्थर का बना था, और इस पर सत्ताइस करोड स्वर्ण-मुद्राएँ व्यय हुई थी।

अंगुलिमाल की घटना

श्रावस्ती के इतिहास मे 'अगुलिमाल' लुटेरे के बुद्ध द्वारा हृदय-परिवर्त्तन एव महत्वपूर्ण घटना है। अगुलिमाल एक अत्याचारी लुटेरा था, जो श्रावस्ती के निकटवर्ती इलाको मे आतक फैलाये हुये था। वह मनुष्यो का हत्या करता था, और वध किये हुए मनुष्य की एक अगुली काट कर अपनी माला मे पिरो लेता था। बुद्ध ने उसे बौद्ध धर्म की दीक्षा दी और उसने अपने उच्च कर्मों के प्रभाव से 'अर्हत' की पदवी प्राप्त की। "अगुलिमाल स्तूप" नाम से आज भी एक भव्य स्तूप उसके हृदय परिवर्त्तन की कहानी कहता हुआ खडा है। जैन जनश्रुति के अनुसार, श्रावस्ती एक बडे जैन तार्थ के रूप मे भी प्रसिद्ध था। इसका सम्बन्ध कई जैन तीर्थङ्करो के साथ रहा है।

जेतवन विहार और श्रावस्ती मे मन्दिरो, घारामो, कुटियो एव स्तूपो की बुनियाद एव पीठिकाएँ ही आज अवशिष्ट हैं। कनिंघम द्वारा खुदाई मे प्राप्त मूर्तियाँ, शिलालेख एव मिट्टी की मुहरें तथा ताम्र मुद्राएँ लखनऊ तथा कलकत्ता के सग्रहालयो मे सुरक्षित है।

जेत वन मे वने नये मन्दिरो मे, चीनियो तथा वर्मा वालो के मन्दिर दर्शनीय हैं, जिनम उन्ही देशो के बौद्ध भिक्षु निवास करते है। और बुद्ध की प्रतिमा को पूजन-अर्चन करते है।

यहाँ आने के लिये उत्तर पूर्वीय रेलवे के बलरामपुर स्टेशन से ११ मील पश्चिम, पक्की सड़क के मार्ग से ही अधिक सुविधा है। बहराइच से इसकी दूरी २९ मील है। बलरामपुर स सरकारी वस द्वारा आसानी से यहाँ पहुँचा जा सकता है। वैसे सवारियो म रिक्सा, टाँगा, इक्के भी सुलभ हैं। श्रावस्ती मे ठहरने के लिये जैनियों की एक धर्मशाला है। चीनियो एव बर्मियों की भी छोटी-छोटी धर्मशालाएँ हैं, जिनमे प्राय उन्ही देशो के यात्री ठहरते हैं। भगवान बुद्ध की पचीस सहस्त्री जयन्ती के अवसर पर देश-विदेश से आने वाले यात्रियो की सुविधा के लिये भारत-सरकार एव उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा आवश्यक प्रवन्ध किये गये थे। बलरामपुर से श्रावस्ती तक ११ मील की सड़क कालतार की बना दी गयी थी। जेत-वन विहार एव श्रावस्ती मे कुछ पार्क भी बनाये गये थे जिनमे वेंचें भी डाल दी गयी थी। स्तूपो, कुटियो एव सघारामों के पास हिन्दी और अग्रेजी मे कुछ परिचयात्मक एव सूचनात्मक बोर्ड भी लगा दिये गये थे।

श्रावस्ती एव जेत-वन विहार की देखरेख के लिये भारतसरकार के पुरातत्व-विभाग की ओर से दो चौकीदार नियुक्त है। भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा प्रकाशित 'श्रावस्ती' नामक हिन्दी और अंग्रेजी की पुस्तिकाएँ भी उन्ही चौकीदारो मे उपलब्ध हो सकती है। —उत्थान"

(४७+११) राजा बृहदश्व—२३८२ ई० पू० से २३५४ ई० पू० तक।

(४७+१२) राजा कुवलयाश्व—२३५४ ई० पू० से २३२६ ई० पू० तक। इन्होंने धुन्ध राक्षस को मारा।

(४७+१३) दृढाश्व—२३२६ ई० पू० से २२९८ ई० पू० तक।

(४७+१४) राजा प्रमोद—२२९८ ई० पू० से २२७० ई० पू० तक।

(४७+१५) राजा हर्यश्व—२२७० ई० पू० से २२४२ ई० तक।

(४७+१६) राजा निकुम्भ—२२४२ ई० पू० से२२१४ ई० पू० तक।

(४७+१७) राजा सहताश्व—२२१४ ई० पू० से २१८६ ई० पू० तक।

(४७+१८) राजा अकृसाश्व—२१८६ ई० पू० से २१५८ ई० पू० तक।

(४७+१९) राजा प्रसेनजित—२१५८ ई० पू० से २१३० ई० पू० तक।

(४७+२०) राजा युवनाश्व (द्वितीय)—२१३० ई० पू० से २१०२ ई० पू० तक। यह बहुत बडे यज्ञ कर्ता हुये। इनके पुत्र मानधाता उत्तराधिकारी राजा हुये।

(४७+२१) राजा मानधाता—मानधातृ—२१०२ ई० पू० से २०७४ ई० पू० तक। इन्होने अपने को चक्रवर्ति घोषित कर दिया। इनका विवाह शशिबिन्दु पौरव महाराज की पुत्री बिन्दुमती से हुआ था। इन्होने लका, अफ्रीका (=कुशद्वीप =शिवदान द्वीप) तथा दक्षिण महासागर के द्वीप समूहो को जीता था (महाभारत iii, १२६, १०४, ६२। vii, ६२, २२८१, २। मथुरा के असुर राजा ने वन मे एकान्त पाकर इनकी हत्या कर दी) इनके पुत्र पुरुकुत्स थे। वही उत्तराधिकारी हुये।

(४७+२२) राजा पुरुकुत्स—२०७४ ई० पू० से २०४६ ई० पू० तक। यह वैदिक नरेश है (शतपथ ब्राह्मण xiii, ५, ४५,) पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु थे (ऋग्वेद, ५।३३।८)। यह और इनके पुत्र त्रसदस्यु अपना गोत्र बदल कर अंगिरस गोत्र मे सम्मिलित हो गये (अंगिरा त्रसदस्युश्च पुरुकुत्सस्तथैवच—मत्स्यपुराण) इन्होने अश्वमेध यज्ञ किया (शतपथ ब्राह्मण, १४।५।४।५) यह मंत्र द्रष्टा है (ऋग्वेद ४।४२—५।२७)।

(४७ + २३) राजा त्रसदस्यु, २०४६ ई० पू० से २०१८ ई० पू० तक। यह भी वैदिक नरेश हुये (शतपथ ब्राह्मण xiii, ५।४५) यह भी मन्त्र द्रष्टा हुये (ऋ० वे० ५।२७। इनके हजार पुत्र थे (ताण्डय ब्राह्मण ४।४२, २५।१६।३)। त्रसदस्यु इन्द्र के समान शत्रुओं के नाशक हुए और अर्द्ध देवत्व के भी अधिकारी हुये (त आयजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम् ॥ ऋ० वे० ४।४२।८)

त्रसदस्यु का कहना था कि— 'हम क्षत्रिय हैं। सब मनुष्यों के हम स्वामी हैं। हमारा राष्ट्र दो प्रकार का है। जैसे सब देवता हमारे है, वैसे ही सम्पूर्ण प्रजा-जन भी हमारे ही है। हम सुन्दर रूपवाले एव वरुण के समान यशस्वी है। देवता हमारे यज्ञ की रक्षा करते है''।

मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य विश्वायोर्विश्वे अमृतायथा नः ।
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः॥१॥ ऋग्वेद ४।४२।१)

यहां पर पहले ही शब्दो के अनुसार अर्थ दिया जा चुका है। अब आप उनका विशेषार्थ देखिये—जिन लोगो का कहना है कि आर्य मध्य एशिया मे यहां आये थे उन्ही लोगो का उत्तर इस मन्त्र मे निहित है। राजा त्रसदस्यु के कहने का स्पष्ट भाव यह है कि 'हमारा राष्ट्र अर्थात् राज्य दो प्रकार का है। एक ऐसा राष्ट्र है जहा देव (आदित्य-इन्द्रादि) वास करते है यानी अरब, ईरान-पर्शिया आदि। दूसरे प्रकार का यहां है जहां हमारी प्रजा वास करती है। राजा त्रसदस्यु के ऐसा कहने का स्पष्ट अभिप्राय यही है कि हमारा राष्ट्र यहां से मध्य एशिया तक है। जिसके अन्दर हम क्षत्रिय राजा तथा वरुणादि देवगण और प्रजा-जन रहते है।त्रसदस्यु के पुत्र सभत-सभूत उत्तराधिकारी राजा हुये।

(४७ + २४) राजा सभत-सभूत—२०१८ ई० पू० से १९९० ई० पू० तक।

विशेष—पुराण और पार्जीटर के मतानुसार अनरण्य २५, त्रसदस्यु (द्वितीय) २६, हर्यश्व (द्वितीय) २७, वसुमन-वसुमनस २८, त्रिधनवन २९, त्रैय्यारुण ३०-३१, सत्यव्रत-त्रिशकु ३२, हरिश्चन्द्र ३३, रोहित ३४, हरित ३५, विजय ३६ हैं। हमारे विचार से इन लोगों की एक अलग शाखा चली है। सूर्यवश मे ये लोग कोशल-अयोध्या के राजा नही हुये है। आचार्य चतुरसेन तथा डा०प्रधान ने भी ऐसा ही मत प्रकट किया है। आगे सूर्यवश की 'शाखा' देखिये।

(४७ + २५) राजा रुरुक—१९९० ई० पू० से १९६२ ई० पू० तक।
(४७ + २६) राजा वृक—१९६२ ई० पू० से १९३४ ई० पू० तक।
(४७ + २७) राजाबृत—१९३४ ई० पू० से १९०६ ई० पू० तक।

(४७ + २८) राजा नाभाग— १९०६ ई०पू० से १८७८ ई०पू० तक।

इन्होंने वैश्या कन्या से विवाह कर लिया था।

(४७ + २९) राजा अम्बरीष—१८७८ ई० पू० से १८५० ई० पू० तक।

यह बहुत बड़े योद्धा थे।

(४७ + ३०) राजा सिन्धु द्वीप—१८५० ई० पू० से १८२२ ई० पू० तक।

इन्ही के राजत्वकाल मे हरिश्चन्द्र शाखा राज्य की स्थापना हुई। उत्तर कोशल के भाई बन्दो की यह शाखा कान्यकुब्ज के आस-पास, कही स्थापित हुई थी।

(४७ + ३१) राजा शतरथ-कृतशर्मन—१८२२ ई० पू० से १७९४ ई०पू० तक।

(डा० प्रधान का कथन है कि 'कृतशर्मन' ३१वाँ राजा था)।

(४७ + ३२) राजा विश्वशर्मन—१७९४ ई० पू० से १७६६ ई० पू० तक।

(४७ + ३३) राजा विश्व मह (प्रथम)—विश्व महत (डा० प्रधान) १७६६ ई० पू० से १७३८ ई० पू० तक।

(४७ + ३४) राजा दिलीप—खट्वाग—१७३८ ई०पू० से १७१० ई०पू० तक।

यह प्रतापी राजा हुये।

(४७ + ३५) राजा दीर्घबाहु—१७१० ई० पू० से १६८२ ई० पू० तक।

यह पैतीसवी पीढी मे राजा हुये। इनके समय मे दक्षिण कोशल सूर्य राजवंश की एक शाखा स्थापित हुई। वह वर्तमान रायपुर, बिलासपुर तथा सम्भलपुर जिलो मे थी। उसकी राजधानी रायपुर जिले मे 'श्रीपुर' थी। परम प्रसिद्ध राजा ऋतुपर्ण इसी शाखा के थे। कोशल-अयोध्या के नही। यही नैषध राजा नल रहते थे। इस शाखा मे सात राजे हुये। पुराणो के कथनानुसार श्री पार्जीटर ने उन सातो को मूल सूर्यवंश मे मिला लिया है। उनके मतानुसार पीढियों की संख्या इस प्रकार होती हैं— राजा अयुतायुस ५०, ऋतुपर्णा ५१, सर्वकाम ५२, सुदास ५३, कल्मापपाद ५४, अश्मक ५५ मालक-मूलक ५६। ये कुल सात राजे हुये। ये सभी शाखा मे हैं। मूल सूर्यवंश मे नही।

(४७ + ३६) राजा रघु—१६८२ ई० पू० से १६५४ ई० पू० तक। ये प्रतापी राजा हुये।

(४७ + ३७) राजा अज—१६५४ ई० पू० से १६२६ ई० पू० तक। यह भी प्रतापी नरेश हुये। ऋग्वेद (७।१८।१९) मे लिखा है कि "जब इन्द्र ने शम्बर का सहार किया तब शिग्रु, यक्षु और अज ने भी इन्द्र को उपहार प्रस्तुत

किये (अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च वलिं शीर्षाणि जभ्रु रश्व्यानि ॥ ऋ० वे० ७।१८।१९) ।

(४७ + ३८) राजा दशरथ—१६२६ ई० पू० से १५९८ ई० पू० तक ।

इनके समय मे मध्यभारत मे एक और सूर्यवशी राज्य की शाखा स्थापित हुई । जिसमे राजा सगर और भगीरथ प्रसिद्ध हुये । इस शाखा मे कुल छ राजाओ का पता चलता है । श्री पार्जीटर ने इनको भी मूल सूर्यवश मे मिला दिया है । पुराणो मे भी ऐसा ही है । उनके अनुसार उनकी पीढियाँ इस प्रकार है—बाहु (असित) ३९, सगर ४०-४१, असमजस ४२, अशुमन्त ४३, दिलीप (प्रथम) ४४, भगीरथ ४५ ।

सिन्धु द्वीप (३०) के समय मे हरिश्चन्द्र वाली जो शाखा चली उसमे ११ राजा हुये ।

दूसरी शाखा दीर्घबाहु (३५) के समय मे जो चली, उसम ७ राजे हुये ।

तीसरी शाखा जो दशरथ के समय म चली उसम छ राजे हुये । इस प्रकार तीनो शाखाओ को मिलाकर (११ + ७ + ६ =)२४ राजे हुये ।

सूर्यवश की मूल शाखा मे ये २४ जोड देने से ६३ पीढियाँ हो जाती है । पुराणो मे यही ६३ पीढियाँ है । पार्जीटर न भी पुराणो का ही अनुसरण किया है ।

उपर्युक्त ६३ पीढियाँ यदि ठीक मानी जायें तो चन्द्रवशी राजाओ के साथ ऐतिहासिक घटनाओ की तुलना करने मे बहुत अन्तर पड जाता है । प्रसिद्ध पुरुषो की समकालीनता नष्ट हो जाती है । ऐसा जान पडता है कि गुप्तकाल मे जब पुराणो का सपादन हुआ तभी ये भूलें हुई है । (ऐसा ही विचार डा० सीतानाथ प्रधान तथा आचार्य चतुरसेन का भी है ।)

६३ पीढियो मे से २४ हटा देने पर ३९ पीढियाँ शुद्ध बन जाती हैं । जो ऐतिहासिक घटनाओ की समानता रखती है । दशरथ के विषय मे पौराणिक कथाए तो पाठक जानते ही है । इनके चार पुत्र थे—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न । राम अपने पिता के स्वर्गवास, रावण वध तथा बनवास के बाद उत्तराधिकारी अयोध्या के राजा हुये ।

(४७ + ३९ =) ८६, राजा राम

(भोगकाल—१५७० ई० पू० तक)

श्रीराम के राज्यकाल तक त्रेता युग माना जाता है । राम-कथा प्राय सभी जानते हैं । आर्य राजवश मे अनेक प्रतापी राजे हो चुके हैं । किन्तु राम का स्थान सर्वोच्च है । इसका कारण यह है कि उनका चरित्र अत्यन्त उदात्त और

दैवीगुणों से परिपूर्ण है। वे आदर्श-पुत्र, पति, पिता, बन्धु, मित्र और प्रजा-रुचि पालक राजा रहे। अपने जीवन पर्यन्त मानव-आदर्श पर अटल रहे। उनका सिद्धान्त आदर्श-कर्तव्य पर आधारित था। उसी पथ पर जीवन-पर्यन्त चलते रहे।

श्रीराम-जन्मोत्सव आजतक प्रतिवर्ष चैत्रशुक्ल नवमी को मनाया जाता है। ये चार भाई थे—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। राम, लक्ष्मण की शिक्षा-दीक्षा विश्वामित्र के सिद्धाश्रम में हुई। वहीं उन लोगों ने शस्त्रास्त्र की शिक्षा में निपुणता प्राप्त की। वहीं उन्होंने तारिका राक्षसी और सुबाहु को मारा। मारीचि को पराजित किया। तदोपरान्त मिथिला के राजा जनक सीरध्वज के यहाँ गये। वहाँ धनुष भंग कर सीता का पाणिग्रहण किया। उसी समय सीरध्वज की भतीजियों से उनके तीनों भाइयों के विवाह हो गये। तदोपरान्त राम सपत्नीक कभी अयोध्या और कभी ससुराल में रहने लगे। इस प्रकार बारह वर्ष व्यतीत हो गये।

एक समय की बात है कि राजा दशरथ के मन में राम को युवराज पद देने की इच्छा हुई। इसलिये अभिषेक की तैयारी होने लगी। उस समय भरत और शत्रुघ्न ननिहाल में थे। इसलिये उनकी माता कैकई के दिल में यह राज्याभिषेक की तैयारी दुखद मालूम होने लगी।

इसका परिणाम यह हुआ कि राम की विमाता कैकई ने अपनी दासी मन्थरा के कुपरामर्श से पूर्वदत्त वरों के आधार पर चौदह वर्ष के लिये राम वनवास और भरत के लिये राज्य, राजा दशरथ से माँग लिया।

रामने विमाता की अभिलाषा-पूर्ति के लिये सहर्ष वन यात्रा की, साथ में लक्ष्मण और सीता भी गईं।

अठारह वर्ष की उम्र में राम विवाह हुआ। विवाहोपरान्त बारह वर्ष तक अयोध्या तथा जनकपुर में वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। तीस वर्ष की उम्र में वनयात्रा हुई। वनयात्रा काल में दस मास चित्रकूट रहे। बारह वर्ष पंचवटी में निवास किया। राम रावण युद्ध में लगभग दस मास व्यतीत हुआ। पन्द्रहवें वर्ष के ठीक प्रथम दिन नन्दिग्राम में भरत से मिले। उस समय चौवालीस वर्ष की उनकी आयु हो चुकी थी।

अयोध्या लौटने पर राजगद्दी तो मिली परन्तु सीता को त्यागना पड़ा। सन्देहात्मक घटनावश लक्ष्मण से भी मतभेद हुआ। जिससे दुखी हो लक्ष्मण को सरयूगर्भ में जलमग्न हो प्राणघात करना पड़ा। उसी दुःख से दुखी हो राम, भरत, शत्रुघ्न तीनों भाई सरयु के गुप्ततार घाट में लक्ष्मण के अनुगामी हुये।

राम के द्वारा राज्याभिषेक

कुश—राम ने अपने ज्येष्ठ पुत्र कुश को युवराज बनाया (पद्मपुराण, vi, २७१-७४-५५) यानी अयोध्या के उत्तराधिकारी। कुश ने विन्ध्य के दक्षिणाचल में कुशस्थली में भी एक राज्य की स्थापना की। कुछ दिनों के बाद विभीषण की सम्मति से अफ्रीका में भी उन्होंने अपना राज्य स्थापित किया। तभी से अफ्रीका का नाम 'कुश द्वीप' पड़ा (अफ्रीकाद्वीप = कुशद्वीप—'टाड राजस्थान')।

लव—राम ने अपने पुत्र लव को श्रावस्ती का राजा बनाया। तभी से श्रावस्ती उत्तर कोशल की राजधानी के नाम से प्रसिद्ध हुई। राम ने ही कोशल का बटवारा कर दिया। लव ने 'लाहौर' (लवकोट) का निर्माण किया। ये दोनों राम के यमज पुत्र थे।

पुष्कर और तक्ष—ये दोनों भरत के पुत्र थे। तक्ष ने तक्षशिला में अपना राज्य स्थापित किया। पुष्कर का राज्य पुष्करावती में हुआ (वायु ८८। विष्णु iv, ४,४७। पद्म, V, ३५-२३-४, vi २७१,१०। अग्नि पु० ११,७-८)।

अंगद और चन्द्रसेन-चन्द्रकेतु—इनके पिता लक्ष्मण थे। अंगद मल्लदेश और चन्द्रकेतु चन्द्रावती के राजा हुए (वायु ८८, १८७,८। ब्रह्माण्ड iii, ६३,१८८-९। विष्णु vi, ४,४७)। यह स्थान हिमाचल प्रदेश में था)।

सुबाहु और शत्रुघाती—ये दोनों शत्रुघ्न के पुत्र थे। सुबाहु को मथुरा का और शत्रुघाती को विदिशा का राज्य मिला।

राम के द्वारा ये आठ राज्याभिषेक हुये। सुग्रीव का राज्याभिषेक पहले ही हो चुका था। रावण वध के बाद विभीषण का राजतिलक हुआ ही था। इन सबों को देखने से विदित होता है कि राम ने अपने बाहुबल से दस राजतिलक किये। इनके अतिरिक्त राम की मित्र शक्तियां ये थीं—अंग, वंग, मत्स्य, शृङ्गवेरपुर, काशी, सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, दक्षिण कोशल, किष्किन्धा और लंका आदि।

राम-प्रभाव

लंका-विजय के पश्चात् एशिया तथा योरप में सर्वत्र राम-प्रभाव जम गया। जैसे यहां पर बच्चों के अनेक नाम 'राम' शब्द से आरम्भ होने लगे, वैसे ही उस समय विदेशों में भी होने लगे। वैसे, नाम तो अनेक हैं किन्तु उनमें से उदाहरण स्वरूप कुछ यहाँ दिये जाते हैं—

Ramelton, Ramsden, Ramo Island, Rame, Ramar, Ramstadt. Ramsele, Ramo, Sitasova. Ramble, Ramsdorf.

ऋग्वेद में राम की उपेक्षा

पाठक यह जानकर आश्चर्य चकित होंगे कि दशरथ और राम की चर्चा ऋग्वेद मे नही है। डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित कई लेखकों की सांस्कृतिक पुस्तकें पढने का सौभाग्य हमें मिला, किन्तु किसी मे इसका सन्तोषजनक उत्तर नही मिला। एक विद्वान लेखक ने अपनी पुस्तक मे इसका उत्तर यह लिखा हैं कि—"राम के पूर्व ही ऋग्वेद की रचना समाप्त हो गई थी, इसलिये उनकी चर्चा नही की गई।"

"सबसे नये अन्तिम युधिष्ठिर के समकालीन, खाण्डव दाह से बचे हुये जरितर, द्रोण तथा नारायण हैं" (ये विचार आचार्य चतुर सेन के है—व० र० उ० अर्थ-भाष्यम पृ.२१४)।

राजा शान्तनु के पुरोहित 'देवापि' थे(ऋ०वे० १०।९८।७)।ऋषिसेन के पुत्र देवापि हुये (ऋ०वे०१०।९८)ऋग्वेद के दशवें मण्डल मे ९८वें सूक्त की रचना देवापि ने की है। अर्थात् उसके मन्त्र द्रष्टा है। यहां पर पाठक स्वयं विचार करें कि राजा शान्तनु के समय तक जब ऋग्वेद के सूक्तों की रचना होती रही, तब राम से पूर्व ही ऋग्वेद की रचना कैसे समाप्त हो गई ? अर्थात् नही।

ऋग्वेद मे 'सीता' (४।५७।६-७), 'लक्ष्मण' (५।३३।१०), 'राम' (X ९३।१४), 'दशरथ' (II २७।५) आदि शब्दो का प्रयोग है। परन्तु वे अयोध्या से सम्बन्धित नही हैं। देखिये ऋग्वेदिक 'सीता' का अर्थ—"हे सीते ! तुम सौभाग्यवती हो। तुम पृथ्वी के नीचे जानेवाली हो। तुम्हारे गुणो की हम प्रशंसा करते है, क्योंकि तुम सुन्दर सौभाग्य को प्रदान करती हो। सुन्दर फल तुम देने मे समर्थ हो (सीता हलके अग्रभाग अर्थात् फाली को कहते हैं) ॥६॥ इन्द्रदेव सीता को ग्रहण करें। पूषा उसे भले प्रकार पकडें, जिससे पृथ्वी जल और अन्न से सम्पन्न होकर उत्तरोत्तर समृद्धि को प्राप्त हो ॥७॥

अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा।
यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलासति ॥६॥
इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥७॥ (ऋग्वेद ४।५७।६-७)।

ऐसे ही लक्ष्मण, राम तथा दशरथ भी अन्यान्य अर्थ-बोधक शब्द हैं।

राम-परिचय

राम का पूर्ण परिचय बाल्मीकि रामायण से प्राप्त होता है। इसके बाद ब्रह्मपुराण १५४, महाभारत वनपर्व, विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण और श्रीमद्भागवत मे है।

राम मूर्त्ति-पूजा

यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता कि 'राम' को ईश्वर का अवतार कब से माना जाने लगा। महाभारत के बहुत दिनो बाद तक भगवान के रूप मे राम का वर्णन अबतक अप्राप्त है।

महाकवि भास का काल, पहली शती ई० पू० कहा जाता है। भासकृत 'प्रतिमा' नाटक से राम का अवतारिक वर्णन मिलने लगता है। तब से बराबर उनका प्रभाव बढता ही गया। यह समझ मे नही आता कि किसी न किसी रूप मे राम का प्रभाव सम्पूर्ण भूमण्डल मे किस प्रकार फैल गया। इसमे सन्देह नही कि राम मे अगाध दैवीशक्ति थी। जिसका सुपरिणाम आजतक वर्त्तमान है। रामराज्य की खोज मे आजतक सम्पूर्ण विश्व है।

बाल्मीकि रामायण

कहा जाता है कि बाल्मीकि रामायण, राम के जीवन काल मे ही लिखी गयी। परन्तु आजकल के गवेषको का कहना है कि बुद्ध और पाणिनि से पूर्व की रचना जरूर है मगर सातवी शताब्दी ई० पू० से आगे की नही। इस प्रकार बाल्मीकि रामायण की रचना, आज से लगभग २६०० वर्ष पहले की है। बाल्मीकि रामायण के दो काण्ड, बाल और उत्तर पीछे से मिलाये गये—ऐसा गवेषको का मत है।

लंका (ताम्रपर्णी)

श्रीराम ने लंकापुरी मे जाकर रावण से युद्ध किया। उसी युद्ध मे विजयी होने के पश्चात् उनका गुणगान सम्पूर्ण विश्व मे होने लगा। यहाँ पर लंका का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है।

लंका का निर्माण

लगभग २७१२ ई० पू० की घटना है। जिसको आज से (२७१२ + १९६५ =)४६७७ वर्ष पूर्व कह सकते हैं। दक्षिण समुद्र तटवर्ती त्रिकूट सुवेल पर्वत पर

एक नगर का नवीन निर्माण हुआ। उसी का नाम लंका पड़ा। उसकी चौड़ाई सौ-सवा सौ कोस और लम्बाई चार सौ कोस की थी। देवों और असुरों का आरम्भिक काल था। उस समय दैत्यराज 'बलि' भी सुचारु रूप से अपना राज्य संचालन कर रहे थे। माली, सुमाली और माल्यवान नामक तीन प्रसिद्ध दैत्य उनके सेनापति थे। वे तीनों सहोदर भाई युद्ध-संचालन में परम प्रवीण थे। उन्हीं तीनों भाइयों ने मिलकर लंका नगरी का निर्माण अपने लिये किया था। उस समय स्वर्ण-खान भी उन्हीं लोगों के अधिकार में थी, इसलिये लंका को स्वर्ण से सुसज्जित करने में विशेष कठिनाई भी नहीं पड़ी। उसी समय लंका धन-वैभव से सम्पन्न एक दर्शनीय नगरी बन गई। उसी लंका का प्राचीन नाम ताम्रपर्णी भी कहा जाता है।

माली, सुमाली और माल्यवान्

दैत्यकुल में हेति और प्रहेति नामक दो प्रसिद्ध व्यक्ति थे। हेति ने 'भया' का पाणिग्रहण किया, जो काल दैत्य की बहन थी। भया के गर्भ से हेति का पुत्र विद्युत्केश हुआ। जिसका व्याह संध्या की पुत्री सालकटंकटा से हुआ। विद्युत्केश के पुत्र का नाम 'सुकेश' पड़ा, जिसका विवाह वेदवती से हुआ जो विश्वावसु गन्धर्व की पुत्री थी। उसी वेदवती और सुकेश के पुत्र माली, सुमाली और माल्यवान् हुये। तीनों भाइयों का विवाह नर्मदा गन्धर्वी की तीन पुत्रियों से हुआ। माली को चार पुत्ररत्न हुये। सुमाली को ग्यारह पुत्र और चार पुत्रियाँ हुईं। माल्यवान को सात पुत्र और एक पुत्री हुई। इस प्रकार इन लोगों का पारिवारिक जीवन सुखमय व्यतीत होने लगा। धन-वैभव का तो कुछ अभाव था ही नहीं। 'लंका' चारों तरफ प्रसिद्ध हो गई।

लंका-पतन

कुछ दिनों के बाद लंका का पतन उस समय हुआ, जिस समय सूर्य-विष्णु के साथ दैत्यराज बलि का युद्ध छिड़ गया। उसी युद्ध में राजा बलि देवों के बन्दी बन गये। माली सेनापति की जीवन-लीला उसी समरभूमि में समाप्त हो गई। सुमाली और माल्यवान् जीवित तो बचे मगर भय से पाताल लोक में भाग गये (देखिये—वाल्मीकि रामायण उत्तर कांड)। सुमाली ने अफ्रीका के पूर्वी भाग में अपना राज्य स्थापित किया, जो सुमाली लैण्ड के नाम से विख्यात है। अब इधर लंका विरान हो गई।

लंका में कुबेर

वर्त्तमान आस्ट्रेलिया का अति प्राचीन नाम आन्ध्रालय था। उस समय लंका और मेडागास्कर, भारत को आन्ध्रालय से मिलाता था। मतलब यह कि उस समय की भौगोलिक परिस्थिति आज से भिन्न थी। उस आन्ध्रालय के महिदेव (राजा) तृणविन्दु थे। उसी काल मे महर्षि पुलस्त्य किशोरावस्था मे ही वहाँ पहुँच गये। जो वेदर्षि और सुयोग्य आर्य, देवकुल के थे।

महिदेव तृणविन्दु[1] की एक पुत्री थी, जो विवाह-योग्य हो गई थी। महिदेव ने उसके योग्य वर पुलस्त्य को समझा। पुलस्त्य के सहमत हो जाने पर वही विवाह हो गया। तदोपरान्त राज्य भी मिल गया। इसी स्त्री से पुलस्त्य को 'विश्रवा' नामक पुत्ररत्न हुआ। अपने पुत्र को उन्होने प्रकाण्ड पण्डित बना दिया।

विश्रवा का विवाह भरद्वाज की पुत्री से हुआ। उनके पुत्र का नाम वैश्रवण पडा। वह वैश्रवण परम तेजस्वी, विद्वान तथा बहादुर तरुण हुआ। उसी तरुण वैश्रवण को धनेश कुबेर का पद मिला। पुष्पक विमान भी मिला। उसके बाद लोकपाल बनाकर लका मे भेज दिया गया। अब धनेश कुबेर लका का सर्व-सर्वा बनकर चैन की बशी बजाने लगे।

जिस समय वैश्रवण धनेश कुबेर लोकपाल बनकर लका मे गये थे—उस समय वह सूनी-विरान पडी थी। क्योंकि सुमाली वहाँ से पहले ही भाग चुका था। यद्यपि लका मे दृढ-दुर्ग, अस्त्र-शस्त्र, अन्न-वस्त्र तथा चारो तरफ खाई इत्यादि किसी चीज की कमी नही थी, तथापि विरान होने के कारण श्रीहीन मालूम होती थी। उसी काल मे कुबेर का पदार्पण हुआ। इन्होने पुनः देव, गन्धर्व, अप्सरस, यक्ष, असुर तथा दानवो को भी आमन्त्रित कर बसाया। अब पुनः लका मे बसन्तऋतु का राज्य हो गया (वाल्मीकि रामायण, उत्तर काण्ड)।

सुमाली की अभिलाषा

सुमाली अफ्रीका मे सुमालीलैंड की स्थापना कर शान्त नही हुआ। लंकापुरी की ममता उसके हृदय मे सदा टीस मारा करती थी। इसलिये मन ही मन इसकी चिन्ता किया करता था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पुनः इस तरफ आया। उस समय अविवाहित परमसुन्दरी और राजनीतिमे निपुण उसकी एक पुत्री थी, जिसका नाम कैकसी था।

---

१. मनु-पुत्र नरिष्यन्त का पुत्र 'तृणबिन्दु' था। उसकी पुत्री 'इलविला' थी।

सुमाली के विचार मे यह बात आई कि किसी प्रकार कैकसी का विवाह पुलस्त्य कुल मे करके ही लाभ उठाया जा सकता है। पुलस्त्य-पुत्र विश्रवा का विवाह यद्यपि हो चुका था तथापि इसने कैकसी का विवाह उनसे ही कर दिया।

अब सुमाली अपने दौहित्र की प्रतीक्षा करने लगा। दैवयोग से कैकसी की कोख से तीन पुत्र और एक पुत्री का जन्म हुआ। जिनका नाम रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण और सूर्पनखा पडा। ये तीनो वैश्रवण-धनेश-कुबेर-दिकपाल के सौतेले भाई हुये।

सुमाली की अभिलाषा पूर्ण

जब रावण तरुण हुआ तब उसका सलाहकार नाना सुमाली हुआ। सुमाली-पुत्र प्रहस्त, अकम्पन और माल्यवान् के पुत्र विरुपाक्ष, मरीचि आदि रावण के चार ममेरे भाई मन्त्री हुये। उस समय दैत्य-दानवो की सेना पुन तैयार की गई। उस समय तक सभवत. वरुण, सूर्य-विष्णु आदि जीवित नही थे। इसलिये देवो का भय भी कुछ कम हो गया था। रावण ने अनुकूल समय समझकर आन्ध्रालय से छोटे-छोटे द्वीप समूहो को जीतता हुआ लका तक पहुँचा। लका मे उसके सौतेले भाई धनेश कुबेर राज्य कर रहे थे। वहाँ पर उस समय उसके ममेरे भाइयो ने कूटनीति से काम लिया। परिणाम यह निकला कि धनेश कुबेर शान्तिपूर्वक लका छोडकर चले गये और रावण का राज्य वहाँ स्थापित हो गया। धनेश कुबेर अपने पिता की आज्ञा मानकर वहाँ से कैलाश पर्वत पर मन्दाकिनी के तट पर चले गये। वही उन्होने पुन अपनी राजधानी बनाई।

विशेष—लका और रावण की सक्षिप्त कहानी यही है। यह प्रसग वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड मे है। अब रावण और राम के जन्मकाल पर पाठक ही गौर करें कि कहाँ तक सभव है। रावण का जन्म देवो के आरम्भिक काल मे ही चन्द पीढियो के बाद होता है और राम का जन्म मनुवैवस्वत की ६३वी पीढी मे पुराणो के अनुसार और हमारे विचार से ३९वी पीढी मे। ३९ पीढियो मे भी १०९२ वर्ष हो जाता है। वरुण, सूर्य-विष्णु से यदि दो सौ वर्ष बाद भी रावण का जन्म माना जाये तोभी ८०० वर्ष तक रावण का जीवित रहना कभी सभव नही है।

रावण का जन्म उसी समय हुआ था जरूर किन्तु वह दाशरथी राम के समय तक जीवित नही रहा। उस वशवृक्ष मे कई रावण नामधारी राजा हुये हैं। जिनमे अन्तिम रावण दाशरथी राम के समय मे हुआ।

लंका-निर्माता दैत्य का वंशवृक्ष (रावण का मातृपक्ष)

हेति दैत्य + भया (काल की बहन)
|
विद्युत्केश + सालकटंकटा (सन्ध्या की पुत्री)
|
सुकेश + वेदवती (ग्रामणी गन्धर्वी की पुत्री)

१. माली + वसुदा[1] — (देवासुर संग्राम में मारा गया परन्तु चार पुत्र बचे—अनल, अनिल, हर और सम्पति।

२. सुमाली + केतुमती[1] —
प्रहस्त १, अकम्पन २, विकट ३, कालिका मुख ४, (पुत्र)
१. राका, २ पुष्पोत्कटा, ४. कुम्भीनसी (पुत्रियाँ)
३. कैकसी (पुलस्त्य-पुत्र 'विश्रवा' से ब्याही गई) इसी का पुत्र रावण हुआ।

३. विद्युन्माली + सुन्दरी[1] — पुत्र—वज्रमुष्ठि, विरूपाक्ष, दुर्मुख, सप्तघन, यज्ञकोश, मत्त, उन्मत्त। पुत्रि—अनला।

रावण के पितृपक्ष का वंशवृक्ष

पुलस्त्य (ब्रह्मा के मानस पुत्र—मनुस्मृति, पुराण)

पुलस्त्य + इलविला (पत्नी, आन्ध्रालय के राजा तृणबिन्दु की पुत्री)
|
विश्रवा
|
पत्नियाँ

१. (भरद्वाज-पुत्री, पहली पत्नी)
|
वैश्रवण
(यही लोकपाल धनेश कुबेर हुआ)

२. कैकसी (सुमाली-पुत्री—दूसरी पत्नी)
|
रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा, विभीषण

रावण — पत्नी, मय-पुत्री मन्दोदरी — मेघनाद
कुम्भकर्ण — (वैरोचन दौहित्री वज्रज्वाला)
शूर्पणखा — (पति-विद्युज्जिह्व)
विभीषण — (गधर्व शैलूष पुत्री सामा)

---

[1] वसुदा, केतुमती और सुन्दरी—तीनों नर्मदा गन्धर्वी की पुत्रियाँ थीं, जिनका ब्याह इन लोगों से हुआ।
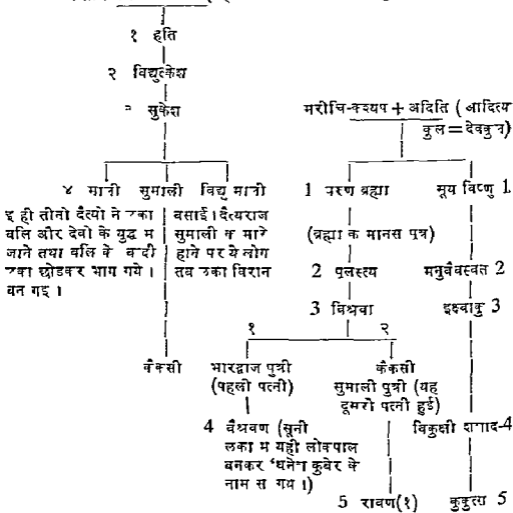
(टिप्पणी—हमारे विचार मे राम ३९वी पीढी मे हुए परन्तु पुराणो के अनुसार ६५वी पीढी मे हैं। पांचवी पीढी का रावण ३९ या ६५वी पीढी मे राम के समय तक कैसे जीवित रह सकता है? जरूर वह दसवा रावण था इसीलिये दशग्रीव कहा गया।

लंकापति रावण

राम और रावण के पूर्वजो के वंशवृक्ष पाठक देखेंगे तो स्पष्ट मालूम होगा कि रावण के पिता पुलस्त्य-पुत्र विश्रवा थे। विश्रवा की छोटी पत्नी कैकसी से रावण का जन्म हुआ। इस प्रकार रावण के पिता शुद्ध आर्य और मातृपक्ष दैत्य कुल हुआ। दैत्य भी तो आदित्यों-देवों-आर्यों के विमात्र भाई थे। दोनों मे अन्तर केवल खान-पान, रहन-सहन और यज्ञ-जाप का ही था। ऐसा होने का कारण भी राजनीतिक था। दैत्यो की माता सबसे बडी थी, इसीलिये दैत्य लोग अपने को बडा-श्रेष्ठ समझा करते थे। आदित्य कुल वाले अपने को देव कहकर श्रेष्ठ समझा करते थे। इस प्रकार दो दल हो गये। इसका परिणाम यह हुआ कि सदा देवासुर सग्राम चलते ही रहे। राम-रावण युद्ध भी उसी का फल था। यदि देवों और असुरो का राजनीतिक सगठन एक होता तो आज तक उन्ही लोगो का विश्व-साम्राज्य होता। आपस की फूट का जो परिणाम होता है, वही हुआ।

वरुण, सूर्य, इन्द्रादि देवो के समय मे ही माला, सुमाली आदि दैत्य बन्धुओं ने लका बसाई थी। उसी समय अस्त्र-शस्त्र तथा स्वर्ण से सुसज्जित कर उसको दर्शनीय स्थान बना दिया था। जब दैत्यराज 'बलि' का देवो से युद्ध हुआ तब बलि-सेनापति की जीवन लीला वीरगति मे विलीन हो गई। 'बलि' बन्दी हुआ। सुमाली आदि दैत्य लका से पलायन हो गये। परन्तु लका की ममता हृदय से नही हटी। इसलिये वह कूटनीतिक चाल सोचने लगा।

इधर लका सूनी पड गई। सुन्दर सुअवसर समझकर देवो ने पुलस्त्य-पौत्र वैश्रवण को लोकपाल धनेश कुबेर बनाकर लका मे बिठा दिया। सुमालीसैट से सुमाली से कोई बात छिपी नही रही। उसी समय सुमाली को एक दानरजी चाल सूझी। इस चाल का मतलब था—देवकुल मे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना। इसी विचार के अनुसार सुमाली ने अपनी छोटी और परम सुन्दरी पुत्री कैकसी का विवाह पुलस्त्य-पुत्र विश्रवा से कर दिया। वरुण, सूर्य, इन्द्रादि यह समझने लगे कि अब सुमाली वृद्धावस्था मे हम लोगो के अधीन हो गया। किन्तु उधर सुमाली के हृदय मे लका के लिये आग सुलग रही थी। जब उसके दौहित्र रावण का जन्म हुआ, तब उसका मनसूबा और भी मजबूत हुआ।

जिस समय रावण का जन्म हुआ, उस समय वरुण-ब्रह्मा, सूर्य-विष्णु, इन्द्र तथा अन्यान्य देव वृद्ध हो चले थे। पाठकों को यह याद होगा कि पुलस्त्य का राज्य आन्ध्रालय (आस्ट्रेलिया) मे था। इसलिये रावण-राज्य भी आन्ध्रालय मे हुआ।

रावण प्रौढावस्था मे पहुँचते ही सम्पूर्ण राजनीतिक चालो को समझने लगा। आस्ट्रेलिया से अनेक छोटे-छोटे द्वीप समूहों को जीतता हुआ लका तक पहुँच गया। उसके साथ उसका नाना-मामा अपने दल-बल के साथ थे।

अबतक देवगण यह समझ रहे थे कि रावण हमारा ही वशज है और सुमाली आदि सम्बन्धी हैं—इसलिये हमारे ही राज्य का विस्तार हो रहा है।

लका के निकट आने पर उसके नाना और मामा की राय से यह तै हुआ कि यदि बिना युद्ध के ही लका पर अधिकार हो जाय तो अच्छी बात होगी। इसी परामर्शानुसार रावण का मामा उसके पिता विश्रवा के पास गया और वहाँ उसने कहा कि—"रावण तो सभी द्वीप समूहों को जीत चुका है। अब लका बाकी है, पर वहाँ तो अपने भाई हैं। लेकिन रावण को लका के लिये विशेष उत्सुकता इसलिये है कि वहाँ उस की ननीहाल है। उसी समय पिता की आज्ञा हुई कि "लंका खाली कर धनेशकुबेर कैलाश पर्वत पर अलकापुरी बसाकर वही रहे।"

सुमाली की चिरकालिक अभिलाषा पूरी हुई। रावण लकापति हुआ और पुनः उसको सुसज्जित करने लगा।

वशवृक्ष को देखने से मालूम होता है कि जिस समय मनुवैवस्वत के वशवृक्ष मे कुकुरम-पुरजय (५) हुआ, उसी समय रावण भी हुआ। मनुवैवस्वत की ३९वीं पीढी मे दाशरथी राम हुये (पुराणों के अनुसार ६५वी पीढी मे)। अब पाठक ही सोचें कि पाँचवी पीढी का रावण ३९वीं पीढी तक कैसे जीवित रहा! यह कभी सम्भव नही है। जरूर दसवां रावण था, इसीलिये उसको दशग्रीव कहा गया।

रावण और वेद

रावण का वेदज्ञ होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पुलस्त्य स्वय वेदज्ञ थे। अतः अपने पुत्र विश्रवा को भी वेदज्ञ बनाया। विश्रवा ने अपने प्रथम पुत्र वैश्रवण तथा द्वितीय पुत्र रावण को भी वेदज्ञ बना दिया। उस समय तक ऋग्वेद के १०-२० सूक्त बने थे, जो वेदर्षियो को कठाग्र थे। उसी वशवृक्ष मे यह दसवां रावण नामधारी लंकापति हुआ। इस अन्तिम रावण के समय तक ऋग्वेद के सूक्तों की रचना बहुत अधिक हो चुकी थी। कहा जाता है कि कृष्ण यजुर्वेद रावण द्वारा सम्पादित है। जिसका प्रचार दक्षिणी भारत मे है। इसमे जरा भी सन्देह नही है कि अंतिम रावण भी पूर्ण शक्तिशाली, विद्वान और राजनीतिज्ञ था।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड छठवाँ

त्रेता-काल । सूर्य राजवंश-शाखा

(मनुवैवस्वत से रामकाल तक)

(१) शाखा राज्य—विदेह-मिथिला

२६३४ ई० पू० इक्ष्वाकु कोशल-अयोध्या की राजगद्दी पर दूसरी पीढ़ी में हुये। इनके ज्येष्ठ पुत्र विकुक्षी-शशाद तीसरी पीढ़ी मे अयोध्या के राजा हुये। इनके अनुज नेमि वहाँ से बाहर चले गये। नेमि 'विदेह' कहे जाते थे (वायु ८९,४। ब्रह्म iii, ६४।४। विष्णु पुराण iv, ५।१२)। इन्होने विदेह राजवंश की स्थापना की। वही राज्य पीछे राजा 'माथव' के समय मे मैथिल-मिथिला राज्य के नाम से विख्यात हुआ। यह सूर्यवंशी मुख्य राज्य की शाखा हुई। इसकी राजधानी वर्त्तमान जनकपुर मे थी। नेमि-निमि के ही नाम पर उस राजधानी की संज्ञा हुई अर्थात् विदेह राजवंश। नेमि या निमि के पुत्र का नाम मिथि या माथव था। शतपथ ब्राह्मण मे मिथि के सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है—"रावी नदी के तट से माथव नामक राजर्षि अपने पुरोहित रहूगण की सम्मति से राप्ती नदी के पूर्व आकर बसे। उसी का नाम मिथिला पड़ा। उन्होने जयन्त को राजधानी बनाया (वायु पुराण ८९,१,२,६। ब्रह्माण्ड पु० iii, ६,४,१,६)। परन्तु पुराणो के अनुसार इक्ष्वाकु के पुत्र निमि ने ऐसा किया। निमि याज्ञिक थे। मिथि ने मिथिलापुरी बसाई। कालान्तर मे सीरध्वज ने शाकास्य राज्य को जीता और अपने भाई कुशध्वज को वहाँ का राजा बना दिया (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड अ० ७०)। शाकास्य पर कुशध्वज का राज्य चार पीढ़ियो तक चला। इसी वंश मे खाण्डिक्य हुए जो ब्रह्मज्ञानी थे। मितध्वज के पुत्र खाण्डिक्य से कृतध्वज के पुत्र केशिध्वज का प्रथम युद्ध हुआ। पुनः ज्ञान चर्चा चलने लगी (भागवत ix, १३, २१)।

इस वंश को २५ पीढ़ियो के नाम मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं—

मनु १, इक्ष्वाकु २, निमि ३, मिथि ४, उदावसु ५, नन्दीवर्धन ६, सुकेतु ७, देवरात ८, बृहदक्ष ९, महावीर्य १०, धृतिमन्त ११, सुधृति १२, धृष्टकेतु १३,

हर्यश्व १४, मरु १५, प्रतिधर १६, कीर्तिरथ १७, देवमीध १८, विबुध १९, महाधृति २०, कीर्तिरत २१, महारोमन २२, स्वर्णरोमन २३, ह्रास्वरोमन २४, सीरध्वज २५ और भानुमन्त २६ ।

सीरध्वज दाशरथी राम के श्वसुर थे, इसलिये राम के समकालीन होने में किसी तरह का सन्देह नही है। किन्तु २५ सीढियो की बात खटकने वाली जरूर है। जब मनु वंश की ३९वी पीढी में राम है तब उतने ही दिनों में सीरध्वज के ऊपर की पीढियां १३ कम है। यदि पुरानो की बात मानी जाय तब और अधिक पीढियो का अन्तर पड जायेगा। यहाँ पर मालूम होता है कि मिथिला राजवंश की कुछ पीढियो के नाम लुप्त हो गये हैं।

(२) शाखा राज्य—आनर्त

इक्ष्वाकु के एक भाई का नाम शर्याति था। शर्याति-पुत्र आनर्त थे। इक्ष्वाकु के राज्याधिकारी होने पर शर्याति खम्भात की खाडी गुजरात में चले गये। वहीं उन्होंने अपने पुत्र के नाम पर आनर्त राजवंश की स्थापना की।

भृगु-पुत्र च्यवन शर्याति के दामाद तथा पुरोहित भी थे। शर्याति वेदर्षि हुये (ऋग्वेद १०।९२)। शर्याति का ऐन्द्रमहाभिषेक हुआ था। शर्याति की पुत्री सुकन्या थी, जिसका व्याह च्यवन से हुआ।

चौबीस-पचीस पीढियों तक आनर्त राजवंश चला। पुण्याजन राक्षस द्वारा थोडे ही दिनों में यह राज्य नष्ट हो गया। तदोपरान्त हैहयवंश मे मिल गया। राम का समकालीन वहाँ मधु यादव राजा था। हरिवंश पुराण मे इसी को कुन्त राज्य कहा गया है।

सूर्यवंशी राजा युवनाश्व का भाई हर्यश्व राजा मधुका दामाद था (मत्स्य ६९,१। पद्म V, २३,१०। विष्णु vi, १,३४। महाभारत ii, १३,३१३,४० iii)।

संक्षिप्त वंशवृक्ष इस प्रकार है—मनु, शर्याति, आनर्त, रोचमान, रेवा, रैवत, कुकुदामिन। इन लोगो ने कुशासथली मे राज्य किया। इसका प्राचीन नाम कुशस्थली था। उसी का नाम द्वारावती, द्वारवती तथा द्वारका हो गया। शर्याति के समय उसका नाम आनर्त था।

रैवत, गन्धर्व लोक में चले गये। अर्थात् गरेडेसिया, गन्धर्वों के राज्य में पहुँच गये। वहाँ बहुत दिनो तक संगीत की शिक्षा प्राप्त करते रहे। बाद में कुशास्थली

में आये तो देखा कि उनका राज्य हैहयवंश के हाथ में चला गया है। तब अपनी पुत्री का विवाह बलराम के साथ कर दिया। मनु के पुत्र शर्याति थे (शर्या तो मानवः—ऋग्वेद १०।९२)।

(२) शाखा राज्य—वैशाली

मनु-पुत्र नाभानेदिष्ठ थे।[1] नाभानेदिष्ठो मानवः।[2] उनके माता-पिता तथा भ्राता आदि ने उनको यज्ञभाग नहीं दिया।[3] स्वर्गलोक[4] में नाभानेदिष्ठ और सूर्य का जन्मस्थान है।[5] मैं (नाभानेदिष्ठ) अश्वमेध यज्ञकर्ता मनु-पुत्र हूँ।[6] इक्ष्वाकु के भाई नाभानेदिष्ठ थे। इन्होंने ही मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत वैशाली राजवंश की स्थापना की। इन्होंने एक वैश्या महिला से विवाह कर लिया था, इसलिये इनका राज्य क्षत्रिय वैश्य कहलाया। इस वंश में करन्धम, मरुत और विशाल नामक राजा विशेष विख्यात हुये। इसी वैशाली में सूर्यवंश के पतन होने पर लिच्छवियों का प्रजातन्त्र राज्य प्रसिद्ध हुआ। वहीं की रहने वाली राजनर्तकी प्रसिद्धिप्राप्त आम्रपाली थी। इसी वैशाली के आस-पास कुण्डन ग्राम में जैनधर्म के प्रवर्त्तक 'महावीर' का जन्म हुआ था। वहाँ से कुछ ही दूर पर गौतमबुद्ध का जन्म स्थान था। नाभानेदिष्ठ की २६वीं पीढ़ी में 'विशाल' नामक एक प्रतापी राजा हुये, जिनके नाम पर 'वैशाली' संज्ञा हुई।

राजा मरुत को हिमालय में सोने की खान मिली। उस सोने से उन्होंने महायज्ञ एवं महादान किया। तदोपरान्त जो स्वर्ण बचा, उसको उन्होंने वहीं भूगर्भ में छिपा दिया।

पौरववंशीय युधिष्ठिर को उस स्वर्ण खान का जब पता लगा तब उन्होंने भी यज्ञ किया। बृहस्पति के भाई संवर्त से उन्होंने अपना यज्ञ कराया (महाभारत अश्वमेध पर्व, द्रोण पर्व। अन्य पुराण)। वैशाली-मरुत के अतिरिक्त एक तुर्वश वंशीय भी मरुत थे। दोनों में किस मरुत ने यज्ञ कराया, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

वैशाली के अन्तिम राजा प्रमति के समय में हैहय तालजंघ ने काशी पर अधिकार कर लिया। इस वंश में राम के समय तक पैंतीस पीढ़ियाँ चलीं, जो आगे १७४ पृष्ठ पर है—

१. ऋ० वे० १०।६२।१,२। २. वही १०।६१। ३. वही १०।६१।१। ४. कश्यप सागर तट पर जहाँ अदिति और कश्यप का राज्य था। ५. ऋ० वे० १०।६१।१८। ६. ऋ० वे० १०।६१।२१।

१—मनुर्वैवस्वत, २—नाभानेदिष्ट, ३—भलन्दन, ४—वत्सप्री, ५—प्रांसु, ६—प्रजानि, ७—खनित्र, ८—क्ष्युप, ९—विंश, १०—विविंश, ११—खनीनेत्र, १२—करन्धम, १३—अविक्षित, १४—मरुत, १५—नरिष्यन्त, १६—दम, १७—राष्ट्र-वर्द्धन, १८—सुधृति, १९—नर, २०—केवल, २१—बन्धुमन्त, २२—वेगवन्त, २३—बुध, २४—तृणविन्दु, २५—विश्वावसु २६—विशाल, २७—हेमचन्द्र, २८—सुचन्द्र, २९—धूम्राश्व, ३०—श्रृंजय, ३१—सहदेव, ३२—कृशाश्व, ३३—सोम-दत्त, ३४—जन्मेजय और ३५—प्रमति। इस वंश के यह अन्तिम राजा थे। यह राम के श्वसुर सीरध्वज जनक के समकालीन थे। इन्ही को हैहय तालजंघ ने पराजित किया।

कोशल-अयोध्या के मुख्य सूर्यवंशी राज्य की ये तीन प्रधान शाखायें हुईं — विदेह-मिथिला, वैशाली, आनर्त। इनके अतिरिक्त अन्य शाखाओं का परिचय आगे देखिये।

अन्यान्य शाखायें

मनुर्वैवस्वत, इक्ष्वाकु और विकुक्षी से अयोध्या का जो मुख्य राजवंश चला, उसमें दाशरथी राम तक हमारे विचार से ३९ पीढियां ही रहनी चाहिये। जिसका समर्थन डा० सीतानाथ प्रधान तथा आचार्य चतुरसेन (व० र० उ० अर्थभाष्यम) ने किया है। परन्तु पार्जीटर ने पुराणों के अनुसार ६५ पीढियों की सूची दी है। इन विवादास्पद पीढियों का स्पष्टीकरण करने के लिये मनु से दाशरथी राम तक की राजवंश सूची आगे दी जाती है —

इस सूची में तीन तरह के नम्बर हैं। बाईं तरफ लगातार अंग्रेजी मे पार्जीटर के नम्बर, दाहिनी तरफ हिन्दी मे हमारे नम्बर और बाईं तरफ रोमन में शाखाओं की संख्या हैं।

1. मनुर्वैवस्वत	१	13. दृढाश्व	१३
2. इक्ष्वाकु	२	14. प्रमोद	१४
3. विकुक्षी-शशाद	३	15. हरयश्व	१५
4. कुकुत्स-पुरंजय	४	16 निकुम्भ	१६
5. अनेनस	५	17. संहताश्व	१७
6. पृथु	६	18. अकृशाश्व	१८
7. विष्टराश्व	७	19. प्रसेनजित	१९
8. आर्द्र	८	20. युवनाश्व (द्वितीय)	२०
9. युवनाश्व (प्रथम)	८	21. मानधाता	२१
10. श्रावस्त	१०	22. पुरुकुत्स	२२
11. वृहदश्व	११	23. त्रसदस्यु	२३
12. कुवलयाश्व	१२	24. संभूत	२४

(यहाँ तक सर्व सम्मत)

I.	25. अनरण्य		31. ·······
II.	26. त्रसदस्यु (द्वितीय)	VII.	32. त्रिशंकु (सत्यव्रत)
III.	27. हरयस्व (द्वितीय)	VIII.	33. हरिश्चन्द्र
IV.	28. वसुमत	IX.	34. रोहित
V.	29. त्रिधन्वन	X.	35. हरित
VI.	30. त्रय्यारुण	XI.	36. विजय

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

3 . रूरुक २५
38. वृक २६
... ...

I.	39. बाहु (असित)	IV.	43. अंशुमन्त
	40.	V.	44. दिलीप (प्रथम)
II.	41. सगर	VI.	45. भगीरथ
III.	42. असमंजस		... ...

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

१—मनुवैवस्वत, २—नाभानेदिष्ट, ३—भलन्दन, ४—वत्सप्री, ५—प्रांसु, ६—प्रजानि, ७—खनित्र, ८—क्षुप, ९—विंश, १०—विविंश, ११—खनीनेत्र, १२—करन्धम, १३—अविक्षित, १४—मरुत, १५—नरिष्यन्त, १६—दम, १७—राष्ट्रवर्द्धन, १८—सुधृति, १९—नर, २०—केवल, २१—बन्धुमन्त, २२—वेगवन्त, २३—बुध, २४—तृणविन्दु, २५—विश्वावसु, २६—विशाल, २७—हेमचन्द्र, २८—सुचन्द्र, २९—धूमराश्व, ३०—श्रजय, ३१—सहदेव, ३२—कृशाश्व, ३३—सोमदत्त, ३४—जन्मेजय और ३५—प्रमति। इस वंश के यह अन्तिम राजा थे। यह राम के श्वसुर सीरध्वज जनक के समकालीन थे। इन्हीं को हैहय तालजंघ ने पराजित किया।

कोशल-अयोध्या के मुख्य सूर्यवंशी राज्य की ये तीन प्रधान शाखायें हुईं—विदेह-मिथिला, वैशाली, आनर्त। इनके अतिरिक्त अन्य शाखाओं का परिचय आगे देखिये।

अन्यान्य शाखायें

मनुवैवस्वत, इक्ष्वाकु और विकुक्षी से अयोध्या का जो मुख्य राजवंश चला, उसमें दाशरथी राम तक हमारे विचार से ३९ पीढ़ियाँ ही रहनी चाहिये। जिसका समर्थन डा० सीतानाथ प्रधान तथा आचार्य चतुरसेन (व० र० उ० अर्थभाष्यम) ने किया है। परन्तु पार्जीटर ने पुराणों के अनुसार ६५ पीढ़ियों की सूची दी है। इन विवादास्पद पीढ़ियों का स्पष्टीकरण करने के लिये मनु से दाशरथी राम की राजवंश सूची आगे दी जाती है :—

इस सूची में तीन तरह के नम्बर है। बाईं तरफ लगातार अंग्रेजी मे पार्जीटर के नम्बर, दाहिनी तरफ हिन्दी मे हमारे नम्बर और बाईं तरफ रोमन मे शाखाओं की संख्या हैं।

1. मनुर्वैवस्वत	१		13. दृढाश्व	१३
2. इक्ष्वाकु	२		14. प्रमोद	१४
3. विकुक्षी-शशाद	३		15. हर्यश्व	१५
4. कुकुत्स-पुरंजय	४		16. निकुम्भ	१६
5. अनेनस	५		17. संहताश्व	१७
6. पृथु	६		18. अकृशाश्व	१८
7. विष्टराश्व	७		19. प्रसेनजित	१९
8. आर्द्र	८		20. युवनाश्व (द्वितीय)	२०
9. युवनाश्व (प्रथम)	८		21. मानधाता	२१
10. श्रावस्त	१०		22. पुरुकुत्स	२२
11. वृहदश्व	११		23. त्रसदस्यु	२३
12. कुवलयाश्व	१२		24. संभूत	२४

(यहाँ तक सर्व सम्मत)

I.	25. अनरण्य		31. ·······
II.	26. त्रसदस्यु (द्वितीय)	VII.	32. त्रिशंकु (सत्यव्रत)
III.	27. हर्यस्व (द्वितीय)	VIII.	33. हरिश्चन्द्र
IV.	28. वसुमत	IX.	34. रोहित
V.	29. त्रिधन्वन	X.	35. हरित
VI.	30. त्र्य्यारुण	XI.	36. विजय

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

3 . रुरक	२५
38. वृक	२६
... ...	

I.	39. बाहु (असित)	IV.	43. अंशुमन्त
	40.	V.	44. दिलीप (प्रथम)
II.	41. सगर	VI.	45. भगीरथ
III.	42. असमंजस		... ...

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

१—मनुर्वैवस्वत, २—नाभानेदिष्ट, ३—भलन्दन, ४—वत्सप्री, ५—प्रांसु, ६—प्रजानि, ७—खनित्र, ८—क्ष्युप, ९—विंश, १०—विविंश, ११—खनीनेत्र, १२—करन्धम, १३—अविक्षित, १४—मरुत, १५—नरिष्यन्त, १६—दम, १७—राष्ट्रवर्द्धन, १८—सुधृति, १९—नर, २०—केवल, २१—बन्धुमन्त, २२—वेगवन्त, २३—बुध, २४—तृणबिन्दु, २५—विश्वावसु २६—विशाल, २७—हेमचन्द्र, २८—सुचन्द्र, २९—धूम्राश्व, ३०—सृंजय, ३१—सहदेव, ३२—कृशाश्व, ३३—सोमदत्त, ३४—जन्मेजय और ३५—प्रमति। इस वंश के यह अन्तिम राजा थे। यह राम के श्वसुर सीरध्वज जनक के समकालीन थे। इन्ही को हैहय तालजंघ ने पराजित किया।

कोशल-अयोध्या के मुख्य सूर्यवंशी राज्य की ये तीन प्रधान शाखायें हुई — विदेह-मिथिला, वैशाली, आनर्त। इनके अतिरिक्त अन्य शाखाओं का परिचय आगे देखिये।

अन्यान्य शाखायें

मनुर्वैवस्वत, इक्ष्वाकु और विकुक्षी से अयोध्या का जो मुख्य राजवंश चला, उसमें दाशरथी राम तक हमारे विचार से ३९ पीढ़ियाँ ही रहनी चाहिये। जिसका समर्थन डा० सीतानाथ प्रधान तथा आचार्य चतुरसेन (व० र० उ० अर्थभाष्यम) ने किया है। परन्तु पार्जीटर ने पुराणों के अनुसार ६५ पीढ़ियों की सूची दी है। इन विवादास्पद पीढ़ियों का स्पष्टीकरण करने के लिये मनु से दाशरथी राम तक की राजवंश सूची आगे दी जाती है —

इस सूची मे तीन तरह के नम्बर है। बाईं तरफ लगातार अग्रेजी मे पार्जीटर के नम्बर, दाहिनी तरफ हिन्दी मे हमारे नम्बर और बाईं तरफ रोमन मे शाखाओं की संख्या है।

1.	मनुर्वैवस्वत	१	13.	दृढाश्व	१३
2.	इक्ष्वाकु	२	14.	प्रमोद	१४
3.	विकुक्षी-शशाद	३	15.	हर्यश्व	१५
4.	कुकुत्स-पुरंजय	४	16.	निकुम्भ	१६
5.	अनेनस	५	17.	सहताश्व	१७
6.	पृथु	६	18.	अकृशाश्व	१८
7.	विष्टराश्व	७	19.	प्रसेनजित	१९
8.	आर्द्र	८	20	युवनाश्व (द्वितीय)	२०
9.	युवनाश्व (प्रथम)	८	21.	मानधाता	२१
10.	श्रावस्त	१०	22.	पुरुकुत्स	२२
11.	वृहदश्व	११	23.	त्रसदस्यु	२३
12.	कुवलयाश्व	१२	24.	संभूत	२४

(यहाँ तक सर्व सम्मत)

I.	25. अनरण्य		31. ······
II.	26. त्रसदस्यु (द्वितीय)	VII.	32. त्रिशंकु (सत्यव्रत)
III.	27. हर्यश्व (द्वितीय)	VIII.	33. हरिश्चन्द्र
IV.	28. वसुमत	IX.	34. रोहित
V.	29. त्रिधन्वन	X.	35. हरित
VI.	30. त्रय्यारुण	XI.	36. विजय

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

3 . रुरुक २५
38. वृक २६
... ...

I.	39. बाहु (असित)	IV.	43. अंशुमन्त
	40.	V.	44. दिलीप (प्रथम)
II.	41. सगर	VI.	45. भगीरथ
III.	42. असमंजस		... ...

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

46 श्रुत २७
47. नाभाग २८
48. अम्बरीष २९
49. सिन्धु द्वीप ३०

... ...

I. 50. अयुतायुश
II. 51. ऋतुपर्ण
III. 52. सर्वकाम
IV. 53 सुदास
V. 54. कल्मापपाद
VI 55. अश्मक
VII. 56. मूलक-मालक
. ...

(शाखा, विशेष विवरण आगे देखिये—)

57. शतरथ ३१
58. विश्व शर्मन ३२
59. विश्वसह ३३
60 दिलीप खट्वांग ३४
61. दीर्घबाहु ३५
62. रघु ३६
63. अज ३७
64 दशरथ ३८
65. राम ३९

टिप्पणी—३१ और ४० रिक्त हैं। इसलिये (६५ – २ =) ६३ पीढ़ियाँ समझनी चाहियें।

६३ पीढ़ियों में शाखा राज्य की २८ पीढ़ियाँ घटाने पर ३९ पीढ़ियाँ बच जाती हैं।

२४ पीढ़ियों का भोगकाल (२४ × २८ =) ६७२ वर्ष होता है।

(४) शाखा राज्य—अनरण्य—हरिश्चन्द्र

उत्तर कोशल के भाई-बन्दों की यह शाखा कान्य-कुब्ज के आस-पास कहीं स्थापित हुई। अनरण्य २५ से विजय ३६ तक उसी शाखा के राजे है, जिनको मूल सूर्यवंश में मिला दिया गया है। इस शाखा में अति प्रसिद्ध राजा हरिश्चन्द्र हुये। इसीलिये इस शाखा का नाम—'अनरण्य-हरिश्चन्द्र' रखा गया है। यह शाखा सिन्धुद्वीप ३० के समय से आरम्भ हुई।

विष्णु पुराण (४।३।१४) के अनुसार अनरण्य वृद्धावस्था में रावण के द्वारा मारा गया। जिस रावण का युद्ध लंका में राम के साथ हुआ, उस रावण का अनरण्य के समय जीवित रहना कभी सम्भव नहीं है क्योंकि २५वीं पीढ़ी से ३९वीं

या ६५ वी पीढी तक का समय बहुत लम्बा हो जाता है। यदि कोई अन्य रावण मान लिया जाये तब संभव हो सकता है। फिर दूसरी कठिनाई भी हो जायेगी।

पुराण तथा ब्राह्मणग्रन्थ के कथनानुसार राजा हरिश्चन्द्र के समय में वशिष्ठ और विश्वामित्र दोनो ही वर्तमान थे। ये दोनो राम के समय में भी वर्तमान हैं। हरिश्चंद्र पुराण तथा पार्जीटर के मतानुसार ३३ वीं पीढ़ी में हैं। यदि ३३ वी पीढ़ी में वशिष्ठ और विश्वामित्र को जीवित रहना मान लिया जाये तो ६५ वी पीढ़ी में जब राम हुये तब तक उन दोनो की आयु (६५ – ३३ =) ३२ पीढिओ तक लम्बी हो जाती है। ३२ पीढियों का काल (३२ × २८ =) ८९६ वर्ष होता है। यह भी संभव नहीं है। इसलिये यह निश्चित है कि ये ग्यारह राजे शाखा के ही हैं। मूल सूर्यवंश में नहीं।

इस शाखा में त्रसदस्यु, हरयश्व द्वितीय, वसुमनस, त्रिधन्वन और त्र्यैयारुण आदि हैं। त्र्यैयारुण मंत्र दृष्टा, वेदर्षि हैं (ऋग्वेद ५।२७)। इसके अतिरिक्त नवें मण्डल का ११ वाँ सूक्त भी इन्ही की रचना है। बृहद्देवता (५।१४) में भी इनका उल्लेख है। इनके पुरोहित अथर्वण अभिराचार्य थे (बृहद्देवता)। राजा त्र्यारुण पीछे वनवासी बन गये (वायुपुराण ८८।८४। हरिवंश १२-११०—१२३-३-५३)। इनके पुत्र का नाम सत्यव्रत था। जो बहुत ही दुष्ट प्रकृति का हुआ। इसने विदर्भ-राजा की पत्नी का अपहरण किया। चाण्डालों की संगत की। गुरु वशिष्ठ की गाय मारकर खाया। इन अपराधो के कारण पिता ने इसका नाम 'त्रिशंकु' रखकर घर से बाहर निकाल दिया। इतना ही नहीं बल्कि राज्याधिकार से भी वंचित कर दिया। अन्त में पिता ने इससे परेशान होकर चाण्डालों में ही रहने की आज्ञा दे दी (वायु पुराण ८८।८२।८४)।

त्रिशंकु (सत्यव्रत) पिता द्वारा राज्याधिकार से वंचित और बहिष्कृत होने पर आश्रम बनाकर वन में रहने लगा। उसी समय गाधिपुत्र विश्वामित्र भी राज्य विहीन होकर आश्रय की तलाश में थे। उनको जब कहीं आश्रय नहीं मिला तब त्रिशंकु के ही आश्रम में दस वर्षों तक रहे (वायुपुराण ८८।८६)। उस समय बारह वर्षों तक अनावृष्टि रही। उसी समय विश्वामित्र ने त्रिशंकु का यज्ञ कराया (वायु पुराण ८८।८५)। त्रिशंकु चूँकि पहले से ही दुश्चरित्र होने के कारण बदनाम था, इसलिये वशिष्ठ तथा अन्यान्य जनो ने इस यज्ञ तथा विश्वामित्र का विरोध किया। विश्वामित्र के उद्योग से त्रिशंकु को पुनः राज्याधिकार प्राप्त हो गया।

बहुत खोज-ढूंढ करने के बाद एक वेदर्षि अजिगर्त एक हजार गाय लेकर अपने पुत्र शुनःशेप को देने के लिए तैयार हुए। बदनामी के भय से पुत्र-बलिप्रदान-यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए वसिष्ठ तैयार नहीं हुए। तब उस यज्ञ-कार्य के लिए अयास्य अंगिरस को पुरोहित बनाया गया। यज्ञ की तैयारी होने लगी।

यज्ञशाला के बलि-स्तूप में उस ब्राह्मण बालक को जब कोई बांधने के लिए तैयार नहीं हुआ, तब पुनः एक सौ गायें और लेकर अजिगर्त स्वयं तैयार हो गये (ऐतरेयब्राह्मण, यजुर्वेद, पुराण)। पुनः उस बालक के शरीर को काटने के लिए भी कठिनाई पैदा हो गयी। इस काम के लिए भी एक सौ गायें और अधिक लेकर उसका पिता ही तैयार हो गया।

चूंकि शुनःशेप विश्वामित्र के एक सम्बन्धी का ब्राह्मण बालक था, इसलिए इस समाचार के पाने पर उनको परेशान होना पड़ा। विश्वामित्र ने शुनःशेप के परिजनों से यह कहा कि "इस बालक की प्राण-रक्षा करनी चाहिये। इसका उपाय यही है कि तुम लोग ५० आदमी यज्ञशाला में जाकर बलिप्रदान के लिये तैयार हो जाओ।" परन्तु परिजनों ने आज्ञा नहीं मानी, तब उन्होंने उन सभी को अपने कुटुम्ब परिवार सहित दक्षिणारण्य में बहिष्कृत कर दिया। (शतपथ ब्राह्मण तथा श्रीमद्भागवत)। जब वे लोग यज्ञशाला में नहीं गये तब उन्होंने स्वयं उपस्थित होकर शुनःशेप की प्राण रक्षा की। इस शुनःशेप वाले यज्ञ के समय विश्वामित्र, वसिष्ठ और जमदग्नि का होना ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार प्रमाणित है।

शुनःशेप को वहाँ से मुक्त कर अपने पास पुत्रवत् रखा तथा वेदर्षि बना दिया। शुनःशेप ने ऋग्वेद के सूक्तों की रचना की है (ऋग्वेद १।२४ से ३०। पुन. ९।३)।

हरिश्चन्द्र और राम समकालीन

यहाँ पर विचारणीय बात यह है कि जमदग्नि, विश्वामित्र और वसिष्ठ, पांचाल-नरेश सुदास तथा राम के समकालीन हैं। ऋग्वेद के तृतीय मण्डल तथा अन्यान्य मण्डलों में भी विश्वामित्र तथा जमदग्नि की मित्रता, शुनःशेप से उनका सम्बन्ध एवं सुदास के यहाँ उनका होना प्रकट होता है। ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में विश्वामित्र के पिता गाधि के भी सूक्त हैं। इन सब बातों पर दृष्टि डालने से हरिश्चन्द्र राम के पूर्व पुरुष प्रमाणित नहीं होते।

यदि हरिश्चन्द्र को पुराणों तथा पार्जीटर के मतानुसार राम का पूर्व पुरुष मान लिया जाये, तो विश्वामित्र का जीवनकाल कम से कम ३० पीढ़ियों तक चला जाता है, जो सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त यदि [illegible]

त्रिशंकु का व्याह केकय वंशीय राजकुमारी सत्यरता से हुआ। उसी के गर्भ से हरिश्चन्द्र उत्पन्न हुये। हरिश्चन्द्र की पत्नियाँ सौ थी (ऐतरेयब्राह्मण ७।१३)। राजा हरिश्चन्द्र के यज्ञ मे पर्वत नारद उपस्थित थे (ऐतरेयब्राह्मण ८।२२)। पर्वत नारद ने भी ऋग्वेद के सूक्त की रचना की है, इसलिये उनको मन्त्र दृष्टा कहा जाता है (ऋग्वेद ९।१०५)।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार हरिश्चन्द्र ने राजसूय यज्ञ करके 'महाराज' का पद प्राप्त किया। इसी यज्ञ के बाद 'आडीवक' देवासुर संग्राम हुआ। जिसमे क्षत्रियो का नाश हुआ (हरिवंश, महा भा० भविष्य पर्व २।१८)। हरिश्चन्द्र सप्तद्वीपेश्वर थे (महाभारत सभापर्व १२।१५)। राजर्षि उशीनर की सत्यवती ने इन्हे स्वयंवर मे वरा था (महाभारत वनपर्व ७७।२८।२९)। राजा उशीनर का उशीर राज्य 'शिविपुर' मे था। इसीलिये सत्यवती को शैब्या कहते हैं। शिविऔशीनर का नगर वर्त्तमान शेरकोट, झग के निकट था (श्राद्धेतिहासोपनिषद की हस्तलिखित पाण्डुलिपि, प्रथम सम्पुट, मैसूर प्राच्य कोशागार—त० र० उ० भा० पृ० ६७)।

हरिश्चन्द्रपुत्र-कथा

अपने पिता के बाद हरिश्चन्द्र राज्याधिकारी हुए। तदोपरान्त बहुत दिनो तक सन्तान-सुख से वंचित रहे। जब किसी प्रकार सन्तान नही हुई तब वरुण भगवान का मन्नत मानी गयी। उस मन्नत का अभिप्राय यह था कि जो पहली सन्तान होगी, वह वरुण भगवान को बलि चढा दी जायेगी।

प्रथम पुत्र हुआ। उसका नाम रोहित पडा। गुरु वशिष्ठ से मन्नत वाली बात कही गयी। गुरु-आज्ञा हुई कि "रोहित को सात बार वन मे भेजा जाये और लौटा लिया जाये। ऐसा करने से बलि-प्रदान वाली मन्नत पूरी हो जायेगी।"[१]

२२ वर्षों के बाद राजा हरिश्चन्द्र को जलोदर की बीमारी हो गई। तब दिल मे यह शका उत्पन्न होने लगी कि वरुण भगवान जल-देवता हैं, उनकी मन्नत नही पूरी की गयी है, इसलिए उन्होंने अप्रसन्न होकर पेट मे जल भर दिया है। राजा तथा राजकुमार के शुभचिन्तकों की सम्मति यह हुई कि किसी ब्राह्मण बालक को क्रय कर लाया जाये और उसीको बलिप्रदान कर दिया जाये। ऐसा होने से वरुण भगवान की मन्नत भी पूरी हो जायेगी और राजकुमार रोहित का प्राण भी बच जायेगा।

१—भागवत।

इस शाखा की ११ पीढ़ियाँ मिला देने से राम और सुदास की समकालीनता नष्ट हो जाती है। राम और अहल्या के भाई राजा सुदास का समकालीन होना अकाट्य रूप से प्रमाणित है। इस तरह की अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ अमल हो जाती हैं। इसलिए यह अनरण्य-हरिश्चन्द्र शाखा राम के पूर्व पुरुषों की नहीं वरन बन्धु-बान्धवों की जरूर थी। वे लोग राम के ही समकालीन थे।

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक

वर्तमान समय में जो सत्य हरिश्चन्द्र नाटक की पुस्तक है, उसकी सत्यता का आधार किसी मान्य ग्रन्थ में नहीं है। हाँ, देवी भागवत और स्कन्ध पुराण में चर्चा है। यहाँ पर यथार्थ बात यह जान पड़ती है कि राजकुमार रोहित के बदले में शुन-शेप की घटना को ही सत्यता तथा प्रतिज्ञा पालन का रूप दे दिया गया है। संस्कृत में 'चण्डकौशिक' नामक एक नाटक है, उस नाटक में शुन शेप वाली कथा को ही परिवर्तित कर चमत्कारिक रूप में दे दिया है। मालूम होता है कि उसी के आधार पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने '*सत्य हरिश्चन्द्र*' नाटक लिखा है।

पौराणिक कथन

पुराणों के अनुसार मनुवैवस्वत—इक्ष्वाकु—विकुक्षी वाले मूल सूर्यवंश की ३३वीं पीढ़ी में हरिश्चन्द्र, ४०वीं पीढ़ी में सगर, ४८वीं पीढ़ी में भगीरथ, ५२वीं पीढ़ी में कल्मापपाद, ८८ वीं पीढ़ी में मूलक और ६५ वीं या ६३ वीं पीढ़ी में राम प्रमाणित होते हैं। इस प्रकार ये सभी प्रसिद्ध राजे राम के पूर्ववर्त्ति हो जाते हैं। यहाँ पर निम्न लिखित पौराणिक घटनाएँ दी जाती हैं। इस पर पाठक जरा विचार करें—

(क) उत्तर पाँचाल के राजा सुदास जो अहल्या के भाई थे—मनु से ४३ वीं पीढ़ी में हैं। इन्हीं सुदास के समपितामह सृंजय की दो कन्याएँ राम के समकालीन यादव सात्वत के पौत्र भजमान को ब्याही गई थीं (देखिये—यादव वंशावली एवं पुराण)

(ख) राम के मित्र अलर्क के पितामह प्रतर्दन ने वीतिहोत्र हैहय को जीता और राजा सगर ने वीतिहोत्र के पौत्र तथा प्रपौत्र को जीता।

(ग) विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र के पिता सत्यव्रत-त्रिशंकु का यज्ञ कराया। हरिश्चन्द्र के शुन शेप वाले बलि प्रदान यज्ञ में शुन शेप की विश्वामित्र ने रक्षा की। विश्वामित्र ने ऋग्वेद के अपने सूक्तों में सुदास का गुणगान किया। उसी विश्वामित्र ने राम को भी अस्त्र-शिक्षा में प्रवीण किया। इन सब घटनाओं पर विचार करने से यह स्पष्ट मालूम होता है कि ये सब राम के ही समकालीन हैं।

वंशवृक्ष के बेमेल होने का कारण यह मालूम होता है कि गुप्तकाल में जिस समय पुराणो का सम्पादन हुआ, उसी समय भूल हो गई अर्थात् शाखा की (११ + ७- + ६ =) २४ पीढियाँ मूल सूर्यवंश में मिला दी गई ।

(५) शाखा राज्य—बाहु–सगर–भगीरथ

मूल सूर्यवंश की इस पाँचवी शाखा को 'बाहु-सगर-भगीरथ' शाखा कहना चाहिए । चक्रवर्ती राजा सगर के पिता का नाम 'बाहु' था । इन्ही को 'असित' भी कहा जाता है। राम के पिता दशरथ के समय में बाहु ने मध्य भारत में कही सूर्यवंश राज्य की स्थापना की थी । इस वंश के प्रथम राजा बाहु हुए जो पार्जीटर के मतानुसार सूर्य वंश की मूल पीढी में ३९ है । पुराणो के अनुसार संभवत यह हरिश्चन्द्र शाखा म हुये ।

जिस समय उत्तर भारत पर राजा बाहु ने चढाई की, उस समय हैहय राजा तालजंघ ने इन्हे पराजित कर दिया । उसके बाद सपरिवार और्वऋषि के आश्रम में चले गये । उस समय तक राजा सगर का जन्म नही हुआ था । उनकी माता गर्भवती थी । और्व के आश्रम म ही राजा सगर का जन्म हुआ । उनके बचपन म ही पिता बाहु का स्वर्ग वास हो गया । इसलिए वही पर आश्रम में ही और्व न शिक्षा-दीक्षा दी । उन्होंने वयस्क होन पर अपने पिता के दुश्मनो को हराकर अपना राज्य लौटाया तथा बहुत विस्तार किया ।

अग्नि और्व भी हैहयो के दुश्मन थे । इसलिए वह भी राजा सगर के सहायक हो गये । उनकी सहायता से सगर ने हैहयवंश को समूल नष्ट कर दिया । तद्पश्चात् अपना विस्तृत राज्य स्थापित किया ।[1]

राजा सगर ने वैदर्भी केशिनी का पाणि-ग्रहण किया । इनकी सेना में साठ हजार बहादुर सैनिक थे ।

राजा सगर चक्रवर्ती हुय । इनके जात कर्मादि और्व ने ही कराये (ब्रह्माण्ड-३।४७।७८) । जामदग्न राम से इन्होने आग्नेयास्त्र लिया (ब्रह्माण्ड-३।४८।-८७) । समरभूमि म महारौद्रास्त्र भी प्रयोग करते थे (ब्रह्माण्ड ३।४८।७७) । राजा सगर की शक्ति सागर की तरह अपार थी । उन्होंने किशोरावस्था म ही अयोध्या की तरफ बहुत से राज्य ले लिये थे । मध्य देश भी विजय किया । तदोपरान्त दक्षिण तथा उत्तरापथ की ओर गय । बड़े-बड़े राजे जो समर भूमि में

१—मत्स्य १२।४० । पद्म ६।८।१४४। ब्रह्माण्ड ।।। ४८,६,१०। महाभारत।।। १०६,८,८३९।

आये, उनका आग्नेयास्त्र से संहार किया। उन्होंने हैहयों के अतिरिक्त यवन, काम्बोज, किरात, पह्लव और पारदों का नाश किया। इन लोगों ने इनके पिता बाहु के विरुद्ध तालजंघ की सहायता की थी। इसीलिए राजा सगर ने अपने पिता का बदला लिया। वशिष्ट के मध्यस्थ होने पर उन लोगों में संधि हुई। किन्तु सगर के दिल में खटका ही बना रहा। इसलिए दुश्मनों को दण्डकारण्य में निष्कासित कर दिया (भागवत)। इसके बाद विदर्भ की ओर गये। वहाँ के राजा को पराजित कर उनकी बेटी से विवाह कर लिया। फिर वहाँ युद्ध नहीं हुआ बल्कि स्वागत हुआ। सारांश यह कि सभी राजे उनको कर देने पर सहमत हो गये (ब्रह्माण्ड ३। ४८। ४१—३।४९।३)।

राजा सगर की दो पत्नियाँ थी। एक वैदर्भी केशिनी और दूसरी अरिष्टनेमि की पुत्री और सुपर्ण की बहन (वायु ८८। १५६। ८८। १५९। वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ३५।४। विष्णु पुराण ४।४।१)।

सगर के समय में पश्चिमोत्तर भारत के यवन भी आर्य ही थे। वे संस्कृत ही बोलते थे। सगर ने इन लोगों को ग्रीस में निर्वासित किया (पोकोक कृत "ग्रीस इन इंडिया"—ब्रह्माण्ड पृ० iii, ४८,९, १०। महाभारत ii, १०६, ८, ८३१ व०र०)।

इस वंश की तीन पीढ़ी के नरेशों—अंशुमान, दिलीप और भगीरथ द्वारा चार नदियों को खोद कर और मिलाकर गंगा नाम देकर मैदान में लाया गया। अंशुमान राजर्षि थे। इन्होंने राजसूय और अश्वमेध यज्ञ किया।

राजा सगर ने जब अश्वमेध यज्ञ किया तब 'कपिल' से संघर्ष हुआ। उसी समय साठ हजार परिजन तथा सेना नायकों का संहार हो गया। केवल चार पुत्र जीवित बचे (वायु ८८।१४६)। उन्हीं पुत्रों में वंशवृक्ष चला। सगर ने दीर्घकाल तक राज्य किया (वाल्मीकि रा०बा०का० ३८।२७)।

राजा भगीरथ के बाद इस वंश का पता नहीं चलता (वाल्मीकि रा०, महाभारत शान्ति पर्व)। ये भी राम के पूर्व पुरुष नहीं थे।

इस शाखा में छः राजे हुये। वे निम्न प्रकार है—

१. बाहु-असित	(३९. पार्जीटर)	४. अंशुमन्त......	(४३. पार्जीटर
....	(४०. ,,)	५. दिल्लीप-प्रथम	(४४ ,,)
२. सगर	(४१. ,,)	६. भगीरथ	(४५ ,,)
३. असमजस	(४२.[1] ,,)		

१—असमंजस को आचार्य चतुर सेन नहीं मानते (व० र० उ० अर्थ भाष्यम्)

राजा सगर-काल

काशीराज प्रतर्दन ने हैहय वीतिहोत्र को पराजित किया था । वीतिहोत्र के प्रपौत्र सुप्रतीक को सगर ने पराजित किया । इसलिए सगर—प्रतर्दन के पौत्र अलर्क के समकालीन होने चाहिये । परन्तु राम के रज्याभिषेक के समारोह मे प्रतर्दन अयोध्या मे आये है । इस के अतिरिक्त दूसरी बात यह है कि अगस्त की स्त्री लोपा-मुद्रा ने—आशीर्वाद दिया था । अगस्त ने रावण को जीतने मे शस्त्रास्त्र से राम की सहायता की थी । इन सब घटनाओं पर विचार करने से अलर्क, प्रतर्दन और सगर समकालीन नही होते हैं । सगर ने हैहयो को हराकर वैदर्भ की राजकुमारी मे विवाह किया था । वे और्व अग्नि के आश्रम में भी रह चुके हैं । वे और्व-अग्नि ऋचीक के पिता और्व के वंशधर थे । इसलिये बाहु और सगर राम के पूर्ववर्त्ती नहीं हो सकते । अतः राम से २५ पीढी पहले होना कभी सभव नहीं जान पडता ।

(६) शाखा राज्य—अयुतायुस-ऋतुपर्ण-सुदास (दक्षिण कोशल)

वर्तमान रायपुर, बिलासपुर तथा सम्भल पुर जिलो मे एक राज्य था । जिसकी राजधानी रायपुर जिले मे श्रीपुर थी । ऋतुपर्ण इसी शाखा के राजा थे । अयोध्या के नही । यही नैषधराजा नल रहते थे । इस राज्य को दक्षिण कोशल, शाखा राज्य कहना चाहिये । इस शाखा मे ऋतुपर्ण और कल्माषपाद विशेष प्रसिद्ध हुये । (व०र० उ० अर्यमाप्यम) दीर्घ बाहु (३५) के समय यह राज्य स्थापित हुआ । वंशवृक्ष इस प्रकार है—

१–अयुतायुस (भगस्वर-प्रधान)	५०	(पार्जीटर)
२–ऋतुपर्ण	५१	,,
३–सर्वकाम	५२	,,
४–सुदास	५३	,,
५–कल्माषपाद	५४	,,

६. १—अश्मक, उरकाम, मूलक (४२) (५६—पार्जीटर)

७. २—सर्वकर्मन, अनरण्य, निघन, अनमित्र (८३)
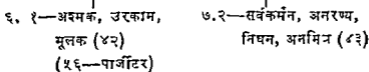
नोट—रामके समकालीन कल्माषपाद हुये । कल्माषपाद के बाद दक्षिण कोशल की दो शाखायें हो गई । १—अश्मक; उरकाम, मूलक । २ सर्वकर्मन—

अनरण्य—निघ्न-अनमित्र (८३)। निषध, विदर्भ, दक्षिण कोशल, चेदि और दशार्न राज्यों की सीमायें परस्पर मिलती थीं।[1]

खट्वांग दिलीप के पुत्र दीर्घ बाहु (३५) के समय मे अयुतायुस नामक एक राजकुमार ने एक नई शाखा स्थापित की। डा० सीतानाथ प्रधान के मतानुसार अयुतायुस का ही नाम भगस्वर था।[1] इनके पुत्र ऋतुपर्ण थे।

इस शाखा मे ऋतुपर्ण प्रसिद्ध राजा हुये। इन्हीं के यहाँ प्रसिद्ध राजा नल छद्म वेश मे अश्वपाल बनकर कुछ दिनो तक रहे। उस समय विदर्भ मे भीमरथ यादव का राज्य था।

राजा नल की पुत्री इन्द्रसेना उत्तर पाचाल नरेश के पुत्र मुद्गल को व्याही थी। इस प्रकार नल उत्तर पाचाल के राजा मुद्गल के श्वसुर थे।(ऋग्वेद १० १०२। महाभारत iii,५७१४६ तथा महाभारत वनपर्व)। नल विदर्भ के राजा भीमरथ के दामाद थे। नल के दामाद मुद्गल वेदर्दि थे (ऋ.वे. १०।१०२)। मुद्गल के पुत्र दिवोदास तथा कन्या अहिल्या थी; जो शरद्वन्त गौतम से व्याही थी। इसी अहिल्या को शरद्वन्त गौतम ने त्याग दिया था; जिसका उद्धार दाशरथी राम ने किया।

दिवोदास ऋग्वेद के प्रसिद्ध विजेता नरेश हैं। उनके विषय मे श्रीमद्भागवत मे इस प्रकार लिखा है कि—भार्म्याश्वके पुत्र मुद्गल से यमज सन्तान उत्पन्न हुईं। उनमे पुत्र का नाम दिवोदास और कन्या का अहिल्या पड़ा। अहल्या का विवाह महर्षि गौतम से हुआ। गौतम के पुत्र शतानन्द हुये (भागवत ९।२१।३४) ऋग्वेद के कई सूक्तो मे दिवोदास की प्रशसा है।

अहल्या के विषय मे कहा जाता है कि पति के शाप से वह पत्थर हो गई थी। जब राम का चरण स्पर्श हुआ, तब अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर जीवित हो गई। (मालूम होता है कि पति ने अहल्या का परित्याग कर दिया था, किन्तु पीछे जब राम ने ज्ञानोपदेश देकर समझाया तब पुन. स्वीकृत हो गई)

"दिवोदास और शम्बर मे जब लड़ाई हुई थी, तब दशरथ ने दिवोदास की सहायता की थी" (आचार्य चतुरसेन—व. र.)। परन्तु ऋग्वेद मे दशरथ के पिता 'अज' का नाम है ("अजाश्च शिग्रवो यक्षवश्च"... .. ऋ. वे. ७।१८।१९)

ऋतुपर्ण के पुत्र सुदास और प्रपौत्र कल्माषपाद थे—। इन लोगों का सम्पर्क राक्षसों से अधिक हो गया था। इसलिए नरमासभक्षी हो गये थे (महाभारत)। इनके पुरोहित वशिष्ठ थे।

---

१ क्रोनोलाजि आफ एन्शियन्ट इंडिया—डा० प्रधान।

कल्मापपाद की रानी मे वशिष्ठ ने नियुक्त हो कर पुत्र उत्पन्न किया। उसके बाद ही वे शायद उस छोड़ कर उत्तर कोशल चले गये। (व. र.)

(७) शाखा राज्य—देवदह-कपिलवस्तु-गौतम बुद्ध

सजय के पुत्र साक्य और उनके उत्तराधिकारी शुद्धोदन थे।[१] य कथन वायु पुराण के है। किन्तु महावंश के अनुसार निम्न प्रकार है—

सक्का (साक्य) देवदह के निवासी थे। इसलिए वह देवदह-सक्का[२] (साक्य) के नाम से प्रसिद्ध हुये।

साक्य की पुत्री क्वकाना का विवाह सिहाहनु के साथ हुआ।

साक्य के पुत्र अजन का विवाह सिहाहनु की बहन यशोधरा[३] से हुआ।

सिहाहनु के पुत्र शुद्धोदन का विवाह कक्काना के उद्योग से माया और प्रजावती के साथ हुआ, जो दोनो अजन की पुत्रियाँ थी।[४]

शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ का विवाह माया[५] के उद्योग से भद्दाकक्काना[६] के साथ हुआ; जो अजन के पुत्र सुप्पाबुद्धा की पुत्री थी[७]। भद्दाक्कक्काना की माता अमिता सिहाहनु की पुत्री थी।[८]

यथार्थ बात यह है कि सिद्धार्थ शिवि-सजय के उत्तराधिकारी थे, जो कोशल के इक्ष्वाकुवंश मे थे। इसके लिए पृष्ट १८६ का वशवृक्ष देखिये—

शाक्यो का राज्य कोशल के अन्तर्गत था (सुत्तनिपात)।

विशेष—यहाँ पर यथार्थ बात यह है कि शिविसजय इक्ष्वाकुवशीय थे। अपने पारिवारिक विग्रह के कारण सक्का, देवदह मे जाकर बस गये। वही उन्होंने अपना राज्य स्थापित किया। पीछे देवदह के सक्का नाम मे प्रसिद्ध हो गये। उधर जयसेन भी कपिल वस्तु मे चले गये। उन्होने भी वही अपना राज्य स्थापित कर लिया।

देवदह के साक्य और शिविसजय तथा ओक्काका (इक्ष्वाकु) के सम्बन्ध पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट मालूम होता है कि कपिल वस्तु के राजा जयसेन इक्ष्वाकुवश के ही थे—जो कभी पारिवारिक विग्रह के कारण घर से अलग होकर कपिल वस्तु मे अपना राज्य स्थापित कर रहने लग थे।

---

१ वायुपुराण ८८।२८८। वायुपुराण के इस कथन को डा. प्रधान ने तर्क द्वारा अशुद्ध प्रमाणित किया है। महावंश के कथन को ही शुद्ध माना है। 'सुत्तनिपात' में गौतमबुद्ध को कोशल राजवंश में ही कहा गया है। २. महावश- ११-१७। ३ वही ११-१८। ४ वही ११—१८। ५ वही ११—२२। ६. वही- ११-२४। ७. वही ११-१६,२२। ८ वही ११-२०,२१,२२।

अखबार में एक समाचार छपा था वह ज्यों का त्यों नीचे है—उसके द्वारा इसकी पुष्टि हो जाती है।

Birthplace of Maya Devi Identified
BUDDHA S MOTHER

Gorakhpur, April 20-61 Buddhists all over the world will be happy to learn that Deodah, the birthplace of Maya Devi, mother of Lord Buddha, has been identified by a party of explorers led by Mr Shivaji Singh, Lecturer in Ancient History Dept of the Gorakhpur University, and financed by the Directorate of Cultural Affairs and Scientific Research of the Union Government

It may be mentioned that the Sakya tribe was divided into two clans One was headquartered at Kapilvastu and the other at Deodah Maya Devi s father lived at Deodah. It was while she was going from Kapilvastu to Deodah that Buddha was born at Lumbini

Village Banarasia Kala in Tehsil Pahrenda of the Gorakhpur District, seven miles east of Ladmipur Station of the North-Eastern Railway is the village which has been identified as Deodah Incidentally the local people also called it Deodah

During their explorations of the Tara belt, the explorers discovered microliths at one place, red and black ware silver, punch marked coins Terracota figurines and interesting icons which were calculated to push back the history of the Gorakhpur Division at least to 5000 BC A large number of silver punch marked coins and copper coins of the Kushana period were also collected by the party

सूर्य मंडल

सूर्य राज वंश की शाखाओं पर प्रकाश डालने से यह मालूम होता है कि मुख्य सूर्य राजवंश के अतिरिक्त सात शाखायें हुई। इनके अतिरिक्त और भी छोटी-छोटी शाखायें तथा उप शाखायें भी होती गई। उन सभी को मिलाकर सूर्य मंडल कहा जाता था।

१—कोशल अयोध्या (मुख्य सूर्य राजवंश)
२—विदेह-मैथिल (शाखा राजवंश)
३—वैशाली (शा० राजवंश)
४—आनर्त राजवंश (शार्याति शाखा)
५—दक्षिण कौशल-अयुतायुस-ऋतुपर्ण-शाखा
६—बाहु-सगर-भगीरथ (शाखा)
७—अनरण्य हरिश्चन्द्र (उत्तरकोशल की शाखा)
८—देवदह-कपिल वस्तु-गौतम बुद्ध (शाखा)

अपने श्वसुर मनुवैवस्वत के साथ बुध यहाँ कैसे आते ? यदि आते तो पहले यहाँ के राजाओं के साथ युद्ध करना पड़ता। परन्तु आरम्भिक काल में भी भारत में बुध को किसी दूसरे राजा से युद्ध करना पड़ा, इस बात की चर्चा किसी वेद, वैदिक साहित्य, पुराण तथा महाभारत आदि ग्रन्थों में नहीं है। विदेशी पुस्तकों में भी नहीं है। इन बातों से प्रमाणित होता है कि भारत में उन लोगों का राज्य पूर्व से ही था। अब अत्रि के आरम्भिक वंश वृक्ष पर दृष्टिपात कीजिये।

अत्रि वंश वृक्ष (आरम्भिक)

(ईरान) सूर्य-विष्णु — अत्रि (अत्रि पत्तन)

१. मनुवैवस्वत — सोम-चन्द्र १.

इला से पति -

२. इला(पुत्री) का पति -बुध २. (प्रतिष्ठान[1] का राजा)

३. एल पुरुरवा + उर्वशी (पत्नी)
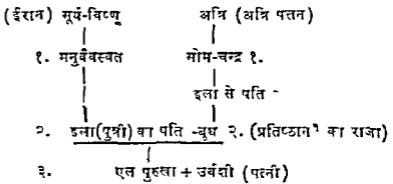
१. सोम-चन्द्र

१—चन्द्र-सोम—यह अति सुन्दर और देदिप्यमान पुरुष थे। इनके पिता का नाम अत्रि था, जो अत्रिपत्तन के प्रजापति थे। इनका विवाह दक्ष प्रजापति की सताइस पुत्रियों से हुआ, जिनके नाम इस प्रकार हैं—१. अश्विनी, २. भरणी, ३. कृतिका, ४. रोहिणी, ५. मृगशिरा, ६. आर्द्रा, ७. पुनर्वसु, ८. पुष्य, ९. श्लेषा, १०. मघा, ११. पूर्वा फाल्गुनी, १२. उत्तरा फाल्गुनी, १३. हस्त, १४. चित्रा, १५. स्वाती, १६. विशाखा, १७ अनुराधा, १८. ज्येष्ठा, १९. मूल, २० पूर्वाषाढ, २१. उत्तराषाढ, २२. श्रवण, २३. धनिष्ठा, २४. शतभिशाखा, २५ पूर्वाभाद्रपद, २६. उत्तराभाद्रपद, २७. रेवती। ये सभी पत्नियां नि:सन्तान रह गईं। यही सताइस नाम नक्षत्रों के भी है (भागवत)।

वरुण-पुत्र अंगिरा और अंगिरा-पुत्र बृहस्पति थे। वही बृहस्पति 'देव गुरु' के नाम से विख्यात है। उन्ही की पत्नी तारा थी, जिसको चन्द्रमा से गुप्त प्रेम हो गया था। तारा के गर्भ से चन्द्रमा को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम बुध पड़ा।

---

१. कुछ नवीन गवेषकों का कहना है कि 'प्रतिष्ठान' वर्तमान 'पेशावर' का नाम था।

वहीं बुध भारत में चन्द्रवंशी राज्य का संस्थापक हुआ। चन्द्र का राज्य काल—२६६२ ई० पू० से २६३४ ई० पू० तक।

२ राजा बुध

(२६३४ ई०पू० से २६०६ ई०पू० तक)

सातवें मनु वैवस्वत की पुत्री इला से चन्द्र-पुत्र बुध का विवाह हुआ। इसलिये पार्जिटर ने बुध और इला के वंशवृक्ष का नाम 'ऐलारेस' दिया है। इसी को उन्होंने आर्य जाति (Aryan race) कहा है। परन्तु पुराणों में चन्द्रवंश कहा गया है। इला का पुत्र पुरूरवा था, जिसके नाम पर पुरुराजवंश भी कहा जाता है। इलावंश कहने पर प्रथम पीढ़ी मनुवैवस्वत से समझना चाहिये। क्योंकि उन्हीं की बेटी इला थी। चन्द्रवंश कहने पर बुधके पिता चन्द्र को प्रथम पीढ़ी में मानना चाहिये। इस प्रकार चन्द्रवंश की पहली पीढ़ी में मनु और चन्द्रमा दोनों आ जाते हैं। मनु के समय से ही सूर्य तथा चन्द्र दोनों ही राजवंश एक साथ ही आरम्भ हुये। उस समय भारत में सप्त सिन्धव प्रदेश में भिन्न-भिन्न नामों से आर्यों के राज्य थे (ऋ०वे०)। आरंभिक काल में चन्द्रवंश की राजधानी प्रतिष्ठान झुसी-प्रयाग (Allahabad) में थी। पीछे राजा हस्तिन (२७) ने जब हस्तिनापुर (दिल्ली) का निर्माण किया, तब उन लोगों की राजधानी वहाँ भी हो गई।

इला को अपने पिता से दहेज में ईरान का एक प्रान्त मिला था, जिसका नाम इलावर्त्त पड़ा। इसीलिये इला और बुध के पुत्र पुरूरवा इलावर्त्त (ईरान) और भारत दोनों जगहों के अधिकारी हुये। अतएव, उनको राजा 'एल' तथा एल पुरूरवा कहा जाता है।

बुध ने ऋग्वेद (१०।१०१) के एक सूक्त की रचना की है, इसलिये उन को वेदवि कहा गया। बुध के ही जन्म काल में तारकामय संग्राम हुआ (मत्स्य ४७।४३। वायु ९०-५-४५। "आसीत त्रैलोक्य विख्यातः संग्रामस्तारकामय" हरि-वंश पुराण ४२—१०)। इस संग्राम में प्रह्लाद पुत्र विरोचन का वध हुआ (मत्स्य अ. ४७। तैतिरीय ब्राह्मण• १।५।९।१)। बुध, अर्थ शास्त्र और हस्तिशास्त्र के प्रवर्त्तक थे (मत्स्य ३४।२)। जैसे मनु ने अपने पिता सूर्य के नाम पर अयोध्या में सूर्यराज वंश की स्थापना की, वैसे ही बुध ने प्रतिष्ठानपुरी, प्रयाग में अपने पिता चन्द्र के नाम पर चन्द्रवंश राज्य की स्थापना की।

बुध के द्वारा इला की कोख से पुरुरवा का जन्म हुआ (भागवत—९।१४।१५)। उर्वशी से पुरुरवा का व्याह हुआ (भाग० ९।१४।२१-२२) बुध का उत्तराधिकारी उसका पुत्र पुरुरवा हुआ।

प्रतिष्ठान

प्रयाग में यमुना नदी के उत्तर किनारे पर प्रतिष्ठान है, ऐसा पुराणों में लिखा है (वायु-९१,५० । ब्रह्माण्ड iii, ६६,२१ । लिंग i ६६,५६ । ब्रह्म-१०,९-१० । हरिवंश २६, १३५१, १४१, १-२) । परन्तु गंगा नदी के उत्तर किनारे पर है। यथार्थतः अभी वहाँ पर सरयू, यमुना और गंगा की त्रिवेणी तथा संगम है।

बुध का राज्य काल—२६३४ ई०पू० से २६०६ ई० पू० तक।

३. राजा एलपुरूरवा

(२६०६ ई० पू० से २५७८ ई० पू० तक)

इलावर्त्त (ईरान में) और प्रतिष्ठान पुर (प्रयाग-भारत में) दोनों जगहों का राज्याधिकारी पुरूरवा हुआ। इसलिये उसको एल पुरूरवा तथा राजा एल भी कहा गया है। मातृ पक्ष लेकर वह इलावर्त्त का राजा हुआ था। वायु पुराण (९१।४९।५०) में पुरूरवा के विषय में इस प्रकार लिखा है।

"एवं प्रभा वो राजासीदैलस्तु द्विज सत्तमाः।
देशे पुण्यतमे चैव महर्षिभिरलंकृते।
राज्यं स कारयामास प्रयागे पृथिवी पतिः।
उत्तरे यामुने तीरे प्रतिष्ठाने महायशाः।"

मत्स्य पुराण (२४।११) में पुरूरवा को सप्त द्वीपपति कहा गया है। वह यज्ञाग्नियों के आविष्कर्ता, बड़े दानशील तथा सुन्दर स्वरूप वाले थे (मत्स्य पुराण ११८।६१)।

पुरूरवा और उर्वशी

प्रसिद्ध अप्सरा उर्वशी एक समय कहीं जा रही थी। रास्ते में एक वन हो कर जाना पड़ता था। उस वन में हिरण्यपुर वासी केसी दैत्य से मुलाकात हो गई। उसने इसको अपने अधिकार में करना चाहा। परन्तु यह उस दैत्य से नफरत करती थी। उस परिस्थिति में वह बहुत कठिनाई में पड़ गई। संयोगवश उसी समय पुरूरवा भी वहाँ पर कहीं से घुमता-घामता पहुँच गया। उस ने केसी दैत्य को पराजित कर उर्वशी का उद्धार किया। इसलिए इन्द्रने प्रसन्न हो कर उर्वशी को

पुरुरवा के हवाले कर दिया (मत्स्य २४ २२ २५) । पुरुरवा साठ वर्ष की आयु तक उर्वशी के साथ सुख सागर म गोते लगाता रहा (विष्णु ४ ६-४८।मत्स्य २४ ३१ । वायु ९१ ५,९१-१४। हरिवंश २६ २८) । राजा पुरुरवा ने ऋषियों के सोने के बर्तन बल पूर्वक छिनवा लिये थे । इसलिये मौका पाकर ऋषियों ने उसको मारडाला (वायु २।२४।२३ । ९०।४८ । महाभारत आदि पर्व ७०।१८।२०।)

पुरुरवा पुत्र

पुरुरवा के छै पुत्र हुये (ब्रह्माण्ड ३।६६ २२,३)। पुरुरवा के सात पुत्र हुये (वायु ९१,५१ २)। पुरुरवा के आठ पुत्र हुये (मत्स्य २४।३३)। पुरुरवा ने छै पुत्र हुए (भागवत)।

छै पुत्रों म आयु सबसे बडा और अमावसु सबसे छोटा था। छवो के नाम इस प्रकार है—१. आयु २ धीमान ३ दृढायु ४ वनायु ५ शतायु, ६ अमावसु(ब्रह्म० पुराण) । परन्तु भागवत के अनुसार नाम इस प्रकार हैं—आयु श्रुतायु सत्यायु, रय, विजय और जय ।

ऋषियों ने ज्येष्ठ पुत्र आयु का ही प्रतिष्ठान प्रयाग म राजतिलक किया। अमावसु ने कान्यकुब्ज म एक शाखा राज्य की नींव डाली। चन्द्रवंश की यह पहली शाखा हुई।

भिन्न भिन्न पुराणो म नामो की भिन्नता होने पर भी प्रथम पुत्र का नाम सबो म 'आयु' ही है।

वेदर्षि पुरुरवा

ऋग्वेद मण्डल १० । सूक्त ९५

(ऋषि —पुरुरवा ऐल , उर्वशी । देवता—उर्वशी, पुरुरवा ऐल

हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु ।
न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन्परतरे चनाहन् ॥१

किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव ।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वातइवाहमस्मि ॥२

इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः ।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः ॥३

सा वसु दधती श्वशुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिं चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन ॥४

भिः स्म माह्नः श्नथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि ।
पुरूरवोऽनु ते केतमाय राजा मे वीर तन्व स्तदासीः ॥५।१
या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिहृदेचक्षुर्न ग्रन्थनी चरण्युः ।
ता अंजयोऽरुणयो न सस्रु श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त ॥६
समस्मि जायमान आसत ग्ना उतेमवर्धन्नद्य स्वगूर्ताः ।
महे यत्त्वा पुरूरवो रणायावर्धयन्दस्युहत्याय देवाः ॥७
सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे ।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्न रथस्पृशो नाश्वा ॥८
यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते ।
ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीलयो दन्दशानाः ॥९
विद्युन्न या पतन्ती दविद्योद्भरन्ती मे अप्या काम्यानि ।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घ मायुः ॥१०।२
जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः ।
अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न म आशृणोः किमभुग्वदासि ॥११
कदा सूनु पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयाद्विजानन् ।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वसुरेषु दीदयत् ॥१२
प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्ये शिवायै ।
प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर माप ॥१३
सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ ।
अधा शयीत निरृ्तेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः ॥१४
पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उक्षन् ।
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता ॥१५।३
यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्रः ।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि ॥१६
अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानिमुप शिक्षाम्युर्वशीं वसिष्ठः ।
उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे ॥१७
इति त्वा देवा इम आहुरैल यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः ।
प्रजा ते देवान्हविषा यजाति स्वर्ग उत्वमपि मादयासे ॥१८।४

भावार्थ—हे निर्दय नारी ! तुम अपने मन को अनुरागी बनाओ। हम शीघ्र ही परस्पर वार्तालाप करें। यदि हम इस समय मौन रहेंगे तो आगामी दिवसों मे सुखी नही होंगे ॥१॥ हे पुरूरवा ! वार्तालाप से कोई लाभ नहीं। मैं वायु के समान तुम्हारे पास आई हूँ। तुम अपने गृह को लौट जाओ ॥२॥ उर्वशी ! मैं तुम्हारे वियोग मे इतना सन्तप्त हूँ कि अपने तूणीर से बाण निकालने मे भी असमर्थ हो रहा हूँ। इस कारण मैं युद्ध मे जय-लाभ करके असीमित गौओ को नही ला सकता। मैं राजकार्यों से विमुख हो गया हूँ, इसलिये मेरे सैनिक भी कार्यहीन हो गये हैं ॥३॥ हे उषा ! उर्वशी यदि श्वसुर को भोजन कराना चाहती तो निकटस्थ घर से पति के पास जाती ॥४॥ हे पुरूरवा ! मुझे किसी सपत्नी से प्रतिस्पर्द्धा नही थी, क्योंकि मैं तुम से हर प्रकार सन्तुष्ट थी। जब से मैं तुम्हारे घर में आई तभी से तुमने मेरे सुखो का विधान किया ॥५॥ [१]

सुजूर्णि, श्रेणि, सुम्न आदि अप्सराएँ मलिन वेश मे यहाँ आती थी। गोष्ठ मे जाती हुई गौएँ जैसे शब्द करती है, वैसे ही शब्द करने वाली वे महिलायें मेरे घर मे नही आती थी ॥६॥ जब पुरूरवा उत्पन्न हुआ तब सभी देवांगनाएँ उसे देखने को आईं। नदियो ने भी उसकी प्रशंसा की। तब हे पुरूरवा ! देवगण ने घोर संग्राम मे जाने और नाश करने के लिये तुम्हारी स्तुति की ॥७॥ जब पुरूरवा मनुष्य होकर अप्सराओ की ओर गये तब अप्सराएँ अन्तर्धान हो गईं। वह उसी प्रकार वहाँ से चली गईं; जिस प्रकार भयभीत हरिणी भागती है या रथ मे योजित अश्व द्रुतगति से चले जाते हैं ॥८॥ मनुष्य योनि को प्राप्त हुये पुरूरवा जब दिव्यलोक वासिनी अप्सराओ की ओर बढे तब वे अप्सराएँ जैसे क्रीडाकारी अश्व भागा जाता है, वैसे ही भाग गईं ॥९॥ जो उर्वशी अन्तरिक्ष की विद्युत के समान आभामयी है, उसने मेरी सब अभिलाषाओ को पूर्ण किया था। वह उर्वशी अपने द्वारा उत्पन्न मेरे पुत्र को दीर्घजीवी करे ॥१०॥ [२]

हे पुरूरवा ! तुमने पृथिवी की रक्षा के लिये पुत्र को उत्पन्न किया है। मैं तुमसे अनेक बार कह चुकी हूँ कि तुम्हारे पास नही रहूँगी। तुम इस समय प्रजापालन के कार्य से विमुख होकर व्यर्थ वार्तालाप क्यों करते हो ? ॥११॥ हे उर्वशी ! तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा ? वह मेरे पास आकर रोवेगा ? पारस्परिक प्रेम के बन्धन को कौन सद्गृहस्थ तोडना स्वीकार करेगा ? तुम्हारे श्वसुर के घर मे श्रेष्ठ आलोक जगमगा उठा है ॥१२॥ हे पुरूरवा ! मेरा उत्तर सुनो—मेरा पुत्र तुम्हारे पास आकर रोवेगा नहीं। मैं उसकी सदा मंगल-

कामना करूँगी। तुम अब मुझे नहीं पा सकोगे, अत अपने घर को लौट जाओ। मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे पास भेज दूँगी ॥१३॥ हे उर्वशी! मैं तुम्हारा पति आज पृथिवी पर गिर पड़ा हूँ। वह (मैं) फिर कभी न उठ सका। वह दुर्गति के बन्धन मे पडकर मृत्यु को प्राप्त हो और वृकादि उसके शरीर का भक्षण करें ॥१४॥ हे पुरुरवा! तुम गिरोमत। तुम अपनी मृत्यु की इच्छा न करो। तुम्हारे शरीर को वृकादि भक्षण न करें। स्त्रियां और वृकों का हृदय एक सा होता है, उनकी मित्रता कभी अटूट नही रहती ॥१५॥[३]

मैंने विविध रूप धारण कर मनुष्यो म विचरण किया है। चार वर्षों तक मैं मनुष्यो म ही वास करती रही हूँ ॥१६॥ उर्वशी जलको प्रकट करन वाली और अन्तरिक्ष को पूर्ण करन वाली है। वसिष्ठ ही उसेअपने वश मे कर सके हैं। तुम्हारे पास उत्तमकर्मा पुरुरवा रहे। हे उर्वशी! मेरा हृदय दग्ध हो रहा है, अब लौट आओ ॥१७॥ हे पुरुरवा! सभी देवताओं का कथन है कि तुम मृत्यु को जीतने वाले होग और हव्य द्वारा देवताओ का यज्ञ करोगे। फिर स्वर्ग म आनन्द पूर्वक वास करोगे ॥१८॥

ऋग्वेद व इस (१०।९५) सूक्त की रचना पुरुरवा और उर्वशी ने ही की है। वेद मन्त्र की रचना करन वाले को ही ऋषि तथा मन्त्र दृष्टा कहा गया है। इसलिये पुरुरवा और उर्वशी दोनों ही वेदर्षि हैं। उर्वशी के अतिरिक्त और भी महिलायें हैं, जिन्होने वैदिक ऋचाओ की रचनायें की है।

पुरूरवा और उर्वशी का बेमेल विवाह

वरुण और सूर्य दोनो की प्रेमिका उर्वशी थी। इसी लिये वशिष्ठ को मित्रा-वरुण का पुत्र ऋग्वेद मे कहा गया है। उस समय वह कम से कम पन्द्रह वर्ष की जरूर रही होगी। सूर्य (मित्र) के पुत्र मनुवैवस्वत थे। मनु की पुत्री इला थी। इला का पुत्र पुरुरवा हुआ। पुरुरवा की पत्नी वही उर्वशी हुई जो वशिष्ठ की माता थी।। जिस समय उर्वशी सूर्य-दरबार म हाजिरी दिया करती थी, उस समय यदि मनु का जन्म माना जाय तो मनु, इला और पुरुरवा तक तीन पीढियाँ हो जाती हैं। यदि प्रत्येक पीढी का अन्तर १५ वर्ष ही माना जाये तो भी ४५ वर्ष होते है। १५ वर्ष की उर्वशी पहले थी, इस लिये पुरुरवा स विवाह के समय उसकी उम्र ६० वर्ष की जरूर रही होगी। अब पुरुरवा का वचन देखिये—

(आयु (४) इलावर्त-ईरान और प्रतिष्ठानपुर-प्रयाग, दोनों जगहों का शासक हुआ।)
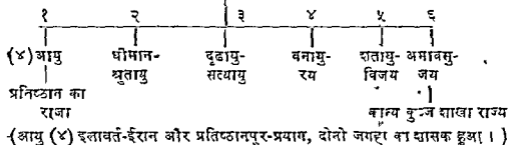
४. राजा आयु

(२५७८ ई० पू० से २५५० ई० पू० तक)

चन्द्रवंश की चौथी पीढ़ी में आयु हुये। राहू की बेटी से इनका विवाह हुआ।[1] इनकी पाँच सन्तानें हुईं।[2] १. नहुष, २. क्षत्रवृद्ध-वृद्धशर्मन, ३. रम्भा, ४. राजी-रजी, ५ अनेनस। नहुष पाँचवां उत्तराधिकारी हुआ। क्षत्रवृद्ध वृद्धशर्मन ने काशी राजवंश की स्थापना की। यह चन्द्रवंश की दूसरी शाखा हुई। रम्भा निःसन्तान। राजी या रजी से राजेय क्षत्रियवंश चला।
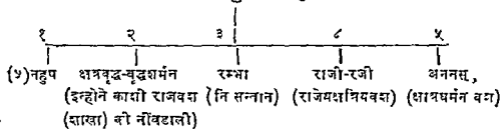
५. राजा नहुष

(२५५० ई० पू० से २५२२ ई० पू० तक)

चन्द्रवंश की पाँचवीं पीढ़ी में प्रतिष्ठान-प्रयाग राजगद्दी के उत्तराधिकारी नहुष हुये। यह परम प्रसिद्ध और प्रतापी राजा हुये। ऋग्वेद के नवें मण्डल में एक सूक्त (१०१) है, जिसके रचयिता कई ऋषि हैं, उनमें एक नहुष भी हैं। इसलिये

१. वायु ६८।२२। २ वायु ६८।२४।९३।१-२। ब्रह्माण्ड ३।६।२३।२४ III ६७।१-२। ब्रह्म ११।१-२। हरिवंश २८।१४५-६। विष्णु पुराण ४।८।१।

उनको भी वेदर्षि कहा जाता है। नहुष-पुत्री यति थी। उनका विवाह च्यवन-सुकन्या के पुत्र आप्नवान से हुआ (वायु ६५।९७।९८)। नहुष को इन्द्रपद मिला था (महाभारत उद्योगपर्व ११-१)। पीछे उन्हें पदच्युत कर दिया गया (महाभारत उद्योगपर्व १७।७५)। महाभारत में च्यवन-नहुष संवाद भी है।

कई पुराणों में राजा नहुष के छः[1] और कुछ में सात[2] पुत्र कहे गये हैं। छः पुत्रों के नाम इस प्रकार है—यति, ययाति, संयाति, आयाति, अयति और ध्रुव। नहुष के पुत्र राजा ययाति थे।[3] ज्येष्ठ पुत्र यति यत होकर गृहत्यागी हो गये। इसलिये ययाति को प्रतिष्ठान की राजगद्दी मिली।[4]

५. नहुष का वंश वृक्ष

१	२	३	४	५	६
यति	(६) ययाति	संयाति	आयाति	अयति	ध्रुव

प्रतिष्ठान के राजा हुये। (नहुष-पुत्र ययाति-ऋग्वेद १०।६३।१)
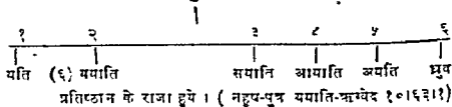
६. राजा ययाति

(२५२२ ई० पू० से २४६४ ई० पू० तक)

राज्याधिकारी ययाति हुये (भागवत ९।१८।३) प्रतिष्ठान-प्रयाग राजगद्दी के यह छठें उत्तराधिकारी हुये। इन्होंने अपने चार भाइयों को चार दिशाओं में नियुक्त कर दिया। ययाति ने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा को पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया (भागवत ९।१८।४)। शुक्राचार्य ने देवयानी का विवाह राजा ययाति के साथ कर दिया (भागवत ९।१८।३०) इस प्रकार राजा ययाति की दो पत्नियां हुई —प्रथम भृगु-पुत्र काव्य -शुक्र-उशना की पुत्री देवयानी और दूसरी राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा (महाभारत आदि पर्व ९०।८)। यद्यपि राजा ययाति के एक श्वसुर असुर राजा थे तथापि देवासुर संग्राम में देवों का ही पक्ष ग्रहण किया (महाभारत द्रोण पर्व ६३।७) और आदि पर्व

१—६ पुत्र ब्रह्माण्ड ३।६८, १२-१३। वायु ९३,१२-१३। ब्रह्म १२,१-२। हरिवंश ३०, १५९९-१६००। लिंग १, ६६,६०-६२। कूर्म २२, ५-६। विष्णु १०,१। गरुड़ १३९,१७। भागवत ९।१८।१। २—मत्स्य २४,४९-५०। पद्म १२,१०३-४। अग्नि २७२-२०। महाभारत में ६ ही पुत्रों के नाम हैं। भागवत के अनुसार यति, ययाति, संयाति, आयति, वियति और कृति हैं। ३—ऋग्वेद १०।६३।१। ४—भागवत ९।१८।१,२।

७६।१२)। राजा ययाति का रथ जन्मेजय द्वितीय तक पौरवों के पास था। वही रथ वृहद्रथ ने जरासंध को दिया। कालोपरान्त वही रथ जरासंध ने श्रीकृष्ण को दिया (वायु पुराण ९३।१८।२७)। राजा ययाति प्रतिष्ठान प्रयाग के राजा तो थे ही, इसके अतिरिक्त इनको इलावर्त्त प्रान्त स्वर्गधाम (जो ईरान पर्शिया में था) का इन्द्र बनाकर पीछे पदच्युत किया गया (महाभारत शान्ति पर्व)। इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि ययाति भी पुरूरवा की तरह इलावर्त और प्रतिष्ठान दोनों जगहों के शासक थे।

राजा ययाति की पत्नियाँ

राजा ययाति की पहली पत्नी देवयानि भार्गववंशीय शुक्र-काव्य-उशना की पुत्री और दूसरी शर्मिष्ठा—दैत्य-दानव-असुर राजा वृषपर्वा की पुत्री थी (वायु ६८,२३-४। ब्रह्माण्ड III, ६,२३,२५। मत्स्य ६, २०, २२। विष्णु I, २१, ६)। देवयानी से दो पुत्र हुये—यदु और तुर्वसु। शर्मिष्ठा के तीन पुत्र हुये—द्रुह्यु, अनु और पुरु (ब्रह्माण्ड, वायु, ब्रह्म और हरिवंश पुराण)। यदु और तुर्व राजर्षि थे।[1] यदुवंशियों में परशु के पुत्र तिरिंदर थे।[2] समुद्र के पार रहने वाले तुर्व और यदु को समुद्र के पार तुम्ही (इन्द्र) लगाते हो।[3] इससे प्रमाणित होता है कि उनलोगों का राज्य समुद्र पार भी था।

तुर्वसु से तुर्वसु-शाखा का निर्माण हुआ। द्रुह्यु से गान्धार शाखा (नार्थ वेस्ट फ्रंटियर) चली। ययाति और शर्मिष्ठा के पुत्र अनु से आनव राजवंश चला। अनु के विषय में आगे परिचय मिलेगा, परन्तु यहां भी कुछ प्रकाश डालना अनावश्यक नहीं होगा।

भारतीय पुराणों में अनु को ज्येष्ठ लिखा है। यह भी लिखा है कि वे तथा उनके वंशज म्लेच्छ हो गये थे ("अनोऽस्तु म्लेच्छ जातय" भागवत तथा महाभारत) पार्जिटर ने पुराणों के अनुसार विचार करते हुये आनव राजवंश की दो शाखाएँ बतलाई हैं। एक उशीनर की, जिन्होंने पंजाब में शाखा राज्य की नींव डाली। दूसरी तितिक्षु की, जिन्होंने पूर्वी बिहार में अपना राज्य स्थापित किया। पर्शिया के इतिहास जिल्द १, पृ० ६१ और ६५ में लिखा है कि अनु का राज्य कास्पियन सागर के उस पार था (Anaw site in Trans—Caspia")। मत्स्यपुराण में अनु का राज्य ऐसे स्थान में बतलाया गया है जहां जलमार्ग से ही जाया जा सकता था। अनु के बाद सात पीढ़ियों तक का कुछ पता नहीं चलता, परन्तु आठवीं पीढ़ी में उशीनर प्रमाणित होते हैं।

---

१. ऋग्वेद १०।६२।१०। २. वही ८।६।४८। ३. वही ६।२०।१२।

उशीनर—उशीनर का वर्णन नौ पुराणो मे है किन्तु प्रधानत· ब्रह्माण्ड, वायु· ब्रह्म और हरिवंश पुराण मे हैं। जहाँ इनका राज्य था, उस स्थान का नाम 'उश' प्रदेश था। उसी स्थान का नाम 'मध्य भूमि' था(एतरेय ब्राह्मण तथा टाडराजस्थान)। उशीनर के पाँच पुत्र थे—शिवि, चीना, नव, ऋमि और दावन।

शिवि के चार पुत्र हुये—वृषदर्भ, सुवीर, केकय और मद्र। चीना के भी चार पुत्र हुये—अंग, वग, कलिंग और पुण्ड्र। सवो ने अपने अपने नाम पर राज्य स्थापित किया (व० र० उ० अ० भाष्यम पृ० १६) महाभारत के अनुसार अनु की सातवी पीढी मे महामनस हुये। महामनस के दो पुत्र हुये—एक उशीनर और दूसरे तितिक्षु। उशीनर के पाँच पुत्र हुये—(१) नृग—जिनसे यौधेय राजवंश चला। (२) नव—य नवराष्ट्र राजवंश के प्रवर्त्तक हुये। (३) कृमि—ये कृमिला के जमीन्दार हुये। (४) सुवर्त्त—इनसे अम्बष्ट राजवंश चला। (५) शिवि औशीनर—इनके चार पुत्र हुये—(१)वृषदर्भ—वृवदर्भ वंश के प्रवर्त्तक। (२)सुवीर—सुवीर राजवंश के प्रवर्त्तक। (३) केकय—कैकय राजवंश के प्रवर्त्तक। (४) मद्र या मद्रक—मद्रक राजवंश के प्रवर्त्तक। (ये विचार पार्जिटर के हैं—जो पुराणो के आधार पर ही है। उन्होंने पर्शिया के इतिहास से जाँच-पडताल करने की चेष्टा नहीं की है)।

उशीनर के छोटे भाई तितिक्षु का वंशवृक्ष भी भिन्न भिन्न पुराणो मे भिन्न भिन्न तरह मे है। मत्स्य और हरिवंश पुराण मे कुछ विशेष शुद्ध जान पडता है। तितिक्षु के वंश मे वलि थे। उनके पाँच पुत्र हुये—जिनमे पूरब के राज्य वँटे थे। अंग, वग, कलिंग, पुण्ड्र और सुम्ह (यह पार्जिटर द्वारा समर्थित है)।

यह मालूम होता है कि शिवि और उशीनर एक ही वंश मे थे। ईरान मे ही शिवि प्रदेश था, जिसको शिशनान और शिवि का राज्य कहा गया है। जहाँ उन्होंने 'कपोत' जातिवालो को आश्रय दिया था। उशीनर के वंशज अब 'उजबक'(उशवेग) कहाते हैं (हिस्ट्री आफ पर्शिया, जिल्द २, पृ० २१८)।

शिवि के चारो पुत्रो के चार राज्य, ईरान और भारत की सीमाओ पर स्थापित हुये, जिनको मध्य राज्य (middle kingdom) कहते थे। गगा से कश्यप सागर तक "मध्य राज्य" था (From Ganges to Caspian in middle kingdom—टाडराजस्थान)।

उत्तर मद्र, ईरान का मीडिया (Media) प्रदेश था, जो कश्यप सागर तट पर अग्नि-स्थान के निकट था। मद्रपति शल्य वही के राजा थे। जिन्हें पाश्चात्य सुलेमान

(Soloman) कहते है। इनकी राजधानी पासरगद्दी (Throne of Soloman) थी (पासगर गद्दी प्रकरण-हिस्ट्री आफ पर्शिया)। ईरान का मीडिया (media) प्रदेश ही मद्रदेश था (कनिंघम का इतिहास जिल्द २)।

ययाति सातों द्वीपों के एकछत्र सम्राट थे (भाग० ९।१८।४६) चक्रवर्ती सम्राट ययाति की भोगों से तृप्ति न हो सकी (भा० ९।१८।५१)। ययाति ने पुरु को राज्य देते हुये कहा था—"गंगा और यमुना के मध्य का सम्पूर्ण देश तेरा है (महाभारत आदि पर्व ८२।५)। अन्त में ययाति गृहत्यागी हो गये (भागवत)।

७. राजा पुरु—(२८९४ ई० पू० से २४६६ ई० पू० तक) राजा ययाति और शर्मिष्ठा के सबसे छोटे पुत्र पुरु-पौरव चन्द्रवंश की प्रतिष्ठान-प्रयाग राज गद्दी के सातवे उत्तराधिकारी हुये। इनका पुत्र जन्मेजय इनके बाद राजा हुआ।

८. राजा जन्मेजय (प्रथम)—(२४६६ ई० पू० से २४३८ ई० पू० तक) अपने पिता के पश्चात् यह राज्याधिकारी हुये। इन्होने तीन अश्वमेध यज्ञ किये (महाभारत आदि पर्व ९१।११)।

९. राजा प्रचिन्वान-प्रचिन्वन्त—(२४३८ ई० पू० से २४१० ई० पू० तक) पिता के बाद यह नवी पीढी मे हुये। इनका पुत्र प्रवीर हुआ।

१०. राजा प्रवीर—(२४१० ई० पू० से २३८२ ई० पू० तक)। इनके पुत्र मनस्यु राज्याधिकारी हुये।

११. राजा मनस्यु—(२३८२ ई० पू० से २३५४ ई० पू० तक)।

१२. राजा अभयाद-चारुपद—(२३५४ ई० पू० से २३२६ ई० पू० तक)। (पार्जिटर के मतानुसार अभयाद और श्रीमद्भागवत (९।२०।३) के अनुसार चारुपद नाम था)।

१३ राजा सुधन्वन-धुन्धु-सुद्यु—(२३२६ ई० पू० से २२९८ ई०पू० तक)। पार्जिटर के मतानुसार सुधन्वन और भागवत (९।२०।३) के अनुसार चारुपद का पुत्र सुद्यु)।

१४. राजा बहुगव—(२२९८ ई० पू० से २२७० ई० पू० तक)। (पार्जिटर के मतानुसार धुन्धु का पुत्र बहुगव और भागवत (९।२०।३) के अनुसार सुद्यु का पुत्र बहुगव)।

१५. राजा संयाति—(२२७० ई० पू० से २२४२ ई० पू० तक)। (बहुगव के पुत्र सयाति हुये—पार्जिटर तथा भागवत ९।२०।३)।

उशीनर—उशीनर का वर्णन नौ पूराणो मे है किन्तु प्रधानतः ब्रह्माण्ड, वायु. ब्रह्म और हरिवश पुराण मे है। जहाँ इनका राज्य था, उस स्थान का नाम 'उश' प्रदेश था। उसी स्थान का नाम 'मध्य भूमि' था(एतरेय ब्राह्मण तथा टाडराजस्थान)। उशीनर के पाँच पुत्र थे—शिवि, चीना, नव, क्रमि और दावन।

शिवि के चार पुत्र हुये—वृषदर्भ सुवीर, कैकय और मद्र। चीना के भी चार पुत्र हुये—अँग, वग, कलिग और पुण्ड्र। सबो ने अपने अपने नाम पर राज्य स्थापित किया (व० र० उ० अ० भाष्यम पृ० १६) महाभारत के अनुसार अनु की सातवी पीढी म महामनस हुये। महामनस के दो पुत्र हुये—एक उशीनर और दूसरे तितिक्षु। उशीनर के पाँच पुत्र हुये—(१) नृग—जिनसे यौधेय राजवश चला। (२) नव—य नवराष्ट्र राजवश के प्रवर्त्तक हुये। (३) क्रमि—ये क्रमिला के जमीन्दार हुय। (४) सुवर्त्त—इनसे अम्बष्ट राजवश चला। (५) शिवि औशीनर—इनके चार पुत्र हुये—(१)वृषदर्भ—वृषदर्भ वश के प्रवर्त्तक। (२)सुवीर—सुवीर राजवश के प्रवर्त्तक। (३) कैकय—कैकय राजवश के प्रवर्त्तक। (४) मद्र या मद्रक—मद्रक राजवश के प्रवर्त्तक। (ये विचार पार्जिटर के है—जो पुराणो क आधार पर ही है। उन्होने पर्शिया के इतिहास से जाँच-पडताल करने की चेष्टा नही की है)।

उशीनर के छोटे भाई तितिक्षु का वशवृक्ष भी भिन्न भिन्न पुराणो मे भिन्न भिन्न तरह मे है। मत्स्य और हरिवश पुराण मे कुछ विशेष शुद्ध जान पडता है। तितिक्षु के वश मे वलि थे। उनके पाँच पुत्र हुये—जिनमे पूरब के राज्य बँटे थे। अग, बग, कलिग, पुण्ड्र और सुम्ह (यह पार्जिटर द्वारा समर्थित है)।

यह मालूम होता है कि शिवि और उशीनर एक ही वश मे थे। ईरान मे ही शिवि प्रदेश था, जिसको शिशतान और शिवि का राज्य कहा गया है। जहाँ उन्होने 'कपोन' जातिवालो को आश्रय दिया था। उशीनर के वशज अब 'उजबक'(उशवेग) कहाते हैं (हिस्ट्री आफ पर्शिया, जिल्द २, पृ० २१८)।

शिवि के चारो पुत्रो के चार राज्य, ईरान और भारत की सीमाओ पर स्थापित हुय, जिनको मध्य राज्य (middle kingdom) कहते थे। गगा से कश्यप सागर तक "मध्य राज्य" था (From Ganges to Caspian in middle kingdom—टाडराजस्थान)।

उत्तर मद्र, ईरान का मीडिया (Media) प्रदेश था, जो कश्यप सागर तट पर अग्नि-स्थान के निकट था। मद्रपति शल्य वही के राजा थे। जिन्हें पाश्चात्य सुलेमान

(Soloman) कहते है। इनकी राजधानी पासरगद्दी (Throne of Soloman) थी (पासगर गद्दी प्रकरण-हिस्ट्री आफ पर्शिया)। ईरान का मीडिया (media) प्रदेश ही मद्रदेश था (कनिंघम का इतिहास जिल्द २)।

ययाति सातों द्वीपो के एकछत्र सम्राट थे (भाग० ९।१८।४६) चक्रवर्ती सम्राट ययाति को भोगो से तृप्ति न हो सकी (भा० ९।१८।५१)। ययाति ने पुरु को राज्य देते हुये कहा था—"गंगा और यमुना के मध्य का सम्पूर्ण देश तेरा है (महाभारत आदि पर्व ८२।५)। अन्त मे ययाति गृहत्यागी हो गये (भागवत)।

७ राजा पुरु—(२८९४ ई० पू० से २४६६ ई० पू० तक) राजा ययाति और शर्मिष्ठा के सबसे छोटे पुत्र पुरु-पौरव चन्द्रवंश की प्रतिष्ठान-प्रयाग राज गद्दी के सातवे उत्तराधिकारी हुये। इनका पुत्र जन्मेजय इनके बाद राजा हुआ।

८. राजा जन्मेजय (प्रथम)—(२४६६ ई० पू० से २४३८ ई० पू० तक) अपने पिता के पश्चात् यह राज्याधिकारी हुये। इन्होने तीन अश्वमेघ यज्ञ किये (महाभारत आदि पर्व ९१।११)।

९. राजा प्रचिन्वान-प्रचिन्वन्त—(२४३८ ई० पू० से २४१० ई० पू० तक) पिता के बाद यह नवी पीढी मे हुये। इनका पुत्र प्रवीर हुआ।

१०. राजा प्रवीर—(२४१० ई० पू० से २३८२ ई० पू० तक)। इनके पुत्र मनस्यु राज्याधिकारी हुये।

११. राजा मनस्यु—(२३८२ ई० पू० से २३५४ ई० पू० तक)।

१२. राजा अभयाद-चारुपद—(२३५४ ई० पू० से २३२६ ई० पू० तक)। (पार्जिटर के मतानुसार अभयाद और श्रीमद्भागवत (९।२०।३) के अनुसार चारुपद नाम था)।

१३ राजा सुधन्वन धुन्धु-सुद्यु—(२३२६ ई० पू० से २२९८ ई०पू० तक)। पार्जिटर के मतानुसार सुधन्वन और भागवत (९।२०।३) के अनुसार चारुपद का पुत्र सुद्यु)।

१४. राजा बहुगव—(२२९८ ई० पू० से २२७० ई० पू० तक)। (पार्जिटर के मतानुसार धुन्धु का पुत्र बहुगव और भागवत (९।२०।३) के अनुसार सुद्यु का पुत्र बहुगव)।

१५. राजा संयाति—(२२७० ई० पू० से २२४२ ई० पू० तक)। (बहुगव के पुत्र संयाति हुये—पार्जिटर तथा भागवत ९।२०।३)।

१६. राजा अहयाति—(२२४२ ई० पू० से २२१४ ई० पू० तक)। ययाति के पुत्र अहयाति हुये (पार्जिटर तथा भागवत ९।२०।३)।

१७. राजा रौद्राश्व—(२२१४ ई० पू० से २१८६ ई० पू० तक)। अहयाति का पुत्र रौद्राश्व हुआ (पार्जिटर तथा भागवत ९।२०।३)।

रौद्राश्व के दस पुत्र हुये—ऋचेयु-ऋतेयु, कुक्षेयु, व्रतेयु आदि और सबसे छोटा वनेयु (भाग० ९।२०।४-५)। रौद्राश्व का उत्तराधिकारी ज्येष्ठ पुत्र ऋतेयु-ऋचेयु हुआ।

१८. राजा ऋचेयु-ऋतेयु—(२१८६ ई० पू० से २१५८ ई० पू० तक)। भागवत पुराण (९।२०।६) के अनुसार ऋचेयु के पुत्र का नाम 'रन्तिमार' था किन्तु अन्यान्य ग्रन्थों में मतिनार भी है। आचार्य चतुरसेन ने 'मतिनार' को बीसवीं पीढी में माना है, किन्तु मेरे विचार से बीसवीं पीढी में मतिनार का पुत्र सुमति होता है, जिसका दूसरा नाम 'तंसु' भी था।

१९. राजा मतिनार-रन्तिमार—(२१५८ ई० पू० से २१३० ई० पू० तक)। इनकी पत्नी का नाम सरस्वती था। इनकी सन्तानें चार हुई। तीन पुत्र और एक पुत्री। सुमति-तंसु, अप्रतिरथ, ध्रुव पुत्र तथा गौरी पुत्री। गौरी का विवाह सूर्य वंशी राजा युवनाश्व (द्वितीय-२०) से हुआ। वंश वृक्ष निम्न प्रकार है—

ऋचेयु-ऋतेयु
|
१९. राजा मतिनार-रन्तिमार

पुत्र:
- (२०) सुमति-तंसु → (२१) दुष्यन्त → (२२) भरत
- अप्रतिरथ → काण्व → मेधातिथि और काण्वायन (ब्राह्मण बने)।
- ध्रुव

पुत्री:
- गौरी + युवनाश्व (द्वितीय २०) सूर्यवंशी से विवाह हुआ → (चक्रवर्ती मानधाता-मानधातृ (सूर्यवंश-२१) → काण्य, सौभरि (पुत्रियां)
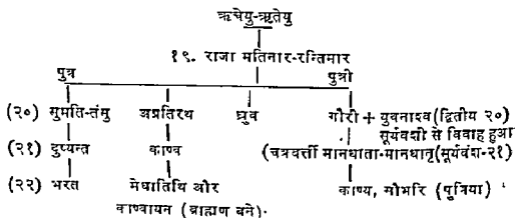
(मेधातिथि से प्रस्कण्व आदि ब्राह्मण हो गये—भाग० ९।२०।७)

मतिनार की पुत्री गौरी थी—जिसका विवाह सूर्य वंशी राजा युवनाश्व (द्वितीय २०) से हुआ था। उसी का पुत्र मानधाता-मानधातृ सूर्य वंश की २१वीं पीढी में राजा हुआ। उसने अपने को चक्रवर्ती घोषित किया था। मतिनार के

दूसरे पुत्र अप्रतिरथ थे। अप्रतिरथ के पुत्र काण्व हुये। काण्व के पुत्र मेधातिथि हुये जो वेदर्षि थे।[1] नीचे फुटनोट मे लिखित सभी सूक्तो की रचनायें मेधातिथि ने की है। उनके बाद काण्वायन आदि ब्राह्मण बन गये। उन्हीं को क्षात्रोपेन ब्राह्मण कहा गया। महाभारत मे मतिनार के चार पुत्र कहे गये है।[2] पुराणो[3] मे मतिनार के तीन पुत्र कहे गये हैं। उसके प्रथम पुत्र का नाम किसी पुराण मे सुमति और किसी मे तसु लिखा है। यही चन्द्रवंश प्रतिष्ठान राजगद्दी का बीसवां उत्तराधिकारी हुआ। भागवत पुराण के अनुसार रन्तिमार के तीन पुत्र हुये। सुमति (तसु) ध्रुव और अप्रतिरथ। अप्रतिरथ के पुत्र हुये काण्व।[4] काण्व का पुत्र मेधातिथि हुआ। मेधातिथि से प्रस्कण्व आदि ब्राह्मण हुये। सुमति का पुत्र रैभ्य हुआ। रैभ्य का पुत्र दुष्यन्त हुआ (भाग० ९।२०।७) परन्तु अन्य पुराणों से 'रैभ्य' प्रमाणित नही होता।

२०. राजा तंसु-सुमति—(२१३० ई० पू० से २१०२ ई० पू० तक) इनके बाद इनके पुत्र दुष्यन्त प्रसिद्ध राजा हुये। कौटुम्बिक सम्बन्धो पर विचार करने से कण्व और दुष्यन्त चचेरा भाई हुये। मेधातिथि और काण्वायन ब्राह्मणो के दुष्यन्त चाचा हुये।[5]

२१. राजा दुष्यन्त—(२१०२ ई० पू० से २०७४ ई० पू० तक) यह परम प्रतापी एव ख्याति प्राप्त राजा हुये। इनकी पत्नियाँ दो थी। पहिली 'लक्ष्मणा' और दूसरी 'शकुन्तला'। महाभारत (आदि पर्व, अध्याय ६२) मे एक शकुन्तलोपाख्यान ही है, जिसके आधार पर महाकवि कालिदास ने शकुन्तला नाटक की रचना की।

मालिनी नदी के किनारे चैत्ररथ वन मे कण्व ऋषि का आश्रम था। वही शकुन्तला का जन्म हुआ। वही राजा दुष्यन्त से गन्धर्व विवाह भी हुआ। राजा दुष्यन्त के राज्य की सीमायें म्लेच्छ राज्य तक थीं।[6] शकुन्तला से दुष्यन्त का पुत्र 'भरत' हुआ। यही 'भरत' प्रतिष्ठानपुर-प्रयाग का २२वां उत्तराधिकारी हुआ। भरत की माता शकुन्तला अपने जन्मके विषय मे इस प्रकार कहती है—"मैं विश्वामित्र की पुत्री हूँ। मेनका अप्सराने मुझे वन मे छोड दिया था। इस बात के साक्षी हैं मेरा पोषण करनेवाले महर्षि कण्व।[7]

१. ऋग्वेद १।१२ से २३ तक ८।२, ३२, ३३। २. महाभारत आदि पर्व ८६।१३८। ३. वायु तथा मत्स्य पुराण ६६।१३८। ४. भाग० ६।२०।६०। ५. वायु पुराण ६६।१२६।१३१। विष्णुपुराण ४।१६।३-७। ६. महाभारत आदि पर्व ६२।३।५। ७. भागवत ।x. २०.१३।

२२. राजा भरत

(२०७४ ई० पू० से २०४६ ई० पू० तक)

राजा भरत के पिता राजा दुष्यन्त और माता कण्वऋषि की पोष्य पुत्री शकुन्तला थी। शकुन्तला नाटक में कहा गया है कि गर्भवती अवस्था में ही शकुन्तला अपने पति राजा दुष्यन्त के पास गई थी। किन्तु ऐसी बात प्रमाणित नहीं होती। महाभारत, वायु, तथा मत्स्य पुराण में इस प्रकार लिखा है—"भस्त्रा माता पितुः पुत्रो येनजात स एव स" (महाभारत आदि पर्व ६९,२९। वायु, ९९,१३५। मत्स्य ४९।१८)।

"होनहार वीरवान के होत चीकनोपात" वालीकहावत भरथ पर बचपन से ही लागु थी। उनके हाथ में चक्र का चिन्ह था (महाभारत आदि पर्व ६८।४,७। द्रोण पर्व ३८।१-७)। विशेष शक्ति शाली होने के कारण उनको 'सर्व दमन' कहा जाता था। वह अपने काल में सार्वभौम सम्राट थे (महाभारत आदि-पर्व ६९।१८)। उन्होंने गंगा, यमुना और सरस्वती नदी के तट पर अनेक अश्वमेध यज्ञ किये (मत्स्य ४९।११)। वह समितिजय थे (महाभा० द्रोण पर्व ६८।८)। दीर्घतमा मामतेय ने भरत के यज्ञ कराये (ऐतरेय ब्राह्मण ८।२२)। भरत ने शुद्ध सोने के हजार कमल कण्व को दिये (महाभा० द्रोण पर्व-६८।११)। वही कण्व ऋषि राजा भरत के नाना होते थे। एक यज्ञ राजा भरत ने 'मपणार' देश में किया (ऐतरेय ब्राह्मण ८।२३)। भरत की पत्नियाँ तीन थी (महाभारत आदि-पर्व)। राजा भरत को अपना कोई पुत्र नहीं था।

भरत-पुत्र

भरत-पुत्र के विषय में गोलमाल की बातें है। भरत का औरस पुत्र कोई नहीं था, यह निश्चित मालूम होता है। उनकी पत्नी में दूसरे के द्वारा पुत्र उत्पन्न किये जाने की बात है। भागवत में लिखा है—"भरत का पुत्र भरद्वाज हुआ (भाग० ९।२०।३८)। वितथ भरत का दत्तक पुत्र हुआ (भाग०९।२०।३९)। वितथ भरत का पोष्य पुत्र और भरद्वाज का क्षेत्रज पुत्र हुआ। वायु पुराण (९९।१७) के अनुसार दीर्घतमा मामतेय के भाई भरद्वाज का क्षेत्रजपुत्र 'वितथ' भरत का उत्तराधिकारी हुआ। इसी के अनुसार मैंने भरत का उत्तराधिकारी 'वितथ' को ही माना है।

दौष्यन्ती भरत बड़ा शक्तिशाली राजा हुआ।[1] भरत ने ममता के पुत्र दीर्घतमा मुनि को पुरोहित बनाकर गंगातट पर गंगा सागर से गंगोत्री पर्यन्त पचपन

---

[1] भागवत,९।२०।२४।

पवित्र अश्वमेध यज्ञ किये। इसी प्रकार यमुना तट पर भी प्रयाग से यमुनोत्री तक उन्होंने अठहत्तर अश्वमेध यज्ञ किये। इन सभी यज्ञों में उन्होंने अपार धनराशि का दान किया। दुष्यन्त कुमार भरत का यज्ञीय अग्नि-स्थापन बड़े ही उत्तम गुण वाले स्थान में किया गया था। उस स्थान में भरत ने इतनी गौयें दान दी थीं कि एक हजार ब्राह्मणों में प्रत्येक ब्राह्मण को एक-एक बद्व (१३०८४) गौएँ मिली थी।[1] इस प्रकार राजा भरत ने उन यज्ञों में एक सौ तैंतीस (५५ + ७८) घोड़े बाँध कर अर्थात् १३३ यज्ञ करके समस्त नरपतियों को असीम आश्चर्य में डाल दिया। इन यज्ञों के द्वारा इस लोक में भरत ने परम यश प्राप्त किया।[2] यज्ञों में एक कर्म होता है "मष्णार"। उसमें भरत ने स्वर्ण से विभूषित, श्वेत दाँतों वाले चौदह लाख हाथी दान किये।[3] भरत ने जो महान कर्म किया, वह न तो पहले कोई राजा कर सका था, और न तो कोई आगे ही कर सकेगा।[4] भरत ने दिग्विजय के समय किरात, हूण, यवन, अन्ध्र, कङ्क, खश, शक और म्लेच्छ आदि समस्त ब्राह्मण द्रोही राजाओं को मार डाला,[5] पहले युग में बलवान असुरों ने देवताओं पर विजय प्राप्त कर लीथी, तब वे रसातल में रहने लगे थे। उस समय वे बहुत सी देवांगनाओं को रसातल[6] में ले गये थे। राजा भरत ने फिर उन्हें छुड़ा लिया।[7] भरत सार्वभौम सम्राट थे।[8] विदर्भ राज की तीन कन्यायें सम्राट भरत की पत्नियाँ थी। किन्तु किसी की सन्तान जीवित नहीं रही।[9] इसलिये भरत का वंशवृक्ष समाप्त होने लगा, तब उसने एक लड़के को गोद ले लिया। उसी लड़के का नाम भरद्वाज या वितथ पड़ा। वितथ एक पिता का औरस और दूसरे पिता का क्षेत्रज पुत्र था, इसलिये उसको भरद्वाज अर्थात् दो का पुत्र कहा गया। वितथ की माता एक भाई की पत्नी थी और दूसरे भाई ने भी उसके साथ मैथुन किया था—इसलिये एक का औरस और दूसरे का क्षेत्रज पुत्र हुआ।[10] सम्राट भरत के बाद उसका दत्तक पुत्र वितथ ही उसका उत्तराधिकारी हुआ।

इस देश का नाम करण—भारत

आजकल स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों के द्वारा यही पढ़ाया जाता है कि—"राजा दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम करण भारत हुआ"

---

१ भाग० ६।२०।२५-२६। २. भाग० ६।२०।२७। ३ वही ६।२०।२८। ४. वही ९।२०।२९। ५ भागवत ।x २०।३०। ६ उस समय जिसस्थान को रसातल कहा जाता था, उसी को आज कल अबीसीनिया कहा जाता है। ७ भागवत ।x २०।३१। ८ वही ।x २०।३३। ६ वही ।x २०।३४। १०. भाग० ।x २०। श्लोक ३४ से ३६।

पाठ्य पुस्तकों के लेखक तो बड़े विद्वानों के दिखाये मार्ग पर ही चलते हैं। वे स्वयं तो गवेषक होते नहीं।

संस्कृत भाषा में पुराणों को पढ़ने वाले पण्डित यह जरूर जानते हैं कि दौष्यन्ती भरत के नाम पर इस देश का नामकरण नहीं हुआ है। बल्कि मनुर्भरत के नाम पर हुआ है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रकाण्ड विद्वान डा० राधा कुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक फंडामेंटल युनिटी आफ इंडिया में (Fundamental unity of India) में यह लिखा है कि "दौष्यन्ती भरत के ही नाम पर इस देश का नामकरण हुआ।" इसका कारण दिया है—अनेक यज्ञकर्त्ता और शक्तिशाली सम्राट होना। ऐसा लिखने का आधार उन्होंने अपना तर्क ही दिया है, वैदिक साहित्य या पुराण का प्रमाण नहीं।

दौष्यन्ती भरत अनेक यज्ञकर्त्ता और शक्तिशाली सम्राट जरूर हुये। यह सर्वसम्मत है। परन्तु उन्हीं ग्रन्थों में ही यह स्पष्ट लिखा है कि आरंभिक काल में ही स्वायंभुवमनु की छठवीं पीढ़ी में ही मनुर्भरत के नाम पर इस देश का नामकरण 'भरत खण्ड तथा भारत' पड़ चुका है।

इस पुस्तक के प्रारंभ में ही 'भारतवर्ष' शीर्षक में प्रकाश डाला जा चुका है; इसलिये यहाँ विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

२३. राजा वितथ (भरद्वाज)—(२०४६ ई० पू० से २०१८ ई० पू० तक) प्रतिष्ठान राजगद्दी पर चन्द्रवंश या इलावंश के २३वें उत्तराधिकारी यही हुये। इनके पुत्र का नाम भूमन्यु-भुवमन्यु-मन्यु था (भागवत ix २१.१)। यही अपने पिता के उत्तराधिकारी (२४) राजा हुये।

२४. राजा भूमन्यु, भुवमन्यु-मन्यु—(२०१८ ई० पू० से १९९० ई० पू० तक) इनके पाँच पुत्र हुये। सबसे बड़े का नाम बृहत्क्षण था (भाग० ९।२१।१)। यही उत्तराधिकारी हुये।

२५. राजा बृहत्क्षण—(१९९० ई० पू० से १९६२ ई० पू० तक) इनके पुत्र का नाम सुहोत्र था। यही उत्तराधिकारी हुये। परन्तु भागवत पुराण में इन्हीं के पुत्र का नाम हस्तिन लिखा है (भाग० ९।२१।१९-२०) जो अन्यान्य पुस्तकों के अनुसार शुद्ध नहीं है।

२६. राजा सुहोत्र—(१९६२ ई० पू० से १९३४ ई० पू० तक) यह छब्बीसवीं

पीढ़ी में शासक हुये। इन्होंने ऋग्वेद में दो सूक्तों की रचना की है।[1] इसलिये इनको राजर्षि कहा गया। यह सकल पृथ्वी पति थे।[2] कुरु जंगल में यज्ञ करके उन्होंने बहुत सा स्वर्ण बांटा।[3] उनका पुत्र हस्तिन हुआ। वही राज्याधिकारी हुआ। उसी ने अपने नाम पर हस्तिनापुर बसाया।[4]

२७. **राजा हस्तिन**—(१९३४ ई० पू० से १९०६ ई० पू० तक) इनका नाम 'हस्ती' भी था। नाम के अनुसार ही यह बलशाली भी हुये। इनकी पत्नी का नाम यशोधरा था (महाभारत)। इन्होंने जिस हस्तिनापुर का निर्माण किया था, उसी को आजकल दिल्ली कहते हैं। जहाँ भारतीय सरकार की राजधानी है। वहीं राष्ट्रपति तथा प्रधान मन्त्री रहा करते हैं।

हस्ती के तीन पुत्र थे—अजमीढ, द्विमीढ और पुरुमीढ।[5] अजमीढ के पुत्रों में प्रियमेध आदि ब्राह्मण हो गये।[6] भाइयों में अजमीढ ही ज्येष्ठ था, इसलिये वही उत्तराधिकारी हुआ।

२८ **राजा अजमीढ़**—(१९०६ ई० पू० से १८७८ ई० पू० तक) अजमीढ और पुरुमीढ दोनों भाइयों ने मिलकर ऋग्वेद के दो सूक्तों की रचना की, इसलिये मन्त्रदृष्टा वेदर्षि हुये।[7] पुरुमीढ निःसन्तान मर गया।[8] कहा जाता है कि इसने भी एक अलग राज्य स्थापित करने की चेष्टा की थी, मगर उल्लेखनीय नहीं हुआ। अजमीढ हस्तिनापुर और प्रतिष्ठान दोनों जगहों का शासक हुआ। इसीके पुत्रों द्वारा पांचाल नामक शाखा राज्य की स्थापना हुई।

अजमीढ और पुरुमीढ दोनों भाई थे।[9] दोनों ने संयुक्त रूप से वेद-मन्त्र की रचना की थी।[10] पुरुमीढ निःसन्तान मर गया।[11] अजमीढ की पत्नियां तीन थीं—नलिनी, केशिनी और धुमिनी।[12] पहली पत्नी नलिनी से एक पुत्र था, जिसका नाम 'नील' था।[13] दो पुत्र और थे जिनके नाम दुष्मन्त और परमेष्ठिन थे।[14] "ऋक्षं धूमिन्यथ नीलि दुष्मन्त परमेष्ठिनौ।" (महाभारत)। दोनों पुत्र दुष्मन्त और पर-

---

१ ऋग्वेद ६।३१ और ३२। २. महाभारत आदि पर्व ७६।२३, द्रोण पर्व ५६।५। ३. महाभा० द्रोण पर्व ५६।७। ४ भाग० ६।२१।२०। ५. वही ।x. २१ २१। ६. वही ।x २१ २१। ७ ऋग्वेद ४।४३ और ४४। ८ भाग० ६.२१ ३०। ९ वायु ९९, १६६; विष्णु ।४ १९, १०; मत्स्य १९, १३; अग्नि २७८, १५; हरिवंश १, ३२, ४१; ब्रह्म १३, ८१; भागवत ।x, २१, २१। १०. सद्गुरु शिष्य—वेदार्थ दीपिका के साथ, कात्यायनकृत ऋग्वेद का सर्वानुक्रमणी, ऋग्वेद ।४. ४३, ४४। ११. भागवत ।x. २१.३०। १२. वायु ९९,१६७। मत्स्य ४९,४४। १३. वायु ९९,१६४। मत्स्य १०,१। विष्णु ।४. १९,१५। भाग० ९।२१।३०। १४ महाभारत १, ९४, ३२।

मेध्ठिन पाचाल के नाम से विख्यात हुये।[१] उस समय तक नील, शान्ति नामक एक पुत्र का पिता बन चुका था।[२] शान्ति का पुत्र सुशान्ति था।[३] जो पुरुजानु का पिता था।[४]

पुरुजानु (पुरुज) के पुत्र का नाम वायुपुराण (९९,१२५) के अनुसार 'त्रक्ष', विष्णु पुराण (IV. १९,१५) के अनुसार 'चक्षु', भागवत (९।२१।३१) के अनुसार 'अर्क' और मत्स्य (५०,२१) के अनुसार 'पृथु' था। परन्तु आश्वलायन श्रौतसूत्र (II) के अनुसार उसका नाम 'तृक्ष' था। यही तृक्ष नाम शुद्ध जान पड़ता है। डा० सीतानाथ प्रधान ने भी 'तृक्ष' ही का समर्थन किया है। श्री पार्जिटर ने भागवत के अनुसार 'अर्क' माना है। श्रीचतुर सेन ने इस पर विचार ही नहीं किया।

श्रीमद्‌भागवत के नवम स्कन्ध के इक्कीसवें अध्याय—श्लोक ३० से ३६ तक का सारांश इस प्रकार है—द्विमीढ के भाई पुरुमीढ को कोई सन्तान नहीं हुई। अजमीढ की दूसरी पत्नी का नाम था नलिनी। उसके गर्भमें नील का जन्म हुआ। नील का शान्ति, शान्ति का सुशान्ति, सुशान्ति का पुरुज (पुरुजानु), पुरुजानु का 'अर्क' और अर्क का पुत्र हुआ 'भर्म्याश्व'। भर्म्याश्व के पाँचपुत्र थे—मुद्‌गल, यवीनर, बृहदिषु, काम्पिल्य और सञ्जय। भर्म्याश्व ने कहा—"ये मेरे पुत्र पांच देशों का शासन करने में समर्थ (पञ्च अलम्) है। इसलिये यह पाँचाल नाम से प्रसिद्ध हुये। इनमें मुद्‌गल से 'मौद्‌गल्य' नामक ब्राह्मण गोत्र की प्रवृति हुई (भागवत ix.२१.३० से ३३ तक)

भर्म्याश्व के पुत्र मुद्‌गल से यमज सन्तानों की उत्पत्ति हुई। दिवोदास पुत्र और पुत्री अहल्या। अहल्या का विवाह महर्षि गौतम से हुआ। गौतम के पुत्र हुये शतानंद (भाग०ix२१।३४)। शतानन्द का पुत्र सत्य धृति था, जो धनुर्विद्या में अत्यन्त निपुण था। सत्यधृति के पुत्र 'शरद्वान' हुये (भाग०९।२१।३५)। शरद्वान् का पुत्र कृपाचार्य और पुत्री कृपी हुई। यही कृपी द्रोणा चार्य की पत्नी हुई (भाग०९।२१-३५)। द्विमीढ का वंशवृक्ष भी नवम् स्कन्ध के २१वें अध्याय के श्लोक २७,२८,२९ में है। इनका द्विमीढ वंश चला। इसी तरह वर्णन भिन्न भिन्न पुराणों में है परन्तु सबों में एक रुपता नहीं हैं।

अहल्या के पति शारद्वन्त गौतम और पुत्र शतानन्द थे। यह कथा प्रसिद्ध ही है कि जब राम विश्वामित्र के साथ जनकपुर जा रहे थे, तब गौतम ऋषि के आश्रम

१ महाभा० १, ६४, ३३। २. विष्णु iv, १६, १४, भागवत ix. २१ ३१। ३ विष्णु ४, १६, १५, भाग० ६।२१।३१। ४ भाग० ६।२१।३१। हरिवंश १, ३२,६४। ब्रह्म १३, ६३। अग्नि २७८, १६।

मे गये थे । उसी समय राम ने अहल्या का उद्धार किया । अहल्या के यमज भाई पांचाल राजा दिवोदास थे । इसलिये दिवोदास और दाशरथी राम के समकालीन होने मे कोई सन्देह नही है । यही दिवोदास वैदिक अतिथिग्व दिवोदास हैं। ऋग्वेद के यह वैदिक नरेश हैं। ये उत्तर पांचाल के राजा थे । हमारे विचार से यह राम से बडे थे क्योकि इनकी पीढी संख्या राम से कुछ पहले की होती है। अब पुनः एक वार वंश-वृक्ष की तरफ चलें। तृक्ष के पुत्र 'भृम्यश्व' के विषय मे भी पौराणिक विचित्रता है ।

श्रीमद्भागवत (९।२१।३१–३४) मे 'भर्म्याश्व', मत्स्य (५०,२) मे 'भद्राश्व', अग्नि (२७८, १९), (हरिवंश—१, ३२, ६४) और ब्रह्म (१३,६३) मे 'बाह्याश्व तथा विष्णु पुराण (iv,१९,१५) मे 'हर्यश्व' इत्यादि हैं । कात्यायन ने 'भार्म्यश्व और सायन ने 'भर्म्यश्व' लिखा है । परन्तु निरुक्त मे यास्क ने नामार्थ की परिभाषा के साथ 'भृम्यश्व' लिखा है । इसी तरह से अनेक-नाम भ्रमोत्पादक हैं । जिनको निश्चित करना एक कठिन काम है । मैंने यथार्थ नाम 'भृम्यश्व' माना है, जो निरुक्त के अनुसार डा० प्रधान द्वारा समर्थित है ।

पाठकों की स्पष्टता के लिये अजमीढ के दो वंशवृक्ष नीचे दिये जाते है :—
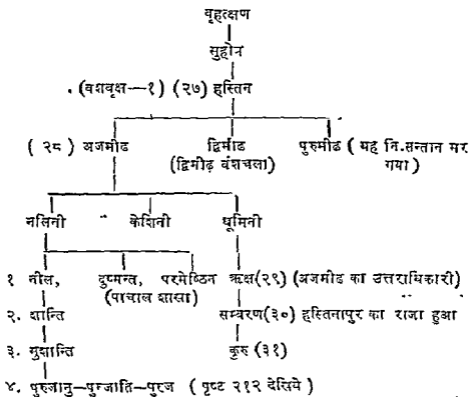
४. पुरुजानु–पुरुजाति–पुञ्ज

५ वृक्ष

६. भृम्यश्व — भारत

७ मुद्गल — देवदात

८. वध्र्यश्व — श्रीजय — चयमान

९. दिवोदास (उत्तर पाँचाल नरेश) — अहल्या (राम के द्वारा उद्धार पानवाली) — प्रस्तोक — अभयावर्तिन

वृहत्क्षण

सुहोत्र

हस्तिन

(वंशवृक्ष–२) (२८) अजमीढ

(२९) ऋक्ष (हस्तिनापुर प्रधानगद्दी) — नील (उत्तर पाँचाल शाखा-राज्य) — वृहद्वसु (दक्षिण पाचाल शाखा-राज्य)

अजमीढ के प्रथम वंशवृक्ष देखने से मालूम होता है कि सबसे छोटी पत्नी धूमिनी का पुत्र ऋक्ष ही हस्तिनापुर प्रधान राजगद्दी का उत्तराधिकारी हुआ। उचित तो था ज्येष्ठ पुत्र नील को युवराज होना। कहा जाता है कि ऋक्ष छोटा, प्यारा और छोटी पत्नी का पुत्र था, इसलिये अजमीढ उसको अलग हटाना नहीं चाहता था, अतएव उसको अपने पास हस्तिनापुर में ही रखा। वही २९वां उत्तराधिकारी हुआ। शेष पुत्रोंने पाँचाल नामक शाखा राज्य की स्थापना की। गंगा के उत्तर और दक्षिण दोनों

तरफ का देश पांचाल कहलाता था। गंगा के उत्तर, उत्तर पांचाल और गंगा के दक्षिण, दक्षिण पांचाल।

२९–राजाऋक्ष (१८७८ ई०पू० से १८५० ई०पू० तक) वायु पुराण (९९। २११,२१२,२१३,२१४)से विदित होता है कि अजमीढ की सबसे छोटी पत्नी धूमिनी के गर्भ से अन्तमे एक पुत्र हुआ, जिसका नाम ऋक्ष पडा। इस पुत्र को अजमीढ ने हस्तिनापुर मे ही रखा। यही अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ। (पार्जिटर ने इसी मतका समर्थन किया है।)

३०—राजा सम्वरण (१८५० ई०पू० से १८२२ ई०पू० तक) सम्वरण का पुत्र कुरु हुआ।[1] सम्वरण के हस्तिनापुर मे बहुत दिनो तक राज्य करने के बाद एक समय पांचाल राजा के साथ उसका युद्ध हो गया। उस युद्ध मे पराजित होने के कारण हस्तिनापुर को छोडकर भागना पडा। तब सिन्धु नदी के किनारे जाकर विवस्वन्त ऋषि के पास आश्रय ग्रहण किया। वही पर ऋषि-पुत्री 'तप्ती' से विवाह भी कर लिया। कुछ दिनो के बाद वशिष्ठजी की सहायता से पुन हस्तिनापुर इसके हाथ मे आगया। इसका पुत्र 'कुरु' उत्तराधिकारी हुआ।

३१–राजाकुरु–(१८२२ ई०पू०से १७९४ ई०पू० तक) कुरु के पुत्र के विषय मे भी भिन्न-भिन्न ग्रन्थो मे भिन्न-भिन्न मत हैं। कुरु की पत्नी का नाम वाहिनी था। वंशवृक्ष भिन्न-भिन्न ग्रंथो के अनुसार निम्न प्रकार है —
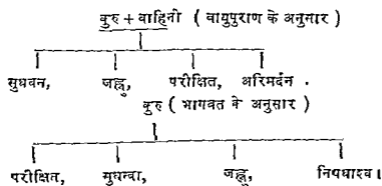
महाभारत (I.९४,५०,५१) के अनुसार कुरु के पांच पुत्र थे—१. अश्वन्त-अविक्षित, २. अभिष्यन्त, ३. चैत्ररथ, ४ मुनि, ५. जन्मेजय।

---

१ भाग०।९ २२ ४।

कुरु (महाभारत के अनुसार)

अश्वन्न—अविक्षित, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि, जन्मेजय

महाभारत (I ९४,५२) के अनुसार अविक्षित का बेटा परीक्षित था। परन्तु इस विचार के अनुसार परीक्षित कुरु का बेटा न होकर पौत्र हो जाता है। जह्नु, सुधवन और अरिमर्दन को कुरु का पौत्र माना जा सकता है (प्रधान)। जह्नु सुरथ थे। पीछे विदूरथ उसका पुत्र हो गया (वायु पु० ९९, २३०)। कुरु और पत्नी वाहिनी के पुत्र चैत्ररथ हुये। चैत्ररथ के पुत्र जह्नु हुये। जह्नु के पुत्र सुरथ और पौत्र विदूरथ समकालीन हुये वध्र्यश्व के।

कुरु + वाहिनी
चैत्ररथ
जह्नु
सुरथ
विदूरथ

कुरु + वाहिनी
अविक्षित (महाभा० ९४ ५२)
परीक्षित
जन्मेजय
सुरथ
विदूरथ

अब दूसरा विचार देखिये—कुरु का बेटा अविक्षित (महाभारत के अनुसार)। अविक्षित का बेटा परीक्षित (महाभारत के अनुसार)। परीक्षित का बेटा जन्मेजय। जन्मेजय के बाद जह्नु का बेटा सुरथ उत्तराधिकारी हुआ (वायु पु. ९९,२२९)—ये विचार डा०प्रधान के है। अब पार्जिटर का विचार देखिये—

कुरु + वाहिनी
परीक्षित, जह्नु, सुधवन
जन्मेजय, सुरथ
श्रुतसेन, उग्रसेन भीमसेन
ये लोग राजा नहीं हुये; इसलिये जह्नु का पुत्र सुरथ राजा हुआ।

कुरु और वाहिनी के प्रधान पुत्र तीन—परीक्षित, जह्नु और सुधवन। परीक्षित का बेटा जन्मेजय (द्वितीय)। जन्मेजय का बेटा श्रुतसेन, उग्रसेन और भीमसेन। ये तीनों राजा नहीं हुये, इसलिये जह्नु के पुत्र 'सुरथ' राजा हुये। सुरथ के पुत्र विदूरथ हुये।

मैंने कुरु, अविक्षित, परीक्षित, जन्मेजय, जह्नु, सुरथ और विदूरथ का क्रम रखा है। यहां पर यथार्थ नाम और पीढियों का निश्चित करना विवादास्पद विषय है। यहाँ पर सुरथ के सम्बन्ध मे एक बात यह है कि जह्नु के पुत्र का नाम कई पुराणो मे सुरथ है। किन्तु अग्नि पुराण मे त्रसदस्यु है। इसलिये जह्नु के पुत्र को सुरथ-त्रसदस्यु भी कहा जा सकता है। यहाँ पर मैंने कुरु के ज्येष्ठ पुत्र अविक्षित को ही उत्तराधिकारी रखा है।

३२–राजा अविक्षित–(१७९८ ई०पू० से १७६६ ई०पू० तक) हमने महाभारत के अनुसार अविक्षित का उत्तराधिकारी परीक्षित को रखा है।

३३–राजा परीक्षित—(१७६६ ई०पू० से १७३८ ई०पू० तक) इस का पुत्र जन्मेजय (द्वितीय—पार्जिटर) हुआ। हमारे विचार से जब पुत्र था तब पीढी निश्चित हो जाती है, वैसी अवस्था म नाम कुछ भी रहा हो कोई हर्ज नही है।

३४—राजा जन्मेजय—(१७३८ ई०पू० से १७१० ई० पू० तक) पार्जिटर के मतानुसार यह जन्मेजय द्वितीय है। जन्मेजय के तीन पुत्र हुये—श्रुतसेन, उग्रसेन और भीमसेन। ये तीनो राजा नही हुये। इसलिये जन्मेजय के चाचा जिनका नाम जह्नु था—वही राजा हुये। जह्नु के बाद उनका पुत्र सुरथ-त्रसदस्यु राजा हुआ।

३५–राजा जह्नु—(प्रधान) (१७१०ई०पू०से १६८२ ई०पू०तक)

३६–राजा सुरथ–(सुरथ-त्रसदस्यु—"प्रधान")—(१६८२ ई० पू० से १६५४ ई०पू० तक)।

३७–राजा विदूरथ—(१६५४ ई०पू० से १६२६ ई०पू० तक)

३८–राजा ऋक्ष–(द्वितीय) (१६२६ ई०पू०से १५९८ ई०पू० तक) राजा विदूरथ के तीन पुत्र हुये। ऋक्ष, सार्वभौम और भरद्वाज। ऋक्ष के विषय मे एक पौराणिक कथा यह है कि बचपन मे ही उनको एक ऋक्ष (भालु) उठाकर पहाड पर ले गया और उसको पालने लगा। जब राजकुमार की खोज होने लगी तब वह पहाड पर मिला। उस पहाड का नाम तभी से ऋक्षवन्त पर्वत पडगया और राजकुमार भी ऋक्ष ही नाम से प्रसिद्ध हुआ (कथा सरित सागर तथा पुराण)।

हमारा ख्याल है कि विदूरथ का ज्येष्ठ पुत्र ऋक्ष ही था। इसलिये वही उत्तराधिकारी हुआ। परन्तु थोडे ही दिनो तक राज्य कर सका। उसके बाद उसका भाई सार्व भौम (३९) राजा हुआ।

विशेष—यहां पर (३८ वी पीढी विवादास्पद मालूम होती है) श्री चतुरसेन विदूरथ को ३७वीं पीढी मे बतलाते हैं। डा० प्रधान सार्वभौम को ३९वी पीढी मे

प्रमाणित करते है। ३८वी पीढ़ी पर दोनों ही मौन रह जाते हैं। ये बातें संशोधित वंशवृक्ष की है। श्री पार्जिटर ने विदूरथ को ४५वी पीढी मे दिखलाया है, जो शुद्ध नही है।

ऋक्ष—पहला ऋक्ष अजमीढ (२८) और धूमिनी का पुत्र था। दूसरा ऋक्ष अजमीढ और नलिनी के वंशमे पुरुजानु का पुत्र था, जिसको आश्वलायन श्रौतसूत्र मे वृक्ष कहा गया है। तीसरा ऋक्ष विदूरथ का पुत्र और सार्वभौम (३९) का बड़ा भाई था। चौथे ऋक्ष—रामायण के रचयिता भार्गव वाल्मीकि थे। वाल्मीकि का असली नाम ऋक्ष ही था। हस्तिनापुर के पौरवराज वंश मे देवातिथि के पुत्र का नाम भी ऋक्ष ही था, जिसको रौकारीह भी कहा जाता है।

३६ राजा सार्व भौम

(१५९८ ई०पू० से १५७० ई०पू० तक)

सार्वभौम के पिता का नाम विदूरथ था। यह निश्चित है। परन्तु ऋक्ष का नाम सभी पुराण नही लेते। यदि ३८वी पीढ़ी मे ऋक्ष को न मानकर किसी दूसरे को माना जाय तो भी काल क्रम मे कोई अन्तर नही पडता है। सार्व भौम मुख्य चन्द्रवंश की ३९वी पीढी मे जरूर था। "प्रधान" तथा चतुरसेन दोनो ही ने इसी बात का समर्थन किया है। पार्जिटर ने भी राम से दो पीढी पहले सार्वभौम को माना है। एक दो पीढी का अन्तर समकालीनता मे कुछ विभेद नही डालता है। इसलिये सार्व भौम (३९) राम (३९) का समकालीन जरूर माना जायगा।

पुराणो के अनुसार दाशरथी राम तक त्रेता युग का भोगकाल था। अतएव सूर्यवंशी राम और चन्द्र वंशी सार्व भौम तक अर्थात १५७० ई०पू० तक त्रेता काल रहा। उसके बाद द्वापर युग का आरंभ हो गया।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड आठवाँ

त्रेतायुग—भोगकाल १०६२ वर्ष

चन्द्रवंश—शाखा राज्य

(मनुवैवस्वत, चन्द्र से सार्व भौम तक)

पुराणो के अनुसार सातवें मनु वैवस्वत से राम तक त्रेता युग का भोगकाल था; जो २६६२ ई०पू०से १७७० ई०पू तक होता है। मनु से राम तक जो वंशवृक्ष चला उसका नाम पुराणो के अनुसार सूर्यवंश हुआ। इसी वंशवृक्ष को पाश्चात्यजन मनु या ऐक्ष्वक वंश वृक्ष कहते हैं। [मनु की पुत्री इला और चन्द्रमा-सोमके पुत्र बुध से जो वंशवृक्ष चला, उसी का नाम पुराणो के अनुसार चन्द्रवंश हुआ। इसी वंशवृक्ष का "पार्जिटर" ने मनु पुत्री इला के नाम पर ऐलावंश या पौरवस राजवंश कहा है।]

मनु से राम तक सूर्यवंश की ३९ पीढियाँ होती है। चन्द्रवंश मे भी चन्द्र से सार्वभौम तक ३९ पीढिया होती हैं। इन ३९ पीढियो के अन्तर्गत दोनो राजवंशो मे शाखा राज्यो के निर्माण और विकास होते गये।

मुख्य सूर्य राजवंश और शाखा-राजवंश तथा मुख्य चन्द्र राजवंश का संक्षिप्त वर्णन गत खण्डो मे पाठक पढ चुके। अब यहाँ से चन्द्रवंश—शाखा राज्य का संक्षिप्त वर्णन पढें।

[शाखाओ को स्पष्ट समझने के लिये पहले मुख्य चन्द्रवंश का आरम्भिक वंशवृक्ष यहाँ पर दिया जाता है। उसके बाद संक्षिप्त वर्णन मिलेगा।

सूर्य—विष्णु. अत्रि

- सूर्य → (१) मनुर्वैवस्वत
  - पुत्र → (पुत्रों से सूर्य राजवंश)
  - पुत्री → (२) इला-पति बुध
- अत्रि → (१) चन्द्र-सोम → (२) इला-पति बुध (प्रतिष्ठान-प्रयाग में चन्द्रवंश)

(२) इला-पति बुध → (३) पुरूरवा + उर्वशी (पत्नी) यह इलावर्त्त (ईरान) और प्रतिष्ठान (भारत) दोनों स्थानों के राजा हुये।

- प्रतिष्ठान राजगद्दी (४) आयु
  - प्रतिष्ठान (५) नहुष,
  - क्षत्रवृद्ध-वृद्धशर्मन → काशी राजवंश (शाखा)
  - रम्भ, → (पुत्राभाव)
  - राजी-रजि → राजेयक्षत्रिय वंश (शाखा)
  - अनेनस → क्षात्रधर्मन वंश (शाखा)
- अमावसु (शाखा राज्य—कान्य कुब्ज के संस्थापक)

प्रतिष्ठान (६) ययाति

- (शुक्र-पुत्री, प्र० पत्नी) देवयानी
  - यदु
    - सहस्रजीत → शतजीत → हैहय[1] (शाखा) → तालजंघ (शाखा)
    - क्रोष्टु → (यादव राजवंश-शाखा)
  - तुर्वसु → (तुर्वसु शाखा)
- शर्मिष्ठा (द्वि०पत्नी असुर राजा वृषपर्वा की पुत्री)
  - द्रुह्यु → (गांधार-शाखा नार्थ-वेस्ट फ्रौंटियर)
  - अनु → (आनववंश—इनका विवरण आगे देखिये। यह भी शाखा राज्य है)
  - (७) पुरु-पौरव प्रतिष्ठान गद्दी)

१—हैहय वंश का वर्णन—ब्रह्म १३, २०७। हरिवंश ३४, १८९८। लिंग 1, ६८, १५)

२.

अनु-शाखा

अनु के दो वंशवृक्ष बनते है—१ भारतीय पुराणो मे अनु की आरभिक ६ पीढियो के नाम नही है। हिस्ट्री आफ पर्शिया के अनुसार अनु का राज्य ईरान मे ही था। जान पडता है कि ६ पीढियो के बाद ही 'महामनस' सातवीं पीढी मे भारत आये। पुराणो के अनुसार वंशवृक्ष बगल मे देखिये—

नहुष
(६) ययाति
१- अनु
२ से ६ तक अज्ञात
७. महामनस
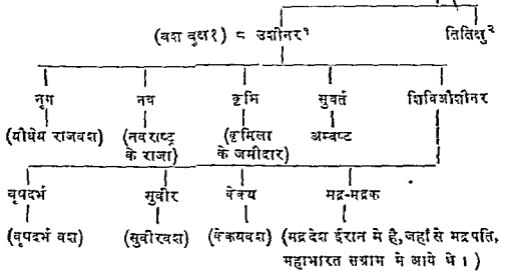
तितिक्षु के वंश मे 'बलि' थे। उनके पाँच पुत्र थे जिनके राज्य पूर्वी बिहार मे थे। (पार्जिटर)

बलि (वंशवृक्ष)

१	२	३	४	५
अंग	वंग	कलिंग	पुण्ड्र	सुम्ह

---
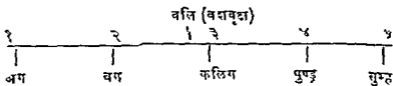
१. इनका राजवंश पंजाब से ईरान तक था। २. तितिक्षु के वंश वृक्ष भिन्न-भिन्न पुराणो मे भिन्न-भिन्न तरह से है। मत्स्य और हरिवंश पुराण मे अपेक्षाकृत अधिक ठीक जान पडता है।

अनु का दूसरा वंशवृक्ष—हिस्ट्रीआफ पर्शिया के आधार पर जो बनता है, वह इस प्रकार होता है—　　नहुष

(६) ययाति

(वंशवृक्ष २) १. अनु (शाखा) (२ से ६ तक अज्ञात)

७. महामनस

८. उशीनर (अनु से आठवें)
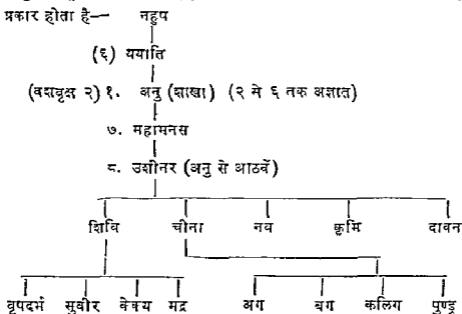
विशेष—प्रतिष्ठान-प्रयाग के ६ ठें उत्तराधिकारी राजा ययाति हुये। उनके बाद उनके छोटे पुत्र पुरु प्रतिष्ठान के सातवें राजा हुये। पुरु के बड़े भाई अनु ने कश्यप सागर के उस पार (Trans caspia) अपना राज्य स्थापित किया (हि. आफ पर्शिया)। छठी पीढ़ी तक उनके वंशधर वहीं रहे। सातवीं पीढ़ी में महामनस भारत में आये। उनके वंशधरों का विस्तार यहाँ वहाँ दोनों जगहों में हुआ। कहा जाता है कि अनु के वंशज म्लेच्छ हो गये थे (भागवत तथा महाभारत)।

यौधेय-शाखा

अनु के प्रथम वंशवृक्ष की सातवीं पीढ़ी में महामनस है। उनका एक पुत्र उशीनर है। उशीनर का ज्येष्ठ पुत्र 'नृग' था। पुराणों के अनुसार यौधेय राजवंश का मूल पुरुष वही हुआ।

यौधेयों का बहुत ही बलशाली एक गणराज्य था; जो यमुना, सतलज तथा चम्बल-हिमालय के बीच में अवस्थित था। कुषाणों के राज्य को समाप्त करने वाले यही थे। यौधेयों का सर्वनाश चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने किया। यौधेय राजवंश के सिक्के ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से ईसा की चौथी शताब्दी तक के मिलते हैं। इस से यह प्रमाणित होता है कि यौधेयों का गणराज्य ईसा की चौथी सदी तक था।

भावलपुर रियासत से मुल्तान तक फैले हुये इलाके को 'जोहियावार' कहा जाता है। वहा के बहु सख्यक निवासी अब तक अपने को 'जोहिया'[1] कहा करते हैं। कराची के कोहिस्तान मे भी जोहिया वंशज रहते हैं जो अब मुसलमान है। वहा की औरतें अभी तक, अपने पूर्वज यौधेयो के वीरता पूर्ण, लोक गीतो को गाया करती है। (महापंडित राहुल साकृत्यायन ने "जै जौधेय" नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा है।)

कान्य कुब्ज (कन्नौज) शाखा

कान्य कुब्ज शाखा के विषय मे सभी पुराण एक मत नही हैं। उस शाखा के वंश वृक्ष दो तरह के बनते है। परन्तु दोनों के अन्त मे कुशिक, गाधि और विश्वामित्र आ जाते हैं।

एक मत यह है कि सुहोत्र (२६) के तीसरे पुत्र बृहत् ने कान्यकुब्ज मे एक शाखा की स्थापना की; जिसका वंश वृक्ष इस प्रकार है—

(२६) सुहोत्र
|
(२७) बृहत १
|
(२८) जह्नु २
|
(२९) अजक ३
|
(३०) बलाकाश्व ४
|
(३१) वल्लभ ५
|
(३२) कुशिक + पुरुकुत्सी (पत्नी) ६
|
(३३) गाधि ७
|
(३४) विश्वामित्र ८

(नोट—कुछ लोग सुहोत्र को २९ वी पीढी मे मानते है। उनके मतानुसार विश्वामित्र ३७ वी पीढी मे पडते है।)

दूसरा वंशवृक्ष

इस वंश वृक्ष मे ११ नाम मिलते है। आयु (४) के पुत्र अमावसु से कान्यकुब्ज मे यह शाखा चलती है। उस समय से विश्वामित्र तक पीढियां अधिक होनी चाहिए परन्तु निम्नलिखित नाम ही मिलते हैं—

1—यौधेय का ही विकृत रूप 'जोहिया' है।

पुरुरवस
(४) आयु
(५) अमावसु १
(६) भीम २

(७) काचन प्रभा ३
(८) सुहोत्र ४
(९) जह्नु ५
(१०) अजक ६

(११) बलाकाश्व ७
(१२) वल्लभ ८
(१३) कुशिक ९
(१४) गाधि १०
(१५) विश्वामित्र ११

तथ्य जो हो। दोनो वश वृक्षो के अन्त म विश्वामित्र मौजूद है। इसलिए कान्य कुब्ज शाखा मे ही विश्वामित्र जरूर थे। और वह राम से कुछ बडे हैं, इसलिए ३७ वी पीढी म उनका होना भी सभव है। इस वश वृक्ष के कुछ नाम लुप्त मालूम होते हैं।

कुशिक बडे प्रतापी और वेदर्षि थे। कुशिक के वशज होने के कारण विश्वामित्र 'कौशिक' कहलाये। कुशिक का विवाह राजा पुरुकुत्स की पुत्री कुत्सी से हुआ था। उसी पुरुकुत्सी मे कुशिक पुत्र गाधि हुये जो विश्वामित्र के पिता थे। ऋग्वेद के तीसरे मण्डल मे "कौशिको गाथी" तथा—"कौशिक पुनो गाथी" कहा गया है। उन्ही को वेद में "गाथिन" भी कहा गया है। गाधि के पुत्र कौशिक विश्वामित्र ब्रह्मर्षि हुये (महाभारत शान्ति पर्व)

• काशी शाखा

इस काशी शाखा के भी पुराणो के अनुसार दो तरह के वश वृक्ष बनते है—

यादव, हैहय—तालजंघ

मुख्यचन्द्र वंशी राजा ययाति (६) की प्रथम पत्नी देवयानी से दो पुत्र थे—यदु और तुर्वसु। यदु के वंशजों से ही यादव, हैहय और तालजंघ नामक तीनों शाखायें चलीं। हैहय राजवंश का वर्णन बारह पुराणों में है। १. ब्रह्माण्ड, २. वायु, ३. ब्रह्म, ४. हरिवंश, ५. मत्स्य, ६. पद्म, ७. लिंग ८. कूर्म, ९. विष्णु, १०. अग्नि, ११. गरुड, १२. भागवत।

हैहयों के पांच वंश चले। १ वीतिहोत्र, २. शार्यात, ३. भोज, ४. अवन्ति, ५. तुन्डीकेरस। ये पाचों तालजंघ कहलाये। परन्तु इसके विषय में कुछ मत-भेद भी है। तालजंघ के अनेक वंशधर हुये, जिनमें वीतिहोत्र ख्याति प्राप्त राजा हुआ।

यहां पर पाठकों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि यादव की शाखा हैहय और हैहय की शाखा तालजंघ।[1] तालजंघ बड़े बहादुर थे। उन्हीं लोगों ने राजा सगर के पिता को पराजित कर भगा दिया था। पीछे राजा सगर ने अपने पिता का बदला उन लोगों से चुकाया। उसने इस वंश का सर्वनाश कर दिया। वीतिहोत्र का पुत्र अनन्त राजा हुआ। उसका पुत्र दुर्जय अमित्र कर्षण हुआ। यादव वंश की और शाखाओं के उत्तराधिकारी यदु के पुत्र क्रोष्टु हुये। इन्हीं से यादव राजवंश चला।

इलिना—तंसु वंश में "इलिना" नाम की एक महिला बहुत ही प्रसिद्ध हुई।

पांचाल शाखा

पांचाल राज्य की दो शाखायें थीं। एक गंगा के उत्तर—उत्तर पांचाल, जिसकी राजधानी 'अहिच्छत्र' में थी। दूसरा दक्षिण पांचाल जो

१ राजा ययाति (६) का वंशवृक्ष देखिये।

गंगा और चर्मवन्ति (चम्बल) नदी से दक्षिण में था, जिसकी राजधानी काम्पल्यि और माकन्दी में थी। सभवत. मुख्य चन्द्रवंश के राजा अजमीढ (२८) के पुत्र नील और बृहद्वसु ने पांचाल राज्य की स्थापना की थी।

दक्षिण पाँचाल

दक्षिण पांचाल के वर्णन निम्नलिखित छै पुराणो में है—

१. वायु पुराण ९९, १६७, १७०-१८२। २. मत्स्य ४९ ४७, ४९। ३. हरिवंश २०, १०५५-७३। ४. विष्णु ९, १९,११-१६। ५. गरुड ७, १४०, १०-१३। ६. भागवत-९. २१, २२-२६।

उत्तर पाँचाल

उत्तर पाँचाल के वर्णन इन पुराणो मे हैं—१. वायु पुराण, ९९, १९४-२२१। २. मत्स्य १, १६। ३. हरिवंश १७७७-९४। ४. ब्रह्म १३, ९३-१०१। विष्णु १९, १५-१०। ६. गरुड, १४०, ७७-२४। ७. अग्नि २७७, १८-२५। ८. भागवत ९, २१, ३०-३३-३४-३६।

उपर्युक्त पुराणो मे वर्णन तो जरूर हैं, परन्तु उलझन पूर्ण हैं। पीढियों की शुद्धता निश्चित करने के लिये अनेक पुस्तको की सहायता लेनी पडती है।

मगधशाखा

मगध के राजा जरासंध भी चन्द्रवंश मे ही थे। जरासंध के पुत्र सहदेव थे। इस राजवंश के संस्थापक जरासंध ही थे। सहदेव महाभारत तक थे।

इस प्रकार सूर्यवंश की अपेक्षा चन्द्रवंश की शाखायें अधिक थी।

इन शाखाओं के वंश वृक्ष आगे मिलेंगे।

१—पार्जिटर उत्तर और दक्षिण पांचाल के राजाओं के मुख्य राजवंश हस्तिनापुर में ही गिनते हैं; इसलिये पीढ़ियाँ अधिक हो जाती है। जैसे मुख्य सूर्यवंश में शाखाओं की २४ पीढ़ियाँ मिलाने से ९३ या ९५ हो जाती है; उसी प्रकार पांचाल शाखा को मुख्य चन्द्रवंश में मिलाने से पीढ़ियाँ बढ़ जाती हैं।

चन्द्रवंश की कुल शाखायें

१. कान्य कुब्ज शाखा—एलपुरुरवा (३) के सबसे छोटे पुत्र अमावसु ने कान्य कुब्ज शाखा राज्य की नीव डाली। किन्तु दूसरा मत यह भी है कि सुहोत्र (२६) के तृतीय पुत्र वृहत् ने कान्य कुब्ज राज्य की स्थापना की। इसी वंश में विश्वामित्र थे। विश्वामित्र के पुत्र अष्टक और पौत्र लौहि (३७) से सम्भवतः हैहय तालजंघ ने राज्य छीन लिया।

२ काशी शाखा—आयु (४) के दूसरे पुत्र क्षत्रवृद्ध वृद्धशर्मन से काशी राजवंश आरम्भ हुआ। तृतीय सन्तान रम्भा को कोई पुत्र नहीं था (ब्रह्माण्ड ११,२७, हरिवंश २९, १८, १३, विष्णु IV, ९,८)।

(क)—चौथी सन्तान राजी-रजि से राजेय क्षत्रिय वंश आरम्भ हुआ।

(ख)—पाँचवी सन्तान अनेनस से क्षात्रवर्मन वंश बढा।

३ यदुवंश—माथुर शाखा—मधु—ययाति (६) के पुत्र यदु थे। यदु के पुत्र क्रोस्तु से यादव राजवंश चला।

४. हैहय राज वंश—यदु के पौत्र शतजीत से हैहय राजवंश चला।

५ तालजंघ शाखा—हैहय राजवंश से ताल जंघ उपशाखा चली।

६. तुर्वसु शाखा—ययाति के पुत्र तुर्वसु से यह शाखा चली।

७. गांधार शाखा—ययाति के पुत्र द्रुह्य से गांधार शाखा चली (नार्थ वेस्ट फ्रांटियर)।

८ आनव शाखा—ययाति के पुत्र अनु से 'अनाव' तथा आनवस राजवंश चला। कश्यप सागर के उस पार अनाव (Anaw) राजवंश था (पर्शिया का इतिहास) उनकी सातवी पीढी में महामनस और आठवी पीढ़ी में उशीनर हुये। इनके पुत्रों ने भारत में बहुत शाखायें बढाई।

९. यौधेय राजवंश—उशीनर के पुत्र नृग से यौधेय राजवंश चला।

१०. नवराष्ट्र—उशीनर के पुत्र नव से नवराष्ट्र राजवंश हुआ।

११ कृमिला शाखा—उशीनर के पुत्र कृमिला से तालुकेदार वंश चला।

१२. अम्बष्ठ वंश—उशीनर के चौथे पुत्र सुवर्त्त से अम्बष्ठ वंश आरम्भ हुआ।

१३ वृषदर्भ राजवंश—उशीनर के पाँचवें पुत्र शिवि औशिनर के चार पुत्र

हुये। सभी पुत्रो ने अलग-अलग राज्य स्थापित किया। प्रथम पुत्र वृषदर्भ ने वृषभ राजवंश की स्थापना की।

१४ सुवीर राजवंश—शिवि औशिनार के दूसरे पुत्र ने सुवीर राजवंश की स्थापना की।

१५ केकय राजवंश—शिवि औशिनर के तीसरे पुत्र केकय ने कैकय राजवंश की स्थापना की। इसी वंश की कन्या राजा दशरथ की रानी कैकई थी।

१६. मद्रराजवंश—शिवि औशिनर के चौथे पुत्र मद्र मद्रक ने मद्रदेश में (Media Province of Iran) मद्र राजवंश की स्थापना की। वहीं से मद्रपति शल्य महाभारत संग्राम के समय हस्तिापुर में आये थे।

१७. अंगराजवंश (पूर्वी विहार)—पुराण और पार्जिटर के मतानुसार तितिक्षु के वंश में बलि थे। बलि के पुत्रो ने ही पूर्वी विहार में अग, वग, कलिंग पुण्ड्र और सुम्ह राजवंश की स्थापना की। परन्तु पर्शिया के इतिहास के आधार पर उशीनर के पुत्र चीना और चीना के पुत्र अग, वग, कलिंग और पुण्ड्र ने अलग-अलग राजवंश की स्थापना की (चतुरसेन)। दोनो का साराश एक ही है, केवल वंश नाम मे अन्तर है। इसलिये इसी बात को इस तरह कहा जा सकता है कि उनके वंशधरो ने अग, वग, कलिग और पुण्ड्र आदि राज्यो की स्थापना की।

१८. वग राजवंश, १९. कलिग, २०. पुण्ड्र राजवंश, २१. सुम्ह राजवंश।

२२. मगध राज वंश—जरासध-सहदेव—सोमाधि वाला राजवंश इसी था। यह भी चन्द्रवंश की शाखा थी। इसीलिये जरासध ने श्रीकृष्ण को तंग किया था।

२३ उत्तर पांचाल राजवंश। २४. दक्षिणी पांचाल राजवंश—अजमीढ (२८) के पुत्रो ने पाचाल राजवंश की स्थापना की। पाचाल राज के सत्यधृति अजमीढ के चार पुत्रो के नाम आते हैं। सभव है, चारो गये हो।

२५—वैदर्भ की चेदि शाखा—सुबाहु(२८) अन्तिम राजा। आगे इस वंश का पता नही चलता।

२६—मरुत वंश—तुर्वसु का मरुत वंश उत्तरी विहार मे था। मरुत का यह वंश प्रसिद्ध था। ये नि सन्तान हुये। इसलिये पौरव वंशीय दुष्यंत को अपना

दत्तक पुत्र बनाया। उसी दुष्यन्त ने शकुन्तला से भरत को जन्म दिया। जिनका इन्द्राभिषेक अन्धे ऋषि दीर्घतमस ने किया।

२७—आनववंश (उत्तर-पश्चिम शाखा)—इस वंश के युधाजित (३८) दशरथ की पत्नी कैकई के भाई और भरत के मामा थे। शत्रुओं ने इनके बाद इस वंश को नष्ट कर दिया। राम के अनुज भरत के पुत्र पुष्कर और तक्ष ने उसे पाया। तक्ष ने तक्षशिला बनाकर वही अपनी राजधानी बना ली। पुष्कर ने पुष्करावती (पेशावर) को बसाकर वही अपनी राजधानी बनाई। पीछे इनके वंशधरो ने संभवतः राज्य खो दिया। (वायु ८८, १८९–९०; विष्णु ४, ४७, पद्म २७१; १०; अग्नि ११,।७,८।)

२८—द्रुह्यु वंश (पंजाब)—राम से १२ पीढी पहले ही मानधाता ने इसको नष्ट कर दिया।

सूर्य मण्डल एवं चन्द्रमण्डल

सूर्य मण्डल—मुख्य सूर्य राजवंश के साथ उनकी शाखाओं को मिलाकर सूर्य-मंडल कहा जाता था।

चन्द्र मण्डल—मुख्य चन्द्र राजवंश के साथ उनकी शाखाओं को मिला कर 'चन्द्र मंडल' की सज्ञा थी। अपेक्षाकृत सूर्यमंडल से चन्द्रमंडल का राज्य विस्तार अधिक था।

मुख्य चन्द्रवंश के खण्ड

मुख्य चन्द्रवंश के तीन खण्ड किये जा सकते हैं—पहला—पुरु से अजमीढ तक। दूसरा—अजमीढ से कुरू तक। तीसरा—कुरु से पाण्डव तक।

ऐला राजवंश

पार्जिटर के मतानुसार ऐला राजवंश के विस्तार की एक सूची दी जाती है। जिसको पार्जिटर ने ऐला राजवंश कहा है, उसी को पुराणो मे चन्द्रवंश कहा गया है। इसीका नाम पौरव राजवंश भी है।

हुये। सभी पुत्रो ने अलग-अलग राज्य स्थापित किया। प्रथम पुत्र वृषदर्भ ने वृषदर्भ राजवश की स्थापना की।

१४ **सुवीर राजवश**—शिवि औशिनार के दूसरे पुत्र ने सुवीर राजवश की स्थापना की।

१५ **कैकय राजवंश**—शिवि औशिनर के तीसरे पुत्र कैकय ने कैकय राजवश की स्थापना की। इसी वश की कन्या राजा दशरथ की रानी कैकई थी।

१६. **मद्रराजवंश**—शिवि औशिनर के चौथे पुत्र मद्र-मद्रक ने मद्रदेश में (Media Province of Iran) मद्र राजवश की स्थापना की। वहीं से मद्रपति शल्य महाभारत सग्राम के समय हस्तिापुर मे आये थे।

१७. **अंगराजवंश (पूर्वी विहार)**—पुराण और पार्जिटर के मतानुसार तितिक्षु के वश मे वलि थे। वलि के पुत्रो ने ही पूर्वी विहार मे अग, वग, कलिंग, पुण्ड्र और सुम्ह राजवश की स्थापना की। परन्तु पर्शिया के इतिहास के आधार पर उशीनर के पुत्र चीना और चीना के पुत्र अग, वग, कलिंग और पुण्ड्र ने अलग-अलग राजवश की स्थापना की (चतुरसेन)। दोनो का साराश एक ही है, केवल पैत्रिक नाम मे अन्तर है। इसलिये इसी बात को इस तरह कहा जा सकता है कि उशीनर के वशधरो ने अग, वग, कलिंग और पुण्ड्र आदि राज्यो की स्थापना की।

१८. **वंग राजवंश**, १९. **कलिंग**, २०. **पुण्ड्र राजवंश**, २१. **सुम्ह राजवंश**।

२२. **मगध राज वंश**—जरासंध-सहदेव—सोमाधि वाला राजवश इसी मे था। यह भी चन्द्रवश की शाखा थी। इसीलिये जरासध ने श्रीकृष्ण को रथ दे दिया था।

२३. **उत्तर पांचाल राजवंश**। २४. **दक्षिणी पांचाल राजवंश**—अजमीढ (२८) के पुत्रो ने पाचाल राजवश की स्थापना की। पाचाल राज के सस्थापको मे अजमीढ के चार पुत्रो के नाम आते हैं। सभव है, चारो गये हो।

२५—**वैदर्भ की चेदि शाखा**—सुबाहु(२८) अन्तिम राजा। आगे इस वश का पता नही चलता।

२६—**मरुत वंश**—तुर्वसु का मरुत वश उत्तरी विहार मे था। मरुत का यह वश प्रसिद्ध था। ये नि सन्तान हुये। इसलिये पौरव वशीय दुष्यन्त को अपना

दत्तक पुत्र बनाया। उसी दुष्यन्त ने शकुन्तला से भरत को जन्म दिया। जिनका इन्द्राभिषेक अन्धे ऋषि दीर्घतमस ने किया।

२७—आनववश (उत्तर-पश्चिम शाखा)—इस वश के युधाजित (३८) दशरथ की पत्नी कैकई के भाई और भरत के मामा थे। शत्रुओ ने इनके बाद इस वश को नष्ट कर दिया। राम के अनुज भरत के पुत्र पुष्कर और तक्ष ने उसे पाया। तक्ष ने तक्षशिला बनाकर वही अपनी राजधानी बना ली। पुष्कर ने पुष्करावती (पेशावर) को बसाकर वही अपनी राजधानी बनाई। पीछे इनके वशधरो ने सभवत. राज्य खो दिया। (वायु ८८, १८९–९०, विष्णु ४, ४७, पद्म २७१; १०; अग्नि ११,।७,८।)

२८—द्रुह्यु वश (पजाब)—राम से १२ पीढी पहले ही मानधाता ने इसको नष्ट कर दिया।

सूर्य मण्डल एवं चन्द्रमण्डल

सूर्य मण्डल—मुख्य सूर्य राजवश के साथ उनकी शाखाओ को मिलाकर सूर्य-मडल कहा जाता था।

चन्द्र मण्डल—मुख्य चन्द्र राजवश के साथ उनकी शाखाओ को मिला कर 'चन्द्र मडल' की सज्ञा थी। अपेक्षाकृत सूर्यमडल से चन्द्रमडल का राज्य विस्तार अधिक था।

मुख्य चन्द्रवंश के खण्ड

मुख्य चन्द्रवश के तीन खण्ड किये जा सकते हैं—पहला—पुरु से अजमीढ तक। दूसरा—अजमीढ से कुरू तक। तीसरा—कुरु से पाण्डव तक।

ऐला राजवश

पार्जिटर के मतानुसार ऐला राजवश के विस्तार की एक सूची दी जाती है। जिसको पार्जिटर ने ऐला राजवश कहा है, उसी को पुराणों मे चन्द्रवश कहा गया है। इसीका नाम पौरव राजवश भी है।

Synopsis of Aila Kingdom.
(पार्जिटर के आधार पर)
यादवस
तुरवसुस
(become
extinct
द्रुहयुम
गाधार राजवश
(N. W.
Frontier)
आनवस
उशीनर
पजाब राजवश
(अनाव-समुद्रपार
ईरान--लेखक)
तितिक्षुस
(अग, वग,
कलिग इत्यादि
पूर्वी बिहार)
पौरवस
भरत या भारत
(हस्तिनापुर)
हैहयस
यादवस
तालजघ
वीति होत्र इ०
वैदर्भस
वैदर्भस
माधवस
चेदिस
(Conquered by
वसु पौरव)
सातवतस
अन्धक
भोजस
भोजस
(मारतिवत)
वृष्णीस
कुकुरस
(मथुरा)
अन्धकस
अजमीढ
उत्तर पाचाल
द्विमीढ = द्विमीढवश
श्रीजय
सोमक
कुरु या कौरव
वासव (चेदि)
कौरव
पाण्डव
बारहद्रथ
मगध
चेदि
कौशाम्बी
राज्य
करुष
राज्य
मत्स्य राज्य
(perhaps)
(जरासध इसी वशमेहुआथा)
(इसका टुकडा अगले पृष्ठ पर देखिये)
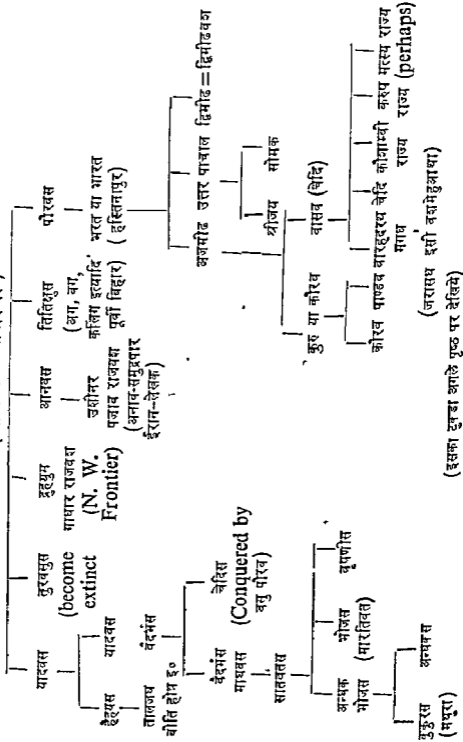
(ऐला राजवंश के सिनैप्सिस का शेषांश)

- पौरव
  - दुष्यन्त + शकुन्तला
    - भरत
      - भरद्वाज (पोष्यपुत्र)
        - वितथ
          - भुवमन्यु—भूमन्यु
            - महावीर्य
              - उरुक्षय
                - बृहत्क्षत्र
                  - सुहोत्र
                    - हस्तिन (बृहत)
                      - अजमीढ
                        - ऋक्ष — हस्तिनापुर
                        - नाल — उत्तरपांचाल (शाखा)
                        - बृहदवसु — दक्षिण पांचाल (शाखा)
                      - द्विमीढ (द्विमीढ शाखा)
                      - पुरुमीढ (नि सन्तान मर गया)
                - नैयारुण, पुष्करिन (Their desndents were महर्षिस, (ब्राह्मणस, उरुक्षयस)
                - कपि (क्षत्रियन, ब्राह्मण, अंगिरस)
            - नर
              - साकृति
                - गुरुन्धी, रन्तिदेव (उत्तराधिकारी क्षत्रिय, ब्राह्मण, अंगिरस)
            - गर्ग
              - शैनी
                - शैन्य-गर्ग (क्षत्रियन, ब्राह्मण, अंगिरस)

त्रेता काल समाप्त

२६६२ ई० पू० भारत मे सूर्यपुत्र मनुवैवस्वत से त्रेताकाल का आरम्भ हुआ था। उनके पुत्रो द्वारा यहाँ सूर्य राजवंश का विस्तार हुआ। उन्ही के साथ-साथ मनु पुत्री इला और दामाद बुध के पुत्रो द्वारा चन्द्रवंश का विस्तार हुआ। सूर्य वंश की मूल राजगद्दी कोशल-अयोध्य मे और चन्द्र वंश की मूल राजगद्दी प्रतिष्ठान-प्रयाग मे थी। सूर्यवंश मे मनु से राम तक ३९ पीढियो का भोगकाल—त्रेता युग के नाम से प्रसिद्ध है। पुराणो मे मनु से रामतक ६५ पीढियाँ बतलायी गई हैं जो छान-बीन करने से शुद्ध नही जान पडतीं।

चन्द्रवंश मे मनु-इला या चन्द्र-बुध से सार्व-भौम तक ३९ पीढियाँ होती हैं। ही त्रेताकाल का भोगकाल है। चन्द्रवंश मे भी पुराणो के अनुसार पीढियो की ख्या अधिक हैं, जो शुद्ध नही हैं।

३९ पीढियो का भोजकाल (३९×२८=)१०९२ वर्ष होता है। अब, यदि ाठक २६६२ मे १०९२ घटायें तो देखेंगे कि (२६६२–१०९२=) १५७० बचता । यही १५७० ई० पू० तक त्रेतायुग का भोगकाल रहा। इसके बाद द्वापर युग ा आरम्भ हुआ। अब अगले खण्ड मे द्वापर काल देखिये।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश
खण्ड नवाँ

द्वापर युग—भोगकाल ४२० वर्ष

(१५७० ई० पू० से ११५० ई० पू० महाभारत संग्राम तक)

द्वापर

दाशरथी राम के बाद द्वापर युग का आरम्भ हुआ। इस युग का भोगकाल महाभारत के ३६ वर्ष बाद तक है, परन्तु साधारणतः महाभारत संग्राम तक ही कहा जाता है। द्वापर का भोगकाल कितने वर्षोंतक रहा—इस बात का निर्णय करने के लिये राम से महाभारत संग्राम तक के भिन्न-भिन्न राजवंशो की पीढ़ियां निश्चित करना आवश्यक है। इसके लिये पहले राम के समकालीन प्रसिद्ध व्यक्तियो की सूची यहां पर दी जाती है। उसके बाद वंशवृक्षों की सूची रहेगी।

राम के समकालीन नरेश

सूर्यवंश—हरिश्चन्द्र, सगर, सुदास, कल्माषपाद, सीरध्वज (राम के श्वसुर) कुशध्वज, भानुमन्त, धर्मध्वज आदि।

चन्द्रवंश—सार्वभौम, धृतिमन्त, सोमक, सुदास, दिवोदास (ऋग्वेद मे प्रशंसित); रुचिराश्व; सुधन्वा; वत्स; मधु; दुर्जय; सुप्रतीक; लोम्पाद; युधाजित; सतवन्त; कृत; सेनजित; अहल्या; पिजवन; सहदेव आदि।

ऋषियों में—विश्वामित्र; वशिष्ठ; वामदेव (यह नारद नहीं बल्कि दूसरे 'वामदेव' है), ऋष्य श्रृंग काश्यप, मित्रभूकाश्यप, श्यामकाश्य, देवराट्, मधुच्छन्दस, प्रतिदर्श, गृत्समद; अगस्त्य; अलर्क; भरद्वाज आदि।

दाशरथी राम के समकालीन पांचाल राजा दिवोदास तथा सेनजित

हस्तिन

(२८)[1] अजमीढ़ द्विमीढ़ पुरुमीढ़

(अजमीढ़ →) नलिनी केशिनी धूमिनी

(नलिनी →) १. नील, दुष्मन्त, परमेष्ठिन

(धूमिनी →) ऋक्ष १ (२९) बृहदिषु (विष्णु iv. १९, ११; भाग० ix. २१. २२।)

(३०)२. शान्ति

(३१)३. सुशान्ति

(३२)४. पुरुजानु

(३३)५. ऋक्ष

(३४)६. भृम्यश्व भरत देववात श्रीजय प्रस्तोक इत्यादि

(३५)७. मुद्गल

(३६)८. वध्र्यश्व

(३७)९. दिवोदास अहल्या (राम)

२. बृहद्वसु (विष्णु iv. १९, ११; वायु ९९, १७०।

३. बृहद् विष्णु (वायु ९९, १७१)

४. बृहन्मनस (मत्स्य ४९, ४८)

५. बृहधनु (भाग० ix २१, २२; मत्स्य १९, ४०)

६. बृहन्धर्मन—बृहत्काय (विष्णु iv. १९, ११; वायु ९९, १७१, भाग० ix २१.२२)

७. जयद्रथ (वि० ४. १९, ११; वायु ९९, १७१; भाग० ix २१, २२; मत्स्य ४९, ९०।)

८. विश्वजित-विशद् (वि०iv १९, ११; वायु ९९, १७२; भाग० ix २१, २३; मत्स्य ४९, ४९

९. सेनजित (वि. ४, १९, ११; वायु ९९, १७२; भाग० ix २१, २३; मत्स्य४९, ४९।)

---

१ कुछ लोग अजमीढ को ३०वीं पीढी में गिनते हैं—वैसी हालत में दिवोदास भी राम के समकालीन ३६वीं पीढी में हो जाते हैं। वैसे ही सेनजित भी हो जायेगा परन्तु मेरे विचार से खींचतान कर पीढ़ी को बराबर करना कोई जरूरी नहीं है। एक या दो पीढी पहले या पीछे होने से भी समकालीन प्रायः होता है। यहाँ पर यह संभव है कि दिवोदास राम से बड़े रहे हों।

यह सर्वमान्य है कि गौतम शारद्वन्त के आश्रम में राम गये थे और अहिल्या का उद्धार किया था। अहल्या के भ्राता दिवोदास थे इसलिये राम के समकालीन हुये। दूसरा प्रमाण यह है कि ऋग्वेद (७।१८।१६) के अनुसार शम्बर और सुदास के युद्ध में दशरथ के पिता अजने इन्द्र की आवभगत की थी। चतुरसेन के मतानुसार दशरथ ने ही इन्द्र की सहायता की थी।

दाशरथी राम के समकालीन पांचाल राजा दिवोदास तथा सेनजित

हस्तिन

(२८)[1] अजमीढ — द्विमीढ — पुरुमीढ

अजमीढ: नलिनी — केशिनी — धूमिनी

नलिनी: १. नील, दुष्मन्त, परमेष्ठिन

धूमिनी: ऋक्ष (२९) — १. वृहदिषु (विष्णु iv. १९, ११; भाग० ix. २१. २२।)

(३०)२. शान्ति

(३१)३. सुशान्ति

(३२)४. पुरुजानु

(३३)५. ऋक्ष

(३४)६. भृम्यश्व — भरत, देवयात, श्रीजय, प्रस्तोक इत्यादि

(३५)७. मुद्गल

(३६)८. वध्र्यश्व

(३७)९. दिवोदास — अहल्या (राम)

२. वृहद्वसु (विष्णु iv. १९, ११; वायु ९९, १७० ।

३. वृहद विष्णु (वायु ९९, १७१)

४. वृहनमनस (मत्स्य ४९, ४८)

५. वृहधनु (भाग० ix २१, २२; मत्स्य १९, ४०)

६. वृहत्कर्मन—वृहत्काय (विष्णु iv. १९, ११; वायु ९९, १७१; भाग० ix २१.२२)

७. जयद्रथ (वि० ४. १९, ११; वायु ९९, १७१; भाग० ix २१, २२; मत्स्य ४९, ९० ।)

८. विश्वजित-विशद् (वि० iv. १९, ११; वायु ९९, १७२; भाग० ix २१, २३; मत्स्य ४९, ४९

९. सेनजित (वि. ४, १९, ११; वायु ९९, १७२; भाग० ix २१, २३; मत्स्य ४९, ४९ ।)

---

१ कुछ लोग अजमीढ को ३०वीं पीढ़ी में गिनते हैं—वैसी हालत में दिवोदास भी राम के समकालीन ३९वीं पीढी में हो जाते हैं। वैसे ही सेनजित भी हो जायेगा परन्तु मेरे विचार से खींचतान कर पीढ़ी को बराबर करना कोई जरूरी नहीं है। एक या दो पीढी पहले या पीछे होने से भी समकालीन प्रायः होता है। यहाँ पर यह संभव है कि दिवोदास राम से बड़े रहे हों।

यह सर्वमान्य है कि गौतम शारद्वन्त के आश्रम में राम गये थे और अहिल्या का उद्धार किया था। अहल्या के भ्राता दिवोदास थे इसलिये राम के समकालीन हुये। दूसरा प्रमाण यह है कि ऋग्वेद (७।१८।१९) के अनुसार शम्बर और सुदास के युद्ध में दशरथ के पिता अजने इन्द्र की आवभगत की थी। चतुरसेन के मतानुसार दशरथ ने ही इन्द्र की सहायता की थी।

१—उपर्युक्त पीढियां पार्जिटर के मतानुसार हैं। परन्तु कहीं-कहीं एक ही व्यक्ति के कई नाम बता दिये गये हैं या शुद्ध किया गया है। जैसे अर्क और भृम्यश्व आदि। २ मुद्गल वेदर्षि थे ऋग्वेद १०।१०२।

(राम के समकालीन) सातवतस[1] (पार्जिटर के मतानुसार)

भजिन भजमान — देववृद्ध — अनधक महाभोज — वृष्णी

भजिन भजमान
(linage not given)

देववृद्ध
बभ्रु
भोज
मारतिकावत

अनधक महाभोज
- कुकुर (कुकुरस वंश)
  - वृष्णी (धृष्णी)
  - कपोत रोमन
  - विलोमन (तित्तिरि)
  - नल (नन्दनोदर दुन्दुभि)
  - अभिजित
  - पुनर्वसु
  - आहुक
    - देवक
    - उग्रसेन
      - कंस और अन्य पुत्र
- भजमान (From whom were the)
  - अन्धक
  - विधूरथ
  - राजाधिदेव-शूर
  - शोणाश्व
  - शामिन
  - स्वयम भोज
  - हृदिक
    - कृतवर्मन
      - कम्बल-बर्हिष
      - असमाधुस
    - देवार्ह
    - अन्यपुत्र

=वृष्णी=
- सुमित्र अनमित्र
  - निघ्न
    - प्रसेन
    - सत्राजित
      - भगकारा
      - समाक्ष
- युधाजित
  - पृश्नि
    - स्वफलक
      - अक्रूर
      - देववन्त और उपदेव
    - चित्रक
      - पृथुआदि
- देवमीढुस
  - शूर
    - वसुदेव
      - बलराम
      - कृष्ण
    - अन्यपुत्र
- अनमित्र (?)शिनि?
  - शिनि
  - सत्यक
  - अयुधान
  - असाग
  - युगान्धर
- (उत्तराधिकारी सैंन्यस)

[1] सातवतस=यादवस।

पौरव शाखा (Lately in Magadh)	(पार्जिटर के मतानुसार)	पौरव मुख्य वंश हस्तिनापुर
		ऋक्ष
		सम्वरण
		कुरु
		चित्ररथ

(ये पीढ़ियाँ विवा-दास्पद है।)

पौरव शाखा		पौरव मुख्य वंश
सुधनवन		जह्नु
सुहोत्र		सुरथ
च्यवन		विदूरथ
कृत ...	.. (राम) ...	सार्वभौम
१.		१. जयत्सेन
२. उपरिचरवसु		२. अप्राचीन-अराधीन
३. बृहद्रथ (बारहद्रथ)		३. महाभौम
४. कुशाग्र		४. अयुतनायन
५. ऋषभ		५. अक्रोधन
६. पुष्प वन्त		६. देवातिथि (ऋक्ष)
७. सत्य धृति		७. भीमसेन
८. सुधन्वन		८. दिलीप-प्रतिसुतवन
९. उरज		९. प्रतीप
	देवापि	(प्रतीप के पुत्र) देवापि, १०. सान्तनु, बह्लीक
१०. सभव		१०. सान्तनु
११.	११. तुरकावष्य	११. विचित्र वीर्य
१२. जरासंध	१२. अज्ञवचस-राजस्वंपायन	१२. पाण्डु
१३. सहदेव	१३. कुश्रीवाजश्रवस	१३. अर्जुन
१४. सामाधि	१४. उपवेश	१४. अभिमन्यु
१५. श्रुतश्रवस	१५, अरुण-औपवसी	१५. परीक्षित
१६. अयुतायुस	१६. उद्दालक आरणी	१६. जन्मेजय
१७. निरमित्र	१७. चन्द्रपीद	१७. सतानीक (प्रथम)
१८. सुक्षत्र	१८. स्वोतनरण	१८. अश्वमेधदत्त
१९. बृहत्कर्मन	१९. अजपार्श्व	१९. अधिसीमकृष्ण
२०. सेनजित		

१. राम (३९) (मुख्य सूर्य राजवंश)
(१५७० ई० पू० से ११५० ई० पू० तक)

कोसल–अयोध्या	श्रावस्ती (उत्तर कोशल)
२. कुश	२. लव
३. अतिथि } १	३. पुष्य
४. निशाय-निषध }	४ ध्रुव संधि
५. नल } २	५. सुदर्शन
६. नाभास-नभ }	६. अग्नि वर्ण
७. पुण्डरीक	७. शिघ्र
८. क्षेम धृतवन-क्षेमधन्वन	८. मनु
९. देवानिव	९. प्रसुश्रुत
१०. अहिनगु[3]	१०. सुसन्धि

(प्रधान) — बाईं ओर; (प्रधान) — दाईं ओर

रूप	रुरु	११ पारिपात्र	११. सहस्रास्व	११. अमारण
		१२. वल	१२. चन्द्रवलोक	१२. विधृतवन्त
		१३. उक्थ	१३. तारापिद	१३. विश्व बाहु
		१४. वज्रनाभ	१४. चन्द्रगिरि	१४. प्रसेनजित
(महाभा० संग्राम)		१५ सखन[5]	१५. चन्द्रगिरि	१५. तक्षक
		१६. व्यूताश्व	१६. श्रुतायुस	१६. बृहद्वल[4] } महाभारत संग्राम
		१७ विश्वसह		१७. बृहद्रण
		१८. हिरण्यनाभ		१८. उरुक्षय
		१९. अतवार		१९ वत्सव्यूह
		२०. पारा-पार		२०. प्रतिव्यूह
				२१. दिवाकर

---

१ डा० प्रधान ३ और ४ को एक ही पीढी मानते हैं। परन्तु पार्जिटर ने अलग-अलग माना है। २ ५ और ६ को 'प्रधान' एक ही पीढी मानते हैं परन्तु 'पार्जिटर' ने अलग अलग माना है। ३ ब्रह्माण्ड और भागवत के अनुसार अहिनगु का पुत्र पारिपात्र या पारियात्र था। विष्णु पुराण के अनुसार अहिनगु और पारिपात्र के बीच में रूप या रुरु था। ४ बृहद्वल-महाभारत संग्राम में मारा गया (महाभारत तथा भागवत पुराण ix. १२।८)। ५ सखन (१५) और बृहद्वल (१६) के समय में महाभारत-युद्ध हुआ। प्रधान के मतानुसार सखन १३ और बृहद्वल १४ है।

मुख्य चन्द्र वंश

(१५७० ई० पू० से ११५० ई० पू० तक)

सार्वभौम...समकालीन...राम

१. जयत्सेन
२. अराधीन (प्रधान) (स्मिथ)
२. अरिह (पार्जिटर)
२. अप्राचीन (चतुर सेन)
३. महाभौम
४. अयुत नाई
५. अक्रोधन
६. देवातिथि
७. ऋक्ष (द्वितीय–पार्जिटर)
७. रिकारीह (प्रधान)
८. भीम सेन
९. दिलीप
१०. सान्तनु (भिष्म)
११. विचित्र वीर्य
१२. धृतराष्ट्र पाण्डव (११५० ई०पू०)
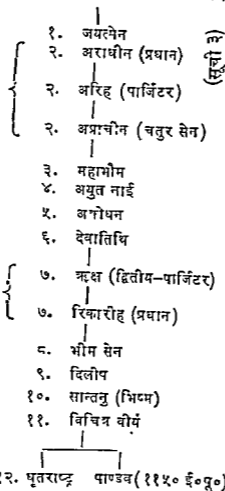
विशेष—सार्वभौम से पाण्डव तक पार्जिटर १५ पीढिया प्रमाणित करते हैं और डा० प्रधान १३ पीढिया। पुराणों के इन वंशवृक्षों पर विचार करने से यह मालूम होता है कि अधिक से अधिक १५ और कम से कम १२ पीढिया हो जाती हैं। राम से महाभारत सग्राम तक मैंने १५ पीढियों का ही भोग काल (१५×२८=) ४२० वर्ष रखा है। दूसरे संस्करण में विद्वान समीक्षकों के मतानुसार संशोधन कर दिया जा सकता है।

(राम)

काशी राजवश	भार्गव वश
अगस्त्य–दिवोदास[1]	वीतहव्य
१ प्रतदन	१. गृतस्मद
२ वत्सक्षत्रश्री	२ सचेतस (सूची—५)
३ अलक (सूची—४)	३. वचस सावेतस
४ सनति	४ विहव्य वित्सत्य वितत्य
५ सुनीथ	५ विवस्त सन्तस
६. क्षम्य	६ श्रावस
७ केतुमन्त	७ तमस
८ वषकेतु सुकेतु	८ प्रकसा
९. धमकेतु	९ वागीन्द्र
१० सत्यकेतु	१० प्रमती
११. विभु	११ रुरु
१२ अविहु	१२ सुनक
१३ सुकुमार (महा भारत सग्राम काल)	१३ देवापि सौनक
१४ धृष्टकेतु	१४ इन्द्रोत देवाप सौनक
१५ वेनुहोत्र	१५ दृति इन्द्रोत देवाप सौनक
१७ अजातशत्रु, गार्ग्य वालाकि	
१८ भद्रसेन	

१—दिवोदास कई हुये हैं—चन्द्रवश, सूर्य वश तथा पांचाल वश में।

मिथिला राजवंश — शाकास्य शाखा

सिरध्वज (राम)
१. भानुमन्त
२. शतद्युम्न
३. मुनि-सूचि
४. उजवह
५. सनद्वाज
६. कुनी

कुशध्वज
१. धर्मध्वज
२. कृतध्वज, २. मितध्वज
३. केशिध्वज, ३. खाण्डिक्य

सगर
असमंजस
अंशुमन्त
दिलाप
भगीरथ

७. स्वागत — ७. ऋतुजित
८. सुवरचस — ८. अरिष्टनेमि
| श्रुत — | श्रुतायुस
९. सुश्रुत — ९. सूर्याश्व
| जय — | सजय
१०. विजय — १०. क्षेमारि
११. ऋता — ११. जनेनस
१२. सुनय — १२. मिनरथ
१३. वीतहव्य — १३. सत्यरथ
१४. घृति — १४. सत्यरथी
१५. बेहुलाश्व — १५. उपगु
१६. — १६.
१७. वृति — १७. श्रुत अग्नि
१८. उपगुप्त (=उग्रसेन?) — १८. सुकेशा भारद्वाज, कौशल्या, आश्वलायन

११. वेदव्यास
पैला
१२. इन्द्रप्रमति, वासकल
१३. माण्डुकेय (महाभारत संग्राम)
१४. सत्यश्रायम
१५. सत्यहित
१६. पातजलकाण्य १६. सत्यश्री
१७. साकल्य १७. रथीतर

यादव राजवंश (चन्द्रवंश शाखा)		अंग राजवंश (न० वंशशाखा)	
सतवन्त	(राम)	रोमपाद	
१. भीम सात्वत		१. चतुरंग (सूची—७)	
२. अन्धक (सूची—६)		२. पृथुलाक्ष	
३. कुकुर		३. चम्प	
४. वृषणी		४. हर्यंग	
५. कपोत रोमन		५. भद्ररथ	
६. रेवत-विलोमन-तित्तिर		६. बृहत्कर्मन, ६. बृहद्रथ, ६. बृहद्भानु	
७. भवरैवत		७. बृहनमनस	
८.		८. जयद्रथ	८. विजय
९. पुनर्वसु		९. दृढरथ	९. धृति
१०. आहुक		१०. विश्वजित	१०. धृतिवरत
११. देवक, ११. उग्रसेन		११. अंग	११. सत्यकरमन
१२. देवकी, १२. कंस		१२.	१२. अधीरथ
१३. श्रीकृष्ण (महाभा० संग्राम)		१३. करण	१३. करण
१४. प्रद्युम्न		१४. वृषसेन	१४. वृषसेन
१५. अनिरुद्ध		१५. पृथुसेन	१५. पृथुसेन
१६. वज्र			

गाधि—विश्वामित्र	(सूची—८)	इक्ष्वाकु-शाखा (सूर्यवंश)
		अयुतायुस (भगस्वर 'प्रधान')
		ऋतुपर्ण
		सर्वकाम
गाधि		
विश्वामित्र	वशिष्ठ	सुदास
	शक्ति	कल्माषपाद
देवराट, मधुच्छन्दस		
१ साकमश्व	पराशर	
		१ अश्मक — १ सर्वकर्मन
		२. उरकाम — २. अनरण्य
३. व्याश्व		३. मूलक — ३ निघ्न
४ विश्वमनस	वैदिक शिक्षक	
	५ अम्भृण (अभरण)	
६. उद्दालक	६. वौक	४ अनमित्र — रघु
७. सुमन्यु	७ कश्यप नैध्रुवी	
८ बृहद्दिव	८. शिल्प कश्यप	
	९ हरित कश्यप	
१० प्रति वैश्य	१० असित वार्षगिन	
११ सुभ प्रातिवेश्य	११ जिह्वावन्त वाध्ययोग	
	१२ वाजश्रवस	
१२. सोमापि	१३. कुश्रीवाजश्रवस (महाभा० स० काल)	
१४ प्रियव्रत सोमापि	१४. उपवश	
	१५ अरुण	
१६ उद्दालक आरुणी	१६. उद्दालक, १६ कुपितक, १६ ब्रह्मगत, १६ अश्वतराश्व,	
१७ कहोदकौषितकी	१७ श्वेतकेतु, १७ कहोद, १७ याज्ञवल्क्य, १७ बुडिला,	
१८ गुणाख्य शांखायन	१८ अष्टावक्र	
१९. शांखायन के लेखक आरण्यक		

इक्ष्वाकु-मुख्य सूर्य राजवंश
शतरथ-कृत शर्मन
विश्व मह–विश्व महत
दिलीप–खट्वांग
दीर्घबाहु
रघु
अज
दशरथ

१ राम (सूची—९)　　(सूची—१०)

(सूची—९)				(सूची—१०)
		२ कुश		२ लव (उत्तरकोशल श्रावस्ती)
		३ अतिथि (भाग० IX १२।१)		३. पुष्य
		निषध		ध्रुव संधि
		४ नल　"		४ सुदर्शन
		नभस		
		५. पुण्डरीक　"		५ अग्निवर्ण(शीघ्र)
		६ क्षेमधृतवन　"		६. मरु
		७ देवानीक ((भाग० IX १२।२)		७ प्रासुश्रुत
		८ अहिनगु[1]		८ सुसंधि
रूप	रूरू	९ पारियात्र,	९. सहस्राव	९ अमरष
साल	दल	१०. बल	१०. चन्द्रावलोक	१०. विश्रुतवन्त
		११ उक्थ	११ तारापीद	११ विश्वबाहु
		१२. नभनाम	१२ चन्द्रगिरि	१२ प्रसेनजित
		१३. शखन	१३ भानुपचन्द्र	१३ तक्षक
		१४. व्यूपिताश्व	१४ श्रुतायुस	१४ बृहद्बल (महाभारत संग्राम में मारा गया । भाग० ९।१२।८)
		१५ विश्वसह		१५ बृहतक्षय
		१६ हिरण्यनाभ,	१६ अश्वपति कैकय	१६ उरुक्षय
		१७ अतणार		१७ वत्सव्यूह
		१८ पर		१८ प्रतिव्यूह
				१९ दिवाकर

अभिमन्यु ने तक्षक व पुत्र बृहद्बल को महाभारत संग्राम में मारा था। (भाग० स्कंध ९। अ० १२। श्लोक ८।)

---

[1] ब्रह्माण्ड और भागवत पुराण (IX १२।२) के अनुसार अनीह या अहिनगु का पुत्र पारियात्र या पारिपात्र था परन्तु विष्णु पुराण के अनुसार अहिनगु और पारियात्र के बीच में रूप या रूरू था ।

वंशसूची—११

वैदिक शिक्षक (Vedic Teachers)

विभान दक्ष काश्यप

|

१. ऋष्यश्रृंग काश्यप

|

२ मित्रभू काश्यप

३ अग्निभू काश्यप

४.

५. सवस

६. देवतरस—सावसायन

७. देवतरथ

८. निकोथक भायजात्य

९

१०. भूतमुपमा यातवत

जातुकर्ण्य

११.

१२.

१३.

१४ इन्द्रोत दैवाप शौनक

१५ दृति इन्द्रोत शौनक

१६ पुलुष प्राचीन योग्य

१७ सत्ययज्ञ पौलुषि

Genealogies of Vedic Kings and Series

उत्तर पाचाल राजवंश (चन्द्रवंश शाखा)

I नील
II. शान्ति
III. सुशान्ति
IV पुरूजानु
V तृक्ष (ऋक्ष, अर्क पृथु आदि भिन्न भिन्न पुराणों में भिन्न भिन्न नाम)
VI. भृम्यश्व — भरत
VII मुद्गल — देववात
VIII वध्र्यश्व — श्रीजय — इमावत

X दिवोदास, अहल्या — प्रस्तोक, पिजवन, सहदेव — प्रतिदर्श
मित्रायुस सतानन्द — सुदास — (१) सोमक (सहदेव का पुत्र राजा
साम — (२) अकदन्त सोमक ऋ० ४।१५।१०)
मैत्रेयस
(३)
(४)
(५)
(६) (सूची—१२)
(७)
(८)
(९)
१० पराशर (द्वितीय) — नर — (१०) दुष्ट ऋतु
११. वेदव्यास — नारायण — (११) पृषत
१२ शुक — १२ जैमिनी — (१२) द्रुपद
१३ सुमन्तु — (१३) धृष्टद्युम्न (महाभा० संग्राम)
१४ सुत्वन — (१४) कबन्ध
१५ सुकर्मन — पथ्य — (१५) वेददर्श
१६ पौष्यंजि — १६ हिरण्यनाभ — मौदग — १६ पिप्पलाद
१७ लौगाक्षी कुथुमि, कुसीदिन, लागलि — १७ याज्ञवल्क्य प्रोतिकौसुरुविन्दी — १७ अश्वत
पराशर (III) भागवित्ति — १८. आसुरी, त्रैवनि, औपमन्यवि
१८ पराशर कौथुम — १९ यास्क, पंचशिख
जातुकर्ण्य
प्राचीनयोग्य, पतञ्जलि I — १९ आसुरायण — २० पाराशर्य
२१. पाराशर्यायन
बादरायन
२२ दण्डी — शाट्यायनि

of Vedic Teachers ('प्रधान' द्वारा भी समर्थित)
दक्षिण पांचाल राजवंश (चन्द्रवंश-शाखा)

I. बृहदिषु
II. बृहन्त
III. बृहनमनस
IV. बृहद्धनु
V. बृहद्वसु
VI. बृहत्कर्मन
VII जयद्रथ
VIII. विश्वजित
IX. सेनजित
१. रुचिराश्व
२. पृथुसेन
३. पौरपार
४. नीप
५. समर
पार
६. पृथु
सुकृति
७. विभ्राज
८. अणुह
९. ब्रह्मदत्त
१०. विश्वसेन
११. उदक्सेन
१२. भल्लाट
१३. जन्मेजय
वैशम्पायन
१७. याज्ञवल्क्य
सत्यकाम जाबाल
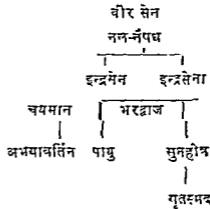
वीर सेन
नल-नैषध
इन्द्रसेन, इन्द्रसेना

च्यवमान — अभयावर्तिन
भरद्वाज — पायु, सुनहोत्र
सुनहोत्र — गृत्समद

(सूची–१३)

१६. उपमन्यु
१७. प्राचीनशाल

क्रम सं०	यादवस १	हैहयस २	द्रुह्युस ३	तुर्वसुस ४	कान्यकुब्ज ५	पौरवस मु०च०व० ६
१	मनु		मनु	मनु	मनु	मनु
२	इला		इला	इला	इला	इला
३	पुरुरवस		पुरुरवस	पुरुरवस	पुरुरवस	पुरुरवस
४	आयु*		आयु*	आयु	अमावसु	आयु
५	नहुष		नहुष	नहुष		नहुष
६	ययाति		ययाति	ययाति		ययाति
७	यदु		द्रुह्यु	तुर्वसु		पुरु
८	क्रोष्टु	सहस्रजीत				जन्मेजय(प्र०)
९					भीम	प्रचिन्वन्त
१०						प्रवीर
११	भृजनिवन्त	शतजीत				मनस्यु
१२			बभ्रु			अभयाद
१३						सुधन्वन-धुन्धु
१४	स्वाहि	हैहय		वह्नि	काननप्रभा	बहुगव
१५						संजाति
१६						अहंयाति
१७	रुशद्गु	धर्मनेत्र				रौद्राश्व
१८						ऋचेयु*
१९	चित्ररथ	कुन्ती				मतिनार
२०	शशबिन्दु					तसु-सुमति
२१	पृथुश्रवस	साहंज	अंगार	गर्भ		
२२	अन्तर					
२३		महिष्मन्त	गाधार		जह्नु	
२४	सुयश				सुनह	
२५		भद्रश्रेण्य			अजक	
२६	उशनस		धर्म		बलाकाश्व	
२७		दुरदम				
२८	शिनेयु	कनक		गोभानु	कुश	
२९			धृत		कुशाश्व-कुशिक	
३०	मरुत	कृतवीर्य			गाधि	
३१		अर्जुन*				
३२	कम्बलबर्हिष		दुदम		विश्वामित्र	
३३		जयध्वज				

Lists (पार्जिटर के मतानुसार)
Genealogies

काशी	आनवस N. W.	आनवस E	अयोध्या	विदेह	वैशाली
७	८	९	१०	११	१२
मनु	मनु				
			मनु		मनु
इला	इला		इक्ष्वाकु		
					नाभानेदिष्ट
पुरुरवस	पुरुरवस		विकुक्षी-शशाद	नेमि-निमि	
आयु	आयु		कुकुत्स्थ		
नहुष	नहुष		अनेनस	मिथि-जनक	
क्षत्र वृद्ध	ययुद्ध		पृथु		भलन्दन
	अनु		विष्टराश्व		
			आर्द्र	उदावसु	वत्सप्री
सुनहोत्र			युवनाश्व (प्रथम)		
	सभानर		श्रावस्त		
			बृहदाश्व	नन्दिवर्द्धन	
काश			कुवलयाश्व		
	कालानल				प्रांशु
			दृढाश्व		
			प्रमोद	सुकेतु	
दीर्घतपस			हर्यश्व (प्र०)		
धन्व	श्रीजय		निकुम्भ		
					प्रजानि
			संहताश्व	देवरात	
			अकृशाश्व		
धन्वन्तरि	पुरंजय		प्रसेनजित		
केतुमन्त (१)			युवनाश्व (द्वि०)	बृहदुक्थ	खनित्र
			मानधातृ		
	महाशाला		पुरुकुत्स		
भीमरथ					
			त्रसदस्यु	महावीर्य	
	महामनस		सम्भूत		
दिवोदास			अनरण्य		क्षुप
अस्तारथ	उशीनर	तितिक्षु	त्रसदश्व	धृतिमन्त	
			हर्यश्व (द्वि)		
			वसुमनस-वसुमत		विंश
	केकय		त्रिधन्वन	सुधृति	
		रुद्राश्व	त्रैयारुण		
			सत्यव्रत-त्रिशंकु	धृष्टकेतु	विविंश
			हरिश्चन्द्र		

Dynastic Table of Royal

क्रम सं०	यादवस १	हैहयस २	द्रुह्यस ३	तुर्वसुगु ४	कान्यकुब्ज ५	पौरवस ६
३४	रुक्मकवच	तालजंघ		त्रिसानु	अम्बव	
३५			प्रचेतस			
३६	पारावृत	वितिहोत्र			सोही	
३७						
३८	ज्यामघ	अनन्त	सुचेतस			
३९		दुर्जय				
४०	विदर्भ	सुप्रतीक		करन्धम		
		चेदी				
४१	क्रथभीम	कौशिक		मरुत		
४२	कुन्ती	चिदी				
४३	धृष्ट					
४४	निर्वृति			(दुष्यन्त)		दुष्यन्त
४५	विदूरथ					भरत
४६	दशार्ह					
४७	व्योमन					(भरद्वाज)
४८	जिमूत					वितथ
४९	विकृति					भुवमन्यु
५०	भीमरथ	वीरबाहु				बृहत्क्षत्र
५१	रथवर	सुबाहु				सुहोत्र
५२			द्विमीढ वंश उत्तरपाचाल, दक्षिणपाचाल			हस्तिन हस्त
५३	दशारथ		द्विमीढ			अजमीढ
५४	एकादश रथ					
५५	शकुनी		यवीनर	नील	बृहदवसु	
५६	करम्भा			सुशान्ति	बृहदिषु	
५७						
५८	देवराट		धृतिमन्त	पुरुजानु	बृहद्धनुष	
५९	देवक्षत्र			ऋक्ष	बृहत्कर्मन	
६०	देवन		सत्यधृति	भृम्याश्व	जयद्रथ	
६१	मधु		धृढनमी	मुद्गल	विश्वजित	
६२	पुरुवस			ब्रह्मनिष्ठ		
६३	पुरुद्वन्त		सुधर्मन	बध्र्यश्व	सेनजित	
६४	जन्तु (अंशु)		सार्वभौम	दिवोदास	रुचिराश्व	ऋक्ष
६५	सतवन्त			मितायु	पृथुसेन	
			महत्पौरव	मैत्रेय सोमा	पार (१)	

काशी	आनवस N. W.	आनवस E.	अयोध्या	विदेह	वैशाली
७	८	९	१०	११	१२
		हेम	रोहित		
			हरित	हर्यश्व	खनीनेत्र
			विजय		
			रुरुक		
हर्यश्व		सुतपस	वृक	मरु	
सुदेव			बाहु (असित)		करन्धम
दिवोदास (२)					अविक्षित
					मरुत*
प्रतर्दन		वाली*	सगर	प्रतिधक	नरिष्यन्त
वत्स					
अलार्क			असमजस		दम
		अग	अंशुमन्त		
सुन्नाति			दिलीप (१)	कीर्तिरथ	राष्ट्रवर्द्धन
सुनीथ			भगीरथ		सुधृति
			श्रुत		नर
क्षेम		दधीवाहन	नाभाग	देवमीढ	केवल
			अम्बरीश		बन्धुमन्त
वेतुमन्त (२)			सिन्धुद्वीप		वेगवन्त
			अयुतायुस	विबुध	बुध
		दिविरथ	ऋतुपर्ण		
			सर्वकाम		तृणविन्दु
सुकेतु			सुदास	महाधृति	विश्रावस
धर्मकेतु		धर्मरथ	मित्रसह कल्माषपाद		विशाल
			अश्मक		हेमचन्द्र
सत्यकेतु			मूलक	कीर्तिरात	सुचन्द्र
		चित्ररथ	शतरथ		धूम्राश्व
विभु			वृद्धशर्मन		श्रजय
			विश्वसह (१)	महारोमन	सहदेव
सुविभु		सत्यरथ	दिलीप(२)खट्वांग		कृशाश्व
			दीर्घबाहु	स्वर्णरोमन	
सुकुमार			रघु		सोमदत्त
			अज	ह्रस्वरोमन	जन्मेजय
धृष्टकेतु			दशरथ	सिरध्वज	प्रमति
			राम	भानुमन्त	

Chronological Table of Rishis

(पार्जिटर के मतानुसार)

क्रम सं०	भार्गवस १	आंगिरस २	वशिष्ठस ३	अन्य वंश ४
१			'वशिष्ठ'	
२	च्यवन		'वशिष्ठ'	
३			'वशिष्ठ'	
४				
५	शुक्र-काव्य-उशना	बृहस्पति		
६	मशाद, मर्क अपनवत			
७				
१७				
१८				प्रभाकर-आत्रेय
१९				
२९				
३०	उर्व		वरुण	
३१	ऋचीक-और्व		आपव वारुणी	दत्ता-आत्रेय, दुर्वासास
३२	जमदग्नि, अजिगर्त		देवराज	(विश्वरथ) विश्वामित्र
३३				मधुच्छन्दस, ऋषभ, रेणु, अवतक, कतियाक्त गालव, विश्वामित्र
३४	{ राम, सुनह शेप }			विश्वमित्र
३५				
३६				
३७				
३८		अथर्वन		

Chronological Table of Rishis.

(पार्जिटर के मतानुसार)

क्रम सं०	भार्गवस १	आंगिरस २	वसिष्ठस ३	अन्य वंश ४
३९		उशिन		
४०	अग्नि-और्व वितहव्य	उचथ्य, बृहस्पति संवर्त	अथर्व निधि, (१) आपव	
४१		दीर्घतमस,भरद्वाज शरदवन्त(१)		
४२				विश्वामित्र,(शकुन्तला के पिता)कन्व-काश्यप, अगस्त्य(और लोपामुद्रा)
४३		कक्षीवन्त (१)		
४४		शम्यु		
४५				
४६		विदथीन भरद्वाज (भरत द्वारा पोष्यपुत्र)		
४७				
४८				
४९		गर्ग, नर		
५०		उरुक्षय, सकृति		
५१		ऋजिस्वन (?)		
५२		कपि		
५३				
५४		भरद्वाज (अजमीढ के साथ)	श्रेष्ठ भाज	
५५		कण्व		
५६		मेधातिथि-कण्व		
५७				
५८				

Teachers. (वैदिक शिक्षक)
मतानुसार)

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद	क्रम
५	६	७	८	सं०
				९२
				९३
पैला	वैशमपायण	जैमिनी	सुमन्तु	९४
इन्द्रप्रमति		सुमन्तु, जैमिनि	कबन्ध	९५
बोध्य, 'याज्ञ-वल्क्य, पाराशर	याज्ञवल्क्य, ब्रह्मराति	सुत्वन, जैमिनि	पथ्य, देवदर्श	९६
सत्यश्रवग	तित्तिरि	सुत्रमन, जैमिनी	पिप्पलाद इत्यादि	९७
सत्यहित		पौष्य पिण्ड्य	जाजलि, शौनक	९८
सत्यश्री	मध्यादिन, कण्व इत्यादि	लौगाक्षी, कुथुमि मंध्यायण कुशीत्तिन, लागलि, वभ्रु		९९
		राणायनीय, टण्डिपुत्र, पाराशर, भागवित्ति इत्यादि		१००
			मुंजकेश	A
		लोभगायणी, पाराशर्य प्राचीन योग		B
				C
		असुरायण, पतंजलि		D
				E
				F

Table of Vedic

(पार्जिटर के

क्रम सं०	कुरु-पौरवस	विदेह-जनक	अन्यान्य राजा	Various Teachers
	१	२	३	४
९२	विचित्रवीर्य	धृति		कृष्णद्वयपायन-व्यास
९३	धृतराष्ट्र	वहुलाश्व		शुक
९४	पाण्डव	कृन्क्षण		भूरिश्रवस
९५	अभिमन्यु			उपवेश
९६	परीक्षित(द्वि०)		अश्वपति (कैकयके)	आयोद धनजल अरुण, प्राचीन शाल
९७	जन्मेजय(तृ०)			उद्दालक, वेद, उपमन्यु, सविदायन, प्राचीन योग्य।
९८	शतानीक	जनक-उग्रसेन		कहोद, वन्दिन, वाजसनेय, याज्ञवल्क्य।
९९	अश्वमेध दत्त		प्रवाहण(पंचालके)	श्वेतकेतु, अष्टावक्र
२००	अधिसीम कृष्ण			याज्ञवल्क्य
A				आसुरि, मधुक
B		जनक जनदेव		पंचशिख
C		जनक-धर्मध्वज		चूद, भागवित्ति
D				असुरायण, यास्क
E		जानकि-आयस्थूण		
F				सत्यकाम-जाबाल

Teachers. (वैदिक शिक्षक) ;

मतानुसार)

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद	क्रम
५	६	७	८	स०
				९२
				९३
पैला	वैशम्पायन	जैमिनी	सुमन्तु	९४
इन्द्रप्रमति		सुमन्तु, जैमिनि	कबन्ध	९५
बोध्य, 'याज्ञवल्क्य, पाराशर	याज्ञवल्क्य, ब्रह्मराति	सुत्वन, जैमिनि	पथ्य, देवदर्श	९६
सत्यश्रवस	तित्तिरि	सुश्रमन, जैमिनी	पिप्पलाद इत्यादि	९७
सत्यहित		पौष्य पिण्ड्य	जाजलि, शौनक	९८
सत्यश्री	मध्यादिन, कण्व इत्यादि	लौगाक्षी, कुथुमि सैन्धायण कुथीत्तिन, लांगलि, बभ्रु		९९
		राणायनीय, टण्डिपुत्र, पाराशर, भार्गवित्ति इत्यादि		१००
			मुंजकेश	A
		सोमशामणी, पाराशर्य प्राचीन योग		B
				C
		असुरायण, पतंजलि		D
				E
				F

Chronological Table of Rishis.
(पार्जिटर के मतानुसार)

क्रम सं०	भार्गवस १	आंगिरस २	वशिष्ठस ३	अन्य वंश ४
५९				
६०			अथर्वनिधि (२)	शाण्डिल्य काश्यप
६१		मौद्गल्य		
६२	(वध्र्यश्व)			
६३	(दिवोदास)	पायु, शरद्वन्त (२) सौभरि काण्व		विभाण्डक-काश्यप अर्चनानस-आत्रेय
६४	(मित्रायु) परिच्छेप दैवोदासी		'वशिष्ठ' (दशरथके साथ)	ऋष्यशृङ्ग-काश्यप, रेहूहा-काश्यप श्यावाश्व-आत्रेय
६५	मैत्रेय; प्रतर्दन दैवोदासी, प्रचे-तस, अनान्त-पारु चेहेपी	कक्षीवन्त (द्वितीय) पत्रिप		अन्धीगु-आत्रेय
६६	वाल्मीकि			
६७	सुमित्रा-वाध्र्यश्व		'वशिष्ठ' (सुदास के दास)	
६८			शक्ति, शतयातु	'विश्वामित्र' सुदास के साथ निध्रुव-काश्यप
६९		वामदेव	पाराशर, जकरय सुवर्चस	
७०		वृहदुक्थ		
७१	देवापि-सौनक			
७२				
७३	इन्द्रौत शौनक			
७४				बलिभाण्डकी-काश्यप
७५				

Chronological Table of Rishis

(पार्जिटर के मतानुसार)

क्रम सं०	भार्गवस १	आंगिरस २	वशिष्ठम ३	अन्य वंश ४
८५				
८६				जयगीशव्य
८७				शंख और लिखित कण्डरीक, बाभ्रव्य पाचाल
८८				
८९			(सगर)	
९०			सगर, पाराशर	
९१			जातूकरण्य	असित-काश्यप विषनक-सेन (जातूकरण्य)
९२		'भरद्वाज'	कृष्ण-द्वैपायन-व्यास	अग्निवेश
९३		कृपा, द्रोण	शुक	असित-देवल, धौम्य औरयाज, सभी काश्यप
९४	वैशम्पायन	अश्वत्थामन, पैला	भूरिश्रवस, इत्यादि	लोमश, जैमिनी, सुमन्तु

Teachers. (वैदिक शिक्षक)
मतानुसार)

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद	क्रम सं०
५	६	७	८	
पैला	वैशमपायण	जैमिनी		९२
इन्द्रप्रमनि			सुमन्तु	९३
बोध्य, 'याज-	याज्ञवल्क्य,	सुमन्तु, जैमिनि	कबन्ध	९४
वल्क्य,पाराशर	ब्रह्मराति	सुत्वन, जैमिनि	पथ्य, देवदर्श	९५
सत्यश्रवग	तित्तिरि	सुश्रमन, जैमिनी	पिप्पलाद इत्यादि	९६
सत्यहित		पौष्य पिण्ड्य	जाजलि, शौनक	९७
सत्यश्री	मध्यादिन, कण्व इत्यादि	लौगाक्षी, कुथुमि सैंध्यायण		९८
		कुशीत्तिन, लागलि, वभ्रु		९९
		राणायनीय, टण्डिपुत्र, पाराशर, भागवित्ति इत्यादि		१००
			मुञ्जकेश	A
		लोभगायणी, पाराशय प्राचीन याग		B
		असुरायण, पतञ्जलि		C
				D
				E
				F

द्वापर युग का अन्त

भिन्न-भिन्न वंशवृक्षों को देखने से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि राम से महा-भारत काल तक कम से कम १२ और अधिक से अधिक पन्द्रह पीढियां होती हैं। श्री पार्जिटर ने १५ पीढियां मानी हैं। प्रधान का विचार १२-१३ है।

१३ पीढियों के अनुसार (१३ × २८ =) ३६४ वर्ष का अन्तर और १५ पीढियां मान लेने पर (१५ × २८ =) ४२० वर्ष का अन्तर पडता है। यही द्वापर युग का भोगकाल हुआ।

महाभारत संग्राम के ३६ वर्ष बाद परीक्षित राजा हुए थे। उन्हीं के समय से कलियुग का आरंभ कहा गया है। इसका मतलब यह है कि राजा परीक्षित के राज्याभिषेक तक द्वापर युग का भोग काल चला।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड—दसवाँ

कलियुग

(महाभारत संग्राम के बाद)

महाभारत संग्राम से मसीह तक ११५० वर्ष

कलियुग के राजवश महाभारत संग्राम काल से रिपुञ्जय, प्रसेनजित, उदयन, विम्बिसार तथा बुद्धदेव तक ६३८ वर्ष और महाभा० स० काल से मसीह तक ११५० वर्ष।

(मसीह से ५७ वर्ष पूर्व विक्रम सम्वत् आरम्भ हुआ। १९६५ मे विक्रम सम्वत् २०२२ है, इसलिए २०२२ – १९६५ = ५७का अन्तर।)

गत खण्ड मे पाठक देख चुके हैं कि दाशरथी राम से महाभारत सग्राम काल तक भिन्न-भिन्न राजवशो की सूचियों के अनुसार तेरह पीढियाँ होती है—जिनका भोगकाल (१३ × २८ =) ३६४ वर्ष होता है। इस ग्रन्थ मे मैंने राम से महाभारत सग्रामकाल तक पन्द्रह पीढियो का भोगकाल (१५ × २८ =) ४२० वर्ष रखा है। इसका कारण यह है कि कम से कम १३ पीढियाँ तो होती हैं लेकिन इनके अन्तर्गत दो पीढियो के बढाने की भी गुंजाइश है।[१] इस पुस्तक के आरम्भ मे पृष्ठ २० से जो एक लम्बी राजवंश-सूची दी गई है, उसमे मैंने राम से महाभारत सग्राम तक की सूची में चौदह पीढियो के नाम दिये हैं और एक पीढी का स्थान रिक्त है।[२]

पुराणों के अनुसार मनुर्वैवस्वत से महाभारत सग्राम—सूर्यवशी राजा तक्षक – बृहद्बल—बृहत्क्षण तक ९५ पीढियाँ होती हैं। पार्जिटर महाशय ने[३] इन्ही ९५ पीढियो

---

१. पार्जिटर ने १५ पीढियाँ मानी हैं और प्रधान ने १३।

२ देखिये—इसी ग्रन्थ का पृष्ठ २६–३०।

३ एन्शियन्ट इण्डियन हिस्ट्रोरीकल ट्रेडीशन। ९५ पीढियों की उनकी राजवंश सूची भी ज्यों-की त्यों इस पुस्तक के नवें खंड में दे दी गई है।

के अन्तर्गत सतयुग, त्रेता और द्वापर काल निश्चित किया है। उन्होने मनुर्वैवस्वत १ से ४० वी पीढ़ी तक अर्थात् राजा सगर के राजतिलक तक ४० पीढ़ियो के भोग-काल को सतयुग-कृतयुग माना है। राजा सगर से दाशरथी राम तक २५ पीढ़ियों के भोगकाल को त्रेता युग कहा है। अर्थात् ४१ से ६५ वी पीढ़ी तक। ६६ से ९५ तक बृहद्बल—बृहत्क्षण तक ३० पीढ़ियों के भोगकाल को द्वापर युग माना है।

पार्जिटर तथा पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार मनुर्वैवस्वत ही भारत मे प्रवेश करने वाले प्रथम आर्य हैं। आज तक इसी का समर्थन भारतीय इतिहासवेत्ता भी करते आ रहे है। स्वायंभुवमनु से वुद्ध काल तक के भारतीय ऐतिहासिक काल को 'अन्धकार युग' (Darkage) की सज्ञा दी गई है। संभव है, भारतीय इतिहासवेत्ताओं ने पराधीनता के कारण ऐसा किया हो। यहीं पर प्राचीन भारतीय इतिहास की गर्दन काट कर दो खण्डो मे विभाजित कर दी गई है। श्री मद्भागवत मे यह स्पष्ट लिखा हुआ है कि—'छैमनुओ के भोगकाल को सतयुग कहते है। पुराणो के ही अनुसार मनुर्वैवस्वत सातवें मनु है। इसलिए सतयुगकाल इनके पहले ही समाप्त हो गया। चारयुगो की राजवंश-सूची पुराणो की ही सहायता से मैंने तैयार की है। पहले कई बार कहा जा चुका है तथापि यहाँ पर उनके भोगकालो का पुनरावृत्ति की जाती है—

महाभारत सग्रामके पहले—		लेखक के मतानुसार— (पीढ़ियो के आधार पर)	पुराणों के मतानुसार (पीढ़ियो के आधार पर)
१. सतयुग-कृतयुग-	(४५ × २८) + (२ × ५० =)	१३६० वर्ष	१३६० वर्ष
२. त्रेतायुग	(३९ × २८ =)	१०९२ ,,	(६५ × २८ =) १८२० ,,
३. द्वापर युग	(१५ × २८ =)	४२० ,,	(३० × २८ =) ८४० ,,
तीनों युगो का भोगकाल	.. ...	२८७२ वर्ष	४०२० वर्ष

प्रा० भारतीय राजवंश का भोगकाल—महाभारत संग्रामकाल से पूर्व

(क) उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हुआ कि पौराणिक परम्परा के अनुसार महाभारत सग्राम काल से ४०२० वर्ष पहले स्वायंभुव मनु ने विश्व मे भारतीय आर्य राज्य की स्थापना की।

(ख) *अनुसन्धानात्मक विचार के अनुसार यह प्रमाणित हुआ कि महाभारत सग्राम* काल से २८७२ वर्ष पहले स्वयंभुव मनु ने विश्व मे भारतीय राजवंश की नीव डाली। वही राजवंश लगातार पृथ्वीराज चौहान—१२०० ईस्वी तक भारत मे रहा।

महाभारत संग्राम के बाद कलियुग

भारतीय विद्वानो में दो पक्ष या दल हैं। एक दल वह है जो पौराणिक कथनो को अक्षरशः सत्य प्रमाणित करने की चेष्टा किया करता है। इस पक्ष के दो विद्वानो के विचार देखने का सुअवसर लेखक को मिला है। एक है श्री विश्वेंकटाचार्य एम० ए० एल० टी० जो समय-समय पर ऐस्ट्रोलोजिकल मैगजीन (बगलोर) में प्रधान-प्रधान अतीत की घटनाओं पर गवेषणात्मक निबन्ध लिखा करते हैं। दूसरे विद्वान हैं बिहार के डा० देव सहाय त्रिवेद। इनके अतिरिक्त और विद्वान भी है।

त्रिवेदीजी का एक गवेषणात्मक निबन्ध पटना के दैनिक 'प्रदीप' (दिनाक २५ मई १९६४) मे मिला था—जिसका शीर्षक था "भगवान बुद्ध की जन्म तिथि और उनका काल"। उस निबन्ध मे उन्होने बुद्धदेव की जन्म तिथि "आज से करीब चार हजार वर्ष पहले ज्येष्ठ शुक्ल दूज को" प्रमाणित करने का प्रयास किया है।

इन दोनों विद्वानो के कथनानुसार महाभारत सग्राम काल आज से करीब पाच हजार वर्ष पहले होता है। इस पक्ष के समर्थन मे और भी अनेक विद्वान हैं।

जिस समय बुद्धदेव जीवित थे उस समय वहिद्रथ राजवश मे राजा रिपुञ्जय, उत्तरकोशल-श्रावस्ती राजवश मे प्रसेनजित, हस्तिनापुर—अर्जुन राजवश मे राजा उदयन भी जीवित थे—इसलिये वे लोग सभी पक्षो के विद्वानो द्वारा समकालीन माने जाते है।[1] (राजा उदयन कौशाम्बी मे रहते थे।)

महाभारत सग्राम के बाद रिपुञ्जयतक वहिद्रथ वश की पीढियाँ विवादग्रस्त हैं। किसी पुराण मे १६, किसी मे २२ और किसी मे ३२ हैं। भोग काल मत्स्य तथा भागवत के अनुसार १००६ वर्ष है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि महाभारत सग्राम के एक हजार वर्ष बाद रिपुञ्जय हुआ। उसी समय बुद्धदेव भी थे। इसलिये महाभारत सग्राम काल एक हजार वर्ष बुद्ध के पहले और चार हजार वर्ष बुद्ध के बाद (१००० + ४०००) अर्थात् आज से पाँच हजार वर्ष पहले महाभारत सग्राम काल निश्चित हुआ। पौराणिक परम्परा के ही अनुसार इन्ही विद्वानो का दूसरा तर्क यह है कि महाभारत सग्राम के ३६ वर्ष बाद राजा परीक्षित का राज तिलक हुआ। उसी समय मे कलि सम्वत् आरम्भ हुआ। काशी (वाराणसी) से प्रकाशित होनेवाले पञ्चागो के मुख्य पृष्ठ पर 'गत कलि' छपा रहता है। १९६५-६६ के पञ्चाग पर "गतकलि ५०६६" छपा है। इस कथन के अनुसार महाभारत

१—इन लोगों का वंश वृक्ष आगे इसी प्रकरण में है।

संग्राम (५०६६ + ३६ =)५१०२ वर्ष आज से पहले हुआ। अर्थात् करीब पाँच हजार वर्ष पहले कलि सम्वत् आरम्भ हुआ (५०६६—१९६५ =)३१०१ ई० पू०।

जब पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वान शोध कार्यों के द्वारा विश्व की प्राचीन एवं प्रधान घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने लगे तब यह पता चला कि महाभारत संग्राम काल आज से पाँच हजार वर्ष पहले नहीं हो सकता है। विदेशी विद्वान इस नतीजे पर पहुँचे कि यदि आज से तीन हजार वर्ष पहले महाभारत संग्राम काल मान लिया जाये तो विश्व की प्राचीन और प्रधान घटनाओं में महाभारत संग्राम काल से समन्वय स्थापित हो जायेगा। इसी उद्देश्य को लेकर पार्जिटर ने छान-बीन की और यह निश्चित किया कि ममोह से ९५० वर्ष पहले महाभारत संग्राम काल है। बाल गंगाधर तिलक ने अपने 'ओरायन' में बहिद्रथ राजवंश की ३२ पीढ़ियाँ मानकर १४०० ई० पू० पार्जिटर से पहले ही निश्चित किया था। उनके बाद काशी प्रसाद जायसवाल ने बिहार बंगाल राज्य की शोध पत्रिका[1] में बहिद्रथ वंश की ३२ पीढ़ियाँ मानकर १८१४ ई० पू० महाभारत संग्राम काल निश्चित किया। पार्जिटर ने सर्व प्रथम बहिद्रथ वंश की २२ पीढ़ियाँ प्रमाणित की है। इन सभी शोध कर्त्ताओं के अन्त में डा० सीतानाथ प्रधान ने महाभारत संग्राम काल पर 'क्रोनोलाजी आफ एन्शियन्ट इंडिया' नामक ग्रन्थ लिखा और उसमें ११५० ई० पू० महाभारत संग्राम काल निश्चित किया।

११५० ई० पू० कैसे होता है सो आगे देखिये। उसके स्पष्टीकरण के लिये महाभारत संग्राम के बाद के भिन्न-भिन्न राज वंशों पर विचार करना होगा।

१—बिहार, बंगाल और उड़िस्सा की शोध पत्रिका I पी पी० ६७ एफ, III पी पी० २४६ एफ, IV पी पी० २६, ३५।

महाभारत संग्राम के बाद की राजवंश-सूची—१

(चन्द्र वंश = ऐलावंश = पौरववंश)

(अर्जुन पाण्डव के उत्तराधिकारी—वायुपुराण ९९, २४९, २७७। मत्स्य पु० ५०, ७६, ८७।)
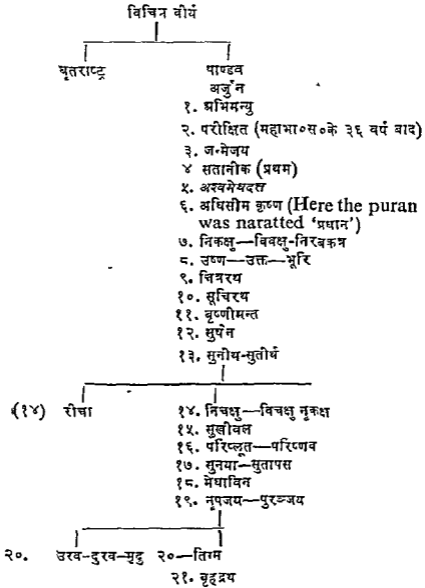
२२. वसुदामन-सहस्रानिक
२३. शतानीक (द्वितीय)

बुद्ध का ... ... २४ उदयन — ऐतिहासिक घटनाओं के द्वारा यह प्रमाणित होता है कि उदयन का राज्याभिषेक ५०० ई० पू० हुआ था।

समकालीन

२५. वहीनर-नरवाहन-बोधी
२६. दण्डपाणि (खण्डपाणि)
२७. निरमित्र
२८. क्षेमक

परीक्षित के राज्याभिषेक से उदयन के राज्याभिषेक तक २२ पीढ़ियां होती है। बाईस पीढियों का भोगकाल (२२ × २८ =) ६१६ वर्ष हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि उदयन के राज्याभिषेक से ६१६ वर्ष पहले परीक्षित का राज्याभिषेक हुआ। परीक्षित का राज्याभिषेक महाभा० सं० के ३६ वर्ष बाद हुआ था इसलिए ६१६ में ३६ को जोड देना चाहिये। ६१६ + ३६ = ६५२। इसका मतलब यह हुआ कि उदयन के राज्याभिषेक से ६५२ वर्ष पहले महाभारत संग्राम हुआ।

चूंकि उदयन का राज्याभिषेक ५०० ई० पू० हुआ था, इसलिये (६५२ + ५०० =) ११५२ वर्ष ई० पू० महाभारत संग्राम हुआ।

उत्तरकोशल राजवंश (श्रावस्ती) की सूची—२

(सूर्य राजवंश)

१. बृहद्बल (महाभा० सं० में मारा गया —भाग० ९।१२।८ तथा महाभारत)
२. बृहत्क्षण—बृहद्रण—बृहतक्षय
३. उरुक्षय—तातक्षय—गुरुक्षेप
४. वत्सव्यूह
५. प्रतिव्यूह
६. दिवाकर (Here the Puran was naratted 'प्रधान')
७. सहदेव
८. बृहदश्व
९. भानुरथ

१०. प्रतीताश्व
११. सुप्रतीक
१२. मरुदेव
१३. सुनक्षत्र
१४. किन्नरा-पुष्कर
१५. अन्तरिक्ष
१६. सुषेन-सुवर्ण-सुपर्ण-सुतपस
१७. अमित्र जित—सुमित्र
१८. बृहद्राजा—भरद्वाज
१९. धर्मिन—बर्हिष
२०. कृतञ्जय

२१. वरात

२१. रणजय[1]
२२. सञ्जय
२३. महाकोशल
२४. प्रसेनजित[2] (बुद्ध का समकालीन)
२५. विद्युदभ—क्षुद्रक
२६. क्षुलिक
२७. सुरथ
२८. सुमित्र

१—विष्णु, मत्स्य, ब्रह्माण्ड तथा भागवत पुराण में रणजय (२१) को कृतजय (२०) का उत्तराधिकारी और पुत्र कहा गया है। जहाँ पर वायु पुराण से यह मालूम होता है कि वरात रणञ्जय का बड़ा भाई था जो निःसन्तान मर गया। इसलिए रणञ्जय उत्तराधिकारी राजा हुआ।

२—डा० प्रधान ने सप्रमाण यह निश्चित किया है कि ५३३ ई० पू० प्रसेनजित का राज्याभिषेक हुआ।

सूर्यवंशी राजा राम ने अपने अग्रज पुत्र लव को उत्तरकोशल की राजधानी श्रावस्ती में राजपद दिया था। उसी लव के राजवंश में महाभारत संग्राम के समय तक्षक तथा बृहद्बल हुआ जो द्वापर युग के वंशवृक्ष में पाठक देख चुके हैं। तक्षक का पुत्र बृहद्बल हुआ जो महाभारत संग्राम में अभिमन्यु के द्वारा मारा गया था (भाग० ९।१२।८ तथा महाभारत)।

बृहद्बल की २४वीं पीढ़ी में जो राजा हुआ, उसका नाम प्रसेनजित था। राजा प्रसेनजित और भगवान बुद्ध का जन्म एक ही तिथि में हुआ था—ऐसा कहा जाता है।

विद्वानों ने शोध कार्यों के द्वारा ऐसा प्रमाणित किया है कि प्रसेनजित का राज्याभिषेक ५३३ ई० पू० हुआ था।[1]

बृहत्क्षय-बृहत्क्षण-बृहदरण (२) अपने पिता बृहद्बल (१) के महाभारत संग्राम में काम आने के बाद उत्तराधिकारी हुआ। बृहद्बल चूंकि शासक होने के बाद अल्पकाल में ही मारा गया इसलिये पिता-पुत्र दोनों को मिलाकर एक ही पीढ़ी अर्थात् २८ वर्ष राज्यकाल मानना उचित है।[2] वरात (२१) की मृत्यु अल्पकाल के बाद ही हो गई और उसके बाद रणनजय जो उत्तराधिकारी हुआ—वह भी अधिक दिनों तक राज्य नहीं कर सका; इसलिये इन दोनों को मिला कर एक पीढ़ी २८ वर्ष समझना चाहिये। इस प्रकार प्रसेनजित के पहले २२ पीढ़ियां हो जाती हैं, जिनका भोगकाल (२२×२८=)६१६ वर्ष हुआ। चूंकि प्रसेनजित से पहले ६१६ वर्ष और उसके बाद मसीह तक ५३३ वर्ष होता है इसलिये (६१६+५३३=), ११४९ वर्ष ईसापूर्व महाभारत संग्राम काल हुआ।

---

१. प्रसेनजित का राज्याभिषेक ५३३ ई० पू० किस प्रकार प्रमाणित होता है—इसका विश्लेषण स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

२. डा० प्रधान की भी यही सम्मति है।

मगध-सोमाधि, राजवंश-सूची—३

(महाभारत के बाद)

(ऐतिहासिक विधि—पीढियो के अनुसार)

१. सोमाधि-सोमापि-मारजारि
२. स्रुतस्रवा-स्रुत सरवस
३. अयुतायुस-अप्रतीक
४. निरमित्र
५. सुक्षत्र-सुकृत
६. वृहदकर्मन
७. सेनजित
८. स्रुतसजय
९. महाबाहु-विभु-विप्र
१०. शुची
११. क्षेमा
१२. भुव्रत-अनुव्रत-सुव्रत
१३. धर्मनेत्र-सुनेत्र-धर्मपुत्र
१४. निवृत्ति-नृपति
१५. सुव्रत-सुश्रम-तृनेत्र
१६. दृढसेन-द्युमतसेन
१७. महिनेत्र-सुमति
१८. सुबल-अचल
१९. सुनेत्र
२०. मत्यजित
२१. विश्वजित
२२. रिपुञ्जय (राज्याभिषेक ५६३ ई०पू०) (बुद्ध का स० का०)

वायु तथा भागवत पुराण के अनुसार रिपुंजय वृद्धावस्था मे अपने मंत्री पुनिक द्वारा मारा गया।

सोमाधि के राजतिलक से रिपुंजय के राज विलक के पहले तक २१ पीढियां होती हैं। २१ पीढियो का भोगकाल (२१ × २८ =) ५८८ वर्ष होता है। चूंकि ५६३ ई० पू० रिपुञ्जय का राजतिलक हुआ था—इसलिये (५८८ + ५६३ =) ११५१ वर्ष हुआ। इस आधार के अनुसार ११५१ ई०पू० महाभारत संग्राम का काल निश्चित होता है।

सूर्यवंशी राजा राम ने अपने यमज पुत्र लव को उत्तरकोशल की राजधानी श्रावस्ती में राजपद दिया था। उसी लव के राजवंश में महाभारत संग्राम के समय तक्षक तथा बृहद्वल हुआ जो द्वापर युग के वंशवृक्ष में पाठक देख चुके हैं। तक्षक का पुत्र बृहद्वल हुआ जो महाभारत संग्राम में अभिमन्यु के द्वारा मारा गया था (भाग० ९।१२।८ तथा महाभारत)।

बृहद्वल की २४वीं पीढ़ी में जो राजा हुआ, उसका नाम प्रसेनजित था। राजा प्रसेनजित और भगवान बुद्ध का जन्म एक ही तिथि में हुआ था—ऐसा कहा जाता है।

विद्वानों ने शोध कार्यों के द्वारा ऐसा प्रमाणित किया है कि प्रसेनजित का राज्याभिषेक ५३३ ई० पू० हुआ था।[1]

बृहत्क्षय-बृहत्क्षण-बृहद्रण (२) अपने पिता बृहद्वल (१) के महाभारत संग्राम में काम आने के बाद उत्तराधिकारी हुआ। बृहद्वल चूँकि शासक होने के बाद अल्पकाल में ही मारा गया इसलिये पिता-पुत्र दोनों को मिलाकर एक ही पीढ़ी अर्थात् २८ वर्ष राज्यकाल मानना उचित है।[2] वरात (२१) की मृत्यु अल्पकाल के बाद ही हो गई और उसके बाद रणनजय जो उत्तराधिकारी हुआ—वह भी अधिक दिनों तक राज्य नहीं कर सका; इसलिये इन दोनों को मिला कर एक पीढ़ी २८ वर्ष समझना चाहिये। इस प्रकार प्रसेनजित के पहले २२ पीढ़ियां हो जाती हैं; जिनका भोगकाल (२२×२८=)६१६ वर्ष हुआ। चूँकि प्रसेनजित से पहले ६१६ वर्ष और उसके बाद मसीह तक ५३३ वर्ष होता है इसलिये (६१६+५३३=), ११४९ वर्ष ईसापूर्व महाभारत संग्राम काल हुआ।

---

१. प्रसेनजित का राज्याभिषेक ५३३ ई० पू० किस प्रकार प्रमाणित होता है—इसका विश्लेषण स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

२. डा० प्रधान की भी यही सम्मति है।

मगध-सोमाधि, राजवंश-सूची—३

(महाभारत के बाद)

(ऐतिहासिक विधि—पीढियो के अनुसार)

१. सोमाधि-सोमापि-मारजारि
२. स्रुतस्रवा-स्रुत सरवस
३. अयुतायुस-अप्रतीक
४. निरमित्र
५. सुक्षत्र-सुकृत
६. वृहदकर्मन
७. सेनजित
८. स्रुतसजय
९. महाबाहु-विभु-विप्र
१०. सुची
११. क्षेमा
१२. भुव्रत-अनुव्रत-सुव्रत
१३. धर्मनेत्र-सुनेत्र-धर्मपुत्र
१४. निवृति-नृपति
१५. सुव्रत-सुश्रम-तृनेत्र
१६. दृढसेन-द्युमतसेन
१७. महिनेत्र-सुमति
१८. सुचल-अचल
१९. सुनत्र
२०. सत्यजित
२१. विश्वजित
२२. रिपुञ्जय (राज्याभिषेक ५६३ ई०पू०) (बुद्ध का स० का०)

वायु तथा भागवत पुराण के अनुसार रिपुंजय वृद्धावस्था मे अपने मन्त्री पुनिक द्वारा मारा गया।

सोमाधि के राजतिलक से रिपुंजय के राज तिलक के पहले तक २१ पीढिया होती है। २१ पीढियो का भोगकाल (२१ × २८ =) ५८८ वर्ष होता है। चूंकि ५६३ ई० पू० रिपुञ्जय का राजतिलक हुआ था—इसलिये (५८८ + ५६३ =) ११५१ वर्ष हुआ। इस आधार के अनुसार ११५१ ई०पू० महाभारत सग्राम का काल निश्चित होता है।

१६. दृढसेना .. ... ८ वर्ष (वायु २८)
१७ सुमति—महिनेत्र ... ३३ ,, (वायु ३३, मत्स्य ३३, ब्रह्मा० ३३)
१८. सुचल—अचल ... ३२ ,, (वायु ३२, मत्स्य ३२)
१९. सुनेत्र .. ... ४० ,, (वायु ४०, मत्स्य ६०, ब्रह्मा० ४०)
२०. सत्यजित ... ... ३० ,, (वायु ३०)
२१. विश्वजित .. ... २५ ,, (वायु २४, मत्स्य २५, ब्रह्मा० २५)
२२. रिपुञ्जय (राजतिलक ५० ,, (वायु ५०, मत्स्य ५०, ब्रह्मा० ५०)
५६३ ई.पू. मृत्यु ५१३ ई.पू.

कुल योग ••• ••• ९३८ वर्ष = २२ बार्हद्रथ राजवंश का भोगकाल।

विशेष—रिपुंजय ५० वर्ष राज्य करने के बाद वृद्धावस्था में अपने मंत्री पुनिक (शुनक) द्वारा मारा गया।[१]

रिपुंजय का राज्याभिषेक ५६३ ई० पू० और मृत्यु ५१३ ई० पू० हुआ था।[२]

यहाँ पर बार्हद्रथ राजवंश की २२ पीढ़ियाँ तो पाठकों ने देखीं परन्तु कुछ गवेषक ३२ पीढ़ियाँ[३] लिखा करते हैं। इसका कारण यह है कि किसी पुराण में १६, किसी में २७ और किसी में ३२ पीढ़ियाँ कही गई हैं। परन्तु ऊहा-पोह करने पर २२ ही प्रमाणित होती हैं। पार्जिटर तथा प्रधान ने २२ ही का समर्थन किया है। ३२ पीढ़ी मानने पर बहुत ऊपर, ऊपरी घर तक बार्हद्रथ चला जाता है। गवेषक स्वर्गीय काशी प्रसाद जायसवाल[४] ने भी बार्हद्रथ की ३२ पीढ़ियाँ ही मानी थीं, इसलिए मसीह से १८१८ वर्ष पूर्व महाभारत संग्रामकाल निश्चित किया। बालगंगाधर[५] तिलक ने भी ३२ बार्हद्रथ वंश को माना, इसलिए १४०० ई० पू० महाभारत संग्राम का समय कहा।

सूची संख्या ४ के अनुसार महाभारत संग्राम काल का समय इस प्रकार निश्चित होता है—रिपुंजय का राज्याभिषेक ५६३ ई० पू० हुआ। अपने मंत्री पुनिक द्वारा मारा गया ५१३ ई० पू०। सोमाधि से रिपुंजय के राज्याभिषेक तक कुल २१ पीढ़ियाँ होती हैं। २१ पीढ़ियों का भोगकाल (२१ × २८ =) ५८८ वर्ष होता है। चूँकि ५६३ ई० पू० रिपुंजय का राज्याभिषेक हुआ था—इसलिए (५८८ + ५६३ =) ११५१ ई० पू० महाभारत संग्राम काल निश्चित हुआ।

१—वायु, मत्स्य तथा भागवत। २—"प्रधान" ने ऐतिहासिक आधार पर ऐसा प्रमाणित किया है। ३—डा० देव सहाय त्रिवेद ने पटना के दैनिक पत्र 'प्रदीप' (दिनांक २५ मई १९६४) में 'भगवान बुद्ध की जन्म तिथि और उनका काल' शीर्षक देकर एक अनुसन्धानात्मक निबन्ध प्रकाशित कराया था, उसमें '३२' बार्हद्रथ लिखा था। ४—बिहार बंगाल राज्य की शोध पत्रिका पुरानी। ५—ओरायन।

जरासंध, राजवंश-सूची—४

(मगध चन्द्रवश पुराणो के अनुसार राज्यकाल)

राजा वहिद्रथ के वश म जरासध थ।[1] उन्ही के राजवश को बहिद्रथ या बारहद्रथ राजवश कहते है।[2] मगध राज्य के राजा जरासध के पुत्र सहदेव महाभारत सग्राम काल तक थे। सहदव के पुत्र सामाधि उत्तराधिकारी हुय। पुराणो म इनके कइ नाम मिलते है जैसे सामाधि सोमापि और मारजारि इत्यादि। इस राजवश म अन्तिम राजा रिपुञ्जय हुआ। रिपुञ्जय के समकालीन राजा प्रसनजित, उदयन, बिम्बिसार (विधिसार भंद्रसार) तथा भगवान गौतम बुद्ध थे। उनम म थोडाई लडाइ जरूर थी। जरासध का वशवृक्ष सोमाधि से रिपुञ्जय तक निम्नप्रकार बनता है —

महाभारत संग्राम के बाद मगध राजवंश-सूची—४

(जरासध सहदेव के बाद सामाधि स रिपुञ्जय तक)

जरासध (राज्य काल, पुराणो के अनुसार)

|

सहदेव

१ सामाधि सोमापि मारजारि-५० वप (वायु ५० मत्स्य ५०)
२ स्रुत सवस्व ... ६ (वायु, मत्स्य, ब्रह्माण्ड)
३ अयुतायुस ... २६ , (वायु २६, मत्स्य २६, ब्रह्माण्ड २६)
४ निरमित्र . ४० , (वायु ५०, मत्स्य ४०)
५ सुक्षत्र ५० , (वायु ५०)
६ बृहत्कमन .. ... २३ , (वायु २३, मत्स्य ५० ब्रह्माण्ड २३)
७ सनजित . .. २३ , (वायु २३, मत्स्य ५०, ब्रह्माण्ड २३)
८ श्रुतजय ३५ ,, (वायु ३५, मत्स्य ३५)
९ विभु विप्र २८ ,, (वायु २८, मत्स्य २८)
१० सुचि ६ वप (वायु ५८)
११ क्षमा ... २८ , (वायु २८, मत्स्य २८ ब्रह्मा० २८)
१२ सुव्रत—भुव्रत .. २४ (वायु ६४ २४)
१३ धमपुत्र—धमनेत्र ५ , (वायु ५०, ब्रह्मा० ५०)
१४ निवृति—नृपति ५८ , (वायु ५०,मत्स्य ५८, ब्रह्मा० ५०)
१५ त्रिनेत्र—सुश्रम २८ (वायु ३८, मत्स्य ३८ ब्रह्मा० २८)

---

१ श्रीमद्भागवत ९।२२।७। २ पुराण ३ भागवत तथा अन्य पुराण।

रिपुञ्जय के बाद का वंशवृक्ष (कलि में)

महाभारत सग्रामके बाद बहिद्रथ-जरासध का वशवृक्ष, मगध मे सोमाधि से रिपुञ्जय तक चला। उसके बाद भिन्न भिन्न राजवश के राजे होते गये। पुराणो के अनुसार उनके भोगकाल, सख्या और नाम इस प्रकार हैं—

I. बारहद्रथ (बहिद्रथ) राजवश—२२ पीढी ६३८ वर्ष

II चन्दप्रद्योत राजवश

१. चन्द्रप्रद्योत २ पालक ३ विशाखयूप ४. रजक ५. नन्दिवर्द्धन	१३८ वर्ष राज्यकाल भागवत १२।१।२-४। (विशाखयूप को नही होना चाहिये) (यह राजवश मगध से उज्जैन-अवन्ति मे चला गया)

III.

१. शिशुनाग (राजवश) २. काकवर्ण ३. क्षेमधर्मा ४. क्षेत्रज्ञ ५. विधिसार (बिम्बिसार) ६. अजात शत्रु ७. दर्भक ८. अजक ९. नन्दिवर्द्धन १०. महानन्दि	३६० वर्ष राज्यकाल भागवत—१२।१।७-९। (नामो का क्रम शुद्ध नही है) महानन्द की शुद्रा पत्नी से नन्द का जन्म हुआ।

IV

१. नन्द वश या महापद्म राजवश २ ८ पुत्र सुमाल्य इत्यादि।	१०० वर्ष राज्यकाल भाग० १२।१।११

V मौर्य राजवश (चाणक्य द्वारा स्थापित)

१. चन्द्रगुप्त मौर्य (विद्वानो ने ३२५ ई० पू० इसका समय निश्चत किया है।)

२, वारिसार ३ अशोक वर्द्धन ४ सुयश ५. सगत	१३७ वर्ष भोगकाल (पीढी-९) (भाग० १२।१।१५)

प्रद्योत वंश का विवरण

वहिद्रथ राजवंश का अन्तिम राजा रिपुंजय जो उज्जैन की राजधानी अवन्ति में रहा करता था वह वृद्धावस्था में अपने मन्त्री पुनिक (शुनक) द्वारा मारा गया।[१] पुनिक का पुत्र प्रद्योत अवन्ति का राजा हुआ।[२] प्रद्योत ने २३ वर्षतक राज्य किया।[३] प्रद्योत के दो पुत्र थे। बड़ा गोपाल और छोटा पालक।[४] गोपाल ने अपने छोटे भाई पालक की स्वेच्छा से राज्य भार सौंप दिया।[५] स्वयं अपनी बहन वासवदत्ता के साथ कौसाम्बी में जाकर रहने लगा।[६] कौसाम्बी के राजा उदयन का विवाह वासवदत्ता के साथ हुआ था। इसलिये राजा उदयन, गोपाल और पालक दोनों का बहनोई था। उदयन के मरन के बाद गोपाल असितगिरि में जाकर किसी विश्वासी काश्यप के आश्रम में रहने लगा।[७] इधर पालक ने उज्जैन में २४ वर्षतक राज्य किया।[८] पालक के दो पुत्र थे—विशाखयूप और अवन्तिवर्द्धन जिसको नन्दिवर्द्धन भी कहा जाता है। गोपाल का एक पुत्र अजक या आर्यक था। पालक ने अपने बड़े भाई के पुत्र अजक (आर्यक) को बन्दिगृह में बन्द कर दिया।[९] अजक के शुभ चिन्तकों के उद्योग से पालक को राजगद्दी से हटना पड़ा और अजक अवन्ति का शासक बन गया।[१०] अजक २१ वर्षतक राज्य कर सका।[११] वायुपुराण के अनुसार नन्दिवर्द्धन (=अवन्तिवर्द्धन) अजक को हटा कर स्वयं राजगद्दी पर बैठ गया। अजकने ३१ वर्ष और अवन्तिवर्द्धन ने २० वर्ष तक राज्य किया।[१२] वायु और मत्स्य दोनों पुराणों के अनुसार अजक और अवन्तिवर्द्धन दोनों ने मिलकर—५१ वर्ष तक राज्य किया। पुराणों में लिखा है कि अवन्तिवर्द्धन (=नन्दिवर्द्धन) अजक का पुत्र था।[१३] यह बात कथासरित सागर[१४] में गलत हो जाती है।

मत्स्य, वायु, ब्रह्माण्ड तथा भागवत आदि पुराणों में चन्द्रप्रद्योत राजवंश के विषय में कुछ भूल-भुलैयाँ सी बातें हैं। उनका स्पष्टीकरण मृच्छकटिक, कथा सरित सागर और हर्षचरित के द्वारा होता है। पुराणों में प्रद्योतवंश की ५ पीढ़ियाँ और उनका भोगकाल १३८ वर्ष बतलाया गया है। विशाखयूप (३) का राज्यकाल

१—वायु तथा भागवत १२।१।२-४। २-मत्स्य पुराण २७२I, भाग० १२।१। ३-वायु ६६, ३११; मत्स्य २७२,३।४—वायु, मत्स्य, भागवत। ५—कथा सरित सागर १११।६२,६३ ६—कथा स० सा० १११।६०,।६१। ७—कथा स०सा० १११।६३।८—वायु ६६।३१२।९-मृच्छकटिक १०।५१; IV २४। १०, मृच्छकटिक १०।४६। ११-मत्स्य २७२,४। १२-वायु ६६, ३१३। १३-वायु ६६, ३१३; मत्स्य २७२, ४, ५; ब्रह्माण्ड १११,७४; १३५। १४-कथा स० सा० ११०। ६२, ६३,६४ इत्यादि।

५० वर्ष कहा गया है। किन्तु, यथार्थ बात यह है कि प्रद्योतवंश की अवन्तिमे ४ पीढियाँ रहीं। विशाखयूप दूसरे जिला मे अलग अपना राज्य स्थापित कर ५० वर्ष तक राज्य करता रहा। इस प्रकार (१३८ – ५० =) ८८ वर्षों तक प्रद्योतवंश का राज्य उज्जैन–अवन्ति मे रहा और पीढियाँ चार हुईं।

स्पष्ट साराश यह है कि ५१३ ई० पू० वहिद्रथ राजा रिपुंजय अपने मन्त्री पुनिक (शुनक) द्वारा वृद्धावस्था मे मारा गया। उसके बाद पुनिक ने अपने पुत्र प्रद्योत-महासेन को राजगद्दी पर बैठा दिया। पुनिक का दूसरा पुत्र कुमारसेन नरबलि प्रथा के विरोधी होने के कारण मारा गया। हर्ष-चरित के छठें अध्याय मे इस प्रकार लिखा है—

"महाकाल महोत्सवे च महामास विक्रय वादावातुल
वेतालस्तालजङ्घो जघान जघन्यज प्रद्योतस्य
विक्रय पौनिक कुमार कुमार सेनम्।"

उस समय उज्जैन मे तालजघ महाकाल का मन्दिर था। वहाँ पर नर-बलि की प्रथा थी। कुमारसेन उसी का विरोधी था, इसलिए उसको मार दिया गया। कथा सरित-सागर मे लम्बी कहानी है जो स्थानाभाव के कारण यहाँ पर देना सभव नही है।

प्रद्योत राजवंश (उज्जैन-अवन्ति में)

रिपुञ्जय (५६३ ई० पू० राज्याभिषेक। ५१३ ई० पू० अपने मन्त्री पुनिक द्वारा मारा गया।)
|
पुनिक
|
- (१) (२३ वर्ष) प्रद्योतमहासेन
  - (स्वेच्छा गोपाल से राजा नहीं हुआ)
    - (३) अजक (आर्यक) (२१ वर्ष)
  - (२) पालक (राजा हुआ। २४ वर्ष तक उज्जैन मे राज्य किया। वायु ९९,३१२। ब्रह्माण्ड १११,७४,१२५)।
    - विशाखयूप (दूसरे जिला मे जाकर ५० वर्ष राज्य किया)
    - (४) अवन्तिवर्द्धन (नन्दिवर्द्धन) ३० वर्ष भोगकाल
- कुमारसेन (नरबलि प्रथा के विरोधी होने के कारण मारा गया।)

विशेष—श्रीमद्भागवत में लिखा है कि प्रद्योत की पांच पीढियों का भोगकाल १३८ वर्ष है (भा० १२।१) परन्तु उन वंश का भोगकाल इस प्रकार होता है (२३ + २४ + २१ + ३० =)९८ वर्ष।

(२२) रिपुञ्जय—५६३ ई० पू० से ५१३ ई० पू० तक ५० वर्ष मगध + अवन्ति

१.	प्रद्योत	५१३	,,	से ४९०	,,	तक २३ वर्ष	—अवन्ति
२.	पालक	४९०	,,	से ४६६	,,	तक २४ वर्ष	,,
३.	अजक	४६६	,,	से ४४५	,,	तक २१ वर्ष	,,
४.	अवन्तिवर्द्धन (नन्दि वर्द्धन)	४४५	,,	से ४१५	,,	तक ३० वर्ष	,,

यहां पर घटनाक्रम की जांच करने से यह प्रमाणित होता है कि रिपुञ्जय ५६३ ई० पू० से ५४७ ई० पू० तक अर्थात् १६ वर्ष मगध में राज्य करने के बाद अवन्ति में चला गया। उस समय से वहां पर ५१३ ई० पू० तक अर्थात् ३४ वर्ष राज्य किया। ५४७ ई० पू० जब रिपुञ्जय अवन्ति में जाकर रहने लगा तब उसी समय बिम्बिसार मगध का शासक हुआ। भागवत पुराण के अनुसार यह भी सम्भव है कि मगध में रिपुञ्जय के समय में अलग शिशु नागवंश का भी राज्य रहा हो।

तुलनात्मक राज्यकाल-सूची

बृहद्रथ···जरासंध के वंश में मगध में अन्तिम राजा रिपुञ्जय हुआ (वायु, मत्स्य, भागवत)। उसके मन्त्री का नाम पुनिक (शुनक) था। जिसने अपने राजा रिपुञ्जय को वृद्धावस्था में मार डाला और अपने पुत्र प्रद्योत का राजतिलक कर दिया। प्रद्योत उज्जैन की राजधानी अवन्ति का राजा हुआ (वायु, मत्स्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, मृच्छकटिक तथा कथा सरित सागर)। अब उसके समकालीन मगध के राजवंशों को देखिये—

१. प्रद्योत (५१३ ई० पू०) (वायु, ब्रह्मा० ४९० ई०पू० तक) बिम्बिसार ५४७ ई०पू० से ४९५ ई०पू० (महावंश)

| ५१३ से ४९० ई० पू० तक

गोपाल — २. पालक ४९० से ४६६ ई०पू० तक

३. अजक ४६६ई०पू० से ४४५ ई०पू० तक (मत्स्य)

४. नन्दिवर्द्धन (४४५ से ४१५ ई०पू० तक)

विशाखयूप (५० वर्ष) (४६६ ई०पू० से ४१६ ई०पू० तक—मत्स्य)

अजातशत्रु ४९५ „ ४६३ „ („)
उदयभद्र ४६३ „ ४४७ „ („)
अनुरुद्ध-मुण्ड ४४७ „ ४३९ „ („)
नाग-दास ४३९ „ ४१५ „ („)

Modifide by sthav. Car which gives 95 years to the Nandas. (प्रधान)

सुसुनाग-४१५ „ ३९७ „ („)
काकवर्ण-महानन्दी ३९७ „ ३६९ „ („)
महापद्म ३६९ „ ३४१ „ („)
सुमाल्य इत्यादि ३४१ „ ३२५ „ („)
(चन्द्रगुप्त मौर्य ३२५ ई० पू० में)

टिप्पणी—प्रद्योत ने २३ वर्ष तक राज्य किया। (वायु, ब्रह्माण्ड)

गौतम बुद्ध के बाद

भिन्न-भिन्न राजवंशों के सम सामयिक सूची

अवन्ति	मगध	मगध	उत्तर कोशल	कौशाम्बी (च० व०)
रिपुञ्जय, पुनिक	रिपुञ्जय	बिम्बिसार	महाकोशल	शतानीक (द्वितीय)
प्रद्योत	(१६ वर्ष	अजातशत्रु	प्रसेनजित	उदयन
पालक	मगध और	उदयन	विद्युदभ-क्षुद्रक	वहीनर-नरवाह-बोध
अजक	३४ वर्ष	अनुरुद्ध मुण्ड	क्षुलिक-कुलक	दण्डपाणि-खण्डपाणि
अवन्ति वर्द्धन	उज्जैन मे)			
		नागदास	सुरथ	निरमित्र-निरामि
		शिशुनाग	सुमित्र	क्षेमक
		नन्दिवर्द्धन		
		काकवर्ण-महानन्दी		
		महापद्मनन्दने		
		महानन्दी के १० पुत्रो को		
		समाप्त किया ।		

तीन आधारों के अनुसार राज्य काल
(बिम्बिसार से चन्द्रगुप्त मौर्य तक)

	पुराण	महावंश	स्थविरावलि चरित
१.	बिम्बिसार—२८ वर्ष (वायु तथा मत्स्य पुराण)	बिम्बिसार—५२ वर्ष	श्रेणिक
२.	दर्शक-२४ वर्ष (मत्स्य)		
३.	अजात शत्रु—२५ वर्ष (वायु तथा ब्रह्माण्ड)	अजातशत्रु ३२ वर्ष	कूणिक
४.	उदयन ३३ वर्ष (वायु, मत्स्य, ब्रह्माण्ड)	उदयन १६ वर्ष, अनुरुद्ध-मुण्ड ८ वर्ष, नाग-दाशक २४ वर्ष	
५.	नन्दि वर्द्धन ४० वर्ष (मत्स्य, ब्रह्माण्ड), ४२ वर्ष वायु पुराण)	शिशुनाग १८ वर्ष	नन्द और उसके उत्तराधिकारी ९५ वर्ष
६.	महानन्दि ४३ वर्ष (वायु, मत्स्य, ब्रह्माण्ड)	काल-अशोक २८ वर्ष	
७.	महापद्म २८ वर्ष (वायु) ८८ वर्ष (मत्स्य)	दस पुत्र २२ वर्ष	
८.	सुमाल्य इत्यादि १६ वर्ष (वायु), १२ वर्ष (मत्स्य)	९ नन्द २२ वर्ष	

इन लोगों के ऐतिहासिक वंशवृक्षों, नामों तथा काल निर्णय करने के लिये तीन आधार प्राप्त हैं—१—पुराण, २—बौद्ध साहित्य, ३—जैन साहित्य।

बिम्बिसार-विधिसार-भद्रसार

महावंश के अनुसार अपने पिता के द्वारा पन्द्रह वर्ष की अवस्था में बिम्बिसार राजा हुआ (महावंश ११,१८)। बिम्बिसार के १५ वर्ष राज्य करने के बाद प्रथम बार उसके पास सिद्धार्थ (भगवान गौतम बुद्ध) गये थे (महावंश—११ ४०) उसके बाद बिम्बिसार ने सैंतीस वर्ष तक और राज्य किया (महावंश ११,३०)।

महावंश के अनुसार इस हिसाब से (३७ + १५ =) ५२ वर्ष बिम्बिसार का राज्य काल होता है। परन्तु वायु पुराण (९९,३१८) और मत्स्य (२७२,७) २८ वर्ष बतलाते है। ब्रह्माण्ड पुराण मे 'अष्ट निगत' लिखा है। वायु और ब्रह्माण्ड के अनुसार बिम्बिसार का उत्तराधिकारी दर्शक हुआ जो २५ वर्ष तक राज्य करता रहा। लेकिन मत्स्य पुराण के अनुसार दर्शक का राज्य काल—२४ वर्ष है।

यहा पर यथार्थ बात उन्ही ग्रन्थो से यह मालूम होती है कि बिम्बिसार के २८ वर्ष राज्य करने के बाद दर्शक जो अजात शत्रु का भाई था, बिम्बिसार का राज्य प्रबन्ध करने लगा। इस प्रकार (२८ + २४ =) ५२ वर्ष बिम्बिसार का राज्य काल भी ठीक ही हो जाता है। इन बातो पर ध्यान देने से यह लिखना पडता है कि—पुराणो के ही अनुसार बिम्बिसार का राज्य काल २८ वर्ष और दर्शक का २४ वर्ष मानना चाहिये।

दर्शक के २४ वर्ष राज्य प्रबन्ध करने के बाद अजात शत्रु और वैशाली के लिच्छवि राजा 'चेतक' की पुत्री 'चेलना' के द्वारा बिम्बिसार राजगद्दी से हटाया गया। अजात शत्रु बिम्बिसार का पुत्र या सभवत. भाई था।

'भास' के अनुसार कौसाम्बी के राजा उदयन का विवाह मगध के राजा दर्शक की बहन—पद्मावती से हुआ था। यह बात तीसरी शताब्दी ईस्वी सन की है। जिस समय 'भास' स्वय जीवित था। यह बात कथा सरित सागर मे भी है। परन्तु यह नही लिखा है कि पद्मावती किस की कन्या थी। उदयन और अजात शत्रु दोनो समकालीन थे। यह सभव है कि उदन—अजात शत्रु से चन्द वर्ष बडा रहा हो। अजात शत्रु या दर्शक—उदयन का साला था जो बिम्बिसार का उत्तराधिकारी था।

बिम्बिसार के पुत्र

बिम्बिसार के पुत्र अभय,[१] शीलवन्त,[२] विमल कोण्डञ्ञ,[३] अजात शत्रु और सभवत: दर्शक भी चेलना के द्वारा हुये। महावंश के अनुसार बिन्दुसार के अनेक पुत्र थे। राजकुमार अभय को धूल मे पडा हुआ एक शिशु मिला था जो वेश्या

१ महावग्ग। २. थेरगाथा। ३ अम्बपाली-नगर वधु। वैशाली की नगर वधू, अम्बपाली आचार्य चतुरसेनकृत उपन्यास पढ़ने से साधारणजन को भी यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि प्रसेनजित, उदयन, बिम्बिसार, अम्बपाली, गौतम बुद्ध और राजकुमार विदुडभ आदि समकालीन हैं।

को सन्तान थी। अभय न उसबच्चे का नाम जीवक रखा। जीवक बडा होने पर तक्षशिला गया, जहाँ पर उस समय आयुर्वेद की पढाई होती थी। वहाँ से आयुर्वेद की शिक्षा समाप्त करने के बाद अपना नाम कौमार भृत्य रखा और राजगृह चला आया।

जिस समय कौमार भृत्य राजगृह मे आया, उस समय बिम्बिसार को भकन्दर (fistula) की बिमारी थी। उसको उसने अच्छा किया। इसलिए वह राज्य चिकित्सक नियुक्त हो गया। उसके बाद वैद्य भिक्षु के नाम स प्रसिद्ध हुआ।[1] जीवक के नाम परिवर्तन को महा बग्गा म 'कौमारभच्चा' कहा गया है।

बिम्बिसार न कोशल देवी से विवाह किया था। कोशल के राजा प्रसेनजित के पिता—महाकोशल की पुत्री कोशल देवी थी।

एक दिन रात मे लिच्छवियों ने बिम्बिसार की राजधानी कुशाग्रपुर को जला दिया। जिस के परिणाम स्वरूप नगर भस्म हो गया। तब बिम्बिसार ने अपनी नई राजधानी राजगृह म गिरिव्रज के उत्तर म बनाई।[2] उसके बाद शान्ति के विचार से वैशाली के लिच्छविराजा चेतक की कन्या चेलना से विवाह कर लिया। उसका नाम 'वासवी' भी था।[3]

अपन पिता बिम्बिसार के मरने पर अजातशत्रु अपनी राजधानी राजगृह से हटाकर चम्पा लेगया।[4]

जिस समय अजात शत्रु अपने पिता बिम्बिसार को भूखो मार रहा था, उसी समय अजात शत्रु की सौतेली माँ कोशला देवी भी पति-वियोग मे स्वर्ग सिधार गईं।

१—महावग्गा १, ४।

२—विनय पिटक।

३—स्थावली चरित।

४—Rock hill, Life of the Budha page 63 (प्रधान)

महाभारत संग्राम के बाद भिन्न-भिन्न

	प्रद्योतवंश (अवन्ति)	मगधराजवंश (चन्द्रवंश-शाखा)	
	१	२	३
०	यहां पर महाभा०सं०	सहदेव	
१		सोमाधि-सोमापि-मारजारी	
२		स्त्रुत सरवस	
३		अयुतायुस (अप्रतीप)	उद्दालक आरणी
४		निरमित्र	स्वेत केतु
५		सुक्षत्र-सुकृत	
६		वृहत्कर्मन	
७		सेनजित	
८		श्रुत सजय	
९		विभु-विप्र-महाबाहु	
१०		सुचि	
११		क्षेमा	
१२		सुव्रत-भूव्रत-अनुव्रत	
१३		धर्मपुत्र-धर्मनेत्र	
१४		निवृति-नृपति	
१५		त्रिनेत्र-सुश्रम	
१६		दृढसेन	
१७		सुमति-महिनेत्र	
१८		सुचल-अचल	
१९		सुनेत्र	
२०		सत्यजीत	
२१		विश्वजीत	
२२	पुनिक (शुनक)		
२३	प्रद्योत		
२४	पालक	रिपुंजय (५६३ ई०पू० राज-तिलक ५१३ ई० पू० मंत्री द्वारा मारा गया	बिम्बिसार(५४७-४९५ ई० पू० तक महावंश)
२५	आर्यक		
२६	अवन्तिवर्द्धन		

राजवंशों की तुलनात्मक-सूची

उत्तर कोशल (सूर्य राज वंश)	सिद्धार्थ-बुद्ध	चन्द्र राज वंश (हस्तिनापुर-कौशाम्बी)	
४	५	६	
तक्षक		अर्जुन	०
बृहद्बल		अभिमन्यु	१
बृहदरण		परीक्षित	२
उरुक्षय	हिरण्यनाभ	जन्मेजय	३
वत्सव्यूह	याज्ञवल्क्य	सतानीक (प्रथम)	४
प्रतिव्यूह		अश्वमेघ दत्त	५
दिवाकर		अधिसीम कृष्ण	६
सहदेव		निचक्षु-निरवक्र	७
बृहदश्व		उष्ण-उक्त-भूरि	८
भानुरथ		चित्र रथ	९
प्रतीताश्व		सुचिद्रथ	१०
सुप्रतीक		वृष्णिमन्त	११
मरुदेव		सुषेन	१२
सुनक्षत्र		सुनीथ	१३
किन्नारा		नृचक्षु	१४
अन्तरिक्ष		सुचिवल	१५
सुपर्ण-सुवर्ण		परिप्लव-परिप्लुत-परिणय	१६
अमित्रजित		सुनया-सुतपस	१७
वृहद राजा		मेधाविन	१८
धर्मिन		नृपञ्जय-पुरञ्जय	१९
कृतञ्जय		तिग्म (मृदु)	२०
रणञ्जय		वृहद्रथ	२१
सञ्जय	सिंहाहनु	वसुदामन	२२
महाकोशल	शुद्धोदन	सतानीक (द्वितीय)	२३
प्रसेनजित (रा० ति० ५३३ ई० पू०	सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) (५६७ से ४८७ ई०पू० तक)	उदयन (रा० ति० ५०० ई० पू०)	२४
क्षुद्रक	राहुल		२५
विदूडभ			२६

सिद्धार्थ-बुद्ध काल का निर्णय

युधिष्ठिर सम्वत् या कलि सम्वत् को पाश्चात्य विद्वान् प्रामाणिक नहीं मानते। भारतीय विद्यालयों के इतिहासज्ञ भी उन्हीं के अनुगामी हैं।

किसी अज्ञात प्राचीन घटना का काल जानने के लिये अबतक तीन प्रणालियों का सहारा लिया जाता है। प्रथम प्रणाली ज्योतिष और दूसरी प्राचीन घटनाओं में समन्वय स्थापितकर। तीसरी भूगर्भ में प्राप्त वस्तुओं के आधार पर। इन तीनों के अतिरिक्त चौथी प्रणाली है राजवंशों की पीढ़ियाँ निश्चित कर। कलि सम्वत् या युधिष्ठिर सम्वत् या भारतीय परम्परा के अनुसार महाभारत संग्राम काल आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व होता है। पौराणिक गणना, बौद्ध साहित्य, राजतरंगिनी, मणिमेखला तथा ज्योतिर्गणना से बुद्ध का निर्वाणकाल ई० पू० १७९३-१८७३ या कलि सम्वत् १३०८ है। इन भारतीय परम्पराओं के अनुसार भगवान बुद्ध का जन्म आज से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व हुआ।[1] बुद्ध से लगभग एक हजार वर्ष पहले महाभारत हुआ था। भारतीय परम्परा के समर्थक थिरवेंकटाचार्य भी समय-समय पर ऐस्ट्रोलौजिकल मैगजीन, बंगलोर में गवेषणात्मक निबन्ध लिखा करते हैं। परन्तु विद्यालयों के इतिहासज्ञ भारतीय परम्परावालों का कथन स्वीकार नहीं करते।

इतिहासवेत्ताओं ने बुद्ध के निर्वाण काल से समन्वय स्थापित कर चन्द्रगुप्त मौर्य का काल ३२५ ई०पू० निश्चित किया है। और बुद्ध का जन्म ५०० से ६०० ई०पू० के बीच में।

भगवान बुद्ध की जन्मतिथि और निर्वाण

भगवान बुद्ध की जन्म तिथि के विषय में आज तक मतैक्य नहीं हुआ है। परन्तु काम चलाने के लिये प्राचीन घटनाओं के आधार पर निम्न प्रकार निश्चित कर लिया गया है।

कन्तन परम्परा

गौतम बुद्ध सम्बन्धी एक ग्रन्थ की पूजा हुआ करती थी। बुद्ध-निर्माण के एक वर्ष बादसे उस ग्रन्थ पर प्रतिवर्ष एक बिन्दी दी जाने लगी। ४८९ ईस्वी में उन बिन्दियों की गिनती हुई तो ९७५ बिन्दियाँ हुई। अब यदि (९७५—४८९ =) घटा दिया जाय

१—डा० देव सहाय त्रिवेद-दैनिक पत्र-'प्रदीप' २५ मई १९६४-पटना।

तो ४८६ ई० पू० हुआ। एक वर्ष बाद से बिन्दी देना आरम्भ किया गया था इसलिये (४८६ + १ =)४८७ ई० पू० बुद्धदेव का जन्म हुआ। ८० वर्ष जीवित रहने के बाद उनका निर्वाण हुआ, इसलिये (४८७ + ८० =)५६७ ई० पू० उनका जन्म हुआ। इसके अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का काल ३२५ ई० पू० निश्चित होता है।

चन्द्रगुप्त मौर्यकाल

बुद्धि-निर्वाण के १६२ वर्ष बाद चन्द्रगुप्त मौर्य का राजतिलक हुआ।[1] बुद्ध की मृत्यु के २१८ वर्ष बाद अशोक का राजतिलक हुआ।[2] बुद्ध-निर्वाण ४८७ ई० पू० हुआ था इसलिये (४८७ – १६२ =)३२५ ई० पू० चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक हुआ। बुद्ध-निर्वाण के २१८ वर्ष बाद अशोक राजगद्दी पर बैठा इसलिये (४८७ – २१८ =)२६९ ई० पू० उसका समय हुआ। ६ वर्षों के बाद ताजपोशी हुई इसलिये २७५ ई० पू० से उसको सम्राट कहना चाहिये।

रिपुञ्जय, बिम्बिसार, प्रसेनजित तथा उदयन आदि के राज्यकाल की तिथियाँ इन्हीं आधारों पर निश्चित की गई हैं।

१—दीप वंश, महावंश। २—दीपवंश, महावंश।

रिपुञ्जय, प्रद्योत और बिम्बिसार आदि का स्पष्टीकरण

बहिद्रथ–जरासंध के वंश मे मगध का अन्तिम राजा रिपुञ्जय, उज्जैन-अवन्ति का प्रद्योत वंश और मगध सम्राट बिम्बिसार के विषय मे समझने के लिये निम्नलिखित तुलनात्मक शासक सूची दी जाती है—

मगध मे बहिद्रथ वंश का अन्तिम राजा रिपुञ्जय			मगध सम्राट बिम्बिसार से चन्द्रगुप्त मौर्य तक			
२७. रिपुञ्जय	५६३ से ५१३ ई० पू० तक	५० वर्ष	१. बिम्बिसार	५४७ से ४९५ ई० पू०	= ५२ वर्ष	महावंश
१. प्रद्योत*	५१३ ,, ४९० ,,	२३ ,,	२. अजातशत्रु	४९५ ,, ४६३ ,,	= ३२ ,,	,,
२. पालक	४९० ,, ४६५ ,,	२४ ,,	३. उदायन	४६३ ,, ४४७ ,,	= १६ ,,	,,
३. अजक	४६६ ,, ४४५ ,,	२१ ,,	४. अनुरुद्ध-मुण्ड	४४७ ,, ४३९ ,,	= ८ ,,	,,
४. अवन्ति-वर्द्धन (नन्दि-वर्द्धन)	४४५ ,, ४१५ ,,	३० ,,	५. नागदास	४३९ ,, ४१५ ,,	= २४ ,,	,,
			६. नन्दिवर्द्धन शिशुनाग	४१५ ,, ३९७ ,,	= १८ ,,	,,
			७. काकवर्ण महानन्दि	३९७ ,, ३६९ ,,	= २८ ,,	,,
*(उज्जैन-अवन्ति मे प्रद्योतवंश)			८. महापद्म	३६९ ,, ३४१ ,,	= २८ ,,	
			९. सुमाल्य इत्यादि	३४१ ,, ३२५ ,,	= १६ वर्ष	
				कुल योग	= २२२ वर्ष	

बहिद्रथ······सोमाधि राजवंश को पार्जिटर ने "Lately in Magadh" लिखा है। मगध मे इस वंश का अन्तिम २७वाँ राजा रिपुंजय हुआ था। रिपुंजय का अमात्य पुनिक (शुनक) था, जिसने राजा को मार कर अपने पुत्र प्रद्योत को उज्जैन-अवन्ति का राजा बना दिया। (अगले पृष्ठ पर देखिये)—

मगध के राजा रिपुंजय ५१३ ई०पू० मारा गया। ५४७ ई०पू० मगध का राजा बिम्बिसार बन चुका था। इसका मतलब यह हुआ कि (५४७ — ५१३ = ३४) रिपुंजय के मारे जाने के ३४ वर्ष पहले ही से बिम्बिसार मगध का राजा बन चुका था। एक ही समय मे रिपुञ्जय और बिम्बिसार (विधिसार-भद्रसार) दोनो मगध के राजा थे यह बात समझ मे नहीं आती। इसके अतिरिक्त दूसरी बात शका की यह है कि रिपु जय यदि मगध मे राज्य करता था तो उसके मन्त्री पुनिक ने उसको *मारकर अपने पुत्र प्रद्योत को उज्जैन-अवन्ति का राजा कैसे और क्यो बनाया?* प्रद्योत की राजधानी अवन्ति में थी यह पुराणों से ही प्रमाणित है।

जहाँ तक मैने देखा है, इस अवन्ति और मगध पर किसी गवेषक ने ध्यान ही नहीं दिया है।

यहाँ पर दो प्रश्न उपस्थित होते है—प्रद्योत मगध से अवन्ति क्यो और कैसे गया? दूसरा प्रश्न यह है कि बिम्बिसार रिपुञ्जय के पहले ही राजा कैसे बन गया? उस समय मगध मे क्या बहिद्रथ-जरासंध के अलावे दूसरा राजवंश भी राज्य करता था?

उस समय वैशाली के वज्जियों—लिच्छवियो के आठ कुल के राज्य थे। सूर्यवश की शक्ति श्रावस्ती के अतिरिक्त प्राय· समाप्त हो चुकी थी। हाँ, चन्द्र राजवंश वाले कौसाम्बी और मगध मे जरूर राज्य करते थे। यहाँ पर यह मालूम होता है कि मगध रिपुंजय का राज्य विस्तार उज्जैन-अवन्ति तक जरूर था। यह मानना ही पड़ेगा। यदि रिपुंजय का राज्य उज्जैन मे नहीं होता तो पुनिक अपने पुत्र को वहाँ का राजा कैसे बनाता? यहाँ पर ऐसा हो सकता है कि जिस समय वैशाली मे वज्जियो का राज्य था उस समय गंगा के दक्षिण मगध मे कई छोटे-छोटे राज्य रहे हो। जिनमे बहिद्रथ-जरासध—सहदेव—सोमाधि वाला मगध राजवश और बिम्बिसारवश दो मुख्य हो। शिशुनागवश मे ही बिम्बिसार (विधिसार-भद्रसार) हुआ। रिपुंजय का राज्यकाल ५० वर्ष है। अर्थात् ५६३ ई०पू० से ५१३ ई०पू० तक। जब रिपुंजय उज्जैन—अवन्ति की *तरफ गया तब इधर बिम्बिसार ने उसके राज्य पर भी अधिकार कर लिया।* जब बिम्बिसार के राज्याधिकार को बढते हुय देखकर रिपुंजय का अमात्य पुनिक ने देखा कि अब रिपु ज्य कमजोर पडगया इसलिये उसको मारडाला और अपने पुत्र को वहाँ का राजा बना दिया। चार पीढी तक प्रद्योत वश का राज्य वहा चला और उसी के समानान्तर मगध में बिम्बिसार का राज्य चला।

———

क्रम सं०	राजाओं के नाम	राज्य काल	कब से कब तक
१	२	३	४
२२	रिपुंजय	१६ वर्ष[1]	५६३ ई.पू. से ५४७ई.पू.(घटनाक्रम)
२३	बिम्बिसार	५२ "	५४७ ई०पू० से ४९५ ई०पू० महावंश
२४	अजातशत्रु	३२ "	४९५ " ४६३ " हिन्दी
२५	उदाभद्द	१६ "	४६३ " ४४७ " अनुवाद
२६	अनुरुद्धमुण्ड	८ "	४४७ " ४३९ " "
२७	नागदासक	२४ "	४३९ " ४१५ " "
२८	सुसुनाग	१८ "	४१५ " ३६७ " "
२९	कालाशोक	२८ "	३९७ " ३६९ " "
३०	कालाशोक के दस पुत्र	२२ "	३६९ " ३४१ " "
३१	नवनन्द	२२ "	३४१ " ३२५ " "
३२	चन्द्रगुप्त मौर्य[2]	२४ "	३२५ " ३०१
३३	बिन्दुसार	२८ "	३०१ " २७३ " "
३४	अशोक	३७ "	२७३ " २३६ " "

विशेष—११५१ ई० पू० से ३२५ ई० पू० तक के बीच में (११५१ − ३२५ =) ८२६ वर्ष का काल व्यतीत होता है। इसके अन्तर्गत ३१ राजे हुये। यहाँ पर औसत राज्यकाल (८२६ ÷ ३१ =) २६ २०/३१ अर्थात् लगभग २७ वर्ष हरेक का राज्यकाल हुआ। (घटनाक्रम से ऐसा निष्कर्ष निकलता है।)

---

१ रिपुञ्जय ने पुराणों के अनुसार ५० वर्ष राज्य किया। परन्तु लेखक के मतानुसार १६ वर्ष तक मगध में राज्य करने के पश्चात् उज्जैन की राजधानी अवन्ति में चला गया। और वहाँ ३४ वर्ष (१६ + ३४ = ५०) तक राज्य करने के बाद अपने अमात्य पुलिक द्वारा मारा गया। तब पुलिक पुत्र प्रद्योत राजवंश वहाँ आरम्भ हुआ। इसलिये प्रद्योत वंश को मगध राजवंश में नहीं लेना चाहिये। रिपुञ्जय का अभिषेक ५६३ ई० पू० हुआ। और १६ वर्ष राज्य करने के बाद (५६३ − १६ =) ५४७ ई० पू० वह अवन्ति में चला गया तब बिम्बिसार मगध का सम्राट हो गया। यहाँ पर बिम्बिसार शिशु नागवंशीय या रिपुञ्जय का ही पुत्र या सम्बन्धी रहा होगा।

२. चन्द्रगुप्त मौर्य (३२५ ई० पू०) से भारतवर्ष का इतिहास क्रमबद्ध लिखा जाता है।

राजवंश-सूची—५

(महाभा० युद्ध के बाद मगध में चन्द्रगुप्त मौर्य तक)

(पुराणों तथा महावंश के अनुसार)

वहिद्रथ...जरासंध...सहदेव के बाद सोमापि से चन्द्रगुप्त मौर्य तक।

क्रम सं०	राजाओं के नाम	राज्य काल	कब से कब तक			
१	२	३	४			
१	सोमाधि-सोमापि-मारजारि	५० वर्ष	११५१ ई०पू० से		११०१ ई० पू०	
२	श्रुत सर्वस	६ "	११०१	"	१०९५	"
३	अयुतायुस	२६ "	१०९५	"	१०६९	"
४	निरमित्र	४० "	१०६९	"	१०२९	"
५	सुक्षत्र	५० "	१०२९	"	९७९	"
६	वृहत्कर्मन	२३ "	९७९	"	९५६	"
७	सेनजित	२३ "	९५६	"	९३३	"
८	स्तृतजय	३५ "	९३३	"	८९८	"
९	विभु-विप्र	२८ "	८९८	"	८७०	"
१०	सुचि	६ "	८७०	"	८६४	"
११	क्षेमा	२८ "	८६४	"	८३६	"
१२	सुव्रत-भुव्रत	२४ "	८३६	"	८१२	"
१३	धर्मपुत्र-धर्मनेत्र	५ "	८१२	"	८०७	"
१४	निवृति-नृपति	५८ "	८०७	"	७४९	"
१५	त्रिनेत्र-सुश्रम	२८ "	७४९	"	७२१	"
१६	दृढसेन	८ "	७२१	"	७१३	"
१७	सुमति-महिनेत्र	३३ "	७१३	"	६८०	"
१८	सुचल-अचल	२२ "	६८०	"	६५८	"
१९	सुनेत्र	४० "	६५८	"	६१८	"
२०	सत्यजित	३० "	६१८	"	५८८	"
२१	विश्वजित	२५ "	५८८	"	५६३	"

क्रम सं०	राजाओं के नाम	राज्य काल	कब से कब तक
१	२	३	४
२२	रिपुंजय	१६ वर्ष[1]	५६३ ई.पू. से ५४७ई.पू.(घटनाक्रम)
२३	बिम्बिसार	५२ "	५४७ ई०पू० से ४९५ ई०पू० महावंश
२४	अजातशत्रु	३२ "	४९५ " ४६३ " हिन्दी
२५	उदाभद्द	१६ "	४६३ " ४४७ " अनुवाद
२६	अनुरुद्धमुण्ड	८ "	४४७ " ४३९ " "
२७	नागदासक	२४ "	४३९ " ४१५ " "
२८	सुसुनाग	१८ "	४१५ " ३९७ " "
२९	कालाशोक	२८ "	३९७ " ३६९ " "
३०	कालाशोक के दस पुत्र	२२ "	३६९ " ३४१ " "
३१	नवनन्द	२२ "	३४१ " ३२५ " "
३२	चन्द्रगुप्त मौर्य[2]	२४ "	३२५ " ३०१
३३	बिन्दुसार	२८ "	३०१ " २७३ " "
३४	अशोक	३७ "	२७३ " २३६ " "

विशेष—११५१ ई० पू० से ३२५ ई० पू० तक के बीच में (११५१ – ३२५ =) ८२६ वर्ष का काल व्यतीत होता है। इसके अन्तर्गत ३१ राजे हुये। यहाँ पर औसत राज्यकाल (८२६ ÷ ३१ =) २६$\frac{२०}{३१}$ अर्थात् लगभग २७ वर्ष हरेक का राज्य-काल हुआ। (घटनाक्रम से ऐसा निष्कर्ष निकलता है।)

१. रिपुञ्जय ने पुराणों के अनुसार ५० वर्ष राज्य किया। परन्तु लेखक के मतानुसार १६ वर्ष तक मगध में राज्य करने के पश्चात् उज्जैन की राजधानी अवन्ति में चला गया और वहाँ ३४ वर्ष (१६ + ३४ = ५०) तक राज्य करने के बाद अपने अमात्य पुनिक द्वारा मारा गया। तब पुनिक-पुत्र प्रद्योत राजवंश वहाँ आरम्भ हुआ। इसलिये प्रद्योत वंश को मगध राजवंश में नहीं लेना चाहिये। रिपुञ्जय का अभिषेक ५६३ ई० पू० हुआ। और १६ वर्ष राज्य करने के बाद (५६३ – १६ =) ५४७ ई० पू० वह अवन्ति में चला गया तब बिम्बिसार मगध का सम्राट हो गया। यहाँ पर बिम्बिसार शिशु नागवंशीय या रिपुञ्जय का ही पुत्र या सम्बन्धी रहा होगा।

२. चन्द्रगुप्त मौर्य (३२५ ई० पू०) से भारत वर्ष का इतिहास क्रमबद्ध लिखा जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड—ग्यारहवाँ

महाभारत संग्राम-काल का निर्णय

(पीढ़ियों के आधार पर)

इसके पहले पाठकों ने महाभारत संग्राम के बाद के भिन्न-भिन्न राजवंशों की सूचियाँ देखी है। उन्ही के अनुसार महाभारत संग्राम का काल निम्न प्रकार निश्चित होता है—

१—राजवंश सूची १—अर्जुन के बाद उदयन तक चन्द्रराजवंश = पौरववंश = ऐला राजवंश के अनुसार ११५२ ई० पू०

२—राजवंश सूची २—कोशल राजवंश श्रावस्ती—वृहद्बल से प्रसेनजित तक के अनुसार ११४९ ई० पू०

३—वंश-सूची ३—मगध सोमाधि से रिपुञ्जय तक पीढ़ियों के अनुसार ११५१ ई० पू०

४—राजवंश सूची ४—मगध सोमाधि से रिपुंजय तक पौराणिक आधार के अनुसार ११५२ ई० पू०

५—राजवंश सूची ५ के अनुसार मगध सोमाधि से चन्द्रगुप्त मौर्य के पहले तक—११५१ ई० पू०

६—ज्योतिष के आधार पर (प्रधान) ११५२ ई० पू०

७—"The probable date of the battle from the Chaldean Saros[१] 1151 B. C. (Babylonian aycle of 3600 years)

१—Chronology of Ancient India. Page 269.
सरोस = बेबीलोन का ३६०० वर्ष का युग।

(क) एफ० ई० पार्जिटर[1] ९५० ई० पू०

(ख) काशी प्रसाद जायसवाल[2] १४१४ ई० पू०

(ग) बालगंगाधर तिलक[3] १४०० ई० पू०

(घ) अन्यान्य विद्वान करीब १४०० ई० पू०

(ङ) पौराणिक परम्परावादी विद्वान
जैसे डा० देवसहाय त्रिवेद, थिरुवेंकटा चार्य आदि—
आज से करीब पाच हजार वर्ष पहले ५०००
(५०००—१९६५=) ३०३५ ई० पू०

लेखक का विचार

मेरे विचार मे १०९३ विक्रमपूर्व अर्थात् (१०९३ + ५७=) ११५० ई० पू० महाभारत संग्राम-काल मानना उचित है।

डा० सीतानाथ प्रधान ने भी ऐसा ही प्रमाणित किया है।

१—Ancient Indian Historical Tradition.

२—बिहार-उडीस्सा राज्य की शोध पत्रिका पुराणी।

३—The Oryan.

महाभारत युद्ध के बाद सम्राट अशोक तक का काल-निर्णय

कलि-राजवंश सूची—६

पीढ़ी	शासक का नाम	भोगकाल	पुराणों के अनु
	बृहद्रथ—जरासंध के मगध राजवंश में पुराणों के अनुसार सोमाधि से रिपुञ्जय तक २२ पीढ़ियों का भोग-काल ६३८ वर्ष होता है। चूंकि घटनाक्रम के अनुसार रिपुञ्जय ने ३४ वर्ष तक उज्जैन में शासन किया इसलिये (६३८ − ३४=)६०४ वर्ष मगध में रिपुञ्जय तक का कालहुआ।		
२२.	सोमाधि से रिपुञ्जय तक	६०४ वर्ष	पुराणों के अ
२३.	बिम्बिसार	५२ "	महावंश
२४.	अजातशत्रु	३२ "	हिन्दी संस्करण,
२५.	उदयभद्र	१६ "	हिन्दी साहित्य
२६.	अनुरुद्ध मुण्ड	८ "	सम्मेलन, प्रयाग
२७.	नागदाशक	२४ "	"
२८.	सुसुनाग	१८ "	"
२९.	कालाशोक	२८ "	"
३०.	कालाशोक के दस पुत्र	२२ "	"
३१.	नवनन्द	२२ "	"
३२.	चन्द्रगुप्त मौर्य	२४ "	"
३३.	बिन्दुसार	२८ "	"
३४.	अशोक	३७ "	"

महाभारत युद्ध के बाद अशोक तक कुल भोगकाल ९१५ वर्ष होता है।

इस सूची के अनुसार यह प्रमाणित हुआ कि सम्राट अशोक से ९१५ वर्ष पहले महाभारत युद्ध हुआ। यहाँ पर यदि रिपुञ्जय वाला काल ३४ वर्ष भी जोड़ दिया तो भी (९१५+३४=)९४९ वर्ष होता है। औसत भोगकाल (९१५÷३४=) २६$\frac{३}{३४}$ मानो लगभग २७ वर्ष होता है।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड—बारहवाँ

• आर्य नृपतियों का वर्गीकरण

अधिराज—राजाओं से बड़े ("वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन" ऋग्वेद x, १२८।९); अथर्ववेद vi, ९ और ix १०, २४; तैत्तिरीय संहिता II, ४, १४, २; मैत्रायणी संहिता iv. १२, १३ कत्थ संहिता viii, १७; तैत्तिरीय ब्राह्मण III, १, २, ९।

अधिराजन—शतपथ ब्राह्मण v, ४, २, २; निरुक्त viii, २।

राजाधिराज—राजाओं का राजा। तैत्तिरीय-आरण्यक I, ३१, ६।

सम्राज—राजा से अधिक शक्तिशाली। ऋग्वेद III, ५५, ७; ५६, ५; iv, २१, १; vi, २७, ८; viii, १९, ३२ तथा वाजसनेयी संहिता v, ३२, xii, ३५, xx ५ इत्यादि।

वैभव और शक्ति के अनुसार

१—सामन्त, २—माण्डलिक, ३—राजा, ४—महाराजा, ५—सम्राट्, ६—विराट्, ७—सार्वभौम। चक्रवर्ती तथा "आसमुद्र क्षितीश" आदि।

विशेष—हिन्दुओं के राज्याभिषेक पर शोधपूर्ण एक निबन्ध स्वर्गीय श्री काशीप्रसाद जायसवाल का जनवरी १९१२ के मौडर्न रिव्यू (Modern Review) में प्रकाशित है।

प्रसिद्ध राजाओं के वर्णन

ऐतरेय ब्राह्मण (१४, ४, १९, २)

१. जन्मेजय—(परीक्षित-पुत्र)	गुरु—तुर्कावेदय
२. शर्याति—(मनुपुत्र)	" च्यवन भार्गव
३. शतानीक—(सत्रजित-पुत्र)	" सोमा सुषमा वाजरत्नायन
४. युधास्त्रौस्ती—(उग्रसेन-पुत्र)	" पर्वत और नारद
५. विश्वकर्मा—भौवन-पुत्र)	" " " "

महाभारत युद्ध के बाद सम्राट अशोक तक का काल-निर्णय

कलि-राजवंश सूची—६

पीढी	शासक का नाम	भोगकाल	पुराणो के
	बहिद्रथ—जरासंध के मगध राजवंश मे पुराणो के अनुसार सोमाधि से रिपुञ्जय तक २२ पीढियो का भोगकाल ६३८ वर्ष होता है। चूंकि घटनाक्रम के अनुसार रिपुञ्जय ने ३४ वर्ष तक उज्जैन मे शासन किया इसलिये (६३८ − ३४ =)६०४ वर्ष मगधमे रिपुञ्जय तक का कालहुआ।		
२२.	सोमाधि से रिपुञ्जय तक	६०४ वर्ष	पुराणो के
२३.	बिम्बिसार	५२ "	महावंश
२४.	अजातशत्रु	३२ "	हिन्दी संस्करण,
२५.	उदयभद्र	१६ "	हिन्दी साहित्य
२६.	अनुरुद्ध मुण्ड	८ "	सम्मेलन, प्रयाग
२७.	नागदासक	२४ "	"
२८.	सुसुनाग	१८ "	"
२९.	कालाशोक	२८ "	"
३०.	कालाशोक के दस पुत्र	२२ "	"
३१.	नवनन्द	२२ "	"
३२.	चन्द्रगुप्त मौर्य	२४ "	"
३३.	बिन्दुसार	२८ "	"
३४.	अशोक	३७ "	"

महाभारत युद्ध के बाद अशोक तक कुल भोगकाल ९१५ वर्ष होता है।

इस सूची के अनुसार यह प्रमाणित हुआ कि सम्राट अशोक से ९१५ वर्ष महाभारत युद्ध हुआ। यहां पर यदि रिपुञ्जय वाला काल ३४ वर्ष भी जोड़ दिया तो भी (९१५ + ३४ =)९४९ वर्ष होता है। औसत भोगकाल (९१५ ÷ ३४ =) २६$\frac{११}{३४}$ यानी लगभग २७ वर्ष होता है।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड—बारहवाँ

आर्य नृपतियों का वर्गीकरण

अधिराज—राजाओं से बड़े ("वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृश मोग्र चेत्तारम-धिराजमक्रन" ऋग्वेद X, १२८।९), अथर्ववेद vi, १ और ix १०, २४; तैत्तिरीय संहिता II, ४, १४, २; मैत्रायणी संहिता iv. १२, १३ कठ संहिता viii, १७; तैत्तिरीय ब्राह्मण III, १, २, ६।

अधिराजन—सतपथ ब्राह्मण V, ४, २, २; निरुक्त viii, २।

राजाधिराज—राजाओं का राजा। तैत्तिरीय-आरण्यक I, ३१, ६।

सम्राज—राजा से अधिक शक्तिशाली। ऋग्वेद III, ५५, ७, ५६, ५; iv, २१, १; vi, २७, ८; viii, १९, ३२ तथा वाजसनेयी संहिता V, ३२, xii, ३५, XX ५ इत्यादि।

वैभव और शक्ति के अनुसार

१—सामन्त, २—माण्डलिक, ३—राजा, ४—महाराजा, ५—सम्राट्, ६—विराट्, ७—सार्वभौम। चक्रवर्ती तथा "आसमुद्र क्षितीश" आदि।

विशेष—हिन्दुओं के राज्याभिषेक पर शोधपूर्ण एक निबन्ध स्वर्गीय श्री काशी-प्रसाद जायसवाल का जनवरी १९१२ के मौडर्न रिव्यू (Modern Review) में प्रकाशित है।

प्रसिद्ध राजाओं के वर्णन

ऐतरेय ब्राह्मण (१४, ४, १९, २)

१. जन्मेजय—(परीक्षित-पुत्र)	गुरु—तुर्कावेश्य
२. शर्याति—(मनुपुत्र)	" च्यवन भार्गव
३. सतानीक—(सत्रजित-पुत्र)	" सोमा सुषमा वाजरत्नायन
४. युधास्त्रौस्ती—(उग्रसेन-पुत्र)	" पर्वत और नारद
५. विश्वकर्मा—भौवन-पुत्र)	" " " "

६. सुदास—(पिजवन-पुत्र) " वशिष्ठ
७ मरत—(अविक्षित-पुत्र) " सवर्त्त
८ अग—(वैरोचन-पुत्र) " उद्यम आत्रेय
९ भरत—(दुष्यन्त-पुत्र) " दीर्घतमा मामतय
१०. दुर्मुख—(पाचाल) " बृहदुक्थ
११. अत्यराति जानन्तपति " वसिष्ठ सत्यहव्य

ऐतरेय ब्राह्मण के अतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण मे (XIII, ५, ४) भी उन राजाओ की सूची है, जिन्होने अश्वमेध यज्ञ किया था।

आपस्तम्ब स्रौतसूत्र मे भी उन राजाओ का वर्णन है जो सम्पूर्ण भूमि के शासक थे—उनको सार्वभौम कहा गया है। "राजा सार्वभौमोऽश्वमेधेन यजेत" आपस्तम्ब स्रौत सूत्र। अश्वमेध यज्ञ करने पर यह 'सार्वभौम' की उपाधि मिलती थी।

अश्वमेध यज्ञकर्त्ता की सूची

(आपस्तम्ब स्रौत सूक्त)

१ जन्मेजय (परीक्षित के पुत्र) ऋषि—इन्द्रोत दैवाप सौनक
२. भीमसेन
३. उग्रसेन
४. श्रुतसेन
} परीक्षित के पुत्र

५. पारा (अतनार-पुत्र) कौशल्य राजा
६. पुरुकुत्स—ऐक्ष्वक राजा (सूर्यवश)
७. मरुत्त (अविक्षित-पुत्र)
८. वैव्य-पाचल राजा। इनके अतिरिक्त पुष्पमित्र, समुद्रगुप्त, कुमारगुप्त, आदित्यसेन आदि।
९. ध्वसन द्वैपायन—मत्स्य का राजा।
१०. भरत (दुष्यन्त-पुत्र)। भरत ने अनेक यज्ञ किये। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार भरत ने सम्पूर्ण पृथ्वी को जीता।
११ ऋसव (अन्नातुर पुत्र)।
१२. सत्रसह—पांचाल राजा।
१३. सतानीक (सत्रजीत-पुत्र)।

अश्वमेधीन सूची

साख्यायन स्रोतसूत्र (XVI–९) के अनुसार

१. जन्मेजय
२. उग्रसेन
३. भीमसेन
४. स़ुतसेन

(१–४) परीक्षित के पुत्र

५. ऋषभ (अजातुर-पुत्र)
६. वैदेह (अल्हर-पुत्र)
७. मरुत्त (अविक्षित-पुत्र)

इसी प्रकार वैदिक साहित्य मे बडे-बडे राजाओ के नाम हैं। इनके अतिरिक्त पुराणो मे भी है।

पुराणों में

१. कुर्म पुराण (XX, ३१) वसुमान या वसुमनस।

२. पद्म पुराण (IV, ११०-११८) दिलीप, मनु, सगर, मरुत्त, ययाति।

३. अग्नि पुराण (अध्याय २१९, ५०-५१) पृथु, दिलीप, भरत, वलि, मल्ल, कुकुत्स, युवनाश्व, जयद्रथ, मानधाता, मुचुकुन्द, पुरुरवा।

४. ब्रह्म पुराण—पुरुरवा को पृथ्वीपति कहा गया है (X, ९)
भीम—राजराट् (X, १३)
ययाति—(XII, १८) इन्होने समुद्रपर अधिकार किया।
कार्त्तवीर्य-अर्जुन—(XIII, १७४) इनको सम्राट चक्रवर्ती कहा गया।

५. ब्रह्माण्ड पुराण—पृथु (LXIX, १ २, ३)।

६. मार्कण्डेय—पुरुरवा चक्रवर्ती (CXI, १३)।
मरुत्त—(CXXXII, ३, ४)।

७ शिवपुराण-चित्ररथ चक्रवर्ती(XXIV ३४,३५)
पृथु चक्रवर्ती (XXIV ६५,६६)
हरिश्चन्द्र सम्राट् (LXI २१)

८. लिगपुराण-ययाति (LXVI)
कार्त्तवीर्य-अर्जुन (LXVIII)
शशविन्दु (LXVIII)
उशनाः (LXVIII)

९. स्कन्द पुराण—कार्त्तवीर्य सम्राट चक्रवर्ती
(प्रवास खण्ड XX ११,१२)

१०. भागवतपुराण—मानधाता चक्रवर्ती (IX,VI, ३८)
सगर-चक्रवर्ती (IX,VI, ८)
मुचुकुण्ड—अखण्ड भूमिप (IX, II १४)
११. देवीपुराण—दैत्यराजा 'घोर' की प्रतिष्ठा के लिये उपाधि—'एकराज'
१२. विष्णु पुराण—चन्द्रगुप्त (XXIV IV. ७)
१ सगर (III. IV १७)
२ चन्द्र (VI,IV ६)
३ भरत (XIX,IV, २)
४ महापद्मनन्द (XXIV, IV. ५)
१३. वायुपुराण—सगर (LXXXVIII १८८)
कार्तवीर्य अर्जुन (XCIV—९)
उशना (XCV. २३)
१४. मत्स्य—पुरूरवा (XXIV. II)
पुरू० ययाति के पुत्र (XXXIV २५)
१५. महाभारत—भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्राचीन भारतीय राजाओं का वर्णन है। उनलोगों का बृहद् वर्णन शान्ति-पर्व-(अध्याय XXIX) में है.
१६. बाल्मीकि रामायण में भी वंश वृक्ष का वर्णन हैं।

भूमिपतियों की उपाधियाँ

१ सामान्त, २ माण्डलिक, ३ राजा, ४ महाराजा, ५ महाराजाधिराज, ६ सम्राट, ७ विराट, ८ सार्व भौम, ९ चक्रवर्ती, १० आसमुद्र क्षितीश, ११ चतुरन्तो राजा, १२ अखण्ड भूमिप।

धन-वैभव एवं शक्ति के क्रमानुसार ये उपाधियां है।

सप्त सिन्धव प्रदेश की नदियों के नाम

१ सरस्वती, २ शुतुद्रि (सतलज), ३ पुरूष्णी (रावी), ४ असिक्नी (चनाब), ५ वितस्ता (व्यास), ६ झेलम, ७ सुशोम (सिन्धु-"यास्क")

अंधकार का युग

इतने ग्रन्थो मे आर्यइतिहास तथा वंश-वृक्ष रहने पर भी इतिहासज्ञ किस प्रकार अंधकार युग कहा करते हैं—समझ म नही आता ! हाँ, उलझन पूर्णजरूर है, परन्तु उनको सुलझा कर जनता के समक्ष रखना उन्ही विद्वान भारतीय इतिहासवेत्ताओं तथा विद्वानो का काम है।

प्राचीन भारतीय आर्य राजवंश

खण्ड—तेरहवाँ

परिशिष्ट

[१]

वेद

'वेद' नामक ग्रन्थ चार है। ऋक्, यजुष, साम और अथर्व। चारों में अधिक महत्त्वपूर्ण तथा प्राचीनतम ऋग्वेद है। ऋग्वेद का समकालीन ग्रन्थ संसार में दूसरा अन्य नहीं है। वेदों के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रन्थ है, जो वेदांग कहे जाते हैं। इनके अतिरिक्त उपनिषद हैं, जो ब्राह्मण ग्रन्थों के अन्तर्गत ही माने जाते है। उपनिषदों की सख्या ११९४ कही जाती हैं। परन्तु १५० उनमें प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण कहे जाते है। १५० में १० ही प्रधान है। वेदों में अथर्ववेद की गणना पीछे की गई है। वेद वर्त्तमान रूप में जन्मेजय के काल में कृष्णद्वैपायन द्वारा सम्पादित किये गये हैं।[१] इसीलिये कृष्णद्वैपायन को वेदव्यास कहा जाता है। वेदव्यास के चार शिष्य थे। पैल, वैशम्पायन, जैमिनी और सुमन्त। वेदव्यास ने पैल को ऋग्वेद, वैशम्पायन को यजुर्वेद, जैमिनी[२] को सामवेद और सुमन्त को अथर्ववेद पढाया। कुछ कालोपरान्त चारों शिष्यों की परम्परा मे अनेक भेद तथा उपभेद होते गये।

वेदों के शब्द निर्माण काल से आजतक जैसे के तैसे चले आते है। उनमें एक अक्षर या मात्रा भी किसी के द्वारा नहीं बदली गई है। इन्हें स्थिर रखने की अनेक युक्तियां की गई हैं। ई०पू० छठी शताब्दी मे वेद की अन्तिम पाठशुद्धि हुई। वेदों की रचना पद्यों मे है। उन पद्यो को मन्त्र कहते है। प्रत्येक वेदमन्त्र का एक ऋषि है। जो वेदमन्त्र की रचना करता था वही ऋषि कहलाता था।

---

१. विष्णु पुराण चतुर्थ खण्ड। २. कहा जाता है कि जैमिनी ऋषि ने जर्मनी को बसाया था।

ऋषयो मन्त्र द्रष्टार । ऋषयो (मन्त्र दृष्टय)···मन्त्रान्सम्प्राद् ॥
निरुक्त (१।२०) ऋषिओं और मन्त्र दृष्टाओं ने स्तोत्र रुप वाक्यो को बनाया है।[1]

ऋग्वेद के मन्त्रो की रचना अति प्राचीन काल स होती आ रही थी। महाभारत के कुछ काल पहल तक के ऋषियो क मन्त्र भी ऋग्वेद म है। इससे प्रमाणित होता है कि राम के बाद भी वद मन्त्रा की रचना होती गई है। वदव्यास न जब महा भारत काल म वेदों का सम्पादन कर दिया तब से नवीन मन्त्रा की रचनायें बन्द हो गई।

ऋग्वेद के सूक्तों की सख्या

ऋग्वेद म दस मण्डल है। प्रत्येक मण्डल म अनेक सूक्त[2] हैं। प्रत्येक सूक्त म अनक ऋचायें—मन्त्र है।

मण्डल	सूक्त	मण्डल	सूक्त
१	१९१	६	७५
२	४३	७	१०४
३	६२	८	१०३
४	५८	९	११४
५	८७	१०	१९१
		कुल योग—	१०२८

ऋग्वेद के मन्त्रा के रचयिता ऋषियो की सख्या लगभग ३०० है। अन्य वेदो के मत्रो के रचयिता भी लगभग य ही हैं। यजुर्वेद और अथर्ववेद म इनके अतिरिक्त बहुत थोडे नए नाम भी मिलते हैं।

ऋषियों की नामावली इस प्रकार हैं—

१—प्रजापति परमेष्ठी, १०।१२९, २—पृथुवैन्य १०।१४८, ३—हविर्धान १०।११,१२, ४—प्रचेता १०।१६४, ५—कश्यपो मरीचि पुत्र ।।९९, ६—ध्रुव १०।१७३, ७—विवस्वान सूर्य (विवस्वानादित्य) १०।१३। क्रम से आरम्भिक ऋषि है।

(इनका निर्माण काल आय राजवशो की इस पुस्तककी आरभिक सूची मे मिलाकर देख लीजिये।)

---

१ "ऋषेमन्त्र कृतों स्तोमै ' ऋ०६।११४।२। २ सूक्त=स्तोत्र=स्तुति=स्तवन।

मधुच्छन्दा, जेत, मेधातिथि, शुन शेप, हिरण्यस्तूप, कण्व, सव्य, नोध, पाराशर, गोतम, कुत्स, कश्यप, ऋज्रस्व, कक्षिवन् , परुच्छेप, दीर्घतमस, अगस्त्य, सोमहूति, कूर्म, ऋषभ, उत्कल, देवश्रवा, देवव्रत, प्रजापति, बुध, गविष्ठ, कुमार, ईश, सुनम्भरा, धरुण, पुरु, विश्वसाम, द्युम्न, विश्वचर्षणि, वसुयु, विश्ववर, बभ्र, अवस्यु, पृथु, वसु, प्रतिरथ, प्रतिभानु, पुरमीड, गापवन, सप्तवध्रू, विरूप, उशनाकाव्य, कृष्ण, विश्वक, नृमध, अपाला, श्रुतकक्ष, सुकक्ष, बिन्दु, पूतदक्ष, जमदग्नि, नेम, प्रस्कण्व, त्रित, पर्वतनारद, त्रिशिरा, हविर्धान, अङ्गि, शख, दमन, मथित, विमद, वसुत्र, ऐलूष, मौजवान, धानाक, अभितपा, घोष, विश्ववारा, वत्सप्रि, वसुवर्ण, अयास्य, सुमित्र, बृहस्पति, गौरीवीति, जरतकर्ण, स्यूमिरश्म, सौचीक, विश्वकर्मा, सूर्या, सावित्री, पायु, रेणु, नारायण, अरुण, शार्यात, तान्व अर्बुद, वरु, भिषग, मुद्गल, अष्टक, भूताश, पणयोऽसुर, सरमा, अष्टादष्ट्र, उपस्तुत, भिक्षु, बृहद्दिव, चित्रमह, कुशिक, विहव्य, सुकीर्ति, शाकपूत, मान्धाता, अङ्ग, श्रद्धा कामायिनी, यमी, यम, शिरम्बिठ, केतु, भुवन, नक्ष, शची पौलोमी, रक्षोहा, कपोत, अनिल, शबर, सम्वर्न, ध्रुव, पतङ्ग, अरिष्ठनेमि, जय, प्रथ, उलो, सुपर्ण, देवला, श्यावाश्व, रहूगण, भृगु, कर्णश्रुत, अम्बरीष, च्यवन, उर्वशी, द्रोण, राम, धर्म, रातहव्य, सुहोत्र, शुनहोत्र, नर, गर्ग, कश्यप नाभाग, वशिष्ठ, विश्वामित्र, त्रिशोक, सप्तगु वैकुण्ठ, बृहदुक्थो, गोपायन, मानव, प्रात आदि आदि ।

(श्रीरामशर्मा आचार्य, ऋग्वेद—प्रथम खण्ड हिन्दी भाष्य)

जरितर, द्रोण तथा नारायण ऐसे वेदर्षि हैं, जो युधिष्ठिर के समकालीन, खाण्डव दाह से बचे हुये है ।

ऋग्वेद म दस मण्डल है, पहले और दसव सब से बडे है, इनमे से प्रत्येक मे १९१ सूक्त है। और ये दोनो मिलकर—ऋग्वेद के एक तिहाई भाग के बराबर हैं । इन दोनो मण्डलो म विविध ऋषियो द्वारा प्रकट किये गये सूक्तो का सग्रह किया गया है। अधिकाश सूक्त एक एक ऋषि के ही है । कही कही ऐसे सूक्त भी मिलते हैं, जिनके द्रष्टा एक स अधिक ऋषि हैं । इन दो मण्डलो के सिवाय दो म सात तक के मण्डलो मे तो प्राय एक ही ऋषि के द्वारा प्रकट किये गये सूक्त दिये गये है, अगर दो-चार नाम और है, तो वह उनके ही वशधरो वाले के है, इस प्रकार द्वितीय मण्डल म गृत्समद, तीसरे मे विश्वामित्र, चौथे म वामदेव, पाँचव म अत्रि, छठे म भरद्वाज और सातवे मे वशिष्ठ के सूक्तो का सग्रह है। आठवे मे यद्यपि और भी बहुत से ऋषियो के सूक्त है, पर उनमे कण्व ऋषि के वश की

ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः। ऋषयो (मन्त्र दृष्टयः)···मन्त्रान्सम्प्रादुः ॥
निरुक्त (१।२०) ऋषिओं और मन्त्र दृष्टाओं ने स्तोत्र रूप वाक्यों को बनाया है।[1]

ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना अति प्राचीन काल से होती आ रही थी। महाभारत के कुछ काल पहले तक के ऋषियों के मन्त्र भी ऋग्वेद में हैं। इससे प्रमाणित होता है कि राम के बाद भी वेद मन्त्रों की रचना होती गई है। वेदव्यास ने जब महाभारत काल में वेदों का सम्पादन कर दिया तब से नवीन मन्त्रों की रचनायें बन्द हो गई।

ऋग्वेद के सूक्तों की संख्या

ऋग्वेद में दस मण्डल हैं। प्रत्येक मण्डल में अनेक सूक्त[2] हैं। प्रत्येक सूक्त में अनेक ऋचायें—मन्त्र हैं।

मण्डल	सूक्त	मण्डल	सूक्त
१	१९१	६	७५
२	४३	७	१०४
३	६२	८	१०३
४	५८	९	११४
५	८७	१०	१९१
		कुल योग—	१०२८

ऋग्वेद के मन्त्रों के रचयिता ऋषियों की संख्या लगभग ३०० हैं। अन्य वेदों के मन्त्रों के रचयिता भी लगभग ये ही हैं। यजुर्वेद और अथर्ववेद में इनके अतिरिक्त बहुत थोड़े नये नाम भी मिलते हैं।

ऋषियों की नामावली इस प्रकार है—

१—प्रजापति परमेष्ठी, १०।१२९, २—पृथुवैन्य १०।१४८, ३—हविर्धान १०।११,१२, ४—प्रचेता १०।१६४, ५—कश्यपो मरीचि पुत्रः १।९९, ६—ध्रुव १०।१७३, ७—विवस्वान-सूर्य (विवस्वानादित्यः) १०।१३। क्रम से आरम्भिक कवि हैं।

(इनका निर्माण काल आर्य राजवंशों की इस पुस्तक की आरम्भिक सूची में मिलाकर देख लीजिये।)

१ "ऋषेमन्त्र कृतां स्तोमैः" ऋ०९।११४।२। २. सूक्त = स्तोत्र = स्तुति = स्तवन।

मधुच्छन्दा, जेत, मेधातिथि, शुन-शेप, हिरण्यस्तूप, कण्व, सव्य, नोध, पाराशर, गोतम, कुत्स, कश्यप, ऋज्राश्व, कक्षिवन् , परुच्छेप, दीर्घतमस, अगस्त्य, सोमहूति, कूर्म, ऋषभ, उत्कल, देवश्रवा, देवव्रत, प्रजापति, बुध, गविष्ठ, कुमार, ईश, सुतम्भरा, धरुण, पुर, विश्वसाम, द्युम्न, विश्वचर्षणि, वसुयु, विश्ववर, बभ्रु, अवस्यु, पृथु, वसु, प्रतिरथ, प्रतिभानु, पुरमीड, गोपवन, सप्तवध्रि, विरूप, उपनाकाव्य, कृष्ण, विश्वक, नृमेध, अपाला, श्रुतकक्ष, सुकक्ष, विन्दु, पूतदक्ष, जमदग्नि, नेम, प्रस्कण्व, त्रित, पर्वतनारद, त्रिशिरा, हविर्धान, अङ्गि, शख, दमन, मथित, विमद, वसुक्र, ऐलूष, मौजवान, धानाक, अभितपा, घोष, विश्ववारा, वत्सप्रि, वसुकर्ण, अयास्य, सुमित्र, बृहस्पति, गौरीवीति, जरत्कर्ण, स्यूमिरश्म, सौचीक, विश्वकर्मा, सूर्या, सावित्री, पायु, रेणु, नारायण, अरुण, शार्यात, तान्व अर्बुद, वरु, भिषग, मुद्गल, अष्टक, भूतांश, पणयोऽसुर, सरमा, अष्टादंष्ट्र, उपस्तुत, भिक्षु, बृहद्दिव, चित्रमह, कुशिक, विहव्य, सुकीर्त्ति, शकपूत, मान्धाता, अङ्ग, श्रद्धा कामायिनी, यमी, यम, शिरम्बिठ, केतु, भुवन, चक्षु, शची पौलोमी, रक्षोहा, कपोत, अनिल, शबर, सम्वर्त, ध्रुव, पतङ्ग, अरिष्टनेमि, जय, प्रथ, उलो, सुपर्ण, देवला, श्यावाश्व, रहूगण, भृगु, कर्णश्रुत, अम्बरीष, च्यवन, उर्वशी, द्रोण, राम, धर्म, रातहव्य, सुहोत्र, शुनहोत्र, नर, गर्ग, कश्यप नाभाग, वशिष्ठ, विश्वामित्र, त्रिशोक, सप्तगु वैकुण्ठ, बृहदुक्थो, गोपायन, मानव, प्लात आदि आदि।

(श्रीरामशर्मा आचार्य, ऋग्वेद—प्रथम खण्ड हिन्दी भाष्य)

जरितर, द्रोण तथा नारायण ऐसे वेदर्षि हैं, जो युधिष्ठिर के समकालीन, खाण्डव दाह से बचे हुये हैं।

ऋग्वेद मे दस मण्डल हैं, पहले और दसवे सब से बडे है, इनमे से प्रत्येक में १९१ सूक्त है। और ये दानो मिलकर—ऋग्वेद के एक तिहाई भाग के बराबर हैं। इन दोनो मण्डलो मे विविध ऋषियो द्वारा प्रकट किये गये सूक्तो का सग्रह किया गया है। अधिकाश सूक्त एक एक ऋषि के ही है। कही-कही ऐसे सूक्त भी मिलते हैं, जिनके दृष्टा एक से अधिक ऋषि है। इन दो मण्डलो के सिवाय दो से सात तक के मण्डलो मे ता प्राय एक ही ऋषि के द्वारा प्रकट किये गये सूक्त दिये गये है, अगर दो-चार नाम और है, तो वह उनके ही वंशधरो वाले के हैं, इस प्रकार द्वितीय मण्डल म गृत्समद, तीसरे मे विश्वामित्र, चौथे मे वामदेव, पाँचव म अत्रि, छठे मे भरद्वाज और सातवे म वशिष्ठ के सूक्तो का सग्रह है। आठवे मे यद्यपि और भी बहुत से ऋषियो के सूक्त है, पर उनमे कण्व ऋषि के वश की

ऋषयो मन्त्र द्रष्टार । ऋषयो (मन्त्र दृष्टय)" मन्त्रान्सम्प्राट् ॥
निरुक्त (१।२०) ऋषियों और मन्त्र दृष्टाओं ने स्तोत्र रूप वाक्यों को बनाया है।[1]

ऋग्वेद के मन्त्रो की रचना अति प्राचीन काल से होती आ रही थी। महाभारत के कुछ काल पहले तक के ऋषियो के मन्त्र भी ऋग्वेद म हैं। इससे प्रमाणित होता है कि राम के बाद भी वेद मन्त्रों की रचना होती गई है। वेदव्यास न जब महाभारत काल म वेदो का सम्पादन कर दिया तब से नवीन मन्त्रो की रचनाय बन्द हो गई।

ऋग्वेद के सूक्तों की सख्या

ऋग्वेद मे दस मण्डल है। प्रत्येक मण्डल मे अनेक सूक्त[2] है। प्रत्येक सूक्त म अनेक ऋचायें—मन्त्र हैं।

मण्डल	सूक्त	मण्डल	सूक्त
१	१९१	६	७५
२	४३	७	१०४
३	६२	८	१०३
४	५८	९	११४
५	८७	१०	१९१
		कुल योग—	१०२८

ऋग्वेद के मन्त्रो के रचयिता ऋषियो की सख्या लगभग ३०० हैं। अन्य वेदो के मन्त्रो के रचयिता भी लगभग य ही हैं। यजुर्वेद और अथर्ववेद म इनके अतिरिक्त बहुत थोडे नय नाम भी मिलते हैं।

ऋषियो की नामावली इस प्रकार है—

१—प्रजापति परमेष्ठी, १०।१२९, २—पृथुवैन्य १०।१४८, ३—हविर्धान १०।११,१२, ४—प्रचेता १०।१६४, ५—कश्यपो मरीचि पुत्र १।९९, ६—ध्रुव १०।१७३, ७—विवस्वान-सूर्य (विवस्वानादित्य) १०।१३। क्रम से आरम्भिक ऋषि है।

(इनका निर्माण काल आर्य राजवंशों की इस पुस्तक की आरम्भिक सूची मे मिलाकर देख लीजिये।)

---

१ "ऋषेमन्त्र कृतों स्तोमै" ऋ०९।११४।२। २ सूक्त=स्तोत्र=स्तुति=स्तवन।

मधुच्छन्दा, जेन, मेधातिथि, शुन शेप, हिरण्यस्तूप, कण्व, सव्य, नोध, पाराशर, गोतम, कुत्स, कश्यप, ऋज्रास्व, कक्षिवन् , परुच्छेप, दीर्घतमस, अगस्त्य, सोमहूति, कूर्म, ऋषभ, उत्कल, देवश्रवा, देवव्रत, प्रजापति, बुध, गविष्ठ, कुमार, ईश, सुतम्भरा, वरुण, पुरु, विश्वसाम, द्युम्न, विश्वचर्षणि, वसुयु, विश्ववर, वभ्र, अवस्यु, पृथु, वसु, प्रतिरथ, प्रतिभानु, पुरुमीढ, गापवन, सप्तवधृ, विरूप, उपनाम्नाम्य, कृष्ण, विश्वक, नृमेध, अपाला, श्रुतकक्ष, सुकक्ष, बिन्दु, पूतदक्ष, जमदग्नि, नेम, प्रस्कण्व, त्रित, पर्वतनारद, त्रिशिरा, हविर्धान, अग्नि, शख, दमन, मथित, विमद, वमुत्र, ऐलूष, मौजवान, धानाक, अमिनपा, घोष, विश्ववारा, वत्सप्रि, वसुकर्ण, अयाम्य, सुमित्र, बृहस्पति, गौरीवीति, जरतवर्ण, स्यूमिरश्म, सौचीक, विश्वकर्मा, मूर्धा, सावित्री, पायु, रेणु, नारायण, अरुण, शार्यात, तान्व अर्बुद, वरु, भिषग, मुद्गल, अष्टक, भूताश, पणयोऽसुर, सरमा, अष्टादष्ट्र, उपस्तुत, भिक्षु, बृहद्दिव, चित्रमह, कुशिक, विहव्य, सुकीर्त्ति, शकपूत, मान्धाता, अङ्ग, श्रद्धा कामायिनी, यमी, यम, शिरम्बिठ, केतु, भुवन, चक्षु, शची पौलोमी, रक्षोहा, कपोत, अनिल, शबर, सम्वर्त, ध्रुव, पतङ्ग, अरिष्ठनेमि, जय, प्रथ, उलो, सुपर्ण, देवला, श्यावाश्व, रहूगण, भृगु, कर्णश्रुत, अम्बरीष, च्यवन, उर्वशी, द्रोण, राम, धर्म, रातहव्य, सुहोत्र, शुनहोत्र, नर, गर्ग, कश्यप नाभाग, वशिष्ठ, विश्वामित्र, त्रिशोक, सप्तगु वैकुण्ठ, बृहदुक्थो, गोपायन, मानव, प्लात आदि आदि।

(श्रीरामशर्मा आचार्य, ऋग्वेद—प्रथम खण्ड हिन्दी भाष्य)

जरितर, द्रोण तथा नारायण ऐसे ब्रर्षि हैं, जो युधिष्ठिर के समकालीन, खाण्डव दाह से बचे हुये हैं।

ऋग्वेद मे दस मण्डल हैं, पहले और दसवे सब से बडे है, इनम से प्रत्येक मे १९१ सूक्त है। और ये दोनो मिलकर—ऋग्वेद के एक तिहाई भाग के बराबर है। इन दोनो मण्डलो म विविध ऋषियो द्वारा प्रकट किये गये सूक्तो का सग्रह किया गया है। अधिकाश सूक्त एक एक ऋषि के ही हैं। कहीं-कही ऐसे सूक्त भी मिलते हैं, जिनके दृष्टा एक से अधिक ऋषि है। इन दो मण्डलो के सिवाय दो से सात तक के मण्डलो मे तो प्राय एक ही ऋषि के द्वारा प्रकट किये गये सूक्त दिये गये हैं, अगर दो-चार नाम और है, तो वह उनके ही वशधरो वाले के हैं, इस प्रकार द्वितीय मण्डल मे गृत्समद, तीसरे मे विश्वामित्र, चौथे मे वामदेव, पाँचवे म अत्रि, छठें म भरद्वाज और सातवे म वशिष्ठ के सूक्तो का सग्रह है। आठवे मे यद्यपि और भी बहुत से ऋषियो के सूक्त हैं, पर उनम कण्व ऋषि के वश की

ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः । ऋषयो (मन्त्र दृष्टयः)•••मन्त्रान्सम्प्रादुः ॥
निरुक्त (१।२०) ऋषियों और मन्त्र दृष्टाओ ने स्तोत्र रूप वाक्यों को बनाया है।[१]

ऋग्वेद के मन्त्रो की रचना अति प्राचीन काल से होती आ रही थी। महाभारत के कुछ काल पहले तक के ऋषियो के मन्त्र भी ऋग्वेद मे हैं। इससे प्रमाणित होता है कि राम के बाद भी वेद मन्त्रों की रचना होती गई है। वेदव्यास ने जब महाभारत काल मे वेदो का सम्पादन कर दिया तब से नवीन मन्त्रो की रचनायें बन्द हो गई।

ऋग्वेद के सूक्तों की संख्या

ऋग्वेद मे दश मण्डल है। प्रत्येक मण्डल मे अनेक सूक्त[२] हैं। प्रत्येक सूक्त मे अनेक ऋचायें—मन्त्र है।

मण्डल	सूक्त	मण्डल	सूक्त
१	१९१	६	७५
२	४३	७	१०४
३	६२	८	१०३
४	५८	९	११४
५	८७	१०	१९१
		कुल योग—	१०२८

ऋग्वेद के मन्त्रो के रचयिता ऋषियो की सख्या लगभग ३०० हैं। अन्य वेदों के मन्त्रो के रचयिता भी लगभग ये ही हैं। यजुर्वेद और अथर्ववेद मे इनके अतिरिक्त बहुत थोडे नये नाम भी मिलते हैं।

ऋषियो की नामावली इस प्रकार हैं—

१—प्रजापति परमेष्ठी, १०।१२९, २—पृथुर्वैन्य १०।१४८, ३—हविर्धान १०। ११,१२, ४—प्रचेता १०।१६४, ५—कश्यपो मरीचि पुत्रः ९।९९, ६—ध्रुव १०। १७३, ७—विवस्वान-सूर्य (विवस्वानादित्यः) १०।१३। क्रम से आरम्भिक ऋषि है।

(इनका निर्माण काल आर्य राजवंशो की इस पुस्तककी आरभिक सूची मे मिलाकर देख लीजिये।)

---

१. "ऋषेमन्त्र कृतों स्तोमैः" ऋ०६।११४।२। २. सूक्त=स्तोत्र=स्तुति=स्तवन।

मधुच्छन्दा, जेत, मेधातिथि, शुन-शेप, हिरण्यस्तूप, कण्व, सव्य, नोध, पाराशर, गोतम, कुत्स, कश्यप, ऋज्रस्व, कक्षिवन् , परुच्छेप, दीर्घतमस, अगस्त्य, गोमहूति, कूर्म, ऋषभ, उत्कल, देवश्रवा, देवव्रत, प्रजापति, बुध, गविष्ठ, कुमार, ईश, सुतम्भरा, धरुण, पुरु, विश्वसाम, द्युम्न, विश्वचर्षणि, वसुयु, विश्ववर, बभ्रु, अवस्यु, पृथु, वसु, प्रतिरथ, प्रतिभानु, पुरमीढ़, गोपवन, सप्तवध्रु, विरूप, उपनाकाव्य, कृष्ण, विश्वक, नृमेध, अपाला, श्रुतकक्ष, सुकक्ष, बिन्दु, पूतदक्ष, जमदग्नि, नेम, प्रस्कण्व, त्रित, पर्वतनारद, त्रिशिरा, हविर्धान, अङ्गि, शंस, दमन, मथित, विमद, वसुक्र, ऐलूष, मौजवान, घानाक, अग्निपा, घोप, विश्ववारा, वत्सप्रि, वसुकर्ण, अयास्य, सुमित्र, बृहस्पति, गौरीवीति, जरत्कर्ण, स्यूमिरश्म, सौचीक, विश्वकर्मा, सूर्या, सावित्री, पायु, रेणु, नारायण, अरुण, शार्यात, तान्व अर्बुद, वरु, भिषग, मुद्गल, अष्टक, भूताश, पणयोऽसुर, सरमा, अष्टादंष्ट्र, उपस्तुत, भिक्षु, बृहद्दिव, चित्रमह, कुशिक, विहव्य, सुकीर्ति, शकपूत, मान्धाता, अङ्ग, श्रद्धा कामायिनी, यमी, यम, शिरम्बिठ, वेनु, भुवन, नक्षु, शची पौलोमी, रक्षोहा, कपोत, अनिल, शबर, सम्वर्त, ध्रुव, पतङ्ग, अरिष्ठनेमि, जय, प्रथ, उर्लो, सुपर्ण, देवला, श्यावाश्व, रहूगण, भृगु, कर्णश्रुत, अम्बरीष, च्यवन, उर्वशी, द्रोण, राम, धर्म, शतहव्य, सुहोत्र, शुनहोत्र, नर, गर्ग, कश्यप, नाभाग, वशिष्ठ, विश्वामित्र, त्रिशोक, सप्तगु वैकुण्ठ, बृहद्वयो, गोपायन, मानव, प्लात आदि आदि।

(श्रीरामशर्मा आचार्य, ऋग्वेद—प्रथम खण्ड हिन्दी भाष्य)

जरितर, द्रोण तथा नारायण ऐसे वेदर्षि हैं, जो युधिष्ठिर के समकालीन, खाण्डव दाह से बचे हुये हैं।

ऋग्वेद मे दस मण्डल हैं, पहले और दसवें सब से बड़े है, इनमें से प्रत्येक में १९१ सूक्त है। और ये दोनो मिलकर—ऋग्वेद के एक तिहाई भाग के बराबर है। इन दोनो मण्डलो मे विविध ऋषियो द्वारा प्रकट किये गये सूक्तो का सग्रह किया गया है। अधिकाश सूक्त एक-एक ऋषि के ही है। कहीं-कहीं ऐसे सूक्त भी मिलते हैं, जिनके दृष्टा एक से अधिक ऋषि हैं। इन दो मण्डलो के सिवाय दो मे सात तक के मण्डलो मे तो प्राय. एक ही ऋषि के द्वारा प्रकट किये गये सूक्त दिये गये है, अगर दो-चार नाम और है, तो वह उनके ही वशधरों वाले के हैं, इस प्रकार द्वितीय मण्डल मे गृत्समद, तीसरे मे विश्वामित्र, चौथे मे वामदेव, पाँचवें मे अत्रि, छठे मे भरद्वाज और सातवें मे वशिष्ठ के सूक्तो का सग्रह है। आठवें मे यद्यपि और भी बहुत से ऋषियो के सूक्त है, पर उनमे कण्व ऋषि के वश की

प्रधानता दिखलाई पड़ती है। नवें मण्डल में भी अनेक ऋषियों के सूक्तों का संग्रह ही है। (पं० श्रीरामशर्मा आचार्य)

ऋग्वेद के पहले ऋषि मनुर्भरत वंश के नवें प्रजापति परमेष्ठी हैं, इनका काल ३७९८ ई० पू० होता है। दूसरे ऋषि मनुर्भरत वंश के ४०वें प्रजापति पृथुवैन्य हैं, इनका काल २९३० ई०पू० है। तीसरे ऋषि इसी वंश के ४२वें प्रजापति हविर्धान हैं, इनका समय २८७४ ई० पू० है। चौथे ऋषि प्रचेतस है, यह भी इसी वंश के ४४वें प्रजापति हैं, इनका समय २८१८ ई० पू० है। पाँचवें ऋषि मरीचि के पुत्र कश्यप है, यह ४५वें प्रजापति दक्ष के जामाता तथा वर्तमान मानव सृष्टि के पिता है। इनका समय २७६२ ई० पू० है। इसी कश्यप के पुत्र दैत्य, दानव, असुर तथा देव-आर्य आदि हैं। नाग, गरुड तथा अरुण वंश के पिता भी यही है। इन्हीं के पुत्र वरुण, सूर्य आदि बारह भाई आदित्य थे। उर्वशी अप्सरा के साथ वरुण और सूर्य दोनों भाइयों का प्रेम था—उन्ही के द्वारा उर्वशी के गर्भ से वशिष्ठ का जन्म हुआ (ऋग्वेद)। उसी समय इन्द्र, नारद, वामदेव, भृगु, बृहस्पति आदि सभी हुये। २७१२ ई० पू० देवकाल आरम्भ हुआ। उसी समय ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना बहुत काफी हुई। उसी समय से लगातार महाभारत संग्राम के लगभग सौ वर्ष पहले तक ऋग्वेद के मन्त्रों का रचनायें होती गईं।

ऋग्वेद के मन्त्रद्रष्टाओं की सूची

अ

अगस्त्य—१।१६५, १६७, १६८से १७८ तक। १।१८० से १९१ तक।

अङ्ग औरवः—१०।१३८

अर्चन्हैरण्यस्तूपः—१०।१४९

अग्निः, वरुण, सोमानां, निहवः—१०।१२४

अग्निः पावकः—१०।१४०

अग्निस्तापः—१०।१४१

अग्निः सौचीकः—१०।५२

अग्निः सौचीको, वैश्वानरोवा, सप्तिर्वा वाजम्भरः—१०।१७९

अग्नि सौचीको वैश्वानरोवा—१०।१८०

अग्नियुतस्थौरोग्नियूपोवा स्थौर—१०।११६

अत्रि—५।३७ से ४३ तक। १।७६, १।७७, से ८३, ८४, ८५, ८६।

अघमर्षणो माधुच्छन्दसः—१०।१९०

अनिलो वातायनः—१०।१६८

अत्रि सांख्यः—१०।१४३

अपालात्रेयी—८।९१

अर्चनाना आत्रेयः—५।६३, ६४

अनानतः पारुच्छेपि—९।१११

अग्नयोधिष्ण्या ऐश्वरा—९।१०९

अमहीयुः—९।६१

अवत्सार—५।४४।६।५३ से ६० तक
अवस्यु—५।७५
अवस्युरात्रेय —५।३७
अम्बरीष ऋजिश्वाच—९।९८
असित काश्यपा देवलावा—९।५ से २४ तक।
आयु काण्व —८।५२
अप्रतिरथ एन्द्र —१०।१०३
अर्बुद काद्रवेय सर्प—१०।९४
अग्निवत्स — १०।७४
अभितपा सौर्य —१०।३७
अयास्य —१०।६७, ६८। ९।४४, ४५, ४६
अरुणोवैतहव्य —१०।९१
अष्टादंष्ट्रो वैरूप —१०।१११
अरिष्टनेमिस्ताक्ष्यं —१०।१७८

इ

इटोभार्गव —१०।१७१
इन्द्राणी —१०।१४५
इध्मवाहादार्ढच्युत ९।२६
इन्द्रा वैकुण्ठ —१०।१४८, ४९, ५०
इन्द्रमातरो देवजामय —१०।१५३
इन्द्रो मुष्कवान्—१०।३८
इन्द्रवमुक्रयो संवाद ऐन्द्र —१०।२८
इष —५।७
इष आत्रेय —५।८
इरिम्बिठि काण्व —८।१६, १७ १८

उ

उचथ्य —९।५०, ५१, ५२
उत्कील कात्य—३।१५ १६, १७
ऊर्ध्वग्रावार्बुद —१०।१७५
उपस्तुतो वार्ष्टिहव्य—१०।११५
उरुक्षय आमहीयव —१०।११८
उरूचक्रि रात्रेय —५।६९, ७०
उलोवातायन —१०।१८६
उशना—९।८७, ८८, ८९
उशना काव्य —८।८४
उशिक्पुत्र कक्षीवान्—१।१२०

ए

एवयाम रुद्रात्रेय —५।८७
एक द्यूनौधस —८।८०

ऋ

ऋजिश्वा—६।४९, ५०, ५१, ५२
ऋषभोवैश्वामित्र —९।७१। ३।१३ १४
ऋषभो वैराज शाक्वरोवा—१०।१६६

क

कपोतो नैऋत —१०।१६५
कवि भार्गव —९।४७, ४८, ४९
कवि—९।७५, ७६, ७७, ७८ ७९
कश्यप —९।६४, ९१ ९२, ११३, ११४
कश्यपो मरीचिपुत्र —१।९९
कण्वोघोर —१।३६ से ४३ तक
कक्षीवान्—१।११६, ११७, ११८, १२६ १२२, ९।९४
कक्षीवान् (उशिक पुत्र)—१।१२०
कक्षीवान (औशिज)—१।१२१
कक्षीवान् दीर्घतमस —१।११९, १२४, १२५
दीर्घतमस पुत्र कक्षीवान्—१।१२३

तान्व: पार्थ्य:—१०।९३
तिरश्ची—८।९५
तिरश्चर्यतानोवा मारुत:—८।९६

त्र

त्रसदस्यु पौरुकुत्सय:—
त्र्यरुण, त्रसदस्यु, पौरकुत्स, अश्वमेध—५।२७
त्रित:—९।३३, ३४। १०।१ से ७तक।
त्रिता:—९।१०२
त्र्यरुण त्रसदस्यु—९।११०
त्रिशिरास्त्वाष्ट:—१०।८,९
त्रिशोक: काण्व:—८।४५
त्रित आप्य.—८।४७

द

दमनोयामायण.—१०।१६
दिव्यो दक्षिणावा प्रजापत्या—१०।१०७
द्विनो आत्रेय:—५।१७
द्वित आप्त्य:—९।१०३
दृहलच्युत: आगस्त्य:—९।२५
दीर्घतमा:—१।१४० से १६४ तक
द्युम्नो विश्वचर्षणि.—५।२३
देवश्रवायामायन:—१०।१७
देवस्युर्वानन्दन:—१०।१००
देवमुनिरैरम्मद:—१०।१४६
देवश्रवा देववातश्चभारतो—३।२३
देवापिराष्ट्रिषेन:—१०।९८
देवा:, अग्नि मौचीक:—१०।५१,५३
(नोट—ऋषिदेवापि ऋषि षेन के पत्र थे। ऋषि देवापि राजा शान्तनु के पुरोहित थे। ऋग्वेद १०।९८।७)।
देवातिथि काण्व:—८।४

ध

धरुण आङ्गिरस:—५।१५
ध्रुव:—१०।१७३

न

नर:—६।३५,३६।
नभ: प्रभेदनो वैरूप:—१०।११२
नारद: काण्व:—८।१३
नाभानेदिष्ठोमानव:—१०।६१,६२
नाभाक काण्व:—८।३९,४०,४१,४२।
नारायण:—१०।९० (खाण्डव दाह से बचे हुये युधिष्ठिर के समकालीन ऋग्वेद के यह अन्तिम ऋषि है। इन्होने ही जगत की उत्पत्ति का वर्णन किया है।)
निध्रुवि काश्यप:—९।६३
नीपातिथि काण्व:—८।३४।
नृमेध.—८।९९। ९।२७,२९।
नृमेध पुरुमेधौ—८।८९,९०।
नेमो भार्गव.—८।१००
नोधा—९।९३। ८।८८।
नोधा गौतम:—१।५८ से १।६४ तक।

प

पवित्र:—९।७३,८३।
पर्वत काण्व:—८।१२
पतङ्ग प्राजापत्य:—१०।११७
पणयोऽसुरा:, सरमादेव शुनी—१०।१०८
पर्वत नारदौ—९।१०५
पराशर:शाक्त्य:—१।६५ से ६८ तक।
पराशर: शक्ति पुत्र:—१।६९ से ७३ तक।
परुच्छेप:—१।१२७ से १३९ तक।

मिश्रित नाम

१ ऋजाश्व, अम्बरीष, सहदेव, भयमान, सुराधा—१।१००

२ भरद्वाज, कश्यप, गातम, अत्रि., विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ —९।६७

३ अकृष्टामाषा, सिकतानिवावरी, पृश्नयोऽजा, अयक्षृषिगणा, अत्रि, गृत्समद्—९।८६

४ वसिष्ठ, इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठ, वृषगणावासिष्ठ मन्युर्वासिष्ठ, कर्णश्रुद्वासि, मृळिकोवासिष्ठः, वसुक्रोवासिष्ठ, पराशर, शाक्त, कुत्स —९।९७

५ अ धीगु, श्यावाश्वि, ययातिर्नाहुष, नहुषोमानव, मनु सावरणः, प्रजापति —९।१०१

६ पर्वत नारदौ द्वे शिखण्डिन्यौवा काश्यप्यावप्सरसौ—९।१०४

७. अग्नि चाक्षुषः, चक्षुर्मानव, मनुराप्सव —९।१०६

८ गौरीवीति, शक्ति, ऋजिश्वा, उर्ध्वसद्मा, कृतयशा, ऋणञ्जय —९।१०८

परिशिष्ट
(२)
कलि-राजवंशावली
(सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार)
(सत्यार्थ प्रकाश—एकादश समुल्लास पृ० ५०१ से ७)

"अब थोडा सा आर्यावर्त्त देशीय राजवंश कि जिसमे श्रीमान् महाराज "युधिष्ठिर" से लेके महाराजे "यशपाल" तक (हुए हैं) का इतिहास लिखते है। और श्रीमान् महाराजे "स्वायंभव" मनु से लेके महाराज "युधिष्ठिर" तक का इतिहास महाभारत आदि मे लिखा ही है और इससे सज्जन लोगो को इधर के कुछ इतिहास का वर्त्तमान विदित होगा। यद्यपि यह विषय विद्यार्थी सम्मिलित "हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" और "मोहन चन्द्रिका" जो कि पाक्षिक पत्र श्रीनाथ द्वारे से निकलता था। (जो राजपूताना देश, मेवाड राज उदयपुर चित्तौरगढ मे सबको विदित है) उससे हमने अनुवाद किया है यदि ऐसे ही हमारे आर्य सज्जन लोग इतिहास और विद्यापुस्तको का खोजकर प्रकाश करेंगे तो देश को बडा ही लाभ पहुँचेगा। उस पत्र को सम्पादक महाशय ने अपने मित्र से एक प्राचीन पुस्तक जो सम्वत् विक्रम के १७८२ (सत्रह सौ बयासी) का लिखा हुआ था उससे ग्रहण कर अपने सम्वत् १९३९ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १९-२० किरण अर्थात् दो पाक्षिक पत्रो मे छापा है सो निम्न लिखे प्रमाण से जानिये।

आर्यावर्त्त देशीय राजवंशावली
(सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ५०२—स्वामी दयानन्द सरस्वती)

इन्द्रप्रस्थ मे आर्य लोगो ने श्रीमन्महाराजे "यशपाल" पर्यन्त राज्य किया जिसमे श्रीमन्महाराजे "युधिष्ठिर" से महाराजे "यशपाल तक वंश अर्थात् पीढी अनुमान १२४ (एक सौ चौबीस) राजा वर्ष ४१५७ मास ९ दिन १४ समय मे हुये है इनका ब्यौरा —

आर्यराजा	वर्ष	मास	दिन
१२४	४१५७	९	१४

अनुमान पीढी ३० वर्ष १७७० मास ११ दिन १० इनका विस्तार —

आर्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ राजा युधिष्ठिर	३६	८	२५
२ राजा परीक्षित	६०	०	०
३ राजा जनमजय	८४	७	२३
४ राजा अश्वमेध	८२	८	२२
५ द्वितीय राम	८८	८	८
६ छत्रमल	८१	११	२७
७ चित्ररथ	७५	३	१८
८ दुष्ट शैल्य	७५	१०	२४
९ राजा उग्रसेन	७८	७	२१
१० राजा शूरसेन	७८	७	२१
११ भुवनपति	६९	५	५
१२ रणजीत	६५	१०	४
१३ ऋक्षक	६४	७	४
१४ सुखदेव	६२	०	२४
१५ नर हरिदेव	५१	१०	२
१६ सुचिरथ	४२	११	२
१७ शूरसेन (दू०)	५८	१०	८
१८ पर्वतसेन	५५	८	१०
१९ मेधावी	५२	१०	१०
२० सोनचीर	५०	८	२१
२१ भीमदेव	४७	९	२०
२२ नृहरिदेव	४५	११	२३
२३ पूर्णमल	४४	८	७
२४ करदवी	४४	१०	८
२५ अलमिक	५०	११	८
२६ उदयपाल	३८	९	०
२७ दुवनमल	४०	१०	२६
२८ दमात	[illegible]२	०	०
२९ भीमपाल	५८	५	८
३० क्षेमक	४८	११	२१

राजा क्षेमक के प्रधान विश्रवा ने क्षेमक राजा को मारकर राज्य किया—पीढी १४ वर्ष ५०० मास ३ दिन १७ इनका विस्तार —

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ विश्रवा	१७	३	२९
२ पुरसेनी	४२	८	२१
३ वीरसेनी	५२	१०	७
४ अनङ्गशायी	४७	८	२३
५ हरिजित	३५	९	१७
६ परमसेनी	४४	२	२३
७ सुखपाताल	३०	२	२१
८ कद्रुत	४२	९	२४
९ सज्ज	३२	२	१४
१० अमरचूड	२७	३	१६
११ अमीपाल	२२	११	२५
१२ दशरथ	२५	४	१२
१३ वीरसाल	३१	८	११
१४ वीर साल सेन	४७	०	१४

राजा वीर साल सेन को वीर महा-प्रधान ने मारकर राज्य किया वंश १६ वर्ष ४४५ मास ५ दिन ३ इनका विस्तार —

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ राजा वीरमहा	३५	१०	८
२ अजित सिंह	२७	७	१९
३ सर्वदत्त	२८	३	१०

आर्य राजा	वर्ष	मास	दिन
४ भुवनपति	१५	४	१०
५ वीरसेन	२१	२	१३
६ महीपाल	४०	८	७
७ शत्रुशाल	२६	४	३
८ संघराज	१७	२	१०
९ तेजपाल	२८	११	१०
१० माणिकचन्द	३७	७	२१
११ कामसेनी	४२	५	१०
१२ शत्रुमर्दन	८	११	३
१३ जीवनलोक	२८	९	१७
१४ हरिराव	२६	१०	२९
१५ वीरसेन (दू०)	३५	२	२०
१६ आदित्यकेतु	२३	११	१३

राजा आदित्यकेतु मगध देश के राजा को "धन्धर" नामक राजा प्रयाग के ने मारकर राज्य किया वंशपीढी ९ वर्ष ३७४ मास ११ दिन २६ इनका विस्तार :—

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ राजा धन्धर	४२	२	२४
२ महर्षि	४१	२	२१
३ मनरश्री	५०	१०	११
४ महायुद्ध	३०	३	८
५ दुरनाथ	२८	५	२५
६ जीवन राज	४५	२	५
७ रुद्रसेन	४७	४	२८
८ आरीलक	५२	१०	८
९ राजपाल	३६	०	०

राजा राजपाल को सामन्त महान पाल ने मारकर राज्य किया पीढी १ वर्ष १४ मास ० दिन ० इनका विस्तार नही है।

राजा महान पालके राज्य पर राजा विक्रमादित्य ने अवन्तिका (उज्जैन) से लड़ाई करके राजा महानपाल को मारके राज्य किया पीढी १ वर्ष १३ मास ० दिन ० इनका विस्तार नहीं है।

राजा विक्रमादित्य को शालिवाहन का उमराव समुद्रपाल योगी पैठणके ने मारकर राज्य किया पीढी १६ वर्ष ३७२ मास ४ दिन २७ इनका विस्तार :—

आर्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ समुद्रपाल	५४	२	२०
२ चन्द्रपाल	३६	५	४
३ साहायपाल	११	४	११
४ देवपाल	२७	१	२८
५ नरसिंहपाल	१८	०	२०
६ सामपाल	२३	१	१७
७ रघुपाल	२२	३	२५
८ गोविन्दपाल	२७	१	१७
९ अमृतपाल	३६	१०	१३
१० बलीपाल	१२	५	२७
११ महीपाल	१३	८	४
१२ हरीपाल	१४	८	४
१३ सीसपाल[1]	११	१०	१३
१४ मदन पाल	१७	१०	१९
१५ कर्मपाल	१६	२	२
१६ विक्रमपाल	२४	११	१३

१. किसी-किसी इतिहास में भीम पाल भी लिखा है।

राजा विक्रमपाल ने पश्चिम दिशा का राजा (मलुखचन्द बोहरा था) इन पर चढ़ाई करके मैदान मे लडाई की। इस मे मलुखचन्द ने बिक्रमपाल को मारकार इन्द्रप्रस्थ का राज्य किया। पीढी १० वर्ष १९१ मास १ दिन १६ इनका विस्तार .—

आर्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ मलुखचन्द	५४	२	१०
२ विक्रमचन्द	१२	७	१२
३ अमीनचन्द[1]	१०	०	५
४ रामचन्द	१३	११	८
५ हरीचन्द	१४	९	२४
६ कल्याणचन्द	१०	५	४
७ भीमचन्द	१६	२	६
८ लोवचन्द	२६	३	२२
९ गोविन्दचन्द	३७	७	१२
१० रानी पद्मावती[2]	१	०	०

रानी पद्मावती मर गई, इसके पुन भी कोई नही था। इसलिये सब मुत्सद्दियो ने सलाह करके हरिप्रेम वैरागी को गद्दी पर बैठा के मुत्सद्दी राज्य करने लगे। पीढी ४, वर्ष ५० मास ० दिन २१। हरिप्रेम का विस्तार —

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ हरिप्रेम	७	५	१६
२ गोविन्द प्रेम	२०	२	८
३ गोपाल प्रेम	१	७	२८
४ महाबाहु	६	८	२९

राजा महाबाहु राज्य छोड के बन मे तपश्चर्या करने गये, यह बगाल के राजा आधीसेन न सुन के इन्द्रप्रस्थ म आके आप राज्य करने लगे। पीढी १२, वर्ष १५१, मास ११, दिन २ इनका विस्तार —

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
राजा आधीसेन	१८	५	२१
२ बिलावल सेन	१२	४	२
३ केशव सेन	१५	७	१२
४ माध सेन	१२	४	२
५ मयूर सेन	२०	११	२७
६ भीमसेन	५	१०	९
७ कल्याण सेन	४	८	२१
८ हरी सेन	१२	०	२५
९ क्षेम सेन	८	११	१५
१० नारायण सेन	२	२	२९
११ लक्ष्मी सेन	२६	१०	०
१२ दामोदर सेन	११	५	१९

राजा दामोदर सेन ने अपने उमराव को बहुत दुख दिया इसलिये राजा के उमराव दीप सिंह ने सेना मिला के राजा के साथ लडाई की। उस लडाई मे राजा को मार कर दीप सिंह आप राज्य करने लगे। पीढी ६ वर्ष १०७ मास ६ दिन २२। इनका विस्तार —

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ दीप सिंह	१७	१	२६
२ राजसिंह	१४	५	०

[1] इसका नाम कहीं मानकचन्द भी लिखा है। [2] यह पद्मावती गोविन्दचन्द की रानी थी।

आर्य राजा	वर्ष	मास	दिन
३ रण सिंह	९	८	११
४ नर सिंह	४५	०	१५
५ हरि सिंह	१३	२	२९
६ जीवन सिंह	८	०	१

राजा जीवन सिंह ने कुछ कारण के लिये अपनी सब सेना उत्तर दिशा को भेज दी। यह खबर पृथ्वी राज चौहान वैराट के राजा ने सुनकर जीवन सिंह के ऊपर चढाई करके आये और लडाई में जीवन सिंह को मारकर इन्द्र प्रस्थ का राज्य किया।[1] पीढी ५ मास० दिन २० इनका विस्तार :—

आर्य्य राजा	वर्ष	मास	दिन
१ पृथ्वीराज	१२	२	१९
२ अभय पाल	१४	५	१७
३ दुर्जन पाल	११	४	१४
४ उदयपाल	११	७	३
५ यशपाल	३६	४	२७

राजा यशपाल के ऊपर सुलतान शहाबुद्दीन गोरी गढ गजनी से चढाई करके आया और राजा यशपाल को प्रयाग के किले में सवत् १२४९ साल में पकड कर कैद किया पश्चात् इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली का राज्य आप (सुलतान शहाबुद्दीन) करने लगा। पीढी ५३ वर्ष ७५४ मास १ दिन १७। इनका विस्तार बहुत इतिहास पुस्तकों में लिखा है। इसलिये यहाँ नहीं लिखा। इसके आगे बौद्ध जैनमत के विषय में लिखा जायगा।

---

१. इसके आगे और इतिहासों में इस प्रकार है कि महाराज पृथ्वी राज के ऊपर सुलतान शहाबुद्दीन गोरी चढ़कर आया और कई बार हार कर लौट गया। अन्त में संवत १२४८ में आपस की फूट के कारण महाराज पृथ्वी राज को जीत अन्धा कर अपने देश को ले गया पश्चात् दिल्ली (इन्द्र प्रस्थ) का राज्य आप करने लगा मुसलमानों का राज्य पीढ़ी ४५ वर्ष ६१३ रहा।

परिशिष्ट

(३)

महाभारत

कुछ विद्वानो का कथन है कि महाभारत की मूल कथा ब्राह्मण ग्रन्थो के समय
२००० एक हजार ई० पू० म प्रचलित थी। परन्तु कुछ विद्वानो की सम्मति है कि
५० ई० तक और कुछ की सम्मति है कि ४०० ई० तक इसका वर्तमान स्वरूप पूरा
हो चुका था। इसका अन्तिम सस्करण २०० ई० पू० मे सातवाहन युग मे हुआ।

तीन वर्ष तक लगातार परिश्रम करके इसकी रचना व्यास ने की। व्यास के
ग्रन्थ का नाम 'जय' था। इसके श्लोको की सख्या ८८०० थी। व्यास ने अपनी
इस रचना को अपने शिष्य वैशम्पायन को सुनाया। वैशम्पायन ने अर्जुन के प्रपौत्र
जन्मेजय को सुनाया। तीसरी बार लोमहर्षण के पुत्र सौति ने यह कथा सौनक आदि
ऋषियो को सुनाई।

वैशम्पायन ने इसे बढा कर २४००० श्लोको का भारत बनाया। सौतीने
भारत म और भी आख्यान, उपाख्यान जोडकर हरिवश नामक परिशिष्ठ के साथ
उसे एक लाख श्लोको का 'महाभारत' बनाया। महाभारत और रामायण ये दोनो
ग्रन्थ उत्तर वैदिक युग के अन्तिम भाग की आर्य सस्कृति क द्योतक हैं।

बाल्मीकि रामायण

विद्वानो की ऐसी सम्मति है कि बाल्मीकि रामायण, जय तथा मनुस्मृति य
तीनो प्रधान ग्रन्थ ई० पू० सातवी शताब्दी मे बने। बाल्मीकि रामायण मे पहले
पाँच ही काण्ड थे। बाल और अयोध्या य दो काण्ड पीछे से बढा दिये गये हैं। कुछ
विद्वानो की ऐसी ही सम्मति है।

साधन ग्रन्थानां वर्णानुक्रमणी

१ अग्नि पुराण
२ अथर्व वेद : सायण भाष्य, पाण्डुरग, बम्बई
३ अथर्व वेद—अंग्रेजी अनुवाद . विलियम ह्विट
४ अथर्व वेद . स्वामी दयानन्द सरस्वती (हिन्दी भाष्य)
५ अथर्व वेद : प० श्री राम शर्मा आचार्य, मथुरा (हिन्दी भाष्य)
६ अर्थशास्त्र : कौटलीय
७ अमरकोश : अमरसिंह
८ अम्बपाली—नगर वधु : आचार्य चतुरसेन
९ अवेस्ता
१० असुर इंडिया : अनन्त प्रसाद बनर्जी, पटना
११ आर्योका मूल निवास स्थान (The Arctic Home in the vedas) : लो० बाल गगाधरतिलक, १९२५
१२ आर्यन सिविलिजेशन : De Coulanges.
१३ आर्यावर्तिक होम एण्ड क्रैडल आफ सप्तसिन्धु : एन० बी० पावजी
१४ आपस्तम्ब श्रौत सूत्र
१५ आर्य विद्या सुधाकर : श्री यज्ञेश्वर भट्ट
१६ आर्योका आदि देश : डा० सम्पूर्णानन्द
१७ आश्वलायन श्रौत सूत्र
१८ ओडेसी : होमर
१९ इंडो-आर्यन एण्ड हिन्दी · सुनीत कुमार चटर्जी
२० इन्फ्लुएन्स आफ इस्लाम आन इंडियन कल्चर · ताराचन्द, प्रयाग
२१ इनस्लिअल आफ मनु : सर डब्लु जौन्स (Inslial of Manu : Sir W. jones)
२२ ईशोपनिषद
२३ ईरानी-हिब्रू धर्म ग्रन्थ
२४ उत्तर रामचरित नाटक
२५ उर्वशी काव्य : श्री रामधारी सिंह दिनकर
२६ ए लिटरेरी (लाइब्रेरी) हिस्ट्री आफ पर्शिया (जिल्द १, २,) : एडवर्ड जी० ब्राउन एम० ए०, एम० बी०
२७ एन्शियन्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन : एफ० ई० पार्जिटर, ऑक्सफोर्ड

२८ ए शोर्ट हिस्ट्री आफ टर्किश इम्पायर (जिल्द १, २) : ले० को० सर मार्क साइक्स बर्ट एम० पी०
२९ ए शोर्ट हिस्ट्री आफ दि इण्डियन पिपुल : ए०मी० मुखर्जी कलकत्ता १६०४
३० एस्टडी इन हिन्दू सोशल पौलिटी : चन्द्र चक्रवर्ती, कलकत्ता १६२३
३१ एन्शियन्ट इंडिया · रैप्सन, लन्दन
३२ एकादशोपनिषत्संग्रह सत्यानन्द, लाहौर
३३ ऐतरेय ब्राह्मण
३४ ऐस्ट्रोलोजिकल मैगजीन · बंगलोर
३५ ऋग्वेद सहिता : सायण भाष्य, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा पं० श्री राम शर्मा आचार्य, मथुरा (हिन्दी भाष्य) अंग्रेजी अनुवाद–मोक्षमूलर
३६ ऋग्वेदिक इंडिया : डा० अविनाश चन्द्रदास, कलकत्ता १६२१
३७ कठोपनिषद
३८ कथासरित सागर
३६ कनिंघम
४० कला विलास
४१ कलियुग राजवृत्तान्त
४२ कल्याण (पत्रिका) शिवांक, गीता प्रेस गोरखपुर
४३ कल्याण (पत्रिका) सक्षिप्त पद्मपुराण, गोरखपुर
४४ कल्याण उपनिषदांक : गीता प्रेस, गोरखपुर
४५ काव्य प्रकाश : टीका सुधासागर
४६ कादम्बरी : बाणभट्ट
४७ कुर्म पुराण
४८ कुरान शरीफ
४६ केनोपनिषद
५० केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया भाग १, एन्शियन्ट इंडिया : स० ई० रैप्सन
५१ क्रोनोलाजी आफ एन्शियन्ट इंडिया ; डा० सीतानाथ प्रधान बृहस्पति, कलकत्ता युनिवर्सिटी, १६२७
५२ कौषीतकी उपनिषद
५३ गरुड पुराण
५४ गया एन्ड बुद्ध गया : इंडियन रिचर्स इन्स्टीट्यूट पब्लिकेशन
५५ गणेश : डा० सम्पूर्णानन्द, काशी विद्यापीठ, काशी

५६ गीता रहस्य : बालगगाधर तिलक
५७ गोरखनाथ : रागेय राघव
५८ गोपथ ब्राह्मण
५९ घेरण्ड सहिता, सेक्रेड बुक आफ दि हिन्दूज : प्रयाग १९४५
६० चक्रदत्त
६१ चण्ड कौशिक नाटक
६२ चम्पूरामायण
६३ चैंम्बर्स इगलिश डिक्सनरी
६४ चैम्बर्स लुगर इगलिश डिक्सनरी
६५ छान्दोग्य उपनिषद
६६ जातक अट्ठकथा
६७ जानकी परिणय
६८ जातक १, २ : भदन्त आनन्द कौशल्यायण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
६९ जेनेसिस (Genesis)
७० जैन धर्म : कैलाश चन्द्रशास्त्री, भा० दि० जैन सघ मथुरा, २४२४ जैन स०
७१ जैमिनीय उपनिषद—(ब्राह्मण)
७२ टाड राजस्थान
७३ टरनर्स हिस्ट्री और उसके फुटनोट
७४ ट्वायट्स एडवासड् हिस्ट्री (Toiets advanced History)
७५ तथागत गुह्यय-गुह्य समाज, ५३ गायक वाद ओ० रि० इ० बडोदा
७६ ताण्ड्य ब्राह्मण
७७ त्रिपिटक : राहुल साकृत्यायन
७८ तैत्तिरीय ब्राह्मण
७९ तैत्तिरीय सहिता
८० तैत्तिरीय आपस्तम्ब—हिरण्यकेशी
८१ थेरगाथा
८२ दर्शनानन्द उपनिषद समुच्चय
८३ दशकुमार चरित : दण्डी
८४ दि ऋग्वेद—ए हिस्ट्रीशोइग हाउ दि फीनिशियन्स हैड देयर यर्लीयस्ट होम इन इण्डिया : राजेश्वर गुप्त, चटगाव

८५ दि रिलीजन आफ वेदाज . मौरिस ब्लूम फिल्ड, न्यूयार्क, १६०८
८६ दि ओरियन (वेदकाल का निर्णय) लो० तिलक, १६२५
८७ दि इगलिश मैन आफ २०-४-७५
८८ दि गीक लेजेन्ड्स हैमिल्टन (The Greek Legends . Hamilton)
८६ दि हिस्ट्री आफ दि सी फ्रैंक बी० गुडरिच एल० एल० डी० (Frank B Good Rich)
९० दि एन्शियन्ट सिटी फस्टल डी० कौलेंज्स
९१ दि मोहनजोदरो एन्ड दि इनडस सिविलिजेशन १ २.३.
७२ दि डाइनेस्टीज आफ दि कलिएज (दि पुराण टैक्सट्स) एफ० ई० पार्जिटर ओक्सफोर्ड १९१३
६३ दि ग्रीक इन इडिया : पोकोक (The Greek in India . poccok)
६४ दि ओरिजिन आफ दि फैमिली फौरेन लागवेजेज पब्लिशिंग हाउस, मास्को १९४८
९५ दि ऋग्वेदिक कल्चर आफ दि प्रिहिस्टोरिक इन्डस भाग १,२ स्वामी शंकरानन्द, रामकृष्ण वेदान्त मठ, कलकत्ता
९६ दि हिस्ट्री आफ पर्शिया फ्रम दि मोस्ट अरली पीरियड (जिल्द, १,२) कौ० सर जौन मलकम (Colonel Sir john Malcolm) के० सी० बी०, के० एल० एस०
६७ दीघ निकाय (सूत्त पिटक का) · राहुल सांकृत्यायन जगदीश काश्यप, महाबोधि सभा, सारनाथ
९८ दीपवंश
६६ देवी भागवत पुराण
१०० दैवत ब्राह्मण
१०१ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, काशी
१०२ निरक्त
१०३ निरक्तालोचन श्री सत्यव्रत सामश्रमी
१०४ पद्म पुराण
१०५ प्सलम आफ मोसेज (Psalm of Moses)
१०६ पर्शिया एन्ड इट्स पिपुल साइक्स ई० सी०
१०७ पातञ्जल योग प्रदीप
१०८ पुरातत्त्व निबंधावली : राहुल सांकृत्यायन, इडियन प्रेस, प्रयाग
१०९ पोलिटीकल हिस्ट्री आफ एन्शियन्ट इडिया . डा० हेमचन्द्रराय चौधुरी

११० प्रश्नोपनिषद
१११ प्राचीन भारतीय व्यापार और समुद्र यात्रा : श्री योगेन्द्र मिश्र एम० ए० पी-एच० डी०, साहित्य रत्न, पटना विश्वविद्यालय
११२ प्राचीन भारत का इतिहास : डा० भगवत शरण उपाध्याय
११३ प्राचीन भारत : डा० राजबलि पाण्डेय, जबलपुर विश्वविद्यालय
११४ प्री हिस्टोरिक एन्ड एन्शियन्ट हिन्दू सिविलिजेशन : एस० आर० बनर्जी
११५ प्रोविन्स आफ अगोला आफ अफ्रीका
११६ फडामेटल युनिटी आफ इडिया : डा० राधा कुमुद मुखर्जी, विद्या भवन, बम्बई
११७ बुद्ध चर्या : डा० राहुल सांकृत्यायन
११८ बुद्धिष्ट इडिया . राइहस डेविड्स, लन्दन
११९ बुद्ध चरित्र
१२० बुद्धपूर्व भारत : मिश्रबन्धु
१२१ बौद्धायन सूत्र
१२२ बौद्ध दर्शन . राहुल साकृत्यायन, किताब महल; एलाहाबाद
१२३ बौद्ध दर्शन · बलदेव उपाध्याय, बनारस
१२४ बाराह पुराण
१२५ बामन पुराण
१२६ ब्रह्मपुराण
१२७ ब्रह्माण्ड पुराण
१२८ ब्रह्मवैवर्त्त पुराण
१२९ बुक आफ आइकिल (Book of Eyekicl)
१३० भविष्य पुराण
१३१ भारत मे आर्य बाहर से नही आये : श्री नीरजा कान्त चौधरी (देव शर्मा), गीता प्रेस, गोरखपुर
१३२ भारत के प्राचीन राजवश (दूसरा भाग) : पं० विश्वेश्वर नाथ रेउ
१३३ भारतीय इतिहास की मीमासा : जयचन्द विद्यालकार
१३४ भागवती कथा (आरभिक ५२ अक) : प्रभुदत्त ब्रह्मचारी; प्रतिष्ठान—प्रयाग
१३५ भारत का चिन्मय इतिहास (प्रथम भाग) : महावीर अधिकारी, आत्माराम एन्ड सन्स, दिल्ली
१३६ भारत का सास्कृतिक इतिहास : हरिदत्त वेदालकार
१३७ भारतीय दर्शन : प० बलदेव उपाध्याय, बनारस

८५ दि रिलीजन आफ वेदाज : मौरिश ब्लूम फिल्ड, न्यूयार्क, १६०८
८६ दि ओरियन (वेदकाल का निर्णय). लो० तिलक, १६२५
८७ दि इगलिश मैन आफ २०-४-२५
८८ दि ग्रीक लेजेन्ड्स · हैमिल्टन (The Greek Legends . Hamilton)
८६ दि हिस्ट्री आफ दि सी फ्रैंक बी० गुडरिच एम० एल० डी० (Frank B Good Rich)
६० दि एन्शियन्ट सिटी फस्टेल डी० कौलेंज्स
६१ दि मोहनजोदरो एन्ड दि इनडस सिविलिजेशन १.२.३.
७२ दि डाइनेस्टीज आफ दि कलिएज (दि पुराण टैक्सट्स) . एफ० ई० पार्जिटर ओक्सफोर्ड १६१३
६३ दि ग्रीक इन इन्डिया : पोकोक (The Greek in India : poccok)
६४ दि ओरिजिन आफ दि फैमिली : फौरेन लाग्वेजेज पब्लिशिंग हाउस, मास्को १६४८
६५ दि ऋग्वेदिक कल्चर आफ दि प्रिहिस्टोरिक इन्डस भाग १,२ : स्वामी शंकरानन्द, रामकृष्ण वेदान्त मठ, कलकत्ता
६६ दि हिस्ट्री आफ पर्शिया फ्रम दि मोस्ट अरली पीरियड (जिल्द, १,२) - कों० सर जोन मलकम (Colonel Sir john Malcolm) के० सी० बी०; के० एल० एस०
६७ दीघ निकाय (सूत्त पिटक का) · राहुल सांकृत्यायन जगदीश काश्यप, महाबोधि सभा, सारनाथ
६८ दीपवंश
६६ देवी भागवत पुराण
१०० दैवत ब्राह्मण
१०१ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, काशी
१०२ निरुक्त
१०३ निरुक्तालोचन · श्री सत्यव्रत सामश्रमी
१०४ पद्म पुराण
१०५ प्सलम आफ मोसेज (Psalm of Moses)
१०६ पर्शिया एन्ड इट्स पिपुल · साइक्स ई० सी०
१०७ पातंजल योग प्रदीप
१०८ पुरातत्त्व निबंधावली : राहुल सांकृत्यायन, इडियन प्रेस, प्रयाग
१०९ पोलिटीकल हिस्ट्री आफ एन्शियन्ट इंडिया : डा० हेमचन्द्रराय चौधुरी

११० प्रश्नोपनिषद
१११ प्राचीन भारतीय व्यापार और समुद्र यात्रा : श्री योगेन्द्र मिश्र एम० ए० पी-एच० डी०, साहित्य रत्न, पटना विश्वविद्यालय
११२ प्राचीन भारत का इतिहास : डा० भगवत शरण उपाध्याय
११३ प्राचीन भारत : डा० राजबलि पाण्डेय, जबलपुर विश्वविद्यालय
११४ प्री हिस्टोरिक एन्ड एन्शियन्ट हिन्दू सिविलिजेशन : एस० आर० बनर्जी
११५ प्रोविन्स आफ अंगोला आफ अफ्रीका
११६ फडामेंटल युनिटी आफ इंडिया : डा० राधा कुमुद मुखर्जी, विद्या भवन, बम्बई
११७ बुद्ध चर्या : डा० राहुल सांकृत्यायन
११८ बुद्धिष्ट इंडिया : राइस डेविड्स; लन्दन
११९ बुद्ध चरित्र
१२० बुद्धपूर्व भारत : मिश्रबन्धु
१२१ बौद्धायन सूत्र
१२२ बौद्ध दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, किताब महल; एलाहाबाद
१२३ बौद्ध दर्शन : बलदेव उपाध्याय, बनारस
१२४ वाराह पुराण
१२५ वामन पुराण
१२६ ब्रह्म पुराण
१२७ ब्रह्माण्ड पुराण
१२८ ब्रह्मवैवर्त्त पुराण
१२९ बुक आफ आइकिल (Book of Eyckicl)
१३० भविष्य पुराण
१३१ भारत मे आर्य बाहर से नही आये : श्री नीरजा कान्त चौधरी (देव शर्मा), गीता प्रेस, गोरखपुर
१३२ भारत के प्राचीन राजवंश (दूसरा भाग) : पं० विश्वेश्वर नाथ रेउ
१३३ भारतीय इतिहास की मीमांसा : जयचन्द्र विद्यालंकार
१३४ भागवती कथा (आरम्भिक ५२ अंक) : प्रभुदत्त ब्रह्मचारी; प्रतिष्ठान—प्रयाग
१३५ भारत का विश्वमय इतिहास (प्रथम भाग) : महावीर अधिकारी, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
१३६ भारत का सांस्कृतिक इतिहास : हरिदत्त वेदालंकार
१३७ भारतीय दर्शन : प० बलदेव उपाध्याय, बनारस

१३८ भारतीय संस्कृति और अहिंसा : धर्मानन्द कोसाम्बी; अनुवादक पं० विश्वनाथ दामोदर शोलापुरकर; हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई
१३९ भाष्य-वेदान्त-शंकर
१४० भाष्य-द्विवेदाङ्ग-वेद
१४१ भाष्य-विद्यारण्य—वेद
१४२ भाष्य-महीधर—यजुर्वेद
१४३ भाष्य-सायण—वेद
१४४ भारतीय परम्परा और इतिहास रांगेयराघव, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
१४५ महावंश . हिन्दी सा० सम्मेलन, प्रयाग
१४६ मनुस्मृति
१४७ मत्स्य पुराण
१४८ मार्कण्डेय पुराण
१४९ महाभारत : निर्णय साग प्रेस, बम्बई
१५० महाभारत : इण्डियन प्रेस, प्रयाग (हिन्दी)
१५१ महाभारत परिशिष्टांक (हिन्दी) इण्डियन प्रेस, प्रयाग
१५२ मज्झिम निकाय (सुत्तपिटकका) : राहुल सांकृत्यायन, सारनाथ
१५३ मृच्छकटिक
१५४ मानवेर जन्मभूमि : उमेशचन्द्र विद्या रत्न
१५५ माइथस आफ बेबीलोनिया एण्ड असीरिया (Myths of Babylonia and Assyria)
१५६ मुण्डकोपनिषद
१५७ मुयर्स सस्कृत टेक्सट्स (Muirs Sanskrit Texts)
१५८ मेथड्स आफ दि हिस्टोरिकल स्टडी
१५९ मैत्रेय ब्राह्मण
१६० मैत्रायण उपनिषद
१६१ मोसाइक नैरेटिव (Mosaic Narrative)
१६२ यजुर्वेद : सायण भाष्य, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा प श्रीराम शर्मा आचार्य,मथुरा–हिन्दी भाष्य
१६३ युनानी इतिहासकारों का भारत वर्णन : वैजनाथपुरी
१६४ योगवाशिष्ठ
१६५ रसातल : नन्दलाल दे

१६६ रघुवंश : कालिदास
१६७ रामायण : वाल्मीकि
१६८ रावणबध काव्य
१६९ रामचरित मानस : तुलसीदास
१७० रामायण अध्यात्म
१७१ लाइफ आफ दि बुद्ध : रौक हिल्ल (Rock hill-life of the Budha)
१७२ लिंग पुराण
१७३ वयंरक्षाम : पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध : आचार्य चतुरसेन
१७४ वंश ब्राह्मण
१७५ वाज सनेयि सहिता
१७६ वायु पुराण
१७७ विष्णु पुराण
१७८ विश्व लोचन (कोश)
१७९ विक्रम स्मृति ग्रन्थ, ग्वालियर, स० २००१ विक्रम
१८० वृहन नारदीय पुराण
१८१ बृहदारण्यक उपनिषद
१८२ बृहत्संहिता
१८३ वेद-ऋग्
१८४ वेद-यजुः
१८५ वेद-अथर्व
१८६ वेद-साम
१८७ वेदिक इन्डेक्शः कीथ एण्ड मैकडोनल्ड भाग १,२ : लन्दन आई.टी.सी. १९१२
१८८ शतपथ ब्राह्मण
१८९ शब्द कल्पद्रुम
१९० शकर दिग्विजय
१९१ शिव सहिता
१९२ शिव पुराण
१९३ श्रीमद्भागवत पुराण
१९४ शृङ्गार तिलक : भाण
१९५ शृङ्गार दीपिका
१९६ सत्यार्थ प्रकाश : स्वामी दयानन्द सरस्वती
१९७ सर्व दर्शन सग्रह : माधवाचार्य

१९८ सदविंश ब्राह्मण
१९९ संस्कृत-हिन्दी-कोष. श्री रघवीर शरण दुबलिश, मेरठ
२०० स्कन्द पुराण
२०१ सामविधान ब्राह्मण
२०२ सांख्यायन ब्राह्मण
२०३ सांख्यायन श्रौतसूत्र
२०४ स्यावलि चरित
२०५ स्तोत्र सतोपनिषद
२०६ हरिवंश पुराण
२०७ ह्वाट हैपेन्ड इन हिस्ट्री : गोरडेन चाइल्ड
२०८ हिन्दूधर्म समीक्षा : लक्ष्मण शास्त्री
२०९ हिन्दी काव्य धारा : राहुल सांकृत्यायन .
२१० हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता : बेनीप्रसाद
२११ हिन्दू ऐथिक्स : मैकनजी; मिल्फर्ड ऑक्सफोर्ड
२१२ हिस्ट्री आफ पर्शिया (जिल्द १, २) : ले० कौ० साइक्स
२१३ हिस्ट्री आफ पर्शिया (जि० १,२) : कौ० सर जोन मलकम (Colonel Sir John Malcolm) के० सी० बी०; कै० एल० एस०
२१४ हिस्ट्री आफ दि हिब्रूज : ओटले
२१५ हिस्टोरियन्स हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड : मैस्परो
२१६ हिस्ट्री आफ जिउज (jews) : मिलमैन
२१७ हिस्ट्री आफ अरेबिया : A. Crichton
२१८ हिस्ट्री आफ रोम : गिलमैन (Milman)
२१९ हिस्ट्री आफ इंडिया : ई० डब्लू थोम्सन
२२० हिस्ट्री आफ पर्शिया इनडेक्स
२२१ हिस्ट्री आफ पर्शिया (जिल्द १, २): ब्रीगेडियर सर परसी साइक्स के०सी० आई० ई०; सी० बी० सा०, एम० जी०
२२२ हिस्ट्री आफ सुमेर एण्ड अक्काद : एल० डब्लू० किंग
२२३ हिस्ट्री आफ बैबीलोन: एल० डब्लू० किंग
२२४ हेब्रेण्ड स्क्रीपचर्स (Hebrend Scriptures)
२२५ होमलैण्ड आफ एरियन्स : श्री राम चरित्र सिंह एम० एस-सी० (भूतपूर्व मन्त्री, बिहार सरकार)
२२६ भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाएँ

सम्मति-२

श्री सुमन शर्मा विलक्षण प्रतिभा के पुरुष हैं। प्रौढ़ावस्था मे कारा के एकान्त-वास का वरदान उन्होने इस ग्रंथ की रचना के रूप मे प्राप्त किया है।

मैं इतिहास का विद्यार्थी या विद्वान् नही हूँ जो इस ग्रंन्थ का समुचित मूल्यांकन करूँ। फिर भी इसे देखकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जिस परिश्रम, लगन, अध्ययन और आकलन की अनिवार्यता, जैसी कृतियो को रहती है, वह प्रस्तुत पुस्तक को भी प्रचुरमात्रा मे प्राप्त है और विस्मयकारी पद्धति से प्राप्त है!

मेरी आन्तरिक इच्छा है कि इस पर इस विषय के अधिकारी विद्वान् अपनी दृष्टि दें और इसके सभी पक्षो पर पूरा प्रकाश प्रक्षेपित करें।

इसमे किंचित् मात्र भी सन्देह नही है कि लगभग ७० वर्ष के होने पर भी शर्माजी ने जिस अध्यवसाय का आदर्श उपस्थित किया है, वह उनके व्यक्तित्व के बराबर ही विलक्षण है। यह कृति अपने जगत् मे क्रान्ति उत्पन्न करेगी, ऐसा आभास मिलता है, क्योंकि इसमे दी गई कई खोजें बडी प्रभावकारी प्रतीत होती हैं। वंशपरम्परा आदि का चार्ट भी एक आश्चर्यजनक कार्य दिखाई पडता है। शर्माजी को इस कृति से अमरता और प्रामाणिकता प्राप्त हो, मेरी एकमात्र शुभेच्छा यही है।

पटना – १

ब्रजकिशोर 'नारायण'
सम्पादक–'जनजीवन' (बिहार-सरकार)
५।११।६५

[illegible]

१३. [illegible]
१४. प्रस्तार
१५ पृथु
१६. नक्त
१७. गय
१८. नर
१९. विराट्
२०. महावीर्य
२१. धीमान
२२. महान
२३. मनुस्य
२४. त्वष्टा
२५. विरज
२६. रज
२७. विपगज्योति
२८. से ३५ तक अनिश्चित
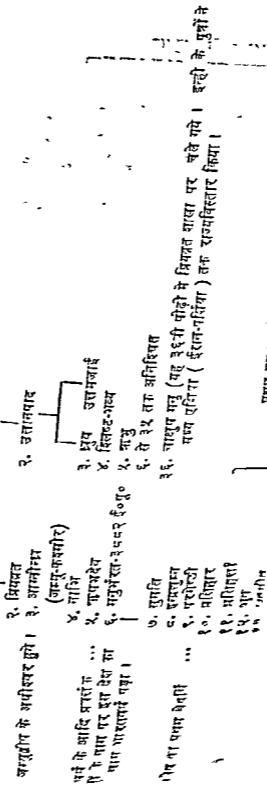
१—स्वायभुव मनु
२—स्वारोचिष मनु
३—उत्तम मनु
४—तामस मनु
५—रैवत मनु

सरस्वती नदी काश्मीर से सिन्धु नदीतक सप्त-सिन्धव प्रदेशमें विस्तार हुआ।

३६: चाक्षुप मनु (छठें मनु थे। ३०४२ ई० पू०) इन्हीं के पुत्रों ने शाकद्वीप-शकद्वीप-ईरान-पर्शिया तक भारतीय राज्य का विस्तार किया।

३७. उर (ur)—३०१४ ई०पू०—इनके भाई अत्यराति जानन्तपति, अभिमन्यु-मन्यु-मेमनन-अफनन, पुरु-पुर(Pour), तपोरत तथा उर-पुत्रअगिराने अफ्रीका में अंगोला प्रदेश का निर्माण किया। इन्ही लोगों ने उधर विजय प्राप्त की। 'उर' के ही नाम पर 'ईरान'नाम पडा। पुर के नाम पर पर्शिया हुआ। मन्यु के अन्तिमकाल मे जलप्रलय हुआ।

३८. अग
३९. वेन
४०. पृथुवंश—२९३० ई० पू०
४१ अन्तर्धान
४२. हविर्धान
४३. प्राचीन बर्हिष
[illegible]

पर्शिया तक भारतीय राज्य का विस्तार किया।

३७ उर (Ur)—३०१४ ई०पू०—इनमें भाई [illegible], अगिरा-नु मनु-[illegible], पुरु-पुर(Pour), [illegible] तथा उर-पुत्र अंगिरा ने अफ्रीका में अगोला प्रदेश का निर्माण किया। इन्हीं लोगों ने उधर विजय प्राप्त की। 'उर' के ही नाम पर ईरान नाम पड़ा। पुर के नाम पर पर्शिया हुआ। मनु के अन्तिमकाल में जलप्रलय हुआ।

३८. अंग
३९. वेन
४० पृथुवैन्य—२९३० ई० पू०
४१. अन्तर्धान
४२. हविर्धान
४३. प्राचीन बर्हिष
४४. प्रचेतस
४५. दक्ष (प्रजापति कुल समाप्त)
४६. कश्यप (कच्छप) (मरीचि के पुत्र और दक्ष के दामाद)
४७. सूर्य-आदित्य-विवस्वान-मित्र-विष्णु।—इन्ही के ज्येष्ठ भ्राता वरुण-ब्रह्मा-Lord, creator, Elohim, Orunzed थे। उसी समय देवराट् इन्द्र, अत्रि, भृगु, शुक्र, बृहस्पति, विश्वकर्मा, नारद, यम तथा वशिष्ठ आदि हुये।
४८. वैवस्वतमनु (२६६२ ई० पू० सातवें मनु अयोध्या में सूर्य राजवंश)

सूर्य-पुत्र सातवें मनु जो — अयोध्या के राजा हुये।

... ... अत्रि—अत्रिय भूमि (अत्रिपत्तन)

४८. मनुवैवस्वत-अयोध्या	**चन्द्र-सोम—१**	**२६६२ ई० पू० (चन्द्रवंश-प्रतिष्ठान-प्रयाग में)**
४९. इक्ष्वाकु ,,	बुध + इला—२	२६३४ ई० पू०
५०. विकुक्षी-शशाद	पुरुरवा + उरवसी—३	२६०६ ,,
५१. कुकुत्स-पुरंजय	आयु—४	२५७८ ,,
५२. अनेनस	नहुष—५	२५५० ,,
५३. पृथु	ययाति—६	२५२२ ,,
५४. विष्टराश्व	पुरु-पौरव—७	२४९४ ,,
५५. आर्द्र	जन्मेजय (प्र०)—८	२४६६ ,,
५६. युवनाश्व (प्रथम)	प्रचिन्वन्त—९	२४३८ ,,
५७. श्रावस्त (श्रावास्ती का निर्माता)	प्रवीर—१०	२४१० ,,